॥ ॐ अर्हं ॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्र द्वितीय विभाग.

अध्ययन २१ (१६ थी ३६)

(मूलगाथा-अन्वयार्थ तथा कथा सहित गुजराती भाषांतर)

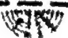
भाषांतर कर्ता—शास्त्री जेठालाल हरिभाइ—भावनगर

गुरुणीजी श्री शिवश्रीजी तथा गुरुणीजी श्री हेतश्रीजी तथा गुरुणीजी श्री लाभश्रीजीना उपदेशथी विविध स्थान निवासी
श्राविकावर्ग विगरनी आर्थिक सहायथी प्रयत्नपूर्वक छपावी प्रसिद्ध करनार
शाह कुंवरजी आणंदजी श्री जैन धर्म प्रसारक सभाना प्रमुख—भावनगर
वीर संवत् २४५२ विक्रम संवत् १९८२



भावनगर:—

धी आनद प्री. प्रेसमा शा. गुलाबचन्द लल्लुभाईए छाप्यु.



॥ ॐ अर्हं ॥

प्रस्तावना

जम्बूद्वीपना आ भरतक्षेत्रमां आ अवसर्पिणीने विषे तथाप्रकारना जगतना स्वभावने अनुसरी ऋषभादिक चोवीश तीर्थंकरो थया छे तेमां छेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर श्री वर्धमान (महावीर) स्वामी थया छे तेमना तीर्थमां गौतमादिक अग्यार गणधरो थया छे तेमने तीर्थंकर नामगोत्र कर्मने अनुसरी श्रीवर्धमान स्वामीए " उप्पन्ने वा धुवे वा विगमे वा " आ त्रण पद आप्या ते उपरथी ते दरेक गणधरे द्वादशांगीनी रचना करी तेना नाम आ प्रमाणे छे—आचारांग १, सूत्रकृतांग २, स्थानांग ३, समवायांग ४, विवाहप्रज्ञप्ति एटले भगवती ५, ज्ञाताधर्मकथा ६, उपासकदशा ७, अंतकृत दशा ८, अनुत्तरोपपातिकदशा ९, प्रश्नव्याकरण १०, विपाकश्रुत ११ अने दृष्टिवाद १२ (आ छेल्ला दृष्टिवादमां चौद पूर्वनो समावेश थाय छे) आ सिवाय बाकीनुं अंगबाह्य श्रुत कहेवाय छे तेमां पण कालिक श्रुत अने उत्कालिक श्रुत एम बे विभाग छे तेमां जे श्रुत असज्झाय न होय तो दिवस अने रात्रिनी पहेली अने छेल्ली पोरसीमां ज भणाय छे ते श्रुत काळे एटले काळवेळाए ज भणातुं होवाथी कालिक कहेवाय छे तथा जे श्रुत काळवेळा अने पांच प्रकारना असज्झाय सिवाय सर्व काळे भणाय छे, ते उत्कालिक कहेवाय छे तेमां दशवैकालिक १, कल्प्याकल्प्य २, क्षुल्लकल्पश्रुत ३, महाकल्पश्रुत ४, औपपातिक ५, राजप्रश्नीय ६, जीवाभिगम ७, प्रज्ञापना ८, महाप्रज्ञापना ९, नंदी १०, अनुयोगद्वार ११, देवेंद्रस्तव १२, तंदुलवैचारिक १३, चंद्रावेध्यक १४, प्रमादाप्रमाद १५, पोरुषीमंडळ १६, मंडलप्रवेश १७, गणिविद्या १८, विद्याचरण विनिश्चय १९,

ध्यानविभक्ति २०, मरणविभक्ति २१, आत्मविशुद्धि २२, संलेखनाश्रुत २३, वीतरागश्रुत २४, विहारकल्प २५, चरणविधि २६, आतुरप्रत्याख्यान २७, अने महाप्रत्याख्यान २८. आ अठ्ठावीश अध्ययनो (सूत्रो) उत्कालिक कहेवाय छे. तथा उत्तराध्ययन १, दशाश्रुतस्कंध २, बृहत्कल्प ३, व्यवहार ४, ऋषिभाषित ५, निशीथ ६, महानिशीथ ७, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ८, सूरप्रज्ञप्ति ९, चंद्रप्रज्ञप्ति १०, द्वीपसागर प्रज्ञप्ति ११, क्षुद्रका विमानप्रविभक्ति १२, महती विमानप्रविभक्ति १३, अंगचूलिका १४, वर्गचूलिका १५, विवाहचूलिका १६, अरुणोपपात १७, वरुणोपपात १८, गरुडोपपात १९, धरणोपपात २०, वैश्रमणोपपात २१, वेलंधरोपपात २२, देवेंद्रोपपात २३, उत्थानश्रुत २४, समुत्थानश्रुत २५, नागपरिआवलिका २६, * निरयावलिका कल्पिका २७, कल्पावतंसिका २८ पुष्पिका २९, पुष्पचूलिका ३०, वृष्णिदशा ३१, आशीविष भावना ३२, दृष्टिविष भावना ३३, चारण भावना ३४, महास्वप्न भावना ३५, अने तेजस निसर्ग ३६. आ विगेरे कालिकश्रुत कहेवाय छे. तेमां आ उत्तराध्ययन सूत्र कालिकमां प्रथम ज गणाव्युं छे. आ सूत्रमा छत्रीश अध्ययनो छे. ते अर्थथी श्री वर्द्धमान स्वामीए पोताना अवसान समये सोळ पहोरनी देशना आपी ते वखते प्ररूप्या छे. ते देशनामा प्रभुए पंचावन अध्ययन पुण्यफळ विपाकनां अने पंचावन अध्ययन पापफळ विपाकनां कह्यां छे. त्यारपछी पूछ्या विना उत्तराध्ययनना छत्रीश अध्ययन प्रकाश्या छे तेथी ते अपृष्ट व्याकरण कहेवाय छे. छेवट मरुदेवा मातानुं प्रधान नामनुं अध्ययन प्ररूपता अंतर्मुहूर्त्तनुं शैलेशीकरण करी प्रभु मोक्षपद पाम्या छे.

आ उपरथी स्पष्ट जाणी शकाय छे के भगवानना मुखथी अंत समये आ सूत्रनो अर्थ प्ररूपेलो होवाथी तेमा अनेक धर्म विषयोना तत्त्व

* आ पछीना पांच नाम निरयावलिकाना ज विभागरूप छे.

होवा जोइए अने तेज प्रमाणे छे एम आ सूत्र साद्यन्त वाचता निश्चय थाय छे दरेक अध्ययनो सूत्ररूपे रचनार श्रीसुधर्मास्वामीए उत्तरोत्तर सहेतुक कह्यां छे, ते पण टीकाकारे स्पष्ट रीते बताव्यु छे जो के आ सूत्र उपर वादीवेताळ श्रीशान्तिसूरिए मोटी टीका करेली छे, अने त्यारपछी घणा आचार्योए भिन्न भिन्न टीकाओ करेली छे, तो पण आ भाषांतर करती वखते श्रीलक्ष्मीवल्लभ गणिकृत लक्ष्मीवल्लभी टीका अने महोपाध्याय श्रीभावविजयजी कृत टीकानो आधार लीधो छे बन्ने टीकाकारोए मूळ सूत्रनो अर्थ विस्तारथी समजाव्यो छे, तेमज कथाभाग पण लक्ष्मीवल्लभी टीका करता भावविजयजीनी टीकामा वधारे विस्तारथी आप्यो छे आ सूत्रना भाषांतरमा सामान्य बोधवाळाने अति विस्तार वांचता कंटाळो न आवे तेम ज अति संक्षिप्त वाचता अपेक्षा न रहे तटला माटे तेमनी बन्नेनी रुचिने अनुसरी बन्ने टीकामाथी जोइतो विभाग लीधो छे परंतु मूळ सूत्रनो अर्थ तो संपूर्ण दण्डान्वयनी रीते सूत्रना पद मूकीने ज आप्यो छे वधारे सरळताने माटे मूळ सूत्रनी गाथाओ उपर दण्डान्वय प्रमाणे आंकडा भर्या छे, तेथी सामान्य बोधवाळा साधु साध्वी विगेरेने जीवविचारादिक प्रकरणोनी जेम सरळताथी आ सूत्रना अर्थनु ज्ञान थइ शके तेम छे, अने तेथी तेओने ज आ ग्रंथ विशेष उपयोगी छे संस्कृतना अभ्यासीओने माटे तो श्रीलक्ष्मीवल्लभी विगेरे टीकाओ ज योग्य छे

आ ग्रंथ आवी रीतनो छपाववा माटे प्रथम गुरुणीजी श्रीशिवश्रीजीए साध्वीजी श्रीलाभश्रीजीने भलामण करी हती, अने तेओश्रीना तथा तेमनी मुख्य शिष्या साध्वीजी श्रीतिलकश्रीजीना उपदेशथी छसो रुपीयानी सहाय प्रथमथी ज मळी हती, तेमज गुरुणीजी श्रीहेतश्रीजी तथा तेमनी मुख्य शिष्या साध्वीजी श्रीउत्तमश्रीजीना उपदेशथी चारसो रुपीयानी सहाय मळी हती ते उपरथी साध्वीजी लाभश्रीजीए आ सभाना शास्त्री जेठालाल हरिभाइ पासे पोतानी देखरेख नीचे आ ग्रंथनु काम शरु कराव्यु अने बीजी वधारे सहाय

मेळववा प्रयत्न कर्यो. जेना परिणामे घारेली सहाय मळी छे. ते सहायकोना नाम ग्रंथनी पाछळ बतावबामा आव्या छे.

आ ग्रंथना छत्रीशे अध्ययनोमा नीचे प्रमाणे विषयो आपेला छे:—

अध्ययन १ पानुं १—धर्मनुं मूळ विनय होवाथी प्रथम विनय नामनुं अध्ययन आप्युं छे. तेमा विनीत अने अविनीततुं स्वरूप, विनीतना गुण अने अविनीतना दोष, अश्वना दृष्टांत सहित तथा कथा सहित बताववामां आवेल छे: तथा विनयना प्रसंगमा साधुनी भिक्षाटनादिक क्रिया, गुरुनो विनय साचववानी रीत ए विगेरे आपवामा आव्युं छे.

अध्ययन २ पानुं २१—विनयवंत साधुए परीषहो पण सहन करवा जोइए. तेथी बीजा अध्ययनमां बावीशे परीषहोनुं स्वरूप सविस्तर आप्युं छे. दरेक परीषह स्पष्ट रीते समजी शकाय तेटला माटे ते उपर एक एक कथा आपी छे. उपरात प्रसंगने लीधे क्रोध उपर तथा ज्ञान उपर एम बे कथाओ अधिक आपी छे.

अध्ययन ३ पानुं ६८—परीषह सहन करवानुं कारण ए छे जे आ चतुर्गतिरूप संसारमां अटन करता प्राणीओने मनुष्यभव, धर्म श्रवणनी इच्छा, धर्मपर श्रद्धा अने संयमने विषे वीर्य, आ चार वस्तु अति दुर्लभ छे. तेथी चतुरंगीय नामनुं त्रीजुं अध्ययन आप्युं छे. तेमां मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर चोल्लक विगेरे दश दृष्टातो अने श्रद्धाना भंश उपर आठ निन्हवोनी कथा आपी छे. ते चारे अंग जेने प्राप्त थया होय तेने स्वर्ग अने मोक्षना सुखनी प्राप्ति बतावी छे.

अध्ययन ४ पानुं १०४—चार अंगनी प्राप्ति थया छता प्रमादनो त्याग करी अप्रमाद सेववानी आवश्यकता होवाथी प्रमादाप्रमाद नामनुं चोथुं अध्ययन कह्युं छे. तेमा जीवित कोइ पण प्रकारे सांधी शकातुं नथी अने वृद्धावस्था आवेथी धन, स्त्री, पुत्र विगेरे कोइ

पण शरणभूत थतु नथी तथी मोहनिद्रानो त्याग करी अप्रमत्तपणे भावथी जागृत रहवु ए विगेरे उपदेश आप्यो छे

अध्ययन ५ पानु १२३—मरण पर्यंत अप्रमादी रहेवानु छे तथी आ अध्ययनमा मरणना भेद बताव्या छे तेमा मूळ सूत्रमा ज्ञानीओनु सकाम मरण अने अज्ञानीनु अकाम मरण एवा बे मुख्य विभाग बताव्या छे अने टीकाकार महाराजे सत्तर प्रकारना मरण पण सक्षेपथी कह्या छे तेमा प्राणीहिंसा मृषावाद विगेरेमा प्रवृत्त थइ, कामभोगमा आसक्त थइ, वृद्धावस्थामा व्याधिग्रस्त थइ, करेला कर्मोनो पश्चात्ताप करतो प्राणी दुर्गतिमा जाय छे, ए विगेरे बाळ मरणनी व्याख्यामा जणाव्यु छे तथा गृहस्थाश्रममा रहीने पण जेओ सदाचार पूर्वक सद्व्रत पाळे छे तेओ स्वर्गादिक गतिने पामे छे, ए विगेरे बाळपडित मरणनी व्याख्यामा बताव्यु छे, अने जेओ गृह, धन, स्त्री विगेरेनो सर्वथा त्याग करी केवळ आत्मकार्य साधवामा ज तत्पर रहे छे तेओ मोक्षादिक गतिने पामे छे, ए विगेरे पडित मरणनी व्याख्यामा देखाड्यु छे इत्यादि उत्तम उपदेश आ अध्ययनमा आप्यो छे

अध्ययन ६ पानु १३४—पडितमरण, विद्या अने चारित्रवाळा साधुओनु ज थतु होवाथी आ अध्ययनमा निर्ग्रथनु स्वरूप बताव्यु छे तेमा विद्याहीन पुरुष घणु दु ख पामे छे, तेथी स्त्री, पुत्र, धनादिक उपरना मोहरूप अविद्यानो त्याग करवो, माता, पिता, स्त्री, पुत्र विगेरे कोइ पण दु खथी मूकाववा समर्थ नथी, तेथी ते सर्वना स्नेहपाशनो त्याग करवो, हिंसादिक पाच आश्रवनो त्याग करवो, विविध भाषानु के शास्त्रनु ज्ञान छता तेने क्रियामा न मूकाय तो ते पण अविद्या ज छे, शरीर अने कामभोगने विषे जे आसक्ति ते पण अविद्या छे, ते सर्व जाणी तेनो त्याग करी अप्रमत्तपणे सयमनु पालन करी विचरवु के जेथी सर्व दु खथी मुक्त थवाय इत्यादि बताव्यु छे

अध्ययन ७ पानुं १४०—रसगृद्धिनो त्याग कर्या विना निर्ग्रंथपणुं प्राप्त थतुं नथी, तेथी रसगृद्धिनो त्याग करवानुं स्वरूप सहेला-इथी समजाववा माटे सूत्रकार महाराजे उरभ्र (घेटो), कागणी, आम्रफळ अने वेपार ए चार दृष्टांत आपी रसगृद्धिथी थता दोष अने तेनो त्याग करवाथी थता गुणा बराबर बताव्या छे, तेथी आ अध्ययननुं नाम औरभ्रीय राख्युं छे. तेमां कामभोगादिकनी गृद्धिवाळाने बाळक अने तेनो त्याग करनाराने पंडित कही पंडित थवानो उपदेश आप्यो छे.

अध्ययन ८ पानुं १५१—रसगृद्धिनो त्याग निर्लोभीथी थइ शके छे, तेथी निर्लोभतानुं स्वरूप बताववा माटे सूत्रकार सुधर्मा-स्वामी मूळसूत्रमा ज कपिल मुनिना चरित्र द्वारा उपदेश आपे छे. तेमां कपिलमुनिए पोते पांच सो चोरोने प्रतिबोध करवा माटे ध्रुवा-गीति छंद बोली सादी भाषामां ज धर्मनुं रहस्य समजावी तेमने प्रतिबोधी दीक्षा आपी छे. ए विगेरे हकीकत रसवाळी आपी छे.

अध्ययन ९ पानुं १६०—लोभ रहित प्राणी इंद्रादिकथी पण पुजाय छे एवुं जणाववा माटे नमिराजर्षिनुं चरित्र आपतां बीजा त्रण प्रत्येकबुद्धोनी कथा पण टीकाकार महाराजे कही छे अने त्यारपछी मूळ सूत्रमा संबंध मेळववा माटे नमि राजर्षिनुं चरित्र आप्युं छे दीक्षा लीधा पछीनुं तेमनुं चरित्र सुत्रमां ज आवे छे. तेमां इंद्रे ब्राह्मणना वेषे आवी तेमनी राग द्वेषनो त्याग, धर्मनी स्थिरता अने संयमपरनी दृढता विगेरे संबंधी परिक्षा करी, छेवट तेमने संयममा दृढ जाणी प्रत्यक्ष थइ तेमनी स्तुति करी इंद्र स्वर्गे गया छे विगेरे हकीकत आपी छे.

अध्ययन १० पानुं १९८—नमि राजर्षिना चरित्रथी संयममा निश्चळता राखवानुं कह्युं, ते निश्चळता उपदेशथी ज प्राप्त थइ शके छे. तेथी श्री महावीरस्वामीए श्री गौतम गणधरने उद्देशी आ द्रुमपत्र नामनुं अध्ययन कह्युं छे. तेमां वृक्षनां नवा पत्रो जूनां पत्रोनी

जीणता जोइ तेमनी हासी करे छे, तेमने जूना पत्रो शिखामण आपे छे के—" अमे पण तमारी जेवा एक वखत हता, अने तमे पण काळ करीने अमारी जेवा जीर्ण थशो " विगेरे रूपक कह्यु छे पछी आयुष्य अने यौवननु अनित्यपणु, मनुष्यभवनी दुर्लभता, ते प्रसगे पृथ्वीकायादिकथी आरंभी पचेंद्रिय तिर्यंच अने देव तथा नारकीनी कायस्थितिनो मोटो काळ, मनुष्यभव मळ्या छता आर्यक्षेत्र, अविकळ इन्द्रियपणु, धर्मश्रवण, श्रद्धा विगेरेनी दुर्लभता बतावी छे त्यारपछी वृद्धावस्थामा इन्द्रियोनी शिथिलता थइ एवी स्थिति थाय छे ते सव बताव्यु छे छेवटे ससारनो त्याग करी सयम अगीकार करनारने समय मात्र पण प्रमाद नहीं करवा अने सयममा दृढ रहेवा उपदेश आप्यो छे, तथा गौतम गणधरनु मोक्षगमन कह्यु छे

अध्ययन ११ पानु २१२—उपदेश पण विवेकीने ज आपी शकाय छे, अने विवेक बहुश्रुतनी सेवाथी प्राप्त थाय छे, तेथी आ अध्ययनमा बहुश्रुतनी सेवा करवानु कह्यु छे तेमा प्रथम अबहुश्रुत अने बहुश्रुतनु लक्षण कही पछी ते बन्नेनी प्राप्ति शाथी थाय छे ? तेना कारणो बताव्या छे, तेमा बहुश्रुतपणानु मूळ कारण विनय अने अबहुश्रुतपणानु मूळ कारण अविनय होवाथी विनय अने अविनय शाथी प्राप्त थाय छे ? तेना कारणो बताव्या छे तेमा अविनीतना क्रोधादिक चौद स्थानो अने विनीतना नम्रतादिक पदर स्थानो बताव्या छे त्यारपछी बहुश्रुतनो आचार कही तेने सुशिक्षित अश्वादिकनी उपमा आपी प्रशसा करी छे तेमां छेवटे वासुदेव, चक्रवर्त्ती, इन्द्र, मेरु, स्वयभूरमण समुद्र विगेरेनी उपमा आपी छे ते जाणवा योग्य छे

अध्ययन १२ पानु २२२—बहुश्रुते पण तप करवामा यत्न करवानो छे, तेथी तपसमृद्धि नामना आ अध्ययनमा हरिकेशबळ मुनिनी कथा कही तपनु माहात्म्य बताव्यु छे तेमा ते मुनि पारणाने दिवसे भिक्षा माटे अटन करता एक ब्राह्मणना यज्ञमा गया हता

त्या ब्राह्मणोए मुनिनी हासी करी भिक्षानो निपेध कर्यो. ते वखते तिंदुक नामना ते मुनिना भक्त यक्षे मुनिना शरीरमां प्रवेश करी घणी रीते समजाववा पूर्वक भिक्षानी याचना करी, तोपण ब्राह्मणोए भिक्षा आपी नहीं. परंतु उलटा ते पुरोहितना विद्यार्थीओए मुनिनी कदर्थना करी तेथी यक्षे तेमने शिक्षा करी, ते जोइ भय पामेलो पुरोहित पोतानी भार्या भद्रा के जे राजपुत्री हती अने ते मुनिना प्रभावने सारी रीते जाणती हती तेना कहेवाथी मुनिने शरणे गयो. मुनिए तेने भावयज्ञनुं स्वरूप बतावी उपदेश आपी धर्म पमाड्यो. विगेरे हकीकत घणा विस्तारथी आपी धर्मनुं रहस्य बताव्युं छे.

अध्ययन १३ पानुं २४२—तप पण नियाणा रहित करवानो छे, तेथी नियाणानो दोप बतावबा माटे चित्र अने संभूत मुनिनी कथा आपी छे. तेमा संभूतमुनि तपनुं नियाणुं करी ब्रह्मदत्त नामना चक्रवर्त्ती थया अने चित्रमुनिए नियाणुं कर्युं नही तेथी तेणे महेभ्य-पुत्र थइ जातिस्मरण ज्ञान पामी चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी चक्रवर्तीने पण संगीत पूर्वक नाटक जोता जातिस्मरण थयुं. तेथी पोताना पूर्व जन्मना भाइनी शोध करवा दोढ श्लोकवाळी समस्या पूर्ण करवा हमेशा आघोपणा करावबा लाग्या. छेवट ते मुनि मळया. तेमने चक्रवर्तीए भोग भोगववा घणी विनंति करी, परंतु ते मुनिए भोग तो अंगीकार न कर्या, पण चक्रीने धर्मविपे घणो उपदेश आप्यो, समृद्धिनी तुच्छता, संसारनी अनित्यता, कर्मना उदयनी उग्रता विगेरे बतावी घणी रीते समजाव्या, तोपण चक्रवर्त्ती पूर्वभवना नियाणावाळा होवाने लीधे प्रतिबोध पाम्या नहीं. छेवट ते मरीने नरके गया अने मुनि मोक्षे गया. आमा बन्नेनो संवाद घणो बोधदायक छे.

अध्ययन १४ पानुं २७५—आ अध्ययनमा पण नियाणा रहितनो गुण बतावबा माटे नलिनीगुल्म नामना विमानमाथी च्यवीने छ जीवो जूदे जूदे ठेकाणे उत्पन्न थया छे. इपुकार राजा १, तेनी राणी कमलावती २, तेनो पुरोहित भृगु ३, तेनी पत्नी यशा ४,

तथा व पुरोहितना पुत्रो १—६ आमा प्रथम बे पुत्रोने प्रतिबोध थयो, पछी तेमना मातपिताने थयो अने त्यारपछी राजाराणीने प्रतिबोध थयो त वखत पुरोहित तथा तेनी स्त्रीए पुत्रोने घणी रीते ससारना लोभमा नाखवा प्रयत्न कर्यो, तो पण तेओए बिलकुल कामभोगनी इच्छा करी नहीं न विषेनो तमनो सवाद घणो बोधदायक छे छेवट ते चारे जणाए दीक्षा लीधी, ते वखते तेमनु धन मालिकीविनानु थवाथी तेने लेवा माट राजा तैयार थयो, त्यारे राणीए राजाने पुरोहिते वमेला धनने ग्रहण करवानो निषेध करी धर्मनो उपदेश आपी प्रतिबोध पमाड्यो छे आ विषय पण घणो उत्तम बोध आपनार छे छेवट राजा अने राणीए पण दीक्षा लीधी अने ते छए जीवो मुक्तिने पाम्या

अध्ययन १५ पानु २६३ —नियाणा रहितपणु प्राये करीने साधुने ज सभवे छे, तेथी आ सभिक्षु नामना अध्ययनमां भिक्षुना गुणो कह्या छे तमा रागद्वेष रहित थइ, आक्रोश वधादिकने सहन करी, कोइ पण वस्तुपर मूर्छा न राखी, अतप्रात भोजन, शय्या, आसन विगेरेने सेवी, शीतोष्णादिक परिसहो सहन करी, निरतिचार व्रतोनु पालन करी, प्रशसादिकमां आसक्ति रहित थइ, कषायादिकनो त्याग करी, पचेंद्रियोना विषयथी निवृत्त थइ, विद्यामत्रादिकवडे आजीविकाने नहीं करी, पूर्वना अने पछीना परिचयनो त्याग करी, भिक्षादिक मळवाथी अथवा न मळवाथी हर्ष शोकनो त्याग करी, जे आ मळे तेनाथी ज सतोष मानी, तथा ज्ञान दर्शन अने चारित्रमा ज लीन थइ जे स्थिर ते ज साधु कहेवाय छे ॥ विगेरे साधुना आचारो बताव्या छे

विभाग बीजो

अध्ययन १६ पानु १—साधुना गुणो ब्रह्मचर्यथी ज स्थिर रही शके छे, तेथी आ ब्रह्मचर्यगुप्ति नामनु अध्ययन कह्यु छे तेमा

ब्रह्मचर्यना स्थानो सांभळीने साधुना संयमनी उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे, आश्रवनो निरोध अने संवरनी प्राप्ति थाय छे, मन समाधिमा रहे छे, मन वचन अने कायानी गुप्ति सचवाय छे, जितेंद्रियपणुं प्राप्त थाय छे, तथा सदा अप्रमत्तपणुं प्राप्त थाय छे. ते बतावीने ब्रह्मचर्यना दश स्थानो कह्या छे. स्त्री पशु अने नपुंसक रहित उपाश्रयमां रहेवुं १, एकली स्त्रीनी साथे अथवा स्त्री संबंधी कथा करवी नहीं २, स्त्रीनी साथे एक आसनपर बेसवुं नहीं ३, स्त्रीना अवयवो जोवा नहीं ४, भींतविगेरेनी ओथाथे रही स्त्रीना क्रीडादिकना शब्दो साभळवा नही ५, दीक्षा लीधा पहेलां स्त्री साथे करेली क्रीडानुं स्मरण करवुं नहीं ६, घी विगेरे जेमाथी नीतरतुं होय एवो गरिष्ठ आहार करवो नहीं ७, क्षुधानी शाति थाय तेथी वधारे आहार करवो नहीं ८, शरीरनी, आभूषा करवी नही ९, तथा शब्दादिक पांचे विषयोमा प्रवृत्ति करवी नहीं १०. आ दश स्थानोने प्रथम संक्षेपथी अने पछी विस्तारथी कही ब्रह्मचर्यमां द्रढ थवानो उपदेश करी छेवट तेनो महिमा बताव्यो छे

अध्ययन १७ पानुं १३—ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो पापस्थानकोने वर्जवाथी ज पाळी शकाय छे, जे पापस्थानोने वर्जतो नथी ते पापश्रमण कहेवाय छे, तेथी आ अध्ययन पापश्रमणीय नामनुं कह्युं छे. तेमा 'श्रुतनो अभ्यास करावनार आचार्यादिक पण भूतकाळ अने भविष्यकाळ संबंधी काइ पण जाणता नथी अने वर्तमानकाळ संबंधी तेओ जेटलुं जाणे छे तेटलुं नही भणेला पण जाणे छे, तेओनी जेम नहीं भणेलाने पण वसति, अन्न, पान, वस्त्र विगेरे मळे छे.' आ प्रमाणे जे प्रमादी साधु बोले छे अने मनोहर आहार करी प्रमादने लीधे निद्रादिकने सेवे छे, आचार्यादिकनी वैयावच्च करतो नथी, एकेंद्रियादिक जीवोनी विराधनामा प्रवर्ते छे, विधिप्रमाणे पडिलेहणादिक क्रिया करतो नथी, वळी चालतां ईर्यासमिति साचवे नहीं, क्रोधाधिक कषायोनो त्याग करे नहीं, गुरुनो दोष कहेवामा

तत्पर थाय, ज्ञान नहीं छता जनी तेनी साथे वादविवाद करवामा प्रवर्ते, कारण विना पण घी दूध विगेरे विकृति वारवार खाधा करे, अन पच्चक्खाण करे नहीं, परपाखडीओ साथे प्रसग वधारे, रागी श्रावकोना घरनी भिक्षा ग्रहण करे, आवा कुशीळीया अने पासत्थादिकनी जवा आचरण करनार साधुओ केवळ वेषविडंबक ज छे तेवाने कदापि साधु कही शकाय नहीं विगर हकीकत विस्तारथी आपी छे

अध्ययन १८ पानु १८—पापस्थानोनो त्याग पण भोगनो त्याग करवाथी ज थाय छे तेथी आ अध्ययनमा सयत राजानी कथा आपी छे तेमां ते राजा मोटा सैन्यना परिवार सहित शिकार करवा गयो छे त्या एक मुनिने ध्यानमा रहेला जोइ तेने पोताना पाप सबधी भय उत्पन्न थयो तेथी तेणे मुनिने वदना करी ध्यानमा रहेला मुनि काइ पण बोल्या नहीं, त्यारे तो ते वधारे भयभीत थइ वार वार खमाववा लाग्यो, छेवट मुनिनु ध्यान पूर्ण थयु, त्यारे मुनिए तेने कह्यु के–" हे राजा! माराथी तने जरा पण भय नथी, परतु आ निरपराधी मृगादिक जीवोने तु अभयदान आपनार था " एम कही मुनिए तेने ससारनी अनित्यता, जीवितनी चपळता, धनपुत्रादिकनी अशरणता, विष जेवा भोगनो परिणामे विरसता विगेरे सबधी घणो असरकारक उपदेश आप्यो तेथी वैराग्य पामी राजाए सर्व भोगनो त्याग करी दीक्षा लीधी अनुक्रमे गीतार्थ थइ गुरुनी आज्ञाथी एकाकीपणे विचरवा लाग्या एकदा ते राजर्षिने कोइ क्षत्रिय मुनिनो समागम थयो ते वखते ते क्षत्रिय मुनिए ते राजर्षिना वैराग्यनी परीक्षा करी पछी क्रियावादी, अक्रियावादी, विनयवादी अने अज्ञानवादी ए चार एकांतवादीना मिथ्यावाद बतावी तेनापर सारु विवेचन कर्यु, पछी ते ज क्षत्रिय मुनिए ते राजर्षिने चारित्रमां स्थिर करवा माटे पोतानो ज आधार बताव्यो छे, तेमा सजय राजर्षिए पण केटलाक प्रश्नो कर्या छे अने क्षत्रिय मुनिए तेना उत्तर आप्या छे, तेमां प्रसगोपात भरतचक्रवर्ती विगेरे महापुरुषोनी कथाओ कही सजय राजर्षिने चारित्रमा दृढ कर्या छे

अध्ययन १९ पानुं ९४—सांसारिक भोगऋद्धिनो त्याग करती वखते शरीरनी शुश्रूषा पण वर्जवानी छे, ते बावत मृगापुत्रना दृष्टांतथी बतावी आपेल छे. तेमा ते मृगापुत्र दोगुंदुक देवनी जेम भोग भोगवतो पोताना महेलमा रह्यो हतो, तेवामा एकदा मार्गमा जता मुनिने जोइ जातिस्मरण थवाथी वैराग्य पामी मातापिता पासे आवी चारित्र लेवानी आज्ञा मागी, ते वखते तेणे नारक तिर्यंचना दु.खो, कामभोगनी तुच्छता अने परिणामे विरसता, शुश्रूषा कर्या छता शरीरनी अपवित्रता अनित्यता अने असारता, जन्म जरादिकनां दु.खो विगेरे विषयो दृष्टांत सहित समजाव्या छे तेना जवाबमा तेना मातापिताए तेनापरना मोहने लीधे दीक्षानो निषेध करवा माटे चारित्रनुं दुष्करपणुं जणावता पांचे महाव्रतो अने छठ्ठा रात्रिभोजन व्रतनी दुष्करता अने बावीश परीषहोनी दु.सहता विगेरे बतावेल छे. तथा चारित्रनुं पालन केवुं दुष्कर छे ? ते दृष्टांत सहित सविस्तर समजाव्युं छे. तो पण कामभोगमा लुब्ध नहीं थयेला अने चारित्रना कष्टथी भय नहीं पामेला मृगापुत्रे चार गतिवाळा संसारमा अनंतीवार नारकादिक दु.खोनो पोतानो अनुभव कही देखाड्यो छे के जे वांचवाथी वांचनारने पण वैराग्य उत्पन्न थाय तेम छे. पछी तेणे दीक्षा लीधा बाद भिक्षाचर्यानुं स्वरूप, चारित्रना आचार अने छेवट तेमनुं मोक्षगमन विगेरे बताव्युं छे

अध्ययन २० पानुं ११३—'संसारमा मारो रक्षक कोइ नथी, हुं एकलो ज छुं' एवा अनाथपणानी भावना विना शरीरनी शुश्रूषानो त्याग थइ शकतो नथी, तेथी आ महानिर्ग्रंथीय नामना अध्ययनमा अनाथता सिद्ध करी छे. तेमा श्रेणिक राजा एकदा उद्यानमां गया छे, त्या तेणे युवान वयवाळा, कोमळ शरीरवाळा अने मनोहर सौंदर्यवाळा एक मुनिने जोइ दीक्षा लेवानुं कारण पूछ्युं छे, तेना जवाबमां ते मुनिए कह्युं के—"मारो कोइ नाथ न होवाथी नाथ मेळववा माटे मे दीक्षा लीधी छे." ते सांभळी आश्चर्य पामेला राजाए कह्युं

के—" हु तमारो नाथ थाउ, तमो इच्छा प्रमाणे भोग भोगवो " एटले मुनिए कह्यु के—" हे राजा ! तमे तमारा ज नाथ नथी, तो बीजाना नाथ शी रीते थशो ? " आवु अपूर्व वचन साभळी अत्यत विस्मय पामेला राजाए पोतानो सैन्य, कोष, परिवार विगेरे बतावी पोतानु नाथपणु सिद्ध कर्यु, त्यारे मुनिए पण पोतानी गृहस्थाश्रमनी श्रेष्ठ समृद्धिनु तथा माता, पिता, पत्नी, मित्र विगेरेनु वर्णन करी नेत्रनी असह्य वेदना थइ ते वखते कोइ पण काम आव्यु नहीं, कोइए नाथपणु बताव्यु नहीं, एम कही अनाथपणु सिद्ध कर्यु छे आ विषय घणो विस्तारथी असरकारक बताव्यो छे पछी नेत्रनी वेदना दूर थाय तो सर्वस्वनो त्याग करी चारित्र लेवानो दृढ धारणा करतां वेदना दूर थइ अने चारित्र लीधु त्यारे हवे पोताना आत्मानो तथा सर्व प्राणी मात्रनो हु नाथ थयो छु, इत्यादिक कही तथा नाथना अने अनाथतानु स्वरूप समजावी राजाने सारो उपदेश कर्यो छे पछी राजा प्रसन्न थइ मुनिने खमावी तेनी स्तुति करी पोताने स्थाने गया अने मुनि पण अन्यत्र विचर्या

अध्ययन २१ पानु १२६—अनाथपणानो विचार एकात चर्या विना थइ शकतो नथी, तेथी आ अध्ययनमा समुद्रपाळना दृष्टात वडे एकातचर्या बतावी छे तेमा ते समुद्रपाळ पालित नामना श्रावकनो पुत्र हतो तेनो जन्म समुद्रमा थयो हतो, तेथी तेनु नाम समुद्रपाळ पाड्यु हतु ते सकळ कळामां निपुण थइ युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते रूपिणी नामनी कन्याने परण्यो तेणीनी साथ दोगुदक देवनी जेम निरतर ते भोगविलासमा मग्न रहेतो हतो, एकदा पोताना महेलनी बारीमां बेठेलो ते समुद्रपाळ वध्यस्थाने लइ जवाता एक चोरने जोइ वैराग्य पाम्यो तेथी तरत तेणे माता पितानी रजा लइ चारित्र ग्रहण कर्यु पछी तेणे पोताना आत्माने शिक्षा आपी के—" हे जीव ! महाक्लेश कारक, भयकारक अने महामोह कारक स्वजनादिकना सगनो त्याग करी चारित्रधर्मपर रुचि करी व्रत तथा शीलनु

पालन करी परीषहोने सहन कर. ” आ रीते अहिंसादिक पांच महाव्रतो संबंधी, समय प्रमाणे प्रतिलेखनादिक क्रिया संबंधी, विहार संबंधी, भयंकर शब्दादिकथी त्रास नहीं पामवा संबंधी, रागद्वेषना त्याग संबंधी, उपसर्गोने सहन करवा संबंधी, कषायना त्याग संबंधी तथा असंयममा रति अने संयममां अरतिनो त्याग करवा संबंधी अनेक प्रकारे उपदेश आप्यो छे. छेवट निरतिचार चारित्रनुं पालन करी ते महात्मा समुद्रपाळ मुनि मुक्तिपद पाम्या छे.

अध्ययन २२ पानुं १३२—एकातनर्यां धीरज विना पाळी शकाती नथी तेथी रथनेमिना दृष्टांतवडे चारित्रने विषे धृति राखवानो उपदेश आप्यो छे. तेमा प्रथम श्रीनेमिनाथनुं चरित्र आपतां ते भगवाने राजीमतीने परणवा जता ज मार्गमां पशुपरनी दयाने लीधे परणवानो निषेध करी पाछा वळी वर्षीदान आपी दीक्षा ग्रहण करी. पछी भगवानने केवळज्ञान थयुं त्यारे राजीमतीए तथा प्रभुना भाइ रथनेमि विगेरे घणा जनोए दीक्षा लीधी. एकदा प्रभुने वांदी पाछा आवतां मार्गमां वृष्टि थवाथी राजीमती एक गुफामा पेठी, अने भीना थयेला वस्त्र सुकववा लागी. ते वखते ते ज गुफामां प्रथम आवीने रहेला रथनेमिए तेणीने जोइ. एटले चारित्रना परिणामथी भ्रष्ट थइ तेणे तेणीनी पासे भोगनी प्रार्थना करी. ते वखते भयभीत थयेली राजीमतीए वस्त्र पहेरी लइ धीरज राखी रथनेमिने उपदेश आप्यो के—“ तमे रूपमा कुबेर जेवा, नळकुबर जेवा के इंद्र जेवा हो पण हुं तमने कदापि इच्छीश नहीं. अगंधन कुळमां जन्मेला नाग अग्निमां प्रवेश करवानुं कबूल करे छे पण वमेलुं विष पाछुं चूसी लेता नथी. हे कामांध ! तमारा यशने धिक्कार हो के जे तमे वमेलाने खावा इच्छो छो. माटे आवा असंयम जीवित करतां पंडित मरणे मरवुं सारुं छे. स्त्रीओने जोइ आवी नीच अभिलाषा करवाथी तमारुं चित्त अस्थिर थशे, अने तेथी करीने तमारुं चारित्र नष्ट थशे. ” इत्यादिक उपदेशथी रथनेमिने प्रतिबोध थयो, तेथी पोताना पापनी आलोचना करी

चारित्रमां स्थ्र थइ, तथ गुप्तिथी गुप्त थइने तेमणे इन्द्रियोने जीती छेवट ते बन्ने केवळी थइ मोक्ष पाम्या

अध्ययन २३ पानु १५९—संयममां धृति राखतां छतां कोइने तेमां शंका उत्पन्न थाय, तो श्रीपार्श्वनाथना संतानीया श्रीकेशीकुमारे श्रीगौतमस्वामीने विनयथी प्रश्न पूछी पोताना शिष्योनो संदेह दूर कर्यो हतो, ते प्रमाणे अन्य मुमुक्षुए पण शंकानु समाधान करी संयम मार्गमा प्रवर्तवु, ते सबधी आ अध्ययनमा घणी समजवा जेवी बोधदायक हकिकत आपी छे तेमा प्रथम श्रीपार्श्वनाथनु चरित्र आपी तेमना समागत शिष्य श्रुत तथा अवधिज्ञानवाळा श्रीकेशीकुमार पोताना परिवार सहित एकदा श्रावस्ती नगरीना उद्यानमा समवसर्या छे, ते ज वखते त्या बीजा उद्यानमा श्रीगौतमस्वामी पण समवसर्या ते बन्नेना शिष्यो गोचरीए गया ते वखते परस्परना वेषमा तथा महाव्रतमा तफावत जोइ मनमा शंका पाम्या के—"अमे तथा आ मुनिओ [illegible] ज मोक्षमार्गमा प्रवर्त्या छीए, अमारो अने तेमनो धर्म एक ज छे, छता महाव्रतमा अने वेषमा आवो तफावत होवानु शु कारण हशे ? " आ प्रमाणे थयेली शंका तेमणे पोतपोताना गुरु पासे जइने पूछी तेथी तेमने बोध करवा माटे ते बन्ने गणधरो एक ठकाणे पोतपोताना परिवार सहित एकठा थया ते वखते त्या बीजा अन्य तीर्थना साधुओ अने घणा गृहस्थीओ पण आव्या, तथा घणा किन्नर अने राक्षसो विगेरे पण घणा आव्या, तेथी ते एक मोटी सभा थइ गइ प्रथम श्रीकेशीकुमारे श्रीगौतमस्वामीने प्रश्न कर्यो के—" श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए चार महाव्रतवाळो साधुधर्म कह्यो छे अने श्री वर्धमानस्वामीए पाच महाव्रतवाळो साधुधर्म कह्यो छे तेम ज श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए सचेल एटले वस्त्रवाळो अने श्रीवर्धमान स्वामीए अचेल एटले वस्त्र रहित धर्म कह्यो छे आ बन्ने तीर्थंकरो मोक्षरूप एक ज कार्य साधवा माटे प्रवर्तेला छे, छता तेमना मार्गमा आवी भिन्नता छे, तेनु शु कारण ? " तेना जवाबमा श्रीगौतमस्वामीए कह्यु के—" मध्यना बावीश तीर्थंकरोना साधुओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी चोथा अपरिग्रह महाव्रतमा ज [illegible]

चर्यनो समावेश करी ले छे अने आ चोवीशमा तीर्थंकरना साधुओ वक्र–जड होवाथी तेवो समावेश करी शके नहीं, तेथी तेमने ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रह ए वे व्रत जुदा पाडी पाच महाव्रतो कह्या छे. वळी ए ज रीते ऋजुप्राज्ञने सचेल धर्म कह्यो छे एटले के तेओ गमे तेवा वस्त्रादिक राखी शके छे अने वक्रजडने तो अचेल धर्म कह्यो छे एटले तेओ प्रमाणोपेत ज वस्त्रादिक राखी शके छे. ते तेमनी तथाप्रकारनी योग्यता जोइ ते ते प्रमाणे अनुज्ञा आपी छे. " आ रीते वे प्रश्नोना उत्तरथी साधुओनी शंका दूर करी पछी केशीकुमारे आभ्यंतर शत्रुने जीतवा संबंधी, स्नेहपाशने छेदवा संबंधी, तृष्णारूपी लताने उखेडवा संबंधी, कषायरूपी अग्निने बुझववा संबंधी, मनरूपी अश्वनो निग्रह करवा संबंधी, उन्मार्गनो त्याग करी सन्मार्गमा प्रवर्तवा संबंधी, विगेरे घणा प्रश्नो कर्या, तेमना यथार्थ उत्तर श्रीगौतमस्वामीए आप्या. त्यारपछी श्रीकेशीकुमारे परिवार सहित श्रीगौतमस्वामी पासे पाच महाव्रतवाळो धर्म अंगीकार कर्यो. विगेरे हकीकत बहु बोधदायक आपेली छे.

अध्ययन २४ पानुं १८९—शंकानुं निवारण करवामा भाषासमितिरूप वाग्योगनी जरुर छे, तेथी आ अध्ययनमां पाच समिति अने त्रण गुप्तिरूप आठ प्रवचनमातानुं स्वरूप आप्युं छे. आ आठमा ज सर्व द्वादशागरूप प्रवचननो समावेश थाय छे तेथी ते तेनी मातारूप कहेवाय छे. अहीं आ आठेनुं स्वरूप, तेनो उपयोग अने छेवटे ते पाळवाथी थतुं फळ सर्व हकीकत विस्तारथी आपी छे.

अध्ययन २५ पानुं १९६—जे ब्रह्मचर्यना गुणमां दृढ होय ते ज अष्ट प्रवचनमातानुं पालन करी शके छे, तेथी आ यज्ञिय नामना अध्ययनमा जयघोष अने विजयघोषनी कथाद्वारा ब्रह्मचर्यना गुण बताव्या छे. आ बन्ने ब्राह्मणो हता अने भाइओ हता, तेमा जयघोषे वैराग्य पामी दीक्षा ग्रहण करी छे. पछी केटलेक काळे पोताना भाइ विजयघोषने प्रतिबोध करवा माटे ते जयघोष मुनि वाणारसी नगरीमा पधार्या. ते वखते विजयघोषे यज्ञ प्रारंभ्यो हतो. त्या भिक्षा माटे जयघोष मुनि गया. तेमने नहीं ओळखवाथी ते विप्रे भिक्षा आपी नहीं,

अने कह्यु के—" जेओ वेदने जाणनारा होय, यज्ञना अर्थी होय, द्विज होय, ज्योतिष अने अंगशास्त्रने जाणनार होय, धर्मना पारगामी होय अने जेओ पोताने तथा बीजाने संसारसमुद्रथी तारवामा समर्थ होय, तेमने ज अहीं भिक्षा आपवामा आवे छे " ते सांभळी जयघोष मुनिए तेनो उपकार करवा माटे कह्यु के—" तु वेदना, यज्ञना, नक्षत्रना अने धर्मना मुखने जाणतो नथी, तथा स्व–परनो उद्धार करवामां कोण समर्थ छे ? ते पण तु जाणतो नथी जो कदाच जाणतो हो तो कहे " ते सांभळी उत्तर आपवामा असमर्थ एवा ते ब्राह्मणे बे हाथ जोडी विनयथी मुनिने ज तेनो उत्तर आपवा विनंति करी त्यारे मुनिए विस्तारथी ते सर्वना उत्तर आप्या तेमा ब्राह्मणनु लक्षण आपता प्रसंगने लीधे साधु, ब्राह्मण, मुनि, तापस, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र विगेरेना लक्षणो पण आप्या छे, सर्व ते सांभळी विजयघोषे वैराग्य पामी जयघोष मुनि पासे दीक्षा लीधी। अनुक्रमे बन्ने मोक्ष पाम्या

अध्ययन २६ पानु २०५—ब्रह्मचर्यना गुण यतिमा ज होय छे अने यतिए अवश्य साधु सामाचारी पाळवानी छे, तेथी आ अध्ययनमा साधु सामाचारी बतावी छे ते दश प्रकारनी छे—आवश्यकी १, नैषधिकी २, आपृच्छना ३, प्रतिपृच्छना ४, छंदना ५, इच्छाकार ६, मिथ्याकार ७, तथाकार ८, अभ्युत्थान ९ अने उपसंपदा १० आ दशेनो अर्थ तथा तेनो उपयोग करवाना स्थानो बताव्या छे त्यारपछी ओघसामाचारी कही छे तेमा प्रथम पोरसी अने पादोनपोरसी विगेरे काळमान जाणवानो उपाय [illegible] रात्रिना काळमान जाणवानो उपाय बतावी रात्रि दिवसनी आठ पोरसीमां कई कई पोरसीए शुं शुं काम करवु ? ते बाबत बतावता पडिलेहणा, स्वाध्याय, गोचरी विगेरे क्रियाओनो नियमित काळ बताव्यो छे पछी विस्तारथी दिवस अने रात्रिनु कृत्य बतावता पडिलेहणा, स्वाध्याय, आहार, कायोत्सर्ग अने प्रतिक्रमणनो विधि सविस्तर कह्यो छे

अध्ययन २७ पानुं २१९—साधुनी सामाचारी अशठपणाथी ज पाळी शकाय छे, तेथी आ अध्ययनमा ते वात दृढ करवा माटे गर्ग नामना आचार्यनुं दृष्टात आप्युं छे. तेमा ते सूरि विचारे छे के—" जेम कोइ पुरुष गाडीमा वृषभादिकने जोडी परगाम जवा नीकळे, तेनी गाडीने जोडेला बळद जो गळीया होय तो ते पुरुष ते बळदने मारकूट करी छेवट खेदने ज पामे छे, ए ज रीते अविनीत शिष्योने वारंवार शिक्षा आपता छतां ते कदापि विनीत थता नथी अने उलटा असमाधिनुं कारण थाय छे. तेथी मारे आ अविनीत शिष्योने छोडी अन्यत्र जइ आत्मकार्य साधवुं सारुं छे. " एम विचारी गर्ग मुनि अविनीत शिष्योनो त्याग करी अन्यत्र जइ समाधिपूर्वक संयममार्गमां विचरवा लाग्या. अहीं गळीया बळद विषेनुं दृष्टात घणुं विस्तारथी आप्युं छे अने पछी अविनीत शिष्य उपर तेनो उपनय पण ए ज प्रमाणे उतार्यो छे.

अध्ययन २८ पानुं २२३—शठतानो त्याग करवाथी मोक्ष सुलभ थाय छे, एम जणाववा माटे आ 'मोक्षमार्ग गति' नामनुं अध्ययन कह्युं छे. तेमा मोक्षमार्गना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चार कारणो कह्या छे तेमां पण मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव अने केवळ ए पाच प्रकारे ज्ञान कह्यु छे, ज्ञाननो विषय द्रव्य, गुण अने पर्याय तथा ते द्रव्यादिकना लक्षणो, अने तेना भेद प्रभेद विगेरे आप्या छे. ए ज रीते दर्शननी व्याख्यामा जीव, अजीव, बंध, पुण्य, पाप विगेरे नव तत्त्वोनुं श्रद्धानरूप स्वरूप, निसर्गरुचि, उपदेशरुचि विगेरे समकितना दश भेदो, ते दशेनी विस्तारपूर्वक व्याख्या, परमार्थसंस्तव विगेरे समकितनां लिंग, समकितनुं माहात्म्यं, निःशंकितादिक समकितना आठ आचार, ए विगेरे विषयो वर्णव्या छे. चारित्रनी व्याख्यामा सामायिक विगेरे चारित्रना पाच प्रकार, तेनुं स्वरूप अने तेनो अर्थ विगेरे बताव्युं छे. तथा तपनी व्याख्यामा छ प्रकारनो बाह्य अने छ प्रकारनो आभ्यंतर एम बार प्रकारनो

तप बताव्यो छे

अध्ययन २९ पानु २३२—वीतराग थया विना मोक्षमार्गनी प्राप्ति थइ शकती नथी, तेथी सम्यक्त्वपराक्रम नामनु आ अध्ययन आप्यु छे तेमां संवेग, निर्वेद, धर्मश्रद्धा विगेरे सीतेर (७३) द्वारो कह्या छे ते दरेकनो शब्दार्थ, विस्तरार्थ अने फळ विगेरे विस्तारथी आपता छे तेनां नाम मात्र लखवाथी पण अहीं वधारे विस्तार थइ जाय तेम छे तेथी वाचनारने त्यांथी ज वाचवानी भलामण करवी योग्य जाणे छे तमा वीनी पण घणी वाचतो वर्णवी छे

अध्ययन ३० पानु २६३—तप विना वीतराग एटले कर्मरहित थवातु नथी तेथी आ अध्ययन तपोमार्गगति नामे आप्यु छे तेमा कर्म खपाववा माटे आश्रवरहित थवु जोइए जेम कोइ तळावमांथी पाणी काढी नाखवु होय तो प्रथम तेमा जळ आववाना द्वारो बध करवा जोइए, अने त्यारपछी अदर रहेला जळने शोषण करवानो उपाय करवो जोइए, तेम जीवरूपी तळावमां जळनी जेम भरेला कर्मो खपाववा माटे प्रथम महाव्रतादिकवडे हिंसादिक द्वारो रुधवा अने पछी तपवडे अदरना कर्मोनु शोषण करी शकाय छे आ प्रमाणे अध्ययननो आरभ करी पछी अनशनादिक छ प्रकारनो बाह्य तप आप्यो छे तथा तेना प्रतिभेदो पण सविस्तर आप्या छे, अने त्यारपछी प्रायश्चित्तादिक छ प्रकारनो आभ्यतर तप आप्यो छे छेवट तपनु फळ बताव्यु छे

अध्ययन ३१ पानु २७५—चारित्र विना तप सफळ थतो नथी, तथी आ चरणविधि नामना अध्ययनमां सयममा प्रवृत्ति अने असयमथी निवृत्ति करवा उपदेश आप्यो छे ते प्रसगे त्रण दड, त्रण गारव अने त्रण शल्यनो त्याग, दिव्य, तिर्यंच अने मनुष्ये करेला उपसर्गोनु सहन, चार विकथा, चार कषाय, चार सज्ञा अने बे दुर्ध्याननो त्याग, पाच महाव्रत, पाच इन्द्रियोना विषय, कायिक्यादिक पाच

क्रिया, छ लेश्या, पृथिव्यादिक छ काय अने आहार करवाना छ कारणने विषे यतना, ससृष्टादिक सात प्रकारना पिंडावग्रह ने सात भय, आठ मद, नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, दश प्रकारनो साधुधर्म, श्रावकनी अग्यार प्रतिमा, भिक्षुनी बार प्रतिमा, तेर प्रकारनी क्रिया, चौद प्रकारना जीव, पंदर प्रकारना परमाधार्मिक, सूत्रकृतांगना सोळ अध्ययन, सत्तर प्रकारे संयम, अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य, ओगणीश ज्ञाताध्ययन, असमाधिना वीश स्थानो, एकवीश प्रकारनी शबळक्रिया, बावीश परीषह, त्रेवीश अध्ययनवाळुं सुयगडांग, चोवीश देवो, पचीश भावना, दशाकल्पव्यवहारना छव्वीश उद्देशा, साधुना सत्तावीश गुण, आचारांगना अठ्ठावीश अध्ययन, पापश्रुतना ओगणत्रीश प्रसंगो, मोहना त्रीश स्थानको, सिद्धना एकत्रीश अतिशयो, बत्रीश योगनो संग्रह तथा तेत्रीश आशातना, आटला विषयो लीधा छे.' तेमा उपादेयनुं ग्रहण अने हेयनो त्याग करवा उपदेश आप्यो छे, तथा ते प्रमाणे वर्तनार मोक्षने पामे छे एम तेनुं फळ पण बताव्युं छे.

अध्ययन ३२ पानुं २८७—प्रमादनो त्याग करवाथी ज चारित्र पाळी शकाय छे. तेथी आ प्रमादस्थान नामनुं अध्ययन आप्युं छे. तेमा अविरति, कषाय विगेरे प्रमादना स्थानो तजवा लायक छे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र आदरवा लायक छे. तेनो उपाय सद्गुर्वादिकनी सेवा, पासत्थादिकनो त्याग, स्वाध्याय अने धृति विगेरे छे. आवो उपाय प्राप्त करवा माटे एषणीय आहार, तत्त्वज्ञ शिष्य अने स्त्र्यादिक रहित उपाश्रय सेववानी जरुर छे. ज्ञानादिकनो प्रतिबंध करनार अने दुःखना हेतुरूप मोहादिकनी उत्पत्ति अने तेनो नाश शी रीते थाय ? ए विगेरेनो विस्तारथी उपदेश आप्यो छे. राग, द्वेष अने मोहनो नाश करवाना उपाय बतावता दुग्धादिक विकृतिना त्यागपूर्वक अल्पाहार करवानो उपदेश आप्यो छे. स्त्रीसंगथी थता दोष अने ते वर्जवाथी थता गुण देखाड्या छे, इंद्रियोना विषयोनो त्याग बताववा माटे पाचे विषयोनुं पृथक् पृथक् स्वरूप अने तेथी थता दोषो विस्तारथी आप्या छे. आ विषयना उपदेशमा राग, द्वेष, मोह अने कषायनुं स्वरूप

अने तेथी थता दोषो बताव्या छे छेवट आ सर्व प्रमादना स्थानोथी रहित थयेलो जीव मोक्षने पामे छे एम कही अध्ययननी समाप्ति करी छे

अध्ययन ३३ पानु ३१०—प्रमाद सेववाथी कर्मबंध थाय छे, तेथी आ कर्मप्रकृति नामना अध्ययनमा कर्मनु स्वरूप बताव्यु छे तेमा प्रथम ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म अने ते दरेकनी उत्तरप्रकृति प्रभेद सहित कही छे पछी कर्मना प्रदेशाग्र, क्षेत्र, काळ अने भाव विस्तारथी बताव्या छे

अध्ययन ३४ पानु ३१६—कर्मनी स्थिति लेश्याने आधीन होवाथी आ अध्ययनमा लेश्यानु स्वरूप कह्यु छे तेमा प्रथम लेश्याना नाम कही पछी अनुक्रमे तेना वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थान, स्थिति, गति अने आयुष्य बताव्या छे तेमा चारे गतिना जीवोने आश्री लेश्यानी स्थिति विस्तारथी कही छे

अध्ययन ३५ पानु ३२८—शुभ लेश्या गुणवाळा साधुने ज होइ शके छे तेथी आ अनगारमार्गगति नामना अध्ययनमा साधुना गुणो बताव्या छे तेमा प्रथम पच महाव्रतो पाळवानु कह्यु छे पछी कामरागने जागृत करनार मनोहर उपाश्रयमा रहेवानो निषेध कर्यो छे, अने स्मशान तथा शून्यगृह जेवा स्थानमा रहेवानु कह्यु छे घर कराववा विगेरे कार्यमा त्रस अने स्थावर जीवोनी हिंसा होवाथी निर्ग्रन्थे प्रवृत्ति करवी नहीं जीवहिंसाना कारणथी ज पचन-पाचन क्रियामा, अग्नि सळगाववामा अने क्रय-विक्रय करवामा नहीं प्रवर्ती शुद्ध भिक्षा-चर्याथी ज निर्वाह करवो, शरीरनी ममतानो त्याग करी शुक्लध्यानमा ज रहेवु, विगेरे उपदेश आप्यो छे

अध्ययन ३६ पानु ३३३—साधुगुण सेववामा जीवाजीवनु स्वरूप जाणवु आवश्यक छे, तेथी आ जीवाजीवविभक्ति नामना

अध्ययनमा जीव अने अजीव एवा बे विभाग बतावता प्रथम लोक अने अलोक नामना बे विभाग बताव्या छे. पछी अजीवनी द्रव्य क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. तेमा द्रव्यथी अजीवनी प्ररूपणा करता रूपी अजीव द्रव्यना चार प्रकार अने अरूपी अजीव द्रव्यना दश प्रकार सविस्तर बताव्या छे. तथा भावथी प्ररूपणा करता स्कंध अने परमाणुना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान ए पाच प्रकारना परिणाम प्रभेद सहित कह्या छे. त्यारपछी जीवनी प्ररूपणा करी छे. तेमां प्रथम संसारी अने सिद्ध एम जीवना बे प्रकार कही पछी सिद्धना पंदर भेद, तेमनी अवगाहना, क्षेत्र, तेमने रहेवानुं स्थान, सिद्धशिलानुं स्वरूप, सिद्धोनी अवगाहना विगेरे बताव्युं छे. पछी संसारी जीवनुं स्वरूप कहेतां तेमना त्रस अने स्थावर एम बे भेद बताव्या छे. पछी सूक्ष्म अने बादर, तेमज पर्याप्त अने अपर्याप्त पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय ए त्रण भेद स्थावरना बतावी तेमना पण भेद प्रभेद विगेरे बताव्या छे. तेमा ते दरेकनी द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. त्यारपछी तेजस्काय, वायुकाय (गतित्रस) अने उदार एटले स्थूळ एम त्रण प्रकारना त्रस बताव्या छे. तेउवाउना पण सूक्ष्म बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त भेदो बतावी तेमना पण भेद, प्रभेद बतावतां द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. ते प्रसंगे तेमनुं दरेकनुं आयुष्य, कायस्थिति, अंतर अने वर्णादिक पृथक् पृथक् स्वरूप बताव्युं छे. पछी द्वींद्रिय विगेरे उदार त्रसकाय सूक्ष्म नहीं होवाथी तेमना पर्याप्त अने अपर्याप्त ए बे ज भेद बताव्या छे. तेमा द्वींद्रिय, त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रियनुं आयुष्य, स्थिति, अंतर विगेरे बताव्युं छे. पंचेंद्रियनी प्ररूपणामा नारकी तिर्यंच मनुष्य अने देव ए चारेना भेद, प्रभेद, आयुष्य, कायस्थिति अने वर्णादिक पृथक् पृथक् बताव्युं छे. आ सर्व जीवाजीवनुं स्वरूप बतावी उपदेश आप्यो छे के—आ स्वरूप जाणीने मुनिए संयमने विषे रति करवी, अने घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्यायनुं पालन करी छेवट संलेखना करवी." इत्यादिक उपदेश आपी प्रसंगने लीधे संलेखनानो विधि बताव्यो छे, त्यारपछी कंदर्पादिक पाच अशुभ

भावनानो त्याग करवा कह्यु छे, छेवट आ छत्रीश अध्ययननी प्ररूपणा करी श्रीवर्धमान स्वामी मोक्षे गया एम कही आ ग्रंथनी समाप्ति करी छे

आ सूत्रमा चारित्रधर्म संबंधी घणा तत्त्वो बताव्या छे, पण देशविरति धर्म बताव्यो नथी तथी आ सूत्र चारित्रवान मुनिने ज भणावा गणावा योग्य छे आ सूत्रनो समावेश कथानुयोगमा होवाथी रसिक कथाओ सहित धर्मोपदेश आप्यो छे टीकाकार महाराजे पण प्रसंगोपात रसिक कथाओ सहेली भाषामा आपी छे, तेथी वाचनार तथा सांभळनारने आनंद साथे धर्मनु ज्ञान आपे एवु आ सूत्र छे

आ सूत्रना अमे बे विभाग कर्या छे पहेलामा १५ अने बीजामा २१ अध्ययन आपेला छे बीजो विभाग पहेला करता मोटो थयो छे छेवटे आ सूत्रना छत्रीश अध्ययनो उपर छत्रीश सज्झायो छे, ते पण आपी छे ते दरेके कंठ करवा जेवी छे त्यारपछी मदद करनारना नाम अमर राखी आ विभाग संपूर्ण कर्यो छे आशा छे के उत्तम जीवो आनु पठन पाठनादिक करी आ सूत्र छपाववानो अमारो प्रयास सफळ करशे अने आवा ज्ञानोद्धारना कार्यमा व्यय करीने चपळ लक्ष्मीनु फळ मेळवा करशे

बने विभागना प्रुफो सुधारवामा यथाशक्ति प्रयास कर्यो छे छता दृष्टिदोष के मतिमांद्यादिकना कारणथी काइ स्खलना जोवामा आवे, ते शिष्टजनोए सुधारीने वांचवा अने अमने जणावी जणाववा नम्र विज्ञप्ति छे इति शम्

संवत १९८१ दीपोत्सवी
श्री महावीर निर्वाण कल्याणक

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा
भावनगर

बंने विभागमां आवेली कथाओनी अनुक्रमणिका.

अध्ययन ११-१५-१६-१७-२४-२६-२८-२९-३०-३१-३२-३३
३४-३५-३६ आ पदर अध्ययनमां कथा भाग बिल्कुल नथी.



श्री उत्तराध्ययनसूत्र भाषांतर.

विभाग बीजो

—※—

अथ ब्रह्मचर्यगुप्ति नामनु सोळमु अध्ययन १६

पंदरमा अध्ययनमां साधुना गुणो कह्या. ते गुणो तो जे ब्रह्मचर्यमां स्थिर होय तेनेज वरवथी समवे छे अने ब्रह्मचर्य पण ब्रह्मगुप्तिने जाणवाथी ज पाळी शकाय छे तेथी आ अध्ययनमां ते ब्रह्मगुप्तिओनु ज स्वरूप कहे छे. ए संबंधथी आवेला आ अध्ययननु प्रथम सूत्र आ प्रमाणे—

सुअं मे आउसं तेण भगवया एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरिज्जा ॥ १ ॥

अर्थ—श्री सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के—(आउसं) हे आयुष्मान् ! (मे) में (सुयं) सांभळ्युं छे, के (तेणं भगवया) ते एटले ज्ञातकुळरूपी समुद्रने विकास करवामां चंद्र समान भगवान श्री वर्धमान जिनेश्वरे (एवं) आ प्रमाणे (अक्खाय) कह्युं छे. शुं कह्युं छे ? ते ज कहे छे—(इह) आ जिनप्रवचनने विषे (खलु) निश्चे (थेरेहिं भगवंतेहिं) भगवंत एटले पूज्य एवा स्थविर एटले गणधरादिके (दस) दश (बंभचेरसमाहिट्ठाणा) ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो (पण्णत्ता) कह्यां छे. तात्पर्य ए छे के—आ बाबत स्थविरो पोतानी बुद्धिथी कहे छे एम नथी, परंतु भगवान श्री वर्धमानस्वामीए पण आ ज प्रमाणे कह्युं छे ते में सांभळ्युं छे. तेथी आ बाबतमां अनास्था—अश्रद्धा करीश नहीं.

हवे ब्रह्मचर्यनां स्थानो केवां छे ? ते कहे छे—(जे) जे ब्रह्मचर्यनां स्थानोने (भिक्खू) साधु जे ते (सोच्चा) सूत्रथी सांभळीने तथा (निसम्म) अर्थथी धारीने (संजमबहुले) बहुल एटले उत्तरोत्तर स्थाननी प्राप्तिवडे घणो छे संयम जेने एवो थाय छे, तेथी करीने ज (संवरबहुले) घणो छे संवर एटले आश्रवद्वारनो निरोध जेने एवो थाय छे, तेथी करीने ज (समाहिबहुले) घणी छे समाधि एटले मननी स्वस्थता जेने एवो थाय छे, तथा (गुत्ते) मन, वचन अने कायावडे गुप्त थाय छे, तेथी करीने ज (गुत्तिंदिए) गुप्त छे—वश छे इंद्रियो जेनी एवो थाय छे, अने तेथी करीने ज (गुत्तबंभयारी) नव गुप्तिने सेववाथी गुप्त एवा ब्रह्मचर्यनुं आचरण करवाना स्वभाववाळो थइने (सया) सदा (अप्पमत्ते) प्रमाद रहित थयो सतो (विहरिज्जा) विहार करे छे—विचरे छे.

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा निसम्म ॥ १ ॥

सजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबभयारी सया अप्पमत्ते विहरिज्जा ॥ २ ॥

अर्थ—जंबूस्वामी गुरु महाराज सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे स्वामी ! (थेरेहिं भगवतेहिं) स्थविर भगवतोए (कयरे खलु ते) कया निश्चे ते (दस) दश (बंभचेरसमाहिट्ठाणा) ब्रह्मचर्यनी समाधिना स्थानो (पण्णत्ता) कहेला छे ? के (जे) जे स्थानोने (भिक्खू) साधु (सोच्चा) सूत्रथी सांभळीने तथा (निसम्म) अर्थथी अवधारीने (सजमबहुले) घणा सयमवाळो (सवरबहुले) घणा सवरवाळो (समाहिबहुले) घणी समाधिवाळो (गुत्ते) त्रण गुप्तिथी गुप्त (गुत्तिंदिए) इन्द्रियोनी गुप्तिवाळो तथा (गुत्तबभयारी) नव गुप्ति युक्त ब्रह्मचर्यनुं आचरण करवाना स्वभाववाळो थइने (सया) सदा (अप्पमत्ते) प्रमाद रहित (विहरिज्जा) विचरे छे २

श्री सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने उत्तर आपे छे के—

इमे खलु ते थेरेहि भगवतेहि दस बभचेरसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म सजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबभयारी सया अप्पमत्ते विहरिज्जा ॥ ३ ॥

अर्थ—स्थविर भगवतोए आ निश्चे ते दश ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो कह्यां छे, के जे स्थानोने सांभळीने साधु सदा अप्रमत्तपणे विचरे छे (मध्यना शब्दोनो अर्थ उपर प्रमाणे समजी लेवो) ३

हवे ते ब्रह्मचर्यनी समाधिनां दश स्थानो बतावे छे.

तं जहा—विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गंथे, नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पाजिज्जा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा, केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा नो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे ॥ ४ ॥

अर्थ—(तं जहा) ते आ प्रमाणे—(विवित्ताइं) विविक्त एटले स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित एवां (सयणासणाइं) शय्या, आसन अने उपलक्षणथी स्थानोने (सेविज्जा) जे सेवे, (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ एटले साधु कहेवाय छे. आ प्रमाणे अन्वयवडे कह्युं. हवे अल्पमतिवाळा शिष्यने सारी रीते बोध थवा माटे आ ज अर्थने व्यतिरेकवडे कहे छे.—(इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं) स्त्री, पशु अने नपुंसक सहित एवां (सयणासणाइं) शय्या, आसन अने स्थानने (सेवित्ता) जे सेवनार होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ (नो हवइ) न होय एटले न कहेवाय. आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी शिष्य कहे छे के—(तं कहं) आ तमे कह्युं ते शी रीते ? (इति चे) आ प्रमाणे जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे के—(खलु) निश्चे (इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं) स्त्री, पशु अने नपुंसक सहित एवां शयन, आसन अने स्थानने (सेवमाणस्स) सेवता एवा (बंभयारिस्स) अने ब्रह्मचारी एवा पण (निग्गंथस्स) निर्ग्रंथना (बंभचेरे)

ब्रह्मचर्यने विषे बीजा मनुष्योने (सका वा) शका थाय, एटले के आवा प्रकारना शयन, आसनने सेवनार आ साधु ब्रह्मचारी हशे के नहीं होय ? एम बीजाओने शका थाय छे अथवा तो साधुने पोताने ज पोताना ब्रह्मचर्यने विषे शका थाय छे एटले के स्त्री विगेरेना दर्शनथी तेनापर गाढ अनुराग-प्रीति उत्पन्न थाय छे अने तेथी करीने समग्र जिनेश्वरनो उपदेश वीसरी जइ आवी भावना थाय छे के—

" सत्य वच्मि हित वच्मि, सार वच्मि पुन पुन । असिमन्नसारे ससारे, सार सारङ्गलोचना ॥ "

" हु सत्य कहु छु, हित कहु छु अने वारवार सारने एटले तत्त्वने कहु छु के आ असार ससारमां मृगलोचना (स्त्री) ज सारभूत छे "

आवा रागीजनोना वचननी भावना भावतां मिथ्यात्वना उदयथी कदाच " स्त्रीसेवनमां जे दोष तीर्थंकरोए कह्यो छे ते दोष सत्य नहीं होय " ए प्रमाणे तेने पोताने ज शका उत्पन्न थाय अथवा (कक्षा वा) कांक्षा उत्पन्न थाय एटले स्त्रीविषयनी इच्छा उत्पन्न थाय ते आ प्रमाणे —

" प्रियादर्शनमेवास्तु, किमन्यैर्दर्शनान्तरै । निर्वाण प्राप्यते येन, सरागेणापि चेतसा ॥ "

" अमारे प्रियानु दर्शन ज हो, बीजां (बोद्धादिक) दर्शनोए करीने शु फळ छे ? कारण के जे प्रियाना दर्शनवडे करीने सरागी चित्ते पण निर्वाण पमाय छे "

१ मोक्ष बीना पमगां सुख

आवां नास्तिकोनां दर्शननी अभिलाषा थवाथी स्त्रीनी इच्छा थाय छे. (वितिगिच्छा वा) अथवा " आवी चारित्रनी कष्टकारी क्रिया करवाथी तेनुं कांइ फळ मळशे के नहीं ?" आवी फळ आश्री शंका थाय छे. तेथी आ "स्त्री विगेरेनुं सेववुं ज सारुं छे." एम धारे छे. ए प्रमाणे विचिकित्सा एटले फळनो संदेह (समुप्पज्जिज्जा) उत्पन्न थाय छे. (भेअं वा लभेज्जा) अथवा भेद एटले चारित्रना विनाशने पामे छे. (उम्मायं वा पाउणिज्जा) अथवा उन्मादने एटले कामनी आतुरताने–पराधीनताने पामे छे. (दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा) अथवा लांबो काळ पहोंचे एवा रोग एटले दाहज्वरादिक अने आतंक एटले तत्काळ मरण करनारा शूळ विगेरे व्याधिओ शरीरने विषे उत्पन्न थाय छे. कामी मनुष्योना शरीरमां कामनी दश अवस्थाओ थाय छे ते आ प्रमाणे.—

" प्रथमे जायते चिन्ता, द्वितीये द्रष्टुमिच्छति । तृतीये दीर्घनिःश्वासः, चतुर्थे ज्वरमादिशेत् ॥
पञ्चमे दह्यते गात्रं, षष्ठे भक्तं न रोचते । सप्तमे च भवेत्कम्प, उन्मादश्चाष्टमे तथा ॥
नवमे प्राणसंदेहो, दशमे जीवितं त्यजेत् । कामिनां मदनोद्वेगा, दश संजायन्ते ध्रुवम् ॥ "

" कामीजनोने स्त्रीना दर्शनथी आ दश कामनी अवस्थाओ उत्पन्न थाय छे.—प्रथम तेने मळवा विषेनी चिंता–विचार थाय छे १, पछी ते स्त्रीने जोवानी इच्छा थाय छे २, पछी तेना विरहने लीधे दीर्घ निःश्वास मूके छे ३, पछी तेने परिणामे ज्वर आवे छे ४, पछी शरीर बळवा लागे छे ५, पछी भोजनपर अरुचि थाय छे ६, पछी शरीरे कंप थाय छे ७, पछी उन्माद थाय छे ८, पछी प्राणना संदेहमां आवी पडे छे ९ अने छेवट जीवितनो त्याग पण कोइक करे छे १०."

(केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भसिज्जा) अथवा तो केवळी भगवाने प्ररूपेला चारित्रधर्म थकी भ्रष्ट थाय छे केमके कोइक जीव क्लिष्ट कर्मना उदयथी धर्मभ्रष्ट पण थाय छे (तम्हा) तेथी करीने (इत्थिपसुपडगससत्ताइ) स्त्री, पशु अने नपुसकना सबधवाळां (सयणासणाइ) शयन, आसन अने स्थानने (सेविता) जे सेवनार होय (से) ते (निग्गथे) निर्ग्रंथ (नो हवइ) न होय-न कहेवाय आ ब्रह्मचर्यनु पहेलु समाधिस्थान जाणु १. ४

हवे बीजु समाधिस्थान कहे छे—

णो इत्थीण कह कहित्ता हवइ से निग्गथे, त कहमिति चे ? आयरियाह—निग्गथस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स बभयारिस्स बभचेरे सका वा कखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअ वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिअ वा रोगायक हविज्जा केवलिपणत्ताओ वा धम्माओ भासिज्जा, तम्हा खलु निग्गथे नो इत्थीण कह कहिज्जा ॥ २–५ ॥

अर्थ—(इत्थीण) एकली स्त्रीओनी पासे अथवा स्त्री सबधी (कह) कथाने (कहित्ता) जे कहेनार होय (से) ते (निग्गथे) निर्ग्रंथ (णो हवइ) न होय, एटले के केवळ स्त्रीओनी पासे ज धर्मोपदेश करवो नहीं अथवा स्त्रीओनी जाति कुळ, वेष अने रूप विगरे सबधी, तथा पद्मिनी, चित्रणी, हस्तिनी अने शखिनी तथा मुग्धा, मध्या अने प्रौढा तथा कर्णाटक आदि देशमां उत्पन्न थयेली स्त्रीओ आवी आवी होय छे इत्यादिक स्त्री सबधी कथा करवी नहीं जो करे तो ते साधु न

कहेवाय. (तं कहं) तमे कहुं ते शी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरियाह) आचार्य कहे छे के—(खलु) निश्चे (इत्थीणं) एकली स्त्रीओ पासे कथा करतां अथवा स्त्री संबंधी (कहं कहेमाणस्स) कथाने कहेता एवा (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा) हुं आ स्त्रीने सेवुं के न सेवुं ? इत्यादिक शंका उत्पन्न थाय छे. इत्यादिक सर्व उपर बताव्या प्रमाणे हानि थाय छे. ते पाठनो अर्थ उपर प्रमाणे अहीं पण करवो. छेवटमां (तम्हा खलु निग्गंथे) ते कारण माटे निश्चे साधुए (नो इत्थीणं कहं कहिज्जा) एकली स्त्रीओनी पासे कथा करवी नहीं अथवा स्त्री संबंधी कथा कहेवी नहीं. आ ब्रह्मचर्यनुं बीजुं समाधिस्थान कह्युं. २. ५.

हवे त्रीजुं समाधिस्थान कहे छे.—

णो इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा, केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागए विहरिज्जा ॥ ३—६ ॥

अर्थ—(इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीओनी साथे (सन्निसिज्जागए) एक आसन पर रह्यो थको (विहरित्ता) स्थिति करनार

–साथे बेसनार जे होय (से) ते (निग्गंथे) साधु (णो हवइ) न होय–न कहेवाय. अहीं सम्प्रदाय एवो छे के—जे आसन उपर प्रथम स्त्री बेठली होय, ते आसन उपरथी ते स्त्रीना उठ्या पछी बे घडी जाय त्यारे ज ते साधुने बेसवा योग्य थाय छे (त कहं) ते शी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे (खलु) निश्चे (इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीओनी साथे (सन्निसिज्जागयस्स) एक आसन पर रहेला–बेठेला (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे संका वा) ब्रह्मचर्यने विषे शंका उत्पन्न थाय विगेरे आलावानो अर्थ पूर्वनी जेम जाणी लेवो छेवट (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) साधु (इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीओनी साथे (सन्निसिज्जागए) एक आसन पर रह्यो थको (नो विहरिज्जा) न विचरे–न बेसे आ त्रीजुं समाधि स्थान कह्युं ३–६

हवे चोथुं समाधिस्थान कहे छे—

णो इत्थीण इंदिआइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएत्ता निज्झाएत्ता भवति से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह–निग्गंथस्स खलु इत्थीण इंदिआइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स निज्झाएमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा जाव केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीण इंदिआइं जाव निज्झाएज्जा ॥ ४–७ ॥

अर्थ—(इत्थीणं) स्त्रीओनां (इंदिआइं) नेत्रादिक इंद्रियोने. केवां इंद्रियोने ? (मणोहराइं) मनोहर एटले जोवा मात्रथी ज मनने आकर्पण करनारां तथा (मणोरमाइं) मनोरम एटले दर्शन कर्या पछी चिंतव्या थका मनने आनंद आपनारां एवां इंद्रियोने (आलोएत्ता) कांइक जोइने तथा (निज्झाएत्ता) अत्यंत जोइने अथवा निध्याता एटले जोया पछी " अहो ! ते स्त्रीना नेत्रनी सुंदरता अने नासिकानी सरळता केवी छे ? इत्यादिक विचार करनार जे होय (से) ते (निग्गंथे) साधु (णो भवति) न होय (तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे—(खलु) निश्चे (इत्थीणं) स्त्रीओनां (इंदिआइं मणोहराइं मणोरमाइं) जोवाथी मननुं आकर्पण करनार अने जोया पछी मनने आनंद आपनार इंद्रियोने (आलोएमाणस्स) कांइक जोता एवा अने (निज्झाएमाणस्स) अत्यंत जोता एवा अथवा ध्यान करता एवा (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे संका वा) ब्रह्मचर्यने विषे शंकादिक दोष उत्पन्न थाय इत्यादिक पूर्वनी जेम जाणवुं. छेवट (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) साधु (इत्थीणं) स्त्रीओनां (इंदिआइं जाव) मनोहर अने मनोरम एवां इंद्रियोने यावत् (नो निज्झाएज्जा) न जुए–न ध्यान करे. आ चोथुं समाधिस्थान थयुं. ४–७.

हवे पांचमुं समाधिस्थान कहे छे.—

णो निग्गंथे इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तिंतरंसि वा, कुइअसद्दं वा, रुइअसद्दं

वा, गीअसद्द वा, हसिअसद्द वा, थणिअसद्द वा, कंदिअसद्द वा, विलविअसद्द वा सुणित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे ? आयरिआह–निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव विलविअसद्द वा सुणमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव सुणमाणो विहरेज्जा ॥ ५–८ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधु (कुड्डंतरंसि वा) पथ्थर अने माटी विगेरेथी बनावेला कुड्य–भींतने आंतरे–ओथे रहीने, अथवा (दूसंतरंसि वा) दूष्य एटले वस्त्रना पडदाने आंतरे रहीने अथवा (भित्तिंतरंसि वा) पाकी इंट अने चूना विगेरेथी बनावेली भींतने आंतरे रहीने (इत्थीणं) स्त्रीओना (कुइअसद्द वा) कूजित शब्द एटले संभोग समये कोयल विगेरे पक्षीनी जेवा थता शब्दने अथवा (रुइअसद्द वा) रतिकलहादिकमां थता रुदित शब्दने अथवा (गीअसद्द वा) पंचम विगेरे गीतना शब्दने अथवा (हसिअसद्द वा) हसवाना शब्दने अथवा (थणिअसद्द वा) रति समयमां थयेला मेघनी गर्जना जेवा शब्दने अथवा (कंदिअसद्द वा) पतिना विरहने लीधे करेला आक्रंदना शब्दने अथवा (विलविअसद्द वा) भर्तांना गुणो संभारी संभारीने करेला विलापना शब्दने (सुणित्ता) सांभळनार जे होय (से) ते (निग्गंथे) साधु (नो हवइ) न होय–न कहेवाय (तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे—(खलु) निश्चे (कुड्डंतरंसि वा) प्रथम कहेला कुड्य विगेरेने आंतरे रहीने (इत्थीणं) स्त्रीओना पूर्वे कहेला कूजित

विगेरे यावत् (विलविअसद्दं वा) विलापना शब्दने (सुणमाणस्स) सांभळता (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा) शंका विगेरे दोषो उत्पन्न थाय, यावत् केवळीए प्ररूपेला धर्मथकी भ्रष्ट थाय. (तम्हा) ते कारण माटे (खलु) निश्चे (निग्गंथे) साधु (कुडुंतरंसि वा) कुड्य विगेरेने आंतरे रहीने (इत्थीणं) स्त्रीओना कूजित विगेरे शब्दने यावत् विलापना शब्दने (सुणमाणो) सांभळतो थको (नो विहरेज्जा) न विचरे–न रहे. कारण के स्त्रीओना कामोद्दीपक शब्दने जे सांभळे ते साधु कहेवाय नहीं. आ पांचमुं समाधिस्थान कह्युं. ५–८.

हवे छट्ठुं समाधिस्थान कहे छे.—

नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरित्ता भवइ, तं कहमिति चे? आयरिआह— निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरेज्जा ॥ ६–९ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधु (इत्थीणं) स्त्रीओ संबंधी एटले स्त्रीओनी साथे (पुव्वरयं) पूर्वे एटले गृहस्थावस्थाने विषे जे रत एटले संभोग कर्यो होय तेने तथा (पुव्वकीलिअं) पूर्व–गृहस्थावस्थाने विषे स्त्रीओ साथे जे द्यूतादिक क्रीडा करी होय तेने (अणुसरित्ता) स्मरण करनार (नो भवइ) न थाय अर्थात् जो ते स्मरण करे तो ते साधु न कहेवाय.

(त कह) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे -(खलु) निश्चे (इत्थीण) स्त्रीओ सबधी (पुव्वरय) पूर्वे रत कर्युं होय-काम सेवन कर्युं होय तेने तथा (पुव्वकीलिअ) पूर्वे काम क्रीडा करी होय तेने (अणुसरेमाणस्स) स्मरण करनार (निग्गथस्स) साधुने (बभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (सका वा) शंका विगेरे दोषो थाय यावत् (धम्माओ भसिज्जा) धर्मथी भ्रष्ट थाय (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गथे) साधु (इत्थीण) स्त्रीओ सबधी (पुव्वरय) पूर्वे करेला संभोगने तथा (पुव्व कीलिअ) पूर्वे करेली द्यूतादिक क्रीडाने (नो अणुसरज्जा) स्मरण न करे आ छठ्ठु समाधिस्थान कह्यु ६-९

हवे सातमु समाधिस्थान कहे छे—

णो पणीअ आहारमाहारित्ता हवइ से निग्गथे, त कहमिति चे ? आयरिआह–निग्गथस्स खलु पणीअ पाणभोअण आहारमाणस्स बभयारिस्स बभचेरे सका वा कखा वा जाव केवलिप ण्णत्ताओ वा धम्माओ भसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गथे पणीअ आहारमाहरेज्जा ॥ ७–१० ॥

अर्थ—(पणीअ) प्रणीत एटले जेमांथी घी विगेरेना बिंदु झरता होय तेवा अने उपलक्षणथी शरीरना धातुओने पुष्ट करे तेवा (आहार) आहारने (आहारित्ता) आहार करनार–भोजन करनार (णो हवइ) जे न होय (से) ते (निग्गथे) निर्ग्रंथ कहेवाय, शेष सूत्रनो अर्थ प्रसिद्ध छे आ सातमु समाधिस्थान कह्यु ७–१०

२

हवे आठमुं समाधिस्थान कहे छे—

नो अइमायाए पाणभोअणं आहारइत्ता हवइ से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोअणं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोअणं भुंजिज्जा ॥ ८—११ ॥

अर्थ—(अइमायाए) अतिमात्रा वडे एटले पुरुषनो आहार बत्रीश कवळ प्रमाण अने स्त्रीनो अठ्ठावीश कवळ प्रमाण कह्यो छे, तेथी अधिक प्रमाणवडे (पाणभोअणं) पान भोजनने (आहारइत्ता) आहार करनार (नो हवइ) जे न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. शेष सूत्रनो अर्थ प्रसिद्ध छे. आ आठमुं समाधिस्थान थयुं ८–११.

हवे नवमुं समाधिस्थान कहे छे.—

नो विभूसाणुवाई हवई से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—विभूसावत्तिए खलु विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अहिलसणिज्जे हवइ, तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे विभूसाणुवाई सिआ ॥ ९—१२ ॥

अर्थ—(विभूसाणुवाई) विभूषानुपाती एटले शरीरने साफ राखी शोभा करनार (नो हवई) जे न होय (से) ते (निग्गथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे (त कह) ते एम केम ? (इति चे) एम जो शिष्य शका करे तो (आयरिआह) आचार्य महाराज कहे छे के-(विभूसावत्तिए) विभूषा करवाना स्वभाववाळो (खलु) निश्चे (विभूसिअसरीरे) स्नानादिक वडे विभूषित कर्युं छे शरीर जेणे एवो साधु (इत्थिजणस्स) स्त्रीजनने (अहिलसणिज्जे) अभिलाष करवा लायक एटले प्रार्थना करवा लायक (हवइ) थाय छे (तओ ण) तेथी करीने (इत्थिजणेण) स्त्रीजने (अभिलसिज्जमाणस्स) अभिलाष कराता (बभयारिस्स) ब्रह्मचारी एवा (तस्स) तेना (बभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (सका वा) शका थाय, अथवा (कखा वा) कांक्षा थाय, इत्यादि (जाव) यावत् (धम्माओ भसिज्जा) धर्मथी भ्रष्ट थाय, (तम्हा) ते कारण माटे (खलु) निश्चे (निग्गथे) निर्ग्रंथ (विभूसाणुवाई) शरीरनी विभूषा करनार (नो सिआ) न थाय आ नवमु समाधिस्थान कह्यु ६-१°

हवे दशमु समाधिस्थान कहे छे —

नो सद्दरूवरसगधफासाणुवाई हवइ से निग्गथे, त कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गथस्स खलु सद्दरूवरसगधफासाणुवाइस्स बभयारिस्स बभचेरे सका वा कखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअ वा लभेज्जा, उम्माद वा पाउणिज्जा, दीहकालिअ वा रोगायक हविज्जा, केवलि

पण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई हवइ से निग्गंथे, दसमे बंभचेरसमाहिट्ठाणे हवइ ॥ १०–१३ ॥

अर्थ—(सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श तेने अनुसरनार (नो हवइ) जे न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. अर्थात् हसवुं आवे तेवा शब्द, स्रीनुं स्वरूप, मधुरादिक रस, चंदनादिकनो गंध अने सुखकारक कोमळ शरीरनो स्पर्श ए पांचे विषयोनो उपभोग करे नहीं. (तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे के—(खलु) निश्चे (सद्दरूवरसगंधफासाणुवाइस्स) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शनो उपभोग करनार (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी एवा (निग्गंथस्स) निर्ग्रंथने (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा) शंका, के कांचा के विचिकित्सा उत्पन्न थवानो संभव छे. (भेअं वा लभेज्जा) अथवा चारित्रना विनाशने पामे. (उम्मादं वा पाउणिज्जा) अथवा उन्मादने पामे. (दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा) अथवा दीर्घकाळ सुधी पहोंचे तेवा ज्वरादिक रोगो अने तत्काळ मृत्यु करनारा शूळादिक आतंको तेने उत्पन्न थाय छे. (केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा) अथवा केवळी भगवाने प्ररूपेला धर्मथी भ्रष्ट थाय छे. (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) जे साधु (सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शने भोगवनार (नो हवइ) न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. (दसमे बंभचेरसमाहिट्ठाणे हवइ) आ दशमुं ब्रह्मचर्यनुं समाधिस्थान कह्युं. १०–१३.

भवति इत्थ सिलोगा, त जहा—

अर्थ—(इत्थ) अहीं एटले उपर कहेला विषय उपर (सिलोगा) श्लोको (भवति) छे (त जहा) ते आ प्रमाणे —

जं विवित्तमणाइण्णं, रहिअं थीजणेण यं । बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥

अर्थ—(ज) जे उपाश्रय (विवित्त) विविक्त एटले एकांतमां रहेलो होय अर्थात् स्त्री आदिकना रहेवासथी रहित होय, तथा जे (अणाइण्ण) अनाकीर्ण एटले काइ पण प्रयोजनवडे ज्यां स्त्री विगेरे आवता न होय अथवा जे उपाश्रय गृहस्थीओना घरथी दूर होय, तथा (थीजणेण य) समय विना वदन श्रवणादिक निमित्ते जता आवता स्त्रीजनवडे अने च शब्द छे माटे पशु अने नपुंसकवडे (रहिअ) रहित होय तेवा (आलयं तु) आलयने एटले उपाश्रयने साधु (बंभचेरस्स) ब्रह्मचर्यना (रक्खट्ठा) रक्षणने माटे (निसेवए) सेवे एटले तेवा उपाश्रयमां साधुए रहेवु योग्य छे १

मणपल्हायजणणि, कामरागविवड्ढणि । बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त-आसक्त एवो (भिक्खू) साधु (मणपल्हायजणणि) चित्तने आह्लाद उत्पन्न करनारी तथा (कामरागविवड्ढणि) कामरागने एटले विषयाभिलापने वधारनारी (थीकहं तु) एवी स्त्री-कथाने (विवज्जए) वर्जे-त्याग करे २

सँमं च संथँवं थीँहिं, संकँहं चँ अँभिक्खणं। बंभचेररओ भिक्खू, निचसो पँरिवज्जए ॥ ३ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ भिक्खू) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (थीहिं) स्त्रीओनी (समं च) साथे (संथवं) संस्तवने एटले एक आसन पर बेसीने परिचय करवो तेने (च) तथा (अभिक्खणं) वारंवार (संकहं) ते स्त्रीओनी साथे कथाने (निचसो) सर्वदा (परिवज्जए) वर्जे. ३.

अँगपच्चंगसंठाणं, चाँरुल्लविअपेहिअं। बंभचेररओ थीँणं, चँक्खुगिज्झं विवँज्जए ॥ ४ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (थीणं) स्त्रीओ संबंधी (अंगपच्चंगसंठाणं) मस्तकादिक अंगो अने स्तनादिक उपांगोना संस्थानने एटले आकारने तथा (चारुल्लविअपेहिअं) मनोहर उल्लपित-वचन अने प्रेक्षित एटले कटाक्षपूर्वक जोवुं तेने (चक्खुगिज्झं) चक्षुए ग्रहण कर्यु सतुं एटले नेत्रवडे जोतामां आवे तो तेने (विवज्जए) वर्जे. एटले के नेत्र होवाने लीधे रूपनुं जोवुं अवश्य थाय ज छे. परंतु नजरे पडे के तरत त्यांथी दृष्टि खेंची लेवी, पण रागना वशथी वारंवार तेनी सन्मुख जोया करवुं नहीं. कह्युं छे के—

" अशक्यं रूपमद्रष्टुं, चक्षुर्गोचरमागतम् । रागद्वेषौ तु यौ तत्र, तौ बुधः परिवर्जयेत् " ॥

" नेत्रना विषयमां आवेलुं रूप न जोवुं ए तो अशक्य छे, परंतु ते जोतामां जे राग के द्वेष थाय छे, तेनो पंडितो त्याग करवानो छे. " ४.

कुइअं रुइअं गीअं, हसिअं थणिअकंदिअं । बंभचेररओ थीणं, सोअगिज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (थीणं) स्त्री संबंधी (कुइअं) कूजित शब्दने, तथा (रुइअं) रुदितना शब्दने, तथा (गीअं) गीतना शब्दने, तथा (हसिअं) हसवाना शब्दने, तथा (थणिअ) स्तनित शब्दने, तथा (कंदिअं) क्रंदित शब्दने (सोअगिज्झं) श्रोत्रवडे ग्रह्य थाय-सभळाय तो तेने (विवज्जए) वर्जे अहीं कूजित विगेरेनो अर्थ उपर आठमा सूत्रमां कह्यो छे ते ज जाणवो ५

हासं किड्डं रइं दप्पं, सहसावत्तासिआणि अ । बंभचेररओ थीणं, नाणुचिंते कयाइवि ॥ ६ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु (थीणं) स्त्री संबंधी पूर्वे करेला (हासं) हास्यने (किड्डं) द्यूतादिक क्रीडाने, (रइं) स्त्रीना अंगना संगथी उत्पन्न थयेली प्रीतिने, (दप्पं) मानथी उत्पन्न थयेला गर्वने (सहसा वत्तासिआणि अ) तथा सहसा एटले एकदम पाछळथी आवीने पोताना हाथवडे स्त्रीनां नेत्रो ढांकी दीधां होय ए विगेरे स्त्रीने त्रास पमाडनारी चेष्टाओने (कयाइवि) कदापि (न अणुचिंते) चिंतवे नहीं—संभारे नहीं ६

पणिअं भत्तपाणं च, खिप्पं मयविवड्ढणं । बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो (भिक्खू) साधु (पणिअं) प्रणीत एटले जेमांथी घृतादिक रस झरतो होय एवा (भत्तपाणं) भक्तने एटले आहारने तथा पानने एटले द्राक्ष, खजुर अने साकर विगेरेथी मिश्रित पाणीने

(च) तथा (खिप्पं) शीघ्रपणे (मयविवड्ढण) कामने वृद्धि पमाडनार बीजा कोइ पण पदार्थने (निच्चसो) निरंतर (परिवज्जए) वर्जे. ७.

धम्मलद्धं मिअं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं । नाइमत्तं तु भुंजिज्जा, बंभचेररओ सया ॥ ८ ॥

अर्थ—(पणिहाणवं) प्रणिधानवान एटले चित्तनी स्वस्थताए करीने युक्त एवो साधु (जत्तत्थं) यात्राने माटे एटले संयमना निर्वाहने माटे ज—परंतु रूपादिकने माटे नहीं तथा (काले) समये (धम्मलद्धं) धर्मना हेतुथी ज प्राप्त थयेलो परंतु कपटादिक करीने ग्रहण करेलो न होय तेवो तथा (मिअं) प्रमाणोपेत एवो ज आहार करे. (तु) परंतु (बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु (सया) निरंतर (अइमत्त) अधिक प्रमाणवाळा आहारनुं (न भुंजिज्जा) भोजन करे नहीं. ८.

विभूसं परिवज्जिज्जा, सरीरपरिमंडणं । बंभचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो (भिक्खू) साधु (विभूसं) वस्त्रादिकवडे शरीरनी शोभाने (परिवज्जिज्जा) वर्जे. तथा (सिंगारत्थं) शोभाने माटे (सरीरपरिमंडणं) नख केशादिकना संस्कार रूप शरीरना मंडनने—शोभाने (न धारए) धारण न करे. ९.

सद्दे रूवे अ गंधे अ, रसे फासे तहेव य । पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥

अर्थ—ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु (सद्दे) कर्णने सुख आपनारा शब्द, (रूवे अ) नेत्रने प्रीति उपजावनार रूप तथा (गंधे अ) नासिकाने सुखकारक गंध तथा (रसे) मधुरादिक रस (तहेव य) तथा वळी (फासे) त्वचाने प्रीति

॥ १० ॥

करनार स्पर्श (पचविहे) ए पांच प्रकारना (कामगुणे) इच्छाकाम अने मदनकामने उपकार करनार होवाथी कामगुणोने (निचसो) निरतर (परिवज्जए) वर्जे १०

प्रथम ब्रह्मचर्यना दरेक समाधिस्थानमां " शका थाय अथवा कांचा थाय " इत्यादि कह्यु हतु, तेने ज दृष्टांतवडे स्पष्ट करे छे —

आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा ये मणोरमा । संथवो चेव नारीण, तासिं इंदिअदरिसण ॥ ११ ॥
कूइअ रुइअ गीअं, हसिअ भुत्तासिआणि अ । पणिअं भत्तपाण च, अइमाय पाणभोअण ॥ १२ ॥
गत्तभूसणमिट्ठ च, कामभोगा ये दुज्जया । नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउड जहा ॥ १३ ॥

अर्थ—(थीजणाइण्णो) स्त्रीजनवडे व्याप्त-सहित एवो (आलओ) उपाश्रय, (य) तथा (मणोरमा) मनने रमणीय लागे तेवी (थीकहा) स्त्री सबधी कथा अथवा स्त्रीनी साथे कथा करवी ते, (चेव) तथा निश्चे (नारीण) स्त्रीओनो (सथवो) सस्तव एटले तेमनी साथे एक आसनपर बेसी परिचय करवो ते, तथा (तासिं) ते स्त्रीओनां (इदियदरिसण) नेत्र स्तन विगेरे इद्रियोने—अगोपांगने रागथी जोवां ते, तथा ते स्त्री सबधी पूर्वे करेलां (कूइअ) कूजित, (रुइअ) रुदित, (गीअ) गीत, (हसिअ) हास्य अने (भुत्तासिआणि अ) स्त्री साथे भोगवेलां [भोगनां] आसनो ए सर्वनु स्मरण करवु ते, तथा (पणिअ) प्रणीत एवु (भत्तपाण च) भक्त पान, तथा (अइमाय पाणभोअण) प्रमाणथी

अधिक पान भोजन लेवुं ते, तथा (इट्ठं च) इष्ट एवुं पण (गत्तभूसणं) गात्रभूषण एटले शरीरनी शोभा करवी ते, (य) तथा (दुजया) दुःखे करीने जीती शकाय एवा (कामभोगा) काम एटले रूप अने शब्द तथा भोग एटले रस, गंध अने स्पर्श, आ सर्वे (अत्तगवेसिस्स) आत्मानी एटले ब्रह्मचर्यरूप जीवितनी गवेषणा करनार (नरस्स) पुरुषने तथा उपलक्षणथी स्त्रीने पण (तालउडं विसं जहा) तालपुट विष समान छे, एटले के आ सर्वे ब्रह्मचर्यनो घात करनारा छे तेथी त्याग करवा योग्य छे. जेम तालपुट विष मुखमां नांखवाथी ताळवानो स्पर्श थाय के तरत ज ते मनुष्यना जीवितने हरे छे, तेम आ सर्वे पण सेव्याथका ब्रह्मचर्यरूपी जीवितने शंका कांक्षादिक दोषो उत्पन्न करीने तत्काळ हणे छे. ११-१२-१३.

हवे आ विषयने समाप्त करे छे.—

दुज्जए कामभोगे अ, निच्चसो परिवज्जए। संकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जिज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥

अर्थ—(पणिहाणवं) प्रणिधानवान एटले चित्तनी एकाग्रतावाळो साधु (दुज्जए) दुःखे करीने जीती शकाय एवा (कामभोगे) काम तथा भोगने (निच्चसो) निरंतर (परिवज्जए) वर्जे. (अ) तथा (सव्वाणि) सर्व एटले दशे (संकट्ठाणाणि) पूर्वे कहेलां शंकानां स्थानोने (वज्जिज्जा) वर्जे. १४.

वळी तेने वर्जनारो शुं करे ? ते कहे छे.—

धम्मारामे चरे भिक्खू, धितिम धम्मसारही । धम्मारामरए दंते, बंभचेरसमाहिए ॥ १५ ॥

अर्थ—(धितिम) धृतिमान एटले धैर्यवडे युक्त, तथा (धम्मसारही) धर्मसारथि एटले बीजाओने पण धर्ममार्गमां प्रवर्तावनार, तथा (धम्मारामरए) धर्मने विषे सर्वथा रमण करनारा साधुओने विषे रक्त एटले तेवा साधुओनी साथे रहेनार, तथा (दंते) इन्द्रियोनु दमन करनार, तथा (बंभचेरसमाहिए) ब्रह्मचर्यने विषे सावधान एवो (भिक्खू) साधु (धम्मारामे) धर्मरूप आराम-उद्यानने विषे (चरे) विचरे दुःखना संतापथी तपेला प्राणीओने धर्म ज सुखना हेतुरूप छे, माटे अहीं धर्मने आराम जेवो कह्यो छे १५

हवे ब्रह्मचर्यनो महिमा बतावे छे —

देवदाणवगंधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । बंभयारि नमंसंति, दुक्कर जे करंति ते ॥ १६ ॥

अर्थ—(दुक्कर) दुःखे करीने आचरी शकाय एवा ब्रह्मचर्यने (जे) जे (करंति) करे छे-पाळे छे, (ते) ते (बंभयारिं) ब्रह्मचारी मुनिने (देवदाणवगंधव्वा) देव, दानव, गांधर्व, (जक्खरक्खसकिन्नरा) यक्ष, राक्षस अने किंनर तथा उपलक्षणथी सर्व जातिना देवो (नमंसंति) नमस्कार करे छे १६

हवे आ अध्ययनना अर्थने समाप्त करे छे —

एस धम्मे धुवे णितए, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहावरे त्ति वेमि ॥ १७ ॥

अर्थ—(जिणदेसिए) जिनेश्वरे कहेलो (एस) आ (धम्मे) ब्रह्मचर्यरूप धर्म (धुवे) ध्रुव छे, एटले परतीर्थिकोए खंडन न करी शकाय तेवो होवाथी प्रमाणवडे प्रतिष्ठा पामेलो छे, तथा आ ब्रह्मचर्य धर्म (णितए) नित्य छे एटले त्रणे काळमां अविनश्वर छे, तथा (सासए) शाश्वतो छे एटले त्रणे काळमां फळ आपनार छे. अथवा आ त्रणे विशेषणोनो अर्थ एक ज करवो. (च) तथा (अणेणं) आ ब्रह्मचर्यरूप धर्मवडे (सिद्धा) अतीत काळमां घणा-अनंत जीवो सिद्धिपदने पाम्या छे, तथा (सिज्झंति) वर्तमान काळे पण महाविदेहमां घणा जीवो सिद्ध थाय छे अथवा आ अध्ययननी प्ररूपणा करवाना अवसरनी अपेक्षाए वर्तमान काळे आ क्षेत्रमां पण सिद्ध थाय छे, (तहा) तथा (अवरे) बीजा घणा जीवो (सिज्झिस्संति) अनंत एवा आगामी काळमां सिद्धिपद पामशे. (त्ति वेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं, एटले हे जंबू ! जे प्रमाणे भगवान् वर्धमानस्वामी पासे में सांभळ्युं छे ते प्रमाणे हुं कहुं छुं एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. १७.

॥ इति षोडशमध्ययनम् १६ ॥

अथ पापश्रमणीय नामनु सत्तरमु अध्ययन १७

सोळमा अध्ययनमां ब्रह्मचर्यनां समाधिस्थानो कह्यां, ते तो पापस्थानो वर्जवाथी ज पाळी शकाय छे, अने पापस्थानो सेववाथी पापश्रमण कहेवाय छे, तेथी पापश्रमणनु स्वरूप आ अध्ययनमां बताव्यु छे. आ संबंधथी प्राप्त थयेला आ अध्ययननु प्रथम सूत्र कहे छे

जे केइ उ पव्वइए निअंठे, धम्मं सुणित्ता विणओववणे ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरिज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥

अर्थ—(जे केइ उ) जे कोइ (निग्गंठे) निर्ग्रंथ प्रथम (धम्मं सुणित्ता) चारित्ररूप धर्मने सांभळीने (विणओववणे) ज्ञानादिक-विनयने पाम्या सता (सुदुल्लहं) अत्यंत दुर्लभ एवा (बोहिलाभं) जिनधर्मनी प्राप्तिरूप बोधिलाभने एटले समकितने (लहिउं) पामीने (पव्वइए) प्रव्रज्या लीधी होय, अने (पच्छा य) पछीथी (जहासुहं तु) जेम सुख उपजे तेम ज (विहरिज्ज) विचरे एटले के प्रथम सिंहपणे प्रव्रज्या लइ पछीथी शियाळनी जेम निद्रादिक प्रमादने वश थइ विचरे १

तेवा प्रमादी साधुने गुरु विगेरे भणवानी प्रेरणा करे त्यारे ते शु बोले ? ते बतावे छे —

सिज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि, उप्पज्जइ भोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसो त्ति, किं नाम काहामि सुएण भंते ॥ २ ॥

अर्थ—" (मे) मारे (दढा) दृढ एटले वायु, आतप अने जलादिकना उपद्रव रहित (सिज्जा) वसति–उपाश्रय अने (पाउरणं) शीत विगेरेना उपद्रवनो नाश करनार प्रावरण–वस्त्रादिक पण (अत्थि) छे, (तहेव) तथा (भोत्तुं) खावा माटे अशन अने (पाउं) पीवाने माटे पाणी पण (उप्पज्जइ) उत्पन्न थाय छे एटले मळे छे. तथा (आउसो) हे आयुष्यमान् गुरु ! (जं) जे वर्तमान काळे (वट्टइ) वर्ते छे, ते बधुं (जाणामि) हुं जाणुं छुं. (त्ति) तेथी करीने (भंते) हे भगवान् ! (सुएण) श्रुत भणवावडे करीने (किं नाम) शुं (काहामि) करुं ? शामाटे प्रयास करुं ? " अहीं ते प्रमादी शिष्यनो एवो अभिप्राय छे के—" तमे पण श्रुतनो अभ्यास करो छो, ने तमे पण अतीत के भावी कांइ पण जाणता नथी, परंतु मात्र वर्तमान काळे वर्तता पदार्थोने ज जाणो छो, एटलुं तो अमे पण भण्या विना ज जाणीए छीए. तथा वसति, वस्त्र, अशन अने पाणी विगेरे तमारी ज जेम अमे पण सुखे करीने पामीए छीए. तो हृदय, कंठ अने ताळवाने शोषण करनारा अभ्यासवडे शुं फळ छे ? " आ प्रमाणे जे बोले ते पापश्रमण कहेवाय छे. एवो पछीनी गाथानो संबंध अहीं पण सिंहावलोकनना न्यायथी जाणवो. २.

जे केई पव्वईए, निद्दासीले पगामसो । भोच्चा पेच्चा सुहं सुअइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

अर्थ—(जे केई) जे कोइ (पव्वईए) प्रव्रज्या लीधेलो साधु (निद्दासीले) निद्रा लेवाना स्वभाववाळो होय अने (पगामसो) अत्यंत (भोच्चा) दहीं भात विगेरेनो आहार करी तथा (पेच्चा) तक्रादिकनुं पान करी (सुहं) सुखे करीने (सुअइ) कांइ पण क्रियानी अपेक्षा रहित थइने सुवे छे, ते (पावसमणे त्ति) पापश्रमण छे एम (वुच्चई) कहेवाय छे ३

आयरिअउवज्झाएहिं, सुअं विणयं च गाहए। ते चेव खिंसई बाले, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥

अर्थ—(आयरिअउवज्झाएहिं) जे आचार्य के उपाध्याये (सुअं) श्रुत एटले आगम (च) अने (विणय) विनय (गाहए) ग्रहण कराव्यो होय एटले शीखव्यो होय (ते चेव) तेमनी ज (बाले) जे विवेक रहित बाळक (खिंसई) खिंसा-निंदा करे छे, ते (पावसमणे त्ति) पापश्रमण छे एम (वुच्चई) कहेवाय छे. ४

आयरिअउवज्झायाण, सम्मं नो परितप्पई। अप्पडिपूअए थद्धे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥

अर्थ—जे साधु (आयरिअउवज्झायाण) आचार्य के उपाध्यायनी (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (नो परितप्पई) वैयावच्च विगेरेनी चिंता न करे, तथा जे साधु (अप्पडिपूअए) अप्रतिपूजक एटले जिनेंद्रादिकनी यथायोग्य [भाव] पूजा करवामां विमुख होय, अथवा कोइ मुनिए उपकार कर्यो होय तोपण तेनो प्रत्युपकार करवाथी विमुख होय, तथा जे साधु (थद्धे) स्तब्ध एटले गर्विष्ठ होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे ५

आ रीते विनय रहितने पापश्रमण कह्यो हवे चारित्र रहितने पापश्रमण कहे छे—

संम्मद्दमाणे पाणाणि, बीआणि हरिआणि अ। असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥६॥

अर्थ—(पाणाणि) द्वीन्द्रियादिक प्राणीओनुं, तथा (बीआणि) शाल्यादिक बीजोनुं (अ) तथा (हरिआणि) धरो विगेरे तृण-वनस्पतिनुं तथा उपलक्षणथी सर्व एकेन्द्रियोनुं (संमद्दमाणे) मर्दन करतो अने तेथी करीने (असंजए) संयम-चारित्र रहित एवो छतां पण जे (संजयमन्नमाणे) पोताने 'हुं साधु छुं' एम मानतो होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. आवो साधु संविग्न पाक्षिक पण कहेवातो नथी. ६.

संथारं फलगं पीढं, निसिज्जं पायकंबलं। अप्पमज्जिअ आरुहइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥

अर्थ—जे साधु (संथारं) कंबलादिक संथाराने, (फलगं) काष्ठमय पाटपाटलाने, (पीढं) पीठने एटले आसनने, (निसिज्जं) निषद्याने एटले स्वाध्याय भूमिने तथा (पायकंबलं) पादकंबल एटले पादप्रोंछनने (अप्पमज्जिअ) प्रमार्जन कर्या विना तथा उपलक्षणथी पडिलेहण कर्या विना (आरुहइ) ते पर आरूढ थाय एटले ते वस्तुओने वापरे, तो ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ७.

दवदवस्स चरई, पमत्ते अ अभिक्खणं। उल्लंघणे अ चंडे अ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

अर्थ—आहारादिकने माटे ज्यारे जाय त्यारे जे साधु (दवदवस्स) शीघ्र शीघ्र एटले पृथ्वीपर धबधब करतो (चरई) चाले एटले इर्यासमितिने साचवे नहीं, (अ) तथा जे (अभिक्खणं) वारंवार (पमत्ते) प्रमादी थाय एटले

पांचे समिति रहित थाय, (अ) तथा जे (उल्लघणे) अज्ञानीओने उल्लघन करे एटले तेमनो तिरस्कार करे, अथवा हास्यादिक अविनय करनारा बाळकोने चीवडावी पोताना आचारनु उल्लघन करे, (अ) तथा जे (चडे) मनमां क्रोधवडे धमधमतो रहे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे ८

पंडिलेहेइ पंमत्ते, अंवउज्झइ पायंकंबलं । पंडिलेहणाअणाउत्ते, पांवसमणे त्ति वुंच्चई ॥ ९ ॥

अर्थ—वस्त्र पात्रादिक पोताना उपकरणने जे साधु (पमत्ते) प्रमादी सतो (पडिलेहेइ) पडिलेहे एटले चित्त विना तेनी प्रतिलेखना करे, तथा जे साधु (पायकंबल) पादप्रोंछनने अथवा पात्र अने कंबलने (अवउज्झइ) ज्यां त्यां तजे एटले प्रमार्जन अने प्रतिलेखन कर्या विनाना स्थानमां मूके अहीं पात्र अने कंबलना ग्रहणवडे सर्व उपधिनु ग्रहण करी लेवु तथा जे साधु (पडिलेहणाअणाउत्ते) पोतानी सर्व उपधिनी पडिलेहणाने विषे अनायुक्त एटले आळसु-उपयोग रहित होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे ९

पंडिलेहेइ पंमत्ते, जं किंचिं हु णिंसामिआ । *गुंरुपरिभावए निंच्च, पांवसमणे त्ति वुंच्चई ॥१०॥

अर्थ—(पमत्ते) प्रमादी थयो जे साधु (ज किंचि हु) जे कांइ विकथादिकने (णिसामिआ) सांभळीने एटले सांभळतो सांभळतो (पडिलेहेइ) पडिलेहणा करे, एटले पडिलेहण करती वखते जो कोइ वात करतु होय तो तेमां चित्त राखे, पण

* " गुरु परिभवई " इति प्रत्यंतर पाठ

पडिलेहणमां चित्त राखे नही. तथा (निच्चं) निरंतर (गुरुपरिभावए) गुरुनो पराभव करनार होय अथवा (गुरुं परिभवई) गुरुनो पराभव करे, एटले के दोषयुक्त पडिलेहणादिक करता तेने जोइ गुरुमहाराज तेने शिक्षा आपे त्यारे ते सामुं बोले के–" त्यारे तमे ज करो. " अथवा " तमे ज अमने आवी रीते शीखव्युं छे, तेथी ते तमारो ज दोष छे. " एवो जवाब आपे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १०.

बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । असंविभागी अचिअत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥

अर्थ—तथा जे साधु (बहुमाई) घणो माया–कपटवाळो होय, तथा जे (पमुहरी) वाचाळ होय तथा (थद्धे) गर्विष्ठ होय, तथा (लुद्धे) लोभी होय, तथा (अणिग्गहे) मन तथा इंद्रियोने वश राखनार न होय–तेने वश होय तथा (असंविभागी) गुरु, ग्लान विगेरेनो संविभाग करनार न होय, तथा जे (अचिअत्ते) गुर्वादिकने विषे प्रीतिवाळो न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ११.

विवायं च उदीरेइ, अधम्मे अत्तपण्णहा । वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १२ ॥

अर्थ—(च) तथा जे (विवायं) विवादने एटले वाणीना कलहने (उदीरेइ) उदीरणा करे एटले सामो माणस शांत होय तोपण तेना मर्मने प्रगट करी कलहनी वृद्धि करे, तथा जे (अधम्मे) अधर्मी एटले असदाचारमां रक्त होय, तथा जे (अत्तपण्णहा) आप्तप्रज्ञाहा—आप्त एटले सद्बोध करनार होवाथी आलोक अने परलोकने विषे हितकारक एवी

प्रज्ञाने एटले स्वपरनी सद्बुद्धिने कुतर्कवडे हणनार होय अर्थात् तत्त्वबुद्धिने हणनार होय, तथा जे (वुग्गहे) व्युद्ग्रहने विषे एटले दंडादिक युद्धने विषे रक्त होय तथा जे (कलहे) वाणी सबंधी क्लेशने विषे (रत्ते) रक्त होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे १२

अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीअई । आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥

अर्थ—तथा जे साधु (अथिरासणे) आसनपर स्थिर रहे नहीं, तथा जे (कुक्कुइए) हास्य विकथादिक करी भांडनी जेवी चेष्टा करे, तथा जे (जत्थ तत्थ) ज्यां त्यां सचित्त पृथ्व्यादिक उपर (निसीअई) बेसे, तथा जे (आसणम्मि) आसनने विषे (अणाउत्ते) उपयोगवाळो न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे १३

ससरक्खपाओ सुअइ, सिज्जं न पडिलेहइ । संथारए अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥

अर्थ—तथा जे (ससरक्खपाओ) सरजस्कपाद एटले धूळथी खरडायेला पगवाळो ज—पगनी प्रमार्जना कर्या विना ज (सुअइ) संथारामां शयन करे, तथा जे (सिज्ज) शय्याने एटले वसति-उपाश्रयने (न पडिलेहइ) सम्यक् प्रकारे न पडिलेहे, तथा जे (संथारए) कंबलादिक संथारामां सुतो सतो (अणाउत्ते) अनायुक्त होय एटले " कुक्कुडिपायपसारण " "कुकडीनी जेम पग उंचा राखी सुवु " इत्यादि आगमना अर्थनो उपयोग न राखे अथवा पोरसी भणाव्या विना अविधिए शयन करे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १४

हवे तपना विषयमां पापश्रमण केवा होय ? ते कहे छे.—

दुद्धदही विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं । अरए अ तवोकम्मे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥

अर्थ—तथा जे (दुद्धदही) दूध, दहीं अने उपलक्षणथी बीजी पण (विगईओ) विकार करनार होवाथी विकृतिओने (अभिक्खणं) वारंवार कारण विना पण (आहारेइ) आहार करे-खाय (अ) अने तेथी करीने ज (तवोकम्मे) अनशनादिक तपक्रियाने विषे (अरए) प्रीतिवाळो न होय-आसक्त न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १५.

अत्थंतम्मि अ सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं । चोइओ पडिचोएइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥

अर्थ—(अ) तथा जे साधु (सूरम्मि) सूर्य (अत्थंतम्मि) अस्त पामे सते-अस्त समय लगभग (अभिक्खणं) वारंवार (आहारेइ) आहार करे, तथा (चोइओ) जो कोइ गीतार्थ गुर्वादिक तेने प्रेरणा करे के-"हे आयुष्मान् ! केम आ प्रमाणे केवळ आहारमां ज तत्पर रह्या छो ? फरीथी आवी धर्मसामग्री मळवी दुर्लभ छे, माटे आवी सामग्री पामीने तो तपमां उद्यम करवो योग्य छे." आ प्रमाणे प्रेरणा कर्यो सतो (पडिचोएइ) सामी प्रेरणा करे-सामुं बोले के-"तमे उपदेश आपवामां ज डाह्या छो, परंतु पोते तो करता नथी, नहीं तो आवुं जाणता छतां तमे केम उत्कृष्ट तप करता नथी ?" आ प्रमाणे सामो जवाब आपे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १६.

आयरिअपरिच्चाई, परपासंडसेवए । गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥

अर्थ—तथा जे (आयरिअपरिचाई) आचार्यनो त्याग करनार होय, एटले " आ गुरु तो तप ज करावे छे अने कोई सारो आहार आव्यो होय तो ते पण ग्लानादिक साधुओने अपावी दे छे. " आ प्रमाणे विचारी आहारपरनी अति लोलुपताने लीधे आचार्यनो त्याग करे छे, तथा (परपासंडसेवए) पर पाखंडीओनी सेवा करे छे एटले निरंतर आहारमां ज आसक्त रहेनारा बौद्धादिकनो सेवक थाय छे, तथा जे (गाणंगणिए) गाणंगणिक-छ मासनी अंदर ज एक गच्छमांथी बीजा गच्छमां जाय छे, अने तेथी करीने ज (दुब्भूए) दुर्भूत-दुराचारे करीने निंदाने पात्र थयो होय छे ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे १७

सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे । निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥

अर्थ—तथा जे साधु (सयं गेहं) दीक्षा समये पोताना घरनो (परिचज्ज) त्याग करीने पछी (परगेहंसि) आहारादिकना लोभथी बीजाना-गृहस्थीओना घरने विषे (वावरे) व्यापार करे-तेना घरना कामकाज करे, (य) तथा (निमित्तेण) शुभाशुभ निमित्तशास्त्र कहेवावडे (ववहरइ) व्यवहार करे-द्रव्य उपार्जन करे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १८

संनाइपिंडं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणिअं । गिहिनिसिज्जं च वाहेइ, पावसमणे त्ति, वुच्चई ॥ १९ ॥

अर्थ—तथा जे (सन्नाइपिंडं) बंधु विगेरे पोताना संबंधीओए प्रीतिथी आपेला पिंडने-आहारने (जेमेइ) जमे, तथा

(सामुदाणिअं) घर घरथी आणेली सामुदायिक भिक्षाने (नेच्छइ) इच्छे नहीं, (च) तथा (गिहिनिसिज्जं) गृहस्थीना पलंग विगेरे आसनपर (वाहेइ) सुखशीळीयापणाथी बेसे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १९.

हवे आ अध्ययननो उपसंहार करतां उपर कहेला दोषने सेववाथी अने त्याग करवाथी जे फळ थाय छे ते बतावे छे.—

एआरिसे पंचकुसीलसंवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हिट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थलोए ॥ २० ॥

अर्थ—(एआरिसे) आवा प्रकारनो (पंचकुसीलसंवुडे) ओसन्नो, पासत्थो, कुशीळीयो, संसत्तो अने अहाछंदो ए पांच प्रकारना कुशीळीयानी जेवा असंवृत एटले संवर रहित—अजितेंद्रिय, तथा (रूवंधरे) साधुना रूपने–वेषने धारण करनार तथा (मुणिपवराण) उत्तम मुनिओनी (हिट्ठिमे) नीचे वर्तनार एटले अत्यंत जघन्य एवा संयमस्थानने विषे रहेला, तथा (अयंसि लोए) आलोकने विषे (विसमेव) विषनी जेम (गरहिए) गर्हा करवा लायक एटले विषनी जेम निंद्य होवाथी त्याग करवा लायक छे, (से) तेवा साधु (इहं) आलोकने विषे सामान्य जनोए पण (न) वखाणवा लायक नथी, अने (परत्थलोए) परलोकने विषे पण (नेव) वखाणवा लायक नथी. २०.

जो वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होई मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं त्ति बेमि ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे साधु (सया उ) सदैव–हमेशां (एए) आ पूर्वे कहेला (दोसे) दोषोने (वज्जए) वर्जे छे, (से) ते (मुणीण मज्झे) मुनिओ मध्ये (सुव्वए) सुव्रत एटले वखाणवा लायक व्रतवाळा (होई) होय छे एटले वखणाय छे. तथा ते (अयंसि लोए) आ लोकने विषे (अमय व) अमृतनी जेम (पूईए) लोकोए पूजित एवा छता (इण) आलोक (तहा) तथा (परं लोग) परलोकने (आराहए)) आराधे छे–साधे छे. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हु कहु छु. २१.

इति सप्तदशमध्ययनम्. १७

अथ संयतीय नामनु अढारमु अध्ययन. १८

सत्तरमा अध्ययनमां पापस्थानको वर्जवानु कह्यु, ते वर्जवु संजय राजानी जेम भोग–समृद्धिनो त्याग करवाथी थाय छे ए संबंधथी प्राप्त थयेला आ अढारमा अध्ययननु प्रथम सूत्र कहे छे —

कंपिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे । नामेण संजए नाम, मिगव्वं उवनिग्गए ॥ १ ॥

अर्थ—(कंपिल्ले) कांपील्य नामना (नयरे) नगरमां (उदिण्णबलवाहणे) बळ एटले चतुरंग सैन्य अने शिबिका विगेरे वाहन जेना उदय पामेला छे एटले पुष्कळ छे एवो (राया) राजा (संजए) संजय (नामेण) नामे (नाम) प्रसिद्ध हतो, ते एकदा (मिगव्वं) मृगया करवा माटे (उवनिग्गए) नगरमांथी बहार नीकळ्यो १

ते राजा केवी रीते नीकळ्यो ? अने तेणे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य । पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥

अर्थ—ते राजा (महया) मोटा (हयाणीए) अश्वना सैन्यवडे (गयाणीए) हाथीना सैन्यवडे (रहाणीए) रथना सैन्यवडे (तहेव य) तथा वळी (पायत्ताणीए) पदातिना सैन्यवडे (सव्वओ) चोतरफथी (परिवारिए) परिवरेलो नगर बहार नीकळ्यो. २.

मिए छुभित्ता हयगओ, कंपिल्लुज्जाणकेसरे । भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥

अर्थ—(रसमुच्छिए) मांसना रसमां लुब्ध थयेलो ते राजा (हयगओ) अश्वपर आरूढ थयो थको (कंपिल्लुज्जाणकेसरे) कांपील्य नगरना केसर नामना उद्यानमां रहेला (मिए) मृगोने (छुभित्ता) प्रेरणा करीने एटले ते मृगोनी पाछळ पोतानो अश्व दोडावीने (तत्थ) त्यां (भीए) भय पामेला एटले त्रास पामेला अने (संते) श्रांत थयेला एटले ग्लानि पामेला (मिए) ते मृगोने (वहेइ) हणतो हवो. ३.

ते वखते त्यां शुं थयुं ? ते कहे छे.—

अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे । सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ ४ ॥

अर्थ—(अह) ते वखते (केसरम्मि) ते केसर नामना (उज्जाणे) उद्यानमां (सज्झायज्झाणसंजुत्ते) स्वाध्याय

ध्यानमां तत्पर थयेला अने (तवोधणे) तपरूपी धनवाळा (अणगारे) एक अणगार-मुनि (धम्मज्झाणं) धर्मध्यानने (झियायइ) ध्याये छे-ध्यान करता हता ४

अफोवमंडवंसि, झायइ झविआसवे । तस्सागए मिए पास, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥

अर्थ—(झवियासवे) क्षय कर्या छे हिंसादिक आश्रवो जेणे एवा ते मुनि (अफ्फोवमंडवंसि) अफोव एटले वृक्षादिकवडे व्याप्त एवा नागरवेल विगेरेना मंडपने विषे (झायइ) धर्मध्यान करता हता (तस्स) ते मुनिनी (पास) पासे (आगए) आवीने रहेला (मिए) मृगोने (से) ते (नराहिवे) राजा (वहेइ) हणतो हतो ५

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं । हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥६॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (आसगओ) अश्वपर चढेलो (सो) ते संजय नामनो (राया) राजा (खिप्पं) शीघ्रपणे (तहिं) ते लतामंडपमां (आगम्म) आवीने (हए) हणेला (मिए उ) मृगोने (पासित्ता) जोइने (तत्थ) त्यां रहेला (अणगार) एक मुनिने पण (पासई) जोतो हवो ६.

ते वखते ते राजाए शुं कर्युं ? ते कहे छे —

अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ । मए उ मंदपुण्णेण, रसगिद्धेण घण्णुणा ॥ ७ ॥

अर्थ—(अह हवे (तत्थ) ते मुनिने जोवाथी (संभंतो) भ्रांत थयेलो एटले भय पामेलो (राया) राजा विचार

४

करवा लाग्यो के–(रसगिद्धेण) मांसना रसमां लुब्ध थयेला अने (घण्णुणा) घात–हिंसा करवाना स्वभाववाळा (मए उ) में (मंदपुण्णेणं) मंद पुण्यवाळाए–पापीए (अणगारो) आ मुनि (मणाहओ) मनाक् अहतः–जराक न हण्या, एटले हमणांज माराथी तेओ हणाइ जात. कारण के तेनी पासे ज रहेलो आ मृग हणायो छे, तेथी आ मुनिने हणावामां जराक ज छेटुं रही गयुं छे. ७.

आसं विसज्जइत्ता णं, अणगारस्स सो निवो । विणएणं वंदए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥८॥

अर्थ—एम विचार करीने पछी (आसं) अश्वने (विसज्जइत्ता णं) तजीने एटले अश्वपरथी नीचे उतरीने (सो निवो) ते राजाए (विणएणं) विनयवडे (अणगारस्स) ते मुनिना (पाए) पादने (वंदए) वंदना करी अने कह्युं के (भगवं) हे भगवान ! (एत्थ) आ मृगना वधने विषे (मे) मने एटले मारा अपराधने (खमे) आप क्षमा करो. ८.

अह मोणेणं सो भयवं, अणगारो झाणमस्सिओ । रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥९॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी एटले राजाए मुनिने वंदना कर्या पछी (मोणेण) मौनवडे करीने (झाणमस्सिओ) धर्मध्यानने आश्रित थयेला (सो) ते (भयवं) ज्ञानना अतिशयवाळा भगवान (अणगारो) मुनिए (रायाणं) राजाने (न पडिमंतेइ) कांइ पण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं, (तओ) तेथी करीने (राया) राजा (भयदुओ) भयद्रुत एटले अत्यंत भयभीत थयो. ९.

एटले फरीथी राजा आ प्रमाणे बोल्यो —

संजओ अहमस्सीति, भयव वाहराहि मे । कुद्धो तेएण अणगारे, दहिज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

अर्थ—(भयव) हे भगवान ! (अह) हु (संजओ) संजय नामनो राजा (अस्सि) छु, कोइ नीच जातिनो मनुष्य नथी, (इति) ए कारण माटे (मे) मारी साथे (वाहराहि) तमे बोलो कारण के (कुद्धो) क्रोध पामेला (अणगारे) मुनि (तेएण) तेजवडे एटले पोतानी तेजोलेश्यावडे (नरकोडिओ) करोडो मनुष्योने (दहिज्ज) बाळी शके छे तेथी हु भयभीत थयो छु १०.

आ प्रमाणे राजाए कह्यु, त्यारे मुनि ध्यानथी निवृत्त थइने बोल्या के —

अभओ पत्थिवा तुब्भ, अभयदाया भवाहि अ । अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥११॥

अर्थ—(पत्थिवा) " हे राजा ! (तुब्भ) तने (अभओ) अभय छे " अर्थात् तने कोइ बाळतु नथी आ प्रमाणे राजाने धीरज आपीने पछी मुनि तेने उपदेश आपे छे के—" हे राजा ! (अभयदाया) तु अभयदान आपनार (भवाहि अ) था जेम तने मृत्युनो भय लागे छे तेम सर्व प्राणीओने मृत्युनो भय होय छे, तेथी (अणिच्चे) आ अनित्य एवा (जीवलोगम्मि) जीवलोकने विषे (हिंसाए) प्राणीओनी हिंसा करवामा तु (किं) केम (पसज्जसि) आसक्त थाय छे ? आ हिंसा नरकनो हेतु होवाथी करवा योग्य नथी ११

जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते । अनिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसि ? ॥१२॥

अर्थ—(जया) ज्यारे (सव्वं) राजानो, अंतःपुर विगेरे सर्वनो (परिच्चज्ज) त्याग करीने (अवसस्स) अवश एटले पराधीन एवा (ते) तारे अवश्य (गंतव्वं) परभवमां जवानुं ज छे, तो (अनिच्चे) आ अनित्य एवा (जीवलोगम्मि) जीवलोकने विषे (रज्जम्मि) राज्य उपर (किं) केम तुं (पसज्जसि) आसक्त थाय छे ? १२.

वळी संसारनी अनित्यताने ज बतावे छे.—

जीविअं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं । जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥ १३ ॥

अर्थ—(राय) हे राजा ! (जत्थ) जे जीवित अने रूपने विषे (तं) तुं (मुज्झसी) मोह पामे छे, ते (जीविअं चेव) जीवित-आयुष्य अने (रूवं च) रूप एटले शरीरनुं सौंदर्य (विज्जुसंपायचंचलं) वीजळीना चमकारा जेवुं चंचळ छे, तथा तुं (पेच्चत्थं) परलोकना कार्यने (नावबुज्झसे) जाणतो नथी. १३.

दाराणि अ सुआ चेव, मित्ता य तह बंधवा । जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुव्वयंति अ ॥ १४ ॥

अर्थ—हे राजा ! (दाराणि अ) स्त्रीओ, तथा (सुआ चेव) पुत्रो, तथा (मित्ता य) मित्रो, (तह) तथा (बंधवा) बंधु विगेरे ज्ञातिजनो ए सर्वे (जीवंतं) जीवताने (अणुजीवंति) पाछळ जीवे छे एटले जीवता एवा धनवाननी पाछळ पोताना उदरनिर्वाहने करे छे-तेनुं धन तेओ भोगवे छे, परंतु (मयं) ते पुरुष ज्यारे मरी जाय छे त्यारे (नाणुव्व-

यति अ) तेनी पाछळ मरता नथी-जता नथी, तो सहायभूत तो क्यांथी ज थाय, माटे तेवा कृतघ्नीओने विषे आदर करवो योग्य नथी १४

निहँरति मॅथ पुत्ता, पिँअर पॅरमदुक्खिआ । पिँअरोऽवि तॅहा पुँत्ते, बधूं रांय तॅव चॅरे ॥ १५ ॥

अर्थ—(पुत्ता) पुत्रो (परमदुक्खिआ) अत्यंत दु खी थया छता पण (मय) मरी गयेला (पिअर) पिताने (निहरंति) घर बहार काढे छे, (तहा) तथा (पिअरोऽवि) पिताओ पण (पुत्ते) मरी गयेला पुत्रोने घर बहार काढे छे. तथा (बधू) बधुओ पण मरी गयेला बधुओने घर बहार काढे छे-घरमां राखता नथी तेथी करीने (राय) हे राजा ' तु (तव) तपनु (चरे) आचरण कर-सेवन कर १५

तॅओ तेंणऽज्जिए दॅव्वे, दारे अँ पॅरिरक्खिए । कीलतॅन्ने नॅरा रांय, हॅट्ठतुट्ठा अॅलंकिआ ॥ १६ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले घरनी बहार काढ्या पछी (राय) हे राजा ! (तेण) ते पितादिके के पुत्रादिके (अज्जिए) उपार्जन करेला धन (परिरक्खिए) समस्त प्रकारे चोर अने अग्नि विगेरे थकी रक्षण करेला (दव्वे) द्रव्ये करीने, पाछळ रहेला आनद करे छे (अ) तथा (दारे) तेनी स्त्री साथे (अन्ने नरा) बीजा मनुष्यो (हट्ठतुट्ठा) हृष्ट एटले बहारथी रोमांचित थयेला, तथा तुष्ट एटले हृदयमां आनद पामेला, तथा (अलंकिआ) अलकारोवडे विभूषित थया थका (कीलति) क्रीडा करे छे पोते ज्यांसुधी जीवे छे, त्यांसुधी धन उपार्जन करी तेनु प्राणनी जेम रक्षण करे छे,

तथा स्त्रीनुं पण तेवीज रीते रत्नण करे छे, परंतु मरी गया पछी तेना धन अने स्त्रीवडे बीजाओ ज क्रीडा करीने आनंद मेळवे छे. १६.

मरेला माणसनुं शुं थाय छे ? ते कहे छे.—

तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वाऽसुहं । कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं ॥ १७ ॥

अर्थ—(तेणावि) ते मरनार माणसे पण (जं) जे (सुहं वा) शुभ (जइ वा) अथवा (असुहं) अशुभ (कम्मं) कर्म (कयं) कर्युं होय, (तेण उ) ते ज (कम्मुणा) कर्मे करीने (संजुत्तो) युक्त एवो ते (परं भवं) पर भवने विषे (गच्छइ) जाय छे. अर्थात् जीवनी साथे बीजुं कांइ पण जतुं नथी. मात्र एक पोते करेलुं शुभाशुभ कर्म ज जाय छे, तेथी हे राजा ! तपनुं आचरण कर. " १७.

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए । महयासंवेगनिव्वेअं, समावण्णो नराहिवो ॥ १८ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे (तस्स) ते (अणगारस्स) मुनिनी (अंतिए) समीपे (धम्मं) धर्मने (सोऊण) सांभळीने (सो) ते (नराहिवो) संजय राजा (महयासंवेगनिव्वेअं) मोटा संवेगने एटले मोक्षना अभिलापने अने निर्वेदने एटले संसारथी उद्वेगपणाने (समावण्णो) पाम्यो. १८.

संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे । गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥ १९ ॥

अर्थ—त्यारपछी (सजओ) ते सजय नामना राजाए तरतन (रज्ज) राज्यनो (चइउ) त्याग करीने (भगवओ) भगवान (गद्दभालिस्स) श्री गर्दभालि नामना (अणगारस्स) मुनिनी (अतिए) पासे (जिणसासणे) जिनशासनने विषे एटले वीतरागना धर्मने विषे ज (निक्खतो) दीक्षा ग्रहण करी १६

अहीं वृद्धसप्रदाय आ प्रमाणे छे–ते सजय नामना राजर्षि गर्दभालि नामना आचार्यना शिष्य थया, पछी आगमनो अभ्यास करी ते गीतार्थ थया, अने साधुना समग्र आचार विचारमां निपुण थया, एटले गुरुनी आज्ञाथी ते राजर्षि एकाकी विहार करता कोइ गाममां आव्या ते गाममां तेने एक चत्रिय मुनि मळ्या ते चत्रिय मुनि पूर्व जन्ममां वैमानिक देव हता, त्यांथी चवीने कोइ चत्रियना कुळमां उत्पन्न थयेला हता त्यां कोइ निमित्तने लइने तेने जातिस्मरण ज्ञान थयु हतु, तेथी वैराग्य उत्पन्न थवाने लीधे राज्यनो त्याग करी तेणे दीक्षा ग्रहण करी हती तेनु नाम ठरावेलु न होवाथी चत्रिय मुनिना नामथी ते प्रसिद्ध थया हता ते जातिस्मरण ज्ञानवाळा चत्रिय मुनिए सजय नामना राजर्षिने जोइ तेमना ज्ञाननी परीक्षा करवा माटे आ प्रमाणे कह्यु —

चिच्चा रट्ठ* पव्वइए, खत्तिए परिभासई । जहा ते दीसई रूव, पसन्न ते तहा मणो ॥ २० ॥

अर्थ—(रट्ठ) राष्ट्रनो एटले देशनो अथवा राज्यनो (चिच्चा) त्याग करीने (पव्वइए) प्रव्रज्याने पामेला (खत्तिए)

* रज्ज इति वा पाठ

क्षत्रिय मुनिए (परिभासई) संजय राजर्षिने कह्युं के-(जहा) " जेम (ते) तमारुं (रूवं) बाह्य रूप-आकार प्रसन्न-सुंदर (दीसई) देखाय छे, (तहा) तेम (ते) तमारुं (मणो) मन पण (पसन्नं) प्रसन्न छे एम जणाय छे. कारण के अंदर कलुषता वर्तती होय तो बहारथी आवा प्रकारनी चित्तप्रसन्नता देखाय नहीं. २०.

किंनामे किंगोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे । कहं पडिअरसी बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसी ॥ २१ ॥

अर्थ—(किंनामे) तमारुं नाम शुं छे ? तथा (किंगोत्ते) तमारुं गोत्र शुं छे ? (व) अथवा (कस्सट्ठाए) कया प्रयोजनने माटे (माहणे) तमे माहण थया छो एटले प्रव्रज्या लीधी छे ? तथा (बुद्धे) आचार्यादिकनी (कहं) केवी रीते (पडिअरसी) सेवा करो छो ? तथा (कहं) केवी रीते (विणीए त्ति) 'तमे विनीत छो' एम (वुच्चसी) कहेवाओ छो ?"२१.

आ प्रमाणे क्षत्रिय मुनिए पूछ्युं, त्यारे संजय राजर्षि तेमने प्रत्युत्तर आपे छे के—

संजयो नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोअमो । गद्दभाली ममायरिआ, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥

अर्थ—" (नामेणं) नामे करीने हुं (संजयो नाम) संजय नामनो छुं, (तहा) तथा (गोत्तेण) गोत्रवडे हुं (गोअमो) गौतम गोत्री छुं, तथा (विज्जाचरणपारगा) विद्या एटले श्रुत अने चरण एटले चारित्रना पारगामी एवा (गद्दभाली) गर्दभालि नामना (मम) मारा (आयरिआ) आचार्य एटले गुरु छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे.—गर्दभालि नामना आचार्ये मने जीवहिंसाथी निवृत्त कर्यो, तेनी निवृत्तिमां मने तेओए मुक्तिरूप फळ बताव्युं, तेथी मुक्ति मेळववाने

माटे हु माहण–साधु थयो छु, जे प्रमाणे ते गुरुए मने उपदेश आप्यो छे–समजाव्यो छे ते प्रमाणे हु तेमनी सेवा करु छु, अने तेमना उपदेशनु सेवन करवाथी हु विनीत कहेवाउ छु २२ "

आ प्रमाणे सजय राजर्षिनु वचन सांभळी ते क्षत्रिय मुनिनु चित्त तेमनापर आकर्षायु, तेथी ते क्षत्रिय मुनि बोल्या के–

किरिअं अकिरिअं विणय, अन्नाण च महामुणी। एएहिं चउहि ठाणेहिं, मेअन्ने किंपभासति ॥२३॥

अर्थ—(महामुणी) हे महामुनि सजय ! (किरिअं) क्रिया, (अकिरिअं) अक्रिया, (विणय) विनय (च) अने (अन्नाण) अज्ञान (एएहिं) ए (चउहिं) चार (ठाणेहिं) स्थानोवडे (मेअन्ने) मेयज्ञ—मेय एटले जीवादि ज्ञेय वस्तुने जाणनाराओ (किंपभासति) कुत्सित एटले असत्य–मिथ्या बोले छे अहीं केटलाक अन्यमतिओ अस्तिक्रिया सहित जीवनु लक्षण माने छे एटले के वस्तुनी जे सत्ता तेज जीव एम माने छे, ते क्रियावादी कहेवाय छे १ केटलाक अक्रियावादी छे, तेओ जीवादिक पदार्थोने नास्तिरूपे एटले नथीज ए प्रमाणे माने छे २. केटलाएक विनयवादी छे, तेओ नाना, मोटा, उच, नीच सर्वने नमस्कारादिक विनय करवो तेने ज धर्म माने छे ३ तथा केटलाएक अज्ञानवादी छे, तेओ सर्व पदार्थोने नहीं जाणवा तेज सारु माने छे ४. आ चारे मतवाळा एकांतवादी होवाथी मिथ्यात्वी छे. तेओनु एवु एकांतपणे मानवु युक्तियुक्त नथी, तेथी तेमनु भाषित मिथ्या छे कारणके अस्तिक्रिया एटले सत्ता अर्थात् वस्तुनु होवापणु, ते तो दरेक वस्तुमां छे, तेथी अजीव पण जीव कहेवाशे १ एकांतपणे नास्तिपणु मानवाथी आत्मानु पण नास्तिपणु थशे, अने तेथी करीने जीव, अजीव विगेरे सर्व पदार्थो नास्तिपणाए करीने सरखा ज कहेवाशे २ सर्व ठेकाणे तुल्य विनय क

रवाथी निर्गुणनो पण विनय करवो पडशे अने निर्गुणना विनयनुं तो अशुभ फळ कह्युं छे, गुणीने विषेज विनय करवाथी शुभ फळ प्राप्त थाय छे, तेथी एकांत विनय पण सारो नथी. ३. तथा अज्ञान तो मुक्तिना साधनभूत छे ज नहीं, केमके मुक्तिनुं कारण तो ज्ञान ज कह्युं छे, हेय अने उपादेय पदार्थो ज्ञानथी ज जाणी शकाय छे, अने ज्ञानविना हिताहित पण जाणी शकातुं नथी. तेथी अज्ञानवादीओ पण मिथ्याभाषी ज छे. ४. आ चारे प्रकारना पाखंडीओना कुल त्रणसो ने त्रेसठ भेदो थाय छे. तेमां क्रियावादीओना १८० भेदो छे, अक्रियावादीओना ८४ छे, विनयवादीओना ३२ छे अने अज्ञानवादीओना ६७ भेदो छे. आनो विस्तार अन्य ग्रंथमांथी जाणी लेवो. २३.

ए चारे प्रकारना वादीओनुं मिथ्याभाषित हुं मारी बुद्धिथी ज कहेतो नथी, परंतु भगवानना वचनथी कहुं छुं.

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुडे । विज्जाचरणसंपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥

अर्थ—(इइ) आ क्रियावादी विगेरेने (बुद्धे) तत्त्वने जाणनारा, (परिनिव्वुडे) कपायरूपी अग्नि बुझावाथी शीतळ थयेला, (विज्जाचरणसंपन्ने) क्षायिक ज्ञान अने क्षायिक चारित्रवडे युक्त, (सच्चे) सत्य वचनवाळा अने (सच्चपरक्कमे) सत्य वीर्यवाळा (नायए) ज्ञातक एटले ज्ञातपुत्र श्री महावीरस्वामीए मिथ्याभाषीपणे (पाउकरे) प्रगट कर्या छे—कह्या छे. २४.

ते क्रियावादी विगेरेनुं फळ कहे छे.—

पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो । दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारिअं ॥२५॥

अर्थ—(जे नरा) जे मनुष्यो (पावकारिणो) अहीं प्रस्तावने लीधे पाप एटले असत्प्ररूपणा, तेने करवाना स्वभाववाळा होय छे, तेओ (घोरे) भयंकर एवा (नरए) नरकमां (पडति) पडे छे (च) अने (आरिअ) आर्य एटले सत्प्ररूपणारूप उत्तम (धम्मं) धर्मनु (चरिचा) आचरण करीने एटले आचरण करनारा मनुष्यो (दिव्व) देव संबंधी अथवा सर्व गतिमां प्रधान एवी सिद्धि नामनी (गइ) गतिने (गच्छति) पामे छे तेथी हे राजर्षि ! तमारे असत्प्ररूपणानो त्याग करी सत्प्ररूपणामां ज प्रवर्तवु २५

ते क्रियावादी विगेरे पापकारी केम कहेवाय ? ते उपर कहे छे —

मायावुइअमेअं तु, मुसाभासा निरत्थिआ। संजममाणो वि अहं, वसामि इरिआमि अ ॥२६॥

अर्थ—(एअ) आ क्रियावादी विगेरेनु वचन (मायावुइअ तु) मायावडे एटले शठतावडे ज कहेलु होय छे, तेथी तेओनी (मुसाभासा) मृषा भाषा (निरत्थिआ) निरर्थक–अर्थ विनानी छे ते कारण माटे हे संजय मुनि ! (संजममाणो वि) ते पाखंडीओनी असत्प्ररूपणारूप पापथकी निवृत्ति पाम्यो सतो ज (अह) हु (वसामि) निरवद्य–दोषरहित उपाश्रयादिकमां वसु छु अहीं संजय राजर्षिने स्थिर करवा माटे " हु वसु छु " एम पोतानु ज दृष्टांत आपीने कयु छे एटले के जेम हु असत्प्ररूपणाथी निवृत्त थयो छु तेम तमारे पण निवृत्त थवु कारण के जे साधु पोते साधुमार्गमां रहेलो होय ते बीजाने पण साधुमार्गमां स्थापन करी शके छे. (अ) तथा वळी हु (इरिआमि) गोचर्यादिकने विषे इर्यासमितिवडे चालु छु २६

हवे संजय राजर्षि क्षत्रियमुनिने पूछे छे के—" तमे ते पाखंडीओना वचनथी केवी रीते निवृत्त थया ? " तेनो ते जवाब आपे छे.—

सव्वे ते विइआ मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिआ। विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

अर्थ—(ते सव्वे) ते सर्वे पाखंडीओ (मज्झं) मारा (विइआ) जाणेला छे, के तेओ (मिच्छादिट्ठी) मिथ्यादृष्टि छे अने तेथी करीने (अणारिआ) अनार्य एटले पशुहिंसादिक अनार्य कर्म करनारा छे. तेवा प्रकारना तेमने शी रीते जाण्या ? ते उपर कहे छे.—(परे लोए) परलोक (विज्जमाणे) विद्यमान सते (अप्पयं) मारा आत्माने (सम्मं जाणामि) हुं सम्यक् प्रकार जाणुं छुं. मारो आत्मा परलोकथी एटले बीजा भवमांथी अहीं आव्यो छे एम हुं जातिस्मरण ज्ञानथी जाणुं छुं. तेथी परलोक पण छे अने आत्मा पण छे एम सारी रीते जाणवाथी तेनी ना पाडनारा पाखंडीओना मिथ्यावचनथी हुं निवृत्त थयो छुं; माटे तमे पण निवृत्त थाओ. २७.

तमारो आत्मा परभवथी अहीं आव्यो छे एम तमे शी रीते जाणो छो ? ते उपर कहे छे.—

अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे। जा सा पाली महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥ २८ ॥

अर्थ—(अहं) हुं (महापाणे) महाप्राण नामना पांचमा ब्रह्मदेवलोकना एक विमानने विषे (जुइमं) द्युतिमान एटले तेजस्वी अने (वरिससओवमे) सो वर्षनी आयुष्यवाळा मनुष्यनी उपमावाळो (आसि) हतो. एटले के जेम

वर्तमान काळे अहीं सो वर्षनी आयुष्यवाळो मनुष्य पूर्ण आयुष्यवाळो कहेवाय छे, तेम हु पण त्यां पूर्ण आयुष्यवाळो देव हतो तेमां (या) जे (पाली) पालि अने (महापाली) महापालि एवी (वरिससओवमा) सो सो वर्षे एक एक केशनो उद्धार करीए एवी उपमावाळी बे प्रकारनी (दिव्वा) दीव्य—देवभव सबधी स्थिति छे, तेमांथी (सा) ते महा पालि नामनी मारी दीव्य स्थिति हती. एटले दश सागरोपमनी स्थिति हती अहीं पालि एटले पाळना जेवी पाळ जेम पाळ जळने धारण करी राखे छे तेम आ प्राणि पण जीवित रूपी जळने धारण करी राखे छे अर्थात् पालि एटले भवस्थिति कहेवाय छे. तेमां पालि एटले पल्योपमनी स्थिति अने महापालि एटले सागरोपमनी स्थिति जाणवी. २८. (पालाना दृष्टांते पल्योपमनी स्थिति कही छे ते पालि समजवी)

से चुए बंभलोआओ, माणुस्सं भवमागओ । अप्पणो अपरेसिं च, आउ जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥

अर्थ—(से) ते हु (बंभलोआओ) ब्रह्मदेवलोक थकी (चुए) चव्यो थको (माणुस्सं) मनुष्य सबधी (भव) भवने (आगओ) पाम्यो छु तथा (अप्पणो) पोतानु (च) अने (अपरेसिं) बीना जीवोनु (जहा) जे प्रकारे (आउ) आयुष्य होय (तहा) ते प्रकारे (जाणे) हु जाणु छु जेनु जे प्रकारे-जेटलु आयुष्य होय तेनु ते ज प्रकारे-तेटलु हु जाणु छु, पण विपरीतपणे जाणतो नथी २९

आ प्रमाणे क्षत्रिय मुनिए पूछ्या विना पण प्रसगथी पोतानो वृत्तांत कह्यो, हवे उपदेश आपवाने माटे कहे छे —

नाणारुइं च छंदं च, परिवज्जिज्ज संजेए। अणट्ठा जे अ सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥ ३० ॥

अर्थ—(संजए) साधु (नाणारुइं च) अनेक प्रकारनी रुचिने एटले क्रियावादी विगेरेना मतवाळी इच्छाने वर्जे, तथा (छंदं च) अनेक प्रकारना पोतानी मतिए कल्पना करेला अभिप्रायने (परिवज्जिज्ज) वर्जे, तथा (जे) जे (अणट्ठा) प्रयोजन विनाना व्यापारो होय (अ) अने जे (सव्वत्था) हिंसादिक बीजा सर्व कार्यो होय ते सर्वने पण वर्जे. अथवा (सव्वत्था) सर्वत्र एटले सर्व क्षेत्रादिकने विषे जे प्रयोजन विनाना व्यापारो होय तेने वर्जे. (इइ) आ प्रकारनी (विज्जां) सम्यक् ज्ञान रूप विद्याने (अणुसंचरे) लक्ष्य करीने एटले आश्रीने हे राजर्षि ! तमारे संयममार्गमां चालवुं. हुं पण आवी विद्याने ज अंगीकार करी संयममार्गमां चालुं छुं, माटे तमारे पण ते ज प्रमाणे चालवुं. ३०.

फरीथी क्षत्रियमुनि पोतानो ज आचार बतावे छे.—

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो। अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ३१ ॥

अर्थ—हे राजर्षि ! हुं (पसिणाणं) शुभाशुभने जणावनारा अंगुष्ठप्रश्नादिकथी (पडिक्कमामि) निवृत्ति पाम्यो छुं, (वा पुणो) तथा वळी (परमंतेहिं) परना एटले गृहस्थीओना मंत्रोथकी एटले गृहकार्योना विचारोथी पण हुं निवृत्ति पाम्यो छुं. (अहो) आश्चर्य छे के आ प्रमाणे (अहोरायं) दिवस ने रात (उट्ठिए) धर्म प्रत्ये उद्यमवाळा कोइक ज महात्मा होय छे. (इइ) ए प्रमाणे (विज्जा) जाणता एवा तमे (तवं चरे) तपनुं ज आचरण करो. पण प्रश्नादिकनुं

सेरन न करो ३१

हवे संनय नामना राजर्षिए पूछ्यु के—" तमे आयुष्यने शी रीते जाणो छो ?" तेनो उत्तर क्षत्रियमुनि आपे छे—

जं च मे पुंच्छसी कांले, सम्म सुद्धेण चेअसा। ताइ पाउकरे बुंद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥

अर्थ—(सम्म) सम्यक् प्रकारे (सुद्धेण) शुद्ध–निर्मळ (चेअसा) चित्तवाळा तमे (मे) मने (ज च) जे (काले) काळना विषयवाळु आयुष्य (पुच्छसी) पूछो छो, (ताइ) ते आयुष्यने (बुद्धे) श्री महावीरस्वामीए अथवा श्रुतज्ञानीए (पाउकरे) प्रगट कर्युं छे, तेथी करीने हु जाणु छु (त) ते (नाण) ज्ञान (जिणसासणे) जिनशासनने विषे ज छे, बीजा बौद्धादिकना शासनमां नथी तेथी तमारे जिनशासनने विषे ज उद्यम करवो, के जेथी हु जिनशासनमां रह्यो थको तेना प्रसादथी जेम जाणु छु तेम तमे पण जाणी शकशो ३२

फरीथी उपदेश आपे छे.—

किंरिअं रोअए धीरो, अकिरिअं परिवज्जए। दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चर सुदुच्चरं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(धीरो) धीर एवो साधु (किरिअ) क्रियाने एटले जीवसत्ताने–जीवना होवापणाने (रोअए) पोताना आत्मा प्रत्ये रुचावे–खात्री करावे, तथा बीजाओने पण तेनी रुचि उपजावे अथवा क्रिया एटले मोक्षमार्गनी साधनभूत

१ सजयने बदले सयत नाम पण केटलीक वार आवे छे

प्रतिक्रमण, प्रतिलेखना आदि सम्यक् ज्ञानसहित सम्यक् अनुष्ठानरूप क्रियाने रुचावे-तेनापर रुचि करावे, तथा (अकिरिअं) जीवना नास्तिपणारूप अक्रियाने अथवा मिथ्यात्वीओए कल्पेली अज्ञानकष्टरूप अक्रियाने (परिवज्जए) सर्वथा वर्जे, तेथी धीर एवा साधु (दिट्ठीए) सम्यग्दर्शनवडे करीने (दिट्ठिसंपन्ने) सम्यक् ज्ञान सहित थाय. हे राजर्षि ! तमे पण सम्यग्दर्शने करीने सम्यक् ज्ञान सहित थइने (सुदुचरं) अत्यंत दुष्कर एवा (धम्मं) चारित्र धर्मने (चर) अंगीकार करो. ३३.

फरीथी क्षत्रियमुनि ज संजय राजर्षिने महापुरुषना दृष्टांतवडे स्थिर करवा माटे कहे छे.—

एअं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहिअं । भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ॥३४॥

अर्थ—(अत्थधम्मोवसोहिअं) जे प्रार्थना कराय ते अर्थ एटले स्वर्ग अने मोक्ष, तथा धर्म एटले ते स्वर्ग अने मोक्ष मेळववाना कारणभूत जिनभाषित धर्म, ते बन्नेवडे शोभतुं एवुं (एअं) आ (पुण्णपयं) पुण्यपद-उत्तम उपदेश (सोच्चा) सांभळीने (भरहो वि) भरतचक्रीए पण (भारहं वासं) भरतक्षेत्रने तथा (कामाइं) कामभोगने (चिच्चा) तजीने (पव्वए) प्रव्रज्या लीधी हती. अहीं " पुण्णपयं " ना अर्थ आ प्रमाणे करवा.—पुण्य एटले पवित्र-कलंक रहित-दूषण रहित एवुं पद एटले जिनेश्वरे कहेलुं सूत्र, अथवा पुण्य एटले पुण्यना कारणभूत पद एटले क्रियावादी विगेरे मत उपर रुचिनो त्याग करी शुद्ध धर्मनी प्ररूपणा करनार सूत्र. अथवा पूर्ण एटले संपूर्ण एवुं पद एटले ज्ञान, तेने सांभळीने भरत चक्री के जे सर्व राजाओमां मुख्य हता, तेणे पण आ चारित्रधर्मरूपी मार्गनो ज आश्रय कर्यो हतो, तेथी करीने तमारे पण

आ निरुपापित मार्गनो न आश्रय करवो योग्य छे

भरत चक्रीनी संक्षिप्त कथा

इहनी आराथी दुधेरे अयोध्या नामनी नगरी वनावी तेमा श्रीऋषभदेव स्वामी रहेता हता तेमणे चारित्र ग्रहण कर्युं, त्यारे तेमना ज्येष्ठ पुत्र श्रीभरत चक्रवर्ती तेमां रहेता हता ते चक्रीने चौद रत्नो अने नव निधिओ हता, बत्रीश हजार राजाओ तेनी सेवा करता हता, चोराशी लाख अश्व, रथ अने हाथीओ तेना सैन्यमां हता, छन्नु करोड पत्तिओ (पदाति) हता अने छन्नु करोड गामोना ते अधिपति हता, ते बत्रीश हजार देशोनु पालन करता हता, अडतालीश हजार पत्तनोना स्वामी हता, बहोंतेर हजार पुरना अधीश्वर हता, नव्वाणु हजार द्रोणमुखनु ते रक्षण करता हता अने सोळ हजार यक्षो निरंतर तेनी सेवा करता हता आ प्रमाणे छ खंड भरतक्षेत्रनु ते अखंड रीते राज्य करता हता, तथा चोसठ हजार अंत पुरनी स्त्रीओ साथे क्रीडा करता ते पूर्वना पुण्यरूपी वृक्षना पुष्पसदृश सुखने भोगवता हता अष्टापद पर्वत उपर श्री ऋषभदेव स्वामीना निर्वाणने स्थाने तेमणे एक चैत्य कराव्यु तेनी अंदर चोवीशे तीर्थंकरोनी पोतपोताना शरीरना प्रमाण अने वर्णवाळी प्रतिमाओ स्थापन करी हती तथा निरंतर तेमनी वंदना अर्चा करता हता तेमज अति प्रीतिथी निरंतर साधर्मिकवात्सल्य करता हता आ रीते ते भरतचक्रीए छ लाख पूर्व व्यतीत कर्यां

एकदा प्रात काळे अभ्यंगन, उद्वर्तन अने स्नान करी भरतचक्री सर्व वस्त्र अलंकार धारण करी आदर्शभवनमां गया त्यां आरिसामां पोतानु शरीर जोतां तेणे एक आंगळी मुद्रिका रहित होवाथी शोभा विनानी जोइ, तेथी तेणे बीजी आंग-

ळीमांथी पण मुद्रिका काढी नांखी त्यारे ते पण शोभा रहित जोइ. पछी धीमे धीमे एक एक अलंकार उतारतां छेवटे तेणे समग्र अलंकारो उतार्या. त्यारे तेणे पोतानुं शरीर कमळ विनाना सरोवरनी जेवुं तद्दन शोभा रहित जोयुं. ते जोइ चक्रीए विचार्युं के—" अहो ! आ शरीर मात्र आगंतुक पदार्थो वडे ज शोभे छे, परंतु ते स्वभावथी तो कांइ पण सुंदर नथी. आ शरीरने स्नानादिक वडे संस्कार करी वस्त्र आभूषणो विगेरे पहेरावीए तोज ते शोभे छे, आवा असार देहने मूढ लोको सुंदर माने छे. वळी मनोहर अन्न, जळ, पुष्प, गंध, वस्त्र विगेरे उत्तम वस्तुओ पण तीना संगथी ब्रह्मचर्यनी जेम आ अशुचि शरीरना संगथी नाश पामे छे–अपवित्र थाय छे. तो मोटुं आश्चर्य छे के पंडितो पण बाळकनी जेम विवेक रहित थइ आवा असार शरीरने माटे अनेक प्रकारनां पाप कर्मो करे छे! परंतु मोक्षने आपनारुं आ मनुष्यपणुं पामीने द्यूतवडे चिंतामणिनी जेम शरीरने अर्थे कराता पापो वडे मारे तो आ मनुष्यपणुं हारी जवुं योग्य नथी. " इत्यादि शुभ ध्यान करतां अधिक अधिक संवेगने पामेला ते चक्री मोक्षरूपी महेलनी नीसरणी समान क्षपकश्रेणिपर आरूढ थया. तरत ज चार घातीकर्मनो क्षय करी भाव चारित्रने पामी अज्ञानरूपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्यसमान केवळज्ञानने पाम्या. ते वखते शक्र इंद्रे आवी चक्रीने कह्युं के—" हे पूज्य ! द्रव्यलिंगने अंगीकार करो, जेथी अमे दीक्षामहोत्सव तथा केवळज्ञाननो महोत्सव करीए. " ते सांभळी तेमणे पोताना मस्तकपर पंचमुष्टि लोच करी शासनदेवताए आपेलो साधुवेष अंगीकार कर्यो. पछी वादळांमांथी सूर्यनी जेम ते राजर्षि घर बहार नीकळ्या. तेमने व्रत अंगीकार करेला जोइ

१ इंद्रे पोतेज साधु वेष आप्यो एम पण प्रत्यंतरमां छे.

बीजा दश हजार राजाओए पण ससारनी वासना क्षीण थवाथी तेमनी साथे ज दीक्षा ग्रहण करी पछी इद्रादिक देवो तेमनो ज्ञान सबधी महोत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया भगवान राजर्षि भव्यप्राणीओने बोध करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या

भरतराजा कुमार अवस्थामा सीत्तोतेर लाख पूर्व रह्या, एक हजार वर्ष मांडलिक राजापणे रह्या, एक हजारे ओछा एवा छ लाख पूर्व चक्रवर्तीपणामां रह्या अने एक लाख पूर्व केवळीपणायुक्त दीक्षापर्यायमां रह्या ए रीते कुल चोराशी लाख पूर्वनु आयुष्य भोगवी भरतराजर्षि सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या

इति भरतचक्री कथा

संगरो वि सौगरत, भैरहवास नैराहिवो । इस्सरिअ केवेल हिच्चा, देयाए परिनिव्वुए ॥ ३५ ।

अर्थ—तथा (सगरो) सगर नामना (नराहिवो) नराधिप एटले चक्रवर्ती (वि) पण (सागरत) पूर्वादिक त्रण दिशामां सागर पर्यंत अने उत्तरदिशामां हिमवानपर्वत पर्यंत (भरहवास) छ खड भरतक्षेत्रने तथा (केवल) परिपूर्ण (इस्सरिअ) ऐश्वर्यने (हिच्चा) तजीने (दयाए) दयाधर्मवड (परिनिव्वुए) निर्वृति–मोक्ष पाम्या ३५

सगर चक्रीनी सक्षिप्त कथा

अयोध्या नामनी नगरीमां इक्ष्वाकु वशमां जितशत्रु नामे राजा हता तेने विजया नामनी राणी हती ते राजाने

सुमित्र नामे नानो भाइ युवराज हतो, तेने यशोमती नामनी पत्नी हती. जितशत्रु राजानी राणी विजयाने एकदा चौद स्वप्नथी सूचित पुत्र उत्पन्न थयो, तेनुं अजित नाम पाड्युं. ते तीर्थंकर थया. सुमित्र युवराजनी पत्नी यशोमतीए पण चौद स्वप्नथी सूचित पुत्र प्रसव्यो. तेनुं सगर नाम पाड्युं. ते चक्रवर्ती थया. ते बन्ने कुमार युवावस्थाने पाम्या त्यारे तेमना मातापिताए महोत्सवपूर्वक तेमने राजकन्याओ परणावी. केटलेक काळे जितशत्रुराजाए पोताना राज्यपर अजितने स्थापन कर्या अने सगरने युवराज पदवी आपी. पछी जितशत्रु राजाए नाना भाइ सुमित्र सहित दीक्षा अंगीकार करी.

अजित राजाए केटलोक काळ राज्यनुं पालन करी धर्मतीर्थ प्रवर्तावना माटे सगरने राज्यपर स्थापन करी पोते चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे सगर राजाने राज्य करतां तेना राज्यमां चौद रत्नो उत्पन्न थयां, ते वडे छ खंड भरतक्षेत्रने साधी ते चक्रवर्ती थया. ते चक्रीने साठ हजार पुत्रो थया. तेओमां सर्वथी मोटो पुत्र जन्हु नामे हतो. एकदा जन्हुकुमारे सगर चक्रीने कोइक प्रकारे संतुष्ट कर्या, तेथी चक्रीए जन्हुकुमारने कह्युं के–" जे तारी इच्छा होय ते माग." जन्हुए माग्युं के–" हे पिता ! आपनी आज्ञाथी सर्व भाइओ सहित हुं चौदे रत्नो अने सर्व सैन्य साथे लइ पृथ्वीपर पर्यटन करुं एवी मारी इच्छा छे." ते तेनी इच्छा सगरचक्रीए मान्य करी. शुभ मुहूर्ते भाइओ सहित जन्हुकुमारे रत्नो अने सैन्य-साथे लइ प्रयाण शरु कर्युं. अनुक्रमे अनेक देशोमां फरतो फरतो ते अष्टापद पर्वत पासे आव्यो. त्यां पर्वतनी नीचे सर्व सैन्य मूकी पोते भाइओ अने परिवार सहित पर्वतपर चड्यो. त्यां भरतचक्रीए करावेलुं, मणिसुवर्णमय अने

तो स्तूपथी परिवरेलु चैत्य जोयु, तेनी अंदर रहेली चोवीशे तीर्थंकरोनी प्रतिमाओने जोइ तेने विधिपूर्वक वंदना करी पछी जह्नुकुमारे मंत्रीओने पूछ्यु के—" क्या पुण्यवंत पुरुषे आ अतिरमणीय जिनभवन कराव्यु छे ? " मंत्रीए कह्यु के—" हे कुमार ! तमारा पूर्वज भरत नामना चक्रवर्तीए आ चैत्य कराव्यु छे " ते सांभळी जह्नुकुमारे कह्यु के—" आवो अष्टापद जेवो बीजो कोइ पर्वत होय तो त्यां आपणे पण आवु चैत्य करावीए " एम कही ते कुमारे तेवो पर्वत शोधवा माटे चारे दिशामां पोताना पुरुषो मोकल्या तेओ समग्र पृथ्वीपर भ्रमण करी पाछा आव्या अने कुमारने कह्यु के—" हे स्वामी ! आवो पर्वत कोइ पण ठेकाणे नथी "

त्यारे जह्नुकुमारे कह्यु के—" जो आवो बीजो पर्वत न होय तो आपणे आ तीर्थनी ज रक्षा करीए कारण के आ क्षेत्रमां काळना क्रमे करीने भविष्यमां लोको लोभी अने शठ थशे, तेथी तेओ आ तीर्थनो विनाश करनारा थशे माटे नवु करावरा करतां जूनानु पालन करवु एज मोटु श्रेयकारक छे " एम कही सर्व भाइओ सहित जह्नुकुमार दंडरत्न लइ ते वडे पर्वतनी चोतरफ खाइ खोदवा लाग्यो ते वखते ते दंडरत्ने हजार योजन पृथ्वीने भेदी पाताळमां ज्यां नागकुमारनां भवनो हतां तेमने पण भेदी नाख्यां ते उपद्रवथी भय पामेला सर्व नागकुमारो शरणनी गवेषणा करतां नागराज ज्वलनप्रभ पासे गया, अने तेनी पासे पोताना भवनना उपद्रवनो वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी ज्वलनप्रभ पण एकदम संभ्रांत थइ उभो थयो अने अवधिज्ञानवडे ते स्वरूप जाणी क्रोधथी धमधमतो सगर राजाना पुत्रो पासे आव्यो तेणे तेओने कह्यु के—" हे राजपुत्रो ! तमे दंडरत्नवडे पृथ्वीने विदारतां अमारा भवनोमां उपद्रव कर्या, ते तमे अवि

चार्युं काम कर्युं छे." ते सांभळी नागराजना कोपने शांत करवा माटे जन्हुकुमारे तेने कह्युं के—" हे नागराज! अमारा पर प्रसन्न थाओ, कोपने संहरी ल्यो, अने अमारो आ एक अपराध क्षमा करो. अमोए आ कार्य तमारा भवनोने उपद्रव करवा माटे कर्युं नथी, परंतु आ अष्टापद तीर्थनी रक्षा करवा माटे तेनी फरती खाइ खोदी छे. हवे फरीथी अमे आवुं कार्य नहीं करीए." ते सांभळी शांत थयेलो ज्वलनप्रभ पोताने स्थाने गयो.

पछी जन्हुकुमारे पोताना भाइओने कह्युं के—" जो के आ खाइने कोइ ओळंगे तेम नथी, तो पण ते पाणी विना शोभती नथी, तेथी आ खाइने जळथी भरी दइए." एम कही दंडरत्नवडे गंगानदीना प्रवाहने वाळी ते खाइमां नांख्यो अने जळवडे ते खाइ भरी दीधी. ते जळ नागकुमारना भवनोमां पण पहोंच्युं. ते जळना प्रवाहथी त्रास पामेला नागकुमारना देवो अने देवीओ आमतेम नासवा लाग्यां. तेमने तेवी स्थितिवाळा जोइ ज्वलनप्रभ अवधिज्ञानना उपयोगथी सगरना पुत्रोनुं आ कार्य जाणी अति क्रोध पाम्यो, तेथी तेणे विचार कर्यो के—" अहो! आ जन्हु विगेरे कुमारो महापापी छे, तेमनो एकवार अपराध तो में माफ कर्यो, तोपण तेओए फरीथी आ मोटो उपद्रव कर्यो, माटे हवे तेमना अविनयनुं फळ देखाडुं." एम विचारी ज्वलनप्रभे तेमनो विनाश करवा माटे मोटा दृष्टिविष सर्पो मोकल्या. तेओए खाइना जळमांथी बहार नीकळी ते कुमारो सामुं जोयुं एटले तरत ज ते सर्वे सगर राजाना पुत्रो भस्मसात् थइ गया. ते जोइ समग्र सैन्यमां हाहाकार थइ रह्यो. तेमनो शोक दूर करवा माटे मुख्य मंत्रीए तेमने कह्युं के—" आ कुमारो तीर्थनी रक्षा करता हता, तेमां अवश्य भाविपणाने लीधे तेओनी आवी मरण अवस्था थइ छे. परंतु तेओ सद्गतिने ज पाम्या हशे, तो हवे शोक

शामाटे करो छो? हवे तो आपणे शीघ्रपणे आपणा स्वामी पासे जवु योग्य छे ' आ प्रमाणे मंत्रीनु वचन सर्व सैन्ये अंगीकार कर्युं पछी त्यांथी शीघ्र प्रयाण करी अनुक्रमे ते सैन्य अयोध्यापुरीनी समीपे आवी पहोंच्यु त्यां सामंत राजाओए अने मंत्रीओए परस्पर विचार कर्यो के—" सर्व कुमारोना अकस्मात् विनाशनो वृत्तांत आपणे चक्री पासे शी रीते करी शकशुं? ते सर्व कुमारो पछी मुवा अने आपणे अक्षत शरीरवाळा पाछा आव्या, ए वात पण आपणने अत्यंत लज्जा उपजावे तेवी छे तेथी आपणे सर्वे अग्निमां ज प्रवेश करीए " आ प्रमाणे तेओ विचार करता हता, तेवामां तेमनी पासे एक वृद्ध ब्राह्मण आव्यो, तेणे ते सामंतो अने मंत्रीओ विगेरेने कह्युं के—" हे वीर पुरुषो! तमे शा माटे आम आकुळ-व्याकुळ थया छो? खेदने मूकी द्यो आ संसारमां सुख के दुःख प्राप्त थवुं ते कांइ अद्भुत एटले नवाइनु नथी. आ संसारमां कर्मने वश थयेला जीवो अनादिकाळथी सुख दुःख पाम्या ज करे छे माटे तमे शोकनो त्याग करो सगर राजा पासे कुमारोना विनाशनो वृत्तांत हुं ज कहीश " ते सांभळी सामंतादिके ते ब्राह्मणनु वचन अंगीकार कर्युं

त्यारपछी ते ब्राह्मण कोइ मरी गयेला बाळकनु मडदु उपाडी " हा हा! हुं लुटायो " एम बोलतो चक्रवर्तीना राजद्वार पासे गयो चक्रीए तेना विलापनो शब्द सांभळी तेने सभामां बोलाव्यो, अने पूछ्युं के—" हे ब्राह्मण! तारु शुं धन कोणे लुट्युं छे?" ब्राह्मण बोल्यो के—" हे देव! मारे एक ज पुत्र हतो, ते सर्पडंश थवाथी मरण पाम्यो. ते दुःखथी हुं विलाप करुं छुं माटे हे दयाना सागर! तमे एने जीवाडो " त्यारे चक्रवर्तीए वैद्यो अने मांत्रिकोने बोलावी ते बाळकने साजो करवा कह्युं तेओए राजपुत्रोनुं मरण सांभळ्युं हतुं तेथी तेमांथी एक वैद्ये कह्युं के—" हे देव! जेना घरमां

आज सुधी एक पण मनुष्यनुं मरण थयुं न होय तेने घेरथी राख मंगावा, एटले आ बाळकने अमे जीवतो करीशुं. " ते सांभळी राजाए पोताना सेवकोने नगरीमां तेवी राख लाववा मोकल्या. तेओ आखी नगरीमां घेर घेर फरी फरीने पाछा आव्या अने तेमणे राजाने कह्युं के—" हे स्वामी ! अमे दरेक घेर जइ तेवी राख मागी, त्यारे दरेक घरना माणसोए जवाब आप्यो के—आ घरमां अमारी माता मरी गइ छे, पिता मरी गया छे, बंधु मरी गयो छे, बहेन मरी गइ छे, स्त्री मरी गइ छे, भर्तार मरी गयो छे, विगेरे अनेकना मरण थयानुं जणाव्युं. कोइ पण एवुं घर न नीकळ्युं के ज्यां मनुष्योनां मरण थयां न होय. " ते सांभळी राजाए ब्राह्मणने कह्युं के—" हे विप्र ! आ प्रमाणे ज्यारे दरेक घेर अनेकनां मरण नीपजे छे त्यारे कोनो शोक करवो ? माटे हे ब्राह्मण ! तुं शोक मूकी दे, रुदन न कर, आत्महितनुं चिंतवन कर, तुं पण काळे करीने मरण पामीश. " त्यारे विप्र फरीथी बोल्यो के—" हे देव ! आप जे कहो छो ते हुं पण जाणुं छुं, परंतु हमणां तो पुत्र रहित थवाथी मारा कुळनो क्षय थयो छे, तेथी हुं अति दुःखी छु. आप अनाथना नाथ छो अने दुःखीना वत्सल छो तथा आपनो प्रताप अस्खलित छे, तेथी मारा पुत्रने जीवाडी मने मनुष्यनी भिक्षा आपो. " राजाए कह्युं—" हे भद्र ! आनो प्रतिकार अशक्य छे. जेमां मंत्र तंत्र, औषध के पराक्रम चाली शकतां नथी एवा अदृश्य विधातारूप शत्रु उपर कयो विद्वान पराक्रम करी शके ? माटे हे विप्र ! तुं शोक मूकी दे. परलोकनुं हित कर. जे मूर्ख होय ते ज मरेलानो के नष्ट थयेलानो शोक करे. " ब्राह्मण बोल्यो—" हे महाराजा ! आप कहो छो ते सत्य छे, के पुत्रना मरणथी पण तेना पिताए शोक करवो नहीं. तो आपने पण असंभवित एवा शोकनुं कारण थयुं छे, तेथी आप पण शोक करशो

नहीं " ते सांभळी सभ्रांत चित्ते राजाए पूछ्युं के—" हे विप्र ! मारे केवा प्रकारनुं शोकनुं कारण थयुं छे ? " ब्राह्मणे कह्युं के—" हे देव ! आपना साठ हजार कुमारो एकी वखते काळधर्म पाम्या छे "

आ वचन सांभळी चक्री जाणे वज्रथी हणायो होय तेम तत्काळ चेतना रहित थइ सिंहासनपरथी पृथ्वीपर पडी मूर्छित थया सेवकोए शीतोपचार करी चक्रीनी मूर्छा दूर करी, त्यारे चक्री रुंधे कंठे रुदन करी आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्या के—" हा पुत्रो ! हा हृदयवल्लभो ! हा बधुओने वहाला ! हा शुभ स्वभाववाळा ! हा विनयवंत पुत्रो ! हा समग्र गुणोना निधान पुत्रो ! मने अनाथने मूकी तमे केम गया ? तमारा विरहथी पीडायेला मने एकवार तमारुं दर्शन आपो हा निर्दय पापी विधाता ! एकी वखते सर्व पुत्रोनो संहार करता तारा शा मनोरथ पूर्ण थया ? हा कठोर हृदय ! पुत्रोना मरणना असह्य दुःखथी ताप पाम्या छतां तारा सैंकडो ककडा केम नथी थता ? " आ प्रमाणे विलाप करता चक्रीने ते ज ब्राह्मणे कह्युं के—" हे स्वामी ! तमे हमणां ज मने उपदेश करता हता अने तमे ज केम शोक करो छो ? कह्युं छे के—बीजानुं दुःख जोइ संसारनी असारता सुखे करीने कही शकाय छे, परंतु ज्यारे पोताना ज बधुजनोना विनाशनुं दुःख पोताने प्राप्त थाय त्यारे तेनी सर्व धीरता चाली जाय छे हे देव ! एक पुत्रनुं मरण पण दुःसह छे, तो एकी साथे साठ हजार पुत्रोना मरणनुं शुं कहेवुं ? तोपण सत्पुरुषो ज व्यसनने—दुःखने सहन करे छे, पृथ्वी ज वज्रपातने सहन करे छे माटे धैर्यनुं अवलंबन करी शोकने दूर करो विलाप करवाथी शुं फळ छे ? कह्युं छे के—

६

शोक करवाथी कांइ रक्षण थतुं नथी, परंतु उलटो कर्मबंध थाय छे, तेथी करीने संसारनुं स्वरूप जाणनार पंडितो कदापि शोक करता नथी." आवां वचनोवडे ते ब्राह्मणे राजाने शांत कर्या. ते वखते पेला मंत्री अने सामंतोए पण शोक करता करता राजसभामां प्रवेश कर्यो. तेमने राजाए पुत्रोनो वृत्तांत पूछ्यो, एटले तेओए जे रीते वन्युं हतुं तेवी रीते सर्व स्वरूप यथार्थ कही बताव्युं अने प्रधान पुरुषोए राजाने धीरज आपी, एटले राजा अनुक्रमे उचित कार्यमां प्रवृत्त थया.

एकदा अष्टापद पासेना गाममां वसनारा लोकोए आवी चक्रीने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—" हे देव ! आपना कुमारोए अष्टापदनी रक्षा माटे जे गंगानो प्रवाह आण्यो छे ते प्रवाह खाइथी बहार नीकळी वधीने नजीकना गामोने उपद्रव करे छे. तेथी आप ते उपद्रवनुं निवारण करो. कारण के आप सिवाय बीजा कोइनी तेवी शक्ति नथी." ते सांभळी चक्रीए पोताना पौत्र भगीरथने कह्युं के—" हे वत्स ! नागराजनी आज्ञा लइ दंडरत्नवडे खेंचीने गंगाना प्रवाहने समुद्रमां लइ जा." आ प्रमाणे पितामहनी आज्ञा अंगीकार करी भगीरथ अष्टापद पासे गयो. त्यां तेणे अष्टम तप करी नागराजनी आराधना करी. त्यारे ते नागराजे प्रत्यक्ष थइ तेने कह्युं के—" हे वत्स ! हुं तने शुं करी आपुं ?" भगीरथे प्रणामपूर्वक विज्ञप्ति करी के—" आपनी अनुज्ञा होय तो हुं आ गंगाना प्रवाहने समुद्रमां लइ जाउं. कारण के अहींना लोकोने तेनो महा उपद्रव छे." ते सांभळी नागराजे तेने कह्युं के—" निर्भयपणे तुं तारुं इच्छित कर. हुं भरतखंडमां रहेनारा नागोने तने उपद्रव करतां अटकावीश." एम कही ते नागराज पोताने स्थाने गया. भगीरथे बळिदान अने पुष्पा-

दिक्वडे सर्व नागोनी पूजा करी त्यारथी लोकमां नागपूजा करवानी प्रवृत्ति थइ पछी भगीरथे दडरत्नवडे गगाने खेंची घणा पर्वतो अने अरण्योने ओळगी पूर्व समुद्रमां उतारी जे ठेकाणे गगा अने सागरनो सगम थयो ते स्थळे गगासागर नामनु तीर्थ थयु प्रथम जन्हुकुमारे गगा नदी आणी तेथी तेनु नाम जान्हवी कहेवाय छे अने पछी भगीरथे समुद्रमां पहोंचाडी तेथी तेनु नाम भागीरथी पण कहेवाय छे पछी नागोथी पूजातो भगीरथ अयोध्यामां आव्यो तेना कार्यथी प्रसन्न थयेला चक्रीए तेनु बहुमान करी तेने राज्यपर स्थापन कर्यो, अने पोते श्री अजितनाथ स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी सत्य प्रतिज्ञावाळा सगर राजर्षिए दुस्तप तप करी केवळज्ञान प्राप्त कर्यु, अन अनुक्रमे बोंतेर लाख पूर्वनु कुल आयुष्य भोगवी छेवट कर्मनो क्षय करी मोक्षे गया

एकदा भगीरथ राजाए कोइ ज्ञानी मुनिने पूछयु के—" हे भगवान ! जन्हु विगेरे साठ हजार भाइओ एकी वखते मरण पाम्या तेनु शु कारण ? ते कृपा करीने कहो " त्यारे मुनि बोल्या के—" हे राजा सांभळो —

एकदा कोइ मोटो सघ समेतशिखरनी यात्रा करवा जतो हतो. ते मार्गमां मोटा अरण्यने ओळगी पासेना गाममां आव्यो ते गाममा सर्वे अनार्य लोको रहेता हता, तेथी तेओए सघने घणो उपद्रव कर्यो अने दुर्वचनो बोली तेमना वस्त्र, अन्न अने धन विगर सर्व लूटी लीधु. आवु महापाप करी ते गामना सर्व लोकोए ते सवधी अशुभ कर्म बांध्यु ते वखते त्यां एक भद्रिक परिणामवाळो कुमार रहेतो हतो, तेणे गामना सर्व लोकोने कह्यु के—" आ यात्राळु लोकोने तमे उपद्रव

न करो. बीजा कोइ पण निरपराधी जनने उपद्रव करवामां महा पाप छे तो आ धार्मिक जनोने उपद्रव करवामां केटलुं बधुं पाप लागे ? तेथी करीने जो कदाच आ संघनी योग्य भक्ति करवानी तमारी शक्ति न होय तो भले भक्ति न करो, पण उपद्रव शा माटे करो छो ? " आ प्रमाणे कही ते कुंभारे गामलोकोने वार्या, तोपण तेओए संघने लुंट्यो. पछी संघ महाकष्टवडे त्यांथी छूटीने आगळ गयो. एकदा ते गामना रहीश कोइ माणसे पासेना नगरमां जइ चोरी करी. तेनी शोध करतो कोटवाळ तेने पगले पगले ते गाम सुधी आव्यो. पछी राजानी आज्ञाथी ते कोटवाळे ते गामना दरवाजा बंध करी चोतरफ अग्नि मूकी ते आखुं गाम बाळी नांख्युं. तेमां साठ हजार माणसो बळी गया. मात्र ते एक कुंभार ज ते दिवसे बहारगाम गयो हतो तेथी ते बच्यो. ते साठ हजार जीवो विराट देशना अंतिम (छेडे रहेला) गाममां कोद्रव नामना धान्यरूपे उत्पन्न थया. ते कोद्रानो एक मोटो ढग कर्यो हतो, तेटलामां त्यां एक मोटो हाथी आव्यो, तेना चरणना मर्दनथी ते सर्वे एकी वखते मरण पाम्या. पछी विविध प्रकारनी अति दुःखदाळी योनिओमां चिरकाळ सुधी तेमणे परिभ्रमण कर्युं. छेवटे कांइक सुकृत उपार्जन कर्युं तेथी ते सर्वे सगर चक्रीना पुत्रोपणे उत्पन्न थया. ते साठे हजार पुत्रो पूर्वनुं कर्म कांइक बाकी रहेलुं होवाथी तेवा प्रकारनुं आकस्मिक मरण पाम्या.

पेलो कुंभार पण ते भवनुं आयुष्य पूर्ण थये मरीने कोइ नगरमां समृद्धिवाळो वणिक थयो. त्यां सुकृत करी मरण पामीने बीजा भवमां राजा थयो. त्यां राज्य भोगवी शुभकर्मना उदयथी मुनिधर्म अंगीकार करी शुद्ध चारित्र पाळी स्वर्गे

१ अरण्यमा मातृवाहक जातिना जीवपणे उत्पन्न थया. एम प्रत्यंतरमा छे.

गयो त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीन हे भगीरथ राजा ! तमे अहीं जन्हुना पुत्र थया छो " आ प्रमाणे ज्ञानी मुनिना मुखथी सर्व वृत्तांत सांभळी भगीरथ राजा श्रावक धर्म अंगीकार करी पोताने स्थाने गयो

इति सगर चक्री कथा

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महायसो ॥ ३६ ॥

अर्थ—(महिड्ढिओ) चौद रत्नो, नव निधान, वैक्रिय लब्धि विगेरे मोटी ऋद्धिवाळा अने (महायसो) मोटा यशवाळा (मघव नाम) मघवा नामना (चक्कवट्टी) त्रीजा चक्रवर्तीए (भारहं वासं) छ खंड भरतक्षेत्रनो (चइत्ता) त्याग करी (पव्वज्ज) प्रव्रज्याने (अब्भुवगओ) अंगीकार करी ३६.

मघवा चक्रीनी संक्षिप्त कथा —

आ ज भरतक्षेत्रमां श्रावस्ती नामनी नगरीमां लक्ष्मीवडे समुद्रनो विजय करनार समुद्रविजय नामे राजा हतो. तेने भद्रा नामनी राणी हती. एकदा रात्रिने छेल्ले पहोरे ते राणीए चौद महास्वप्नो जोयां जोइने तरत ज जागी गयेली राणीए हर्षथी ते वृत्तांत राजाने कह्यो राजाए कह्यु के—" हे देवी ! आ स्वप्नोथी तु चक्रवर्ती पुत्रने प्रसवीश " अनुक्रमे गर्भ समय पूर्ण थये राणीए पुत्र प्रसव्यो राजाए मोटा उत्सवपूर्वक तेनु मघवा नाम पाड्यु ते अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो त्यारे समुद्रविजय राजाए तने राज्यपर स्थापन कर्यो ते मघवा राजा राज्य करतो हतो तेवामां तेनी आयुधशाळामां

चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. तेवडे ते छ खंड भरतक्षेत्र साधी त्रीजा चक्रवर्ती थया. पछी घणा काळ सुधी राज्यऋद्धिने भोगवता तेने एकदा संसारपरथी वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तेणे विचार कर्यो के—" आ सर्वे रमणीय पदार्थो कर्मबंधना हेतु छे तथा अस्थिर छे. विद्युत्‌ना विलासनी जेम क्षणमां नाश पामनारा छे. तेथी मारे हवे आत्मकार्य साधवामां उद्यम करवो योग्य छे. " इत्यादि विचार करी पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी मघवा चक्रीए प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे चारित्रनुं पालन करी उग्र तप तपी कुल पांच लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी ते राजर्षि सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया.

इति मघवा चक्रीनी कथा.

सणंकुमारो मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे ठवित्ता णं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥

अर्थ—(महिड्ढिओ) मोटी ऋद्धिवाळो अने (मणुस्सिंदो) मनुष्योनो इंद्र एवो (सणंकुमारो) सनत्कुमार नामनो (चक्कवट्टी) चक्रवर्ती थयो हतो. (सो वि राया) ते चक्रीए पण (पुत्तं) पुत्रने (रज्जे) राज्यपर (ठवित्ता णं) स्थापन करी (तवं) तपनुं-चारित्रनुं (चरे) आचरण कर्युं हतुं. ३७.

सनत्कुमार चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

आ ज भरतक्षेत्रमां कुरुजंगल नामना देशमां हस्तिनापुर नामनुं नगर छे. तेमां अश्वसेन नामे राजा हतो. तेने

सहदेवी नामनी राणी हती तेणीए एकदा रात्रिने छेल्ले पहोरे चौद महास्वप्नो जोयां. ते जोइ राणीए राजाने कह्युं, त्यारे राजाए तेणीने चक्रवर्ती पुत्रनो जन्म थशे एम कही आनंदित करी. अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए श्रेष्ठ पुत्र प्रसव्यो राजाए महोत्सवपूर्वक तेनु सनत्कुमार नाम पाड्यु ते कुमार अनुक्रमे कल्पवृक्षना अंकुरानी जेम वृद्धि पामवा लाग्यो ते कुमारनी साथे रमनारो महेंद्रसिंह नामनो तेने मित्र हतो ते बन्ने कलाचार्य पासे साथे ज सर्व कळाओ शीख्या अनुक्रमे सनत्कुमार युवावस्था पाम्यो

एकदा वसंत ऋतुमां अनेक राजपुत्रो अने नगरना जनो सहित सनत्कुमार क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो त्यां अश्वक्रीडा करती वखते सर्वे राजपुत्रो पोतपोताना अश्वपर आरूढ थइ अश्वक्रीडा करवा लाग्या. ते वखते सनत्कुमार पण पोताना जलधिकल्लोल नामना अश्वपर आरूढ थयो पछी सर्व कुमारोए पोतपोताना अश्वो दोडाव्या तेमां विपरीत शिक्षावाळो सनत्कुमारनो अश्व एटलो बधो वेगथी दोड्यो के जेथी बीजा सर्व कुमारोना अश्वो पाछळ रही गया थोडा समयमां ज कुमार अश्व सहित अदृश्य थयो ते वृत्तांत सांभळी राजा परिवार सहित तेनी पाछळ चाल्यो परंतु ते वखते सखत वायु वावा लाग्यो, तेथी अत्यंत धूळ उडवाने लीधे मार्गमां कुमारना अश्वना पगलां पण लोपाइ गयां. तेथी राजा थाकीने निराश थइ पाछो वळ्या

त्यारपछी सनत्कुमारनी शोध माटे राजानी आज्ञा लइ महेंद्रसिंह एकलो ज चाल्यो उन्मार्गे चालतां एक मोटा अरण्यमां आव्यो त्यां एक वर्ष सुधी ते चोतरफ भम्यो तेवामां एकदा तेणे एक मोटु सरोवर जोयु तेमां रहेला कमळोना

सुगंधथी ते आनंद पाम्यो. ते वखते थोडेक दूर मधुर गीत अने वेणुनो शब्द तेना सांभळवामां आव्यो. तेथी महेंद्रसिंह ते शब्दने अनुसारे आगळ गयो. तो त्यां केटलीक तरुण स्त्रीओनी मध्यमां रहेला सनत्कुमारने तेणे जोयो. ते जोइ मनमां आश्चर्य पामी महेंद्रसिंहे विचार कर्यो के—" शुं आ हुं जोउं छुं ते भ्रांति छे के सत्य छे ? " आ प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेटलामां तेणे वंदीजनोनी आ प्रमाणे वाणी सांभळी.—" हे कुरुवंशना अलंकार ! सौभाग्यवडे कामदेवने जीतनार ! अश्वसेन राजाना पुत्र ! हे सनत्कुमार ! तमे चिरकाळ जय पामो. " आ प्रमाणे सांभळी महेंद्रसिंहे निश्चय कर्यो के—" आ सनत्कुमार ज छे. " पछी ते महेंद्रसिंह धीमे धीमे सनत्कुमारनी सन्मुख चाल्यो. पोताना मित्रने सामे आवतो जोइ सनत्कुमार पण हर्षथी तत्काळ उभो थइ तेनी सन्मुख चाल्यो. पासे आवतां महेंद्रसिंह कुमारना पगमां पड्यो, सनत्कुमारे तेने उभो करी गाढ आलिंगन कर्युं. बन्ने मित्रो अत्यंत हर्षित थया. पछी विद्याधरे आपेला आसन उपर ते बन्ने बेठा, अने विद्याधरो तेमनी पासे सन्मुख बेठा. पछी जेनां नेत्रोमांथी आनंदनां अश्रु झरतां हतां एवा सनत्कुमारे मित्रने पूछयुं के—" हे मित्र ! तुं एकलो आ अटवीमां शी रीते आव्यो ? अने हुं अहीं छुं एम तें शी रीते जाण्युं ? मारा विरहमां मारा मातापिता शुं करे छे ? " आ प्रमाणे कुमारना पूछवाथी महेंद्रसिंहे सर्व वृत्तांत कुमारने कह्यो. पछी स्नान भोजन करी बन्ने मित्रो आनंदथी बेठा.

ते वखते महेंद्रसिंहे कुमारने पूछयुं के—" हे कुमार ! ज्यारे तमने ते अश्व हरी गयो त्यारे तमे क्यां गया ? क्यां रह्या ? अने आवी समृद्धि शी रीते पाम्या ? " ते कह्यो. ते सांभळी सनत्कुमारे विचार्युं के—" मारे मारा मुखथी ज मारुं

चरित्र कहेवु योग्य नथी ” एम विचारी पोते परणेली विद्याधरनी पुत्री विपुलमती नामनी प्रियाने तेणे सज्ञा करी ‘ ते कहेशे ’ एम मित्रने कह्यु अने पोते सूइ गयो

त्यारपछी विपुलमती प्रज्ञप्ति विद्याना बळथी कुमारनु वृत्तात जाणी महेंद्रसिंहने कहेवा लागी के—“ ते वखते तमारा देखतां ज कुमारने ते अश्व एक मोटा वनमां लइ गयो रात दिवस निरतर चालतो ते अश्व बीजे दिवसे मध्यान्ह समय सुधी चाल्यो ते वखते भूख अने तरसने लीधे तथा थाकने लीधे ते अश्वना मुखमांथी जिन्हा बहार नीकळी गइ तरत ज ते पृथ्वीपर पड्यो अने मृत्यु पाम्यो त्यारपछी कुमार तेनापरथी उतरी पगवडे ज चालवा लाग्या अत्यत तृषा लागवाथी जळने माटे चोतरफ भमवा लाग्या लांबा मार्गना श्रमथी तेम ज शरीरना कोमळपणाथी चालवामा पण ते अशक्त थया तेवामां थोडे दूर एक सप्तच्छद वृक्ष तेना जोवामा आव्यो त्यां महाकष्टथी पहोंची तेनी छायामां बेठा, अने आंखे अंधारा आववाथी त्यां ज पडी गया आ अवसरे कुमारना पुण्यप्रभावथी वनमां रहेनारा कोइ यक्षे शीतळ जळ लावी कुमारना सर्व अगे जळ छांटी तेने सचेतन कर्या. पछी कुमारे ते जळनु पान करी यक्षने पूछ्यु के—“तमे कोण छो ? अने आ जळ तमे क्यांथी लाव्या ?” यक्षे जवाब आप्यो के—“ हु आ वनमां रहेनार यक्ष छु आ जळ हु मानस सरोवरमांथी लाव्यो छु ” कुमारे कह्यु—“ जो तमे मने ते सरोवर देखाडो तो हु तेमां स्नान करी शांत थाउ. ” ते सांभळी ते यक्ष कुमारने पोताना हस्ततळमां राखी मानस सरोवरे लइ गयो त्यां असिताक्ष नामे एक यक्ष रहेतो हतो ते कुमारनो पूर्वभवनो वैरी हतो तेथी कुमारने जोइ ते यक्ष

१ भावविजयजीनी टीकामा बकुलमती नाम आवे छे

क्रोध पाम्यो. तेणे कुमारने कष्टमां नांखवा माटे प्रथम मोटा वृक्षोने पण उखेडी नांखे एवो वायु विकुर्व्यो, अने कुमार उपर एक मोटुं वृक्ष उपाडीने नांख्युं, ते वृक्षने कुमारे आवतां ज मुठी मारीने दूर फेंकी दीधुं. पछी यक्षे धूळवडे आखुं विश्व अंधकारमय करी दीधुं, भयंकर अट्टहासने मूकता, धूमाडा जेवा श्याम शरीरवाळा, जाज्वल्यमान ज्वाळावडे विकराळ मुखवाळा अने भयंकर आकृतिवाळा पिशाचो विकुर्व्या. तेनाथी पण कुमार भय पाम्या नहीं, त्यारे ते अधम यक्षे नागपाशथी तमारा मित्रने बांधी लीधा. ते नागपाशने तरत ज कुमारे जीर्ण रज्जुने जेम हाथी तोडी नांखे तेम तोडी नांख्या. पछी यक्ष हाथना प्रहारवडे कुमारने मारवा आव्यो, तेने कुमारे एक मुठी मारी पाडी दीधो. तरत ज यक्षे सावधान थइ अत्यंत क्रोधथी कुमारने लोहना मुद्गरवडे प्रहार कर्यो. ते प्रहारथी छेदायेला वृक्षनी जेम आर्यपुत्र पृथ्वीपर पडी गया. तेनापर ते पापी यक्षे मोटो पर्वत उपाडीने नांख्यो. तेनाथी कुमारनुं शरीर अत्यंत पीडावाथी ते मूर्छा पाम्या. थोडा वखत पछी सावधान थइ कुमार ते यक्षनी साथे बाहुयुद्ध करवा लाग्या. तेमां कुमारे हाथरूपी मुद्गरथी ते यक्षने एवो प्रहार कर्यो के ते यक्ष तत्काळ प्रचंड वायुथी हणायेला वृक्षनी जेम पृथ्वीपर पडी गयो अने जाणे मृत्यु पाम्यो होय तेम चेष्टा रहित थइ गयो, परंतु देव होवाथी ते मरण पाम्यो नहीं. पछी बूम पाडीने ते यक्ष एवी रीते नाशी गयो के फरीथी कोइ पण वखत ते देखायो ज नहीं.

ते वखते जे विद्याधरो कौतुकथी तेमनुं युद्ध जोता हता. तेओए कुमारना मस्तक उपर पुष्पवृष्टि करी अने बोल्या के– “ आ कुमारे यक्षनो पराभव कर्यो. ” त्यारपछी कुमारे इच्छा प्रमाणे ते सरोवरमां क्रीडापूर्वक स्नान कर्युं. त्यांथी बहार

नीकळी कुमार आगळ चाल्या तेटलामां थोडे दूर जतां तेज वनमां रहेली विद्याधरोनी आठ पुत्रीओ तेना जोवामां आवी. ते कन्याओए पण कुमारने स्नेहयुक्त दृष्टिवडे जोया ते वखते कुमारे विचार्युं के—" आ कन्याओ अहीं क्याथी आवी हशे ? तेमनो वृत्तांत हु पूछी जोउ " एम विचारी कुमार तेमनी पासे गया अने मधुर वाणीथी तेमने पूछ्युं के—" हे बाळाओ ! तमे क्यांथी आवी छो ? अने आ शून्य अरण्यमां केम रही छो ? " तेओ बोली के—" हे भाग्यशाळी ! अहीं पासे ज प्रियसंगमा नामनी अमारी नगरी छे तमे पण त्यां चालो " एम कही दासीए कुमारने मार्ग बताव्यो, ते मार्गे कुमार नगरीमां गया. त्यां कंचुकी पुरुषो कुमारने राजमंदिरमां लइ गया ते नगरीमां भानुवेग नामे राजा छे तेणे कुमारने जोइ उभा थइ आसन आपी तेनो सत्कार कर्यो पछी राजाए कुमारने कह्यु के—" हे भाग्यवंत ! तमे आ मारी आठ कन्याना पति थाओ कारण के पहेला अहीं एक अर्चिमाळी नामना मुनि आव्या हता तेमणे मने कह्यु हतु के—" असिताक्ष नामना यक्षनो जे पराभव करशे ते आ आठे कन्याओनो स्वामी थशे. माटे तमे आ कन्याओने परणो " ते सांभळी कुमारे तेनु वचन अंगीकार कर्युं एटले राजाए मोटा उत्सवपूर्वक पोतानी आठे पुत्रीओ साथे तेनां लग्न कर्यां. ते ज रात्रिए हाथे बांधेला कंकण सहित कुमार ते आठे प्रियाओनी साथे शयनगृहमां पर्यंक उपर सुता हता त्यांथी तेने उपाडी पेला यक्षे दूर फेंकी दीधा प्रात काळे कुमार जागीने जुए छे तो तेणे पोताने अरण्यमां पृथ्वीपर पडेलो जोयो तेथी आश्चर्य पामी कुमारे विचार्युं के—" आ सर्व विवाहादिक सत्य के असत्य छे ? " एम विचारतां हाथपर दृष्टि नांखी तो हाथे कंकण बांधेलु जोयु पछी खेद पामी कुमार ते ज अरण्यमा आगळ चाल्या केटलेक दूर गया त्यारे तेणे एक पर्वतना

शिखरपर मणिमय स्तंभवाळो एक मनोहर प्रासाद जोयो. ते जोइ कुमारे विचार्युं के—" आ पण कोइ माया ज हशे." एम विचारी कुमार ते तरफ चाल्या. पासे जतां कुमारे ते महेलमां करुणस्वरे रोती कोइ स्त्रीनो शब्द सांभळ्यो. पछी कुमार ते महेलमां पेठा, अने अनुक्रमे सातमे माळ पहोंच्या. त्यां तेणे एक कन्याने रोती जोइ. ते कन्या रोती रोती बोलती हती के—" कुरुवंशरूपी आकाशतळमां चंद्र समान हे सनत्कुमार ! आ भवमां तमे मारा पति न थया तो आवता भवमां मारा भर्ता थजो." एम वारंवार बोलती ते रुदन करती हती. कुमारने जोइ तेणीए रोतां रोतां ज तेने आसन आप्युं. कुमारे तेनी उपर बेसी ते कन्याने पूछ्युं के—" हे भद्रे ! सनत्कुमारनी साथे तारे शो संबंध छे के जेथी तुं तेनुं आ प्रमाणे स्मरण करे छे ?" त्यारे ते बोली के—" ते कुमार मारा मनोरथ मात्रथी ज भर्ता छे. ते एवी रीते के—" साकेतपुरमां सुरथ नामे राजा छे अने तेने चंद्रयशा नामनी राणी छे. तेनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली हुं सुनंदा नामनी तेमनी पुत्री छुं. हुं युवावस्थाने पामी त्यारे मारा पिताए मारे माटे अनेक राजपुत्रोनां चित्रो दूतो मारफत मंगावी मने देखाड्यां. परंतु कोइ पण राजपुत्र तरफ मारुं मन आकर्षायुं नहीं. एकदा सनत्कुमारनुं चित्र दूते लावीने मने देखाड्युं. ते जोइ मारुं चित्त आनंद पाम्युं. मने तेनापर अत्यंत मोह थवाथी तेनुं ज ध्यान धरती हुं मारे घेर रहेली हती. तेटलामां मने कोइ विद्याधर कुमार हरीने अहीं लाव्यो, अने मने अहीं विद्याथी निकुर्वेला महेलमां मूकी पोते कोइक ठेकाणे गयो छे." आ प्रमाणे ते कन्याए पोतानो वृत्तांत कह्यो, तेटलामां तेने उपाडी लावनार अशनिवेग विद्याधरनो पुत्र वज्रवेग त्यां आव्यो. तेणे कुमारने जोइ क्रोध पामी तेने आकाशमां उछाळ्या. ते जोइ ते कन्या हाहाकार करती मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पडी, तेटलामां

सनत्कुमारे आकाशमांथी पाछा आवी ते विद्याधर कुमारने एक मुठीना प्रहारथी ज मरणने शरण कर्यो पछी कुमारे ते कन्याने पोतानो वृत्तांत कही तेनु पाणिग्रहण कर्यु ते सुनदा आगळ जतां सनत्कुमारनु स्त्रीरत्न थइ

त्यारपछी त्यां ते वज्रवेगनी बहेन सध्यावळी आवी तेणी प्रथम तो पोताना भाइने मारेलो जोइ कुमारपर अत्यत कोप पामी, पण पछी तरत ज तेने निमित्तियानु कहेलु वचन याद आव्यु के—" तारा भाइनो जे वध करशे, ते तारो पति थशे." आ वचन स्मरणमां आववाथी शांत थयेली तेणीए कुमारने विज्ञप्ति करी के—" हे स्वामी ! हु अहीं तमारी साथे लग्न करवा आवी छु, माटे मने अगीकार करो " त्यारे कुमार तेणीने पण त्यांज परण्या आ अवसरे कुमारनी पासे बे विद्याधर राजाओ आव्या तेओए कुमारने प्रणाम करी कह्यु के—" हे देव ! अशनिवेग विद्याधरे विद्याना बळथी पोताना पुत्रनु मरण जाण्यु छे तेथी ते तमारी साथे युद्ध करवा आवे छे. आ वृत्तांत तमने जणाववा माटे चद्रवेग अने भानुवेग नामना विद्याधरोए पोताना पुत्रो हरिश्चद्र अने चद्रवेग नामना अमने बेने तमारी पासे मोकल्या छे अने आ कवच तथा रथ तेमणे मोकल्या छे तथा ते बन्ने भाइओ चद्रवेग अने भानुवेग के जे तमारा ससरा थाय छे तेओ पण मोटा सैन्य सहित हमणां ज तमारी सेवा करवा माटे अहीं आवे छे " आ प्रमाणे तेओ वात करता हता तेटलामां ते चद्रवेग अने भानुवेग पण सैन्य सहित आवी पहोंच्या पछी सध्यावळीए पोताना पति सनत्कुमारने प्रज्ञप्ति नामनी महाविद्या आपी त्यारपछी चद्रवेग अने भानुवेग सहित सनत्कुमार सग्राम करवा चाल्यो,

तेटलामां ते अशनिवेग मोटुं सैन्य लइ तेनी सन्मुख आव्यो. तेनी साथे प्रथम चंद्रवेग अने भानुवेग युद्ध करवा लाग्या. तेमणे चिरकाळ युद्ध करी अशनिवेगनु सैन्य भांग्युं, त्यारे अशनिवेग पोते युद्ध करवा लाग्यो. तेनी सामे सनत्कुमारे पोते युद्ध कर्युं. तेमां अशनिवेगे प्रथम कुमार उपर महोरग शस्त्र मूक्युं, तेने कुमारे गरुडास्त्र वडे कापी नांख्युं. फरीथी अशनिवेगे आग्नेय शस्त्र मूक्युं, तेने कुमारे वारुणास्त्र वडे कापी नांख्युं. फरीथी तेणे वायवास्त्र मूक्युं तेने कुमारे शैलास्त्र वडे कापी नांख्युं. पछी अशनिवेग धनुष लइ कुमार उपर बाणोनी वृष्टि करवा लाग्यो, त्यारे कुमारे अर्धचंद्र बाण मूकी तेना धनुषनी प्रत्यंचा ज कापी नांखी. त्यारपछी हाथमां खड्ग लइ ते अशनिवेग कुमार तरफ दोडयो, तेना आवतांनी साथे ज तमारा मित्रे तेनो हाथ कापी नांख्यो. तोपण क्रोधथी अंध थयेलो ते अशनिवेग कुमार सामे दोडयो त्यारे विद्याए आपेला चक्रवडे आर्यपुत्रे तेनुं मस्तक छेदी नांख्युं. ते वखते ते विद्याधर राजानी सर्व राज्यलक्ष्मी प्रतिवासुदेवनी लक्ष्मी जेम वासुदेव पासे जाय तेम मारा पतिने प्राप्त थइ.

आ प्रमाणे अशनिवेगने हणी चंद्रवेग अने भानुवेग सहित सनत्कुमार आकाश मार्गे रथमां बेसी ते महेलमां आव्या. त्यां जय मेळवीने आवेला पोताना पतिने जोइ हर्षित थयेली सुनंदा अने संध्यावळीए तेनुं स्वागत कर्युं. पछी ते बन्ने प्रियाओने साथे लइ मारा पति चंद्रवेगादिक सहित वैताढय पर्वतपर आव्या. त्यां सर्व विद्याधरोए मळी कुमारनो महाराज्याभिषेक कर्यो. त्यां विद्याधर राजाओथी सेवाता तमारा मित्र केटलोक वखत सुखे रह्या.

एकदा मारा पिता चंद्रवेगे कुमारने विज्ञप्ति करी के—" हे स्वामी सनत्कुमार ! पहेलां अर्चिमाळी नामना ज्ञानी

मुनिए मने कह्यु हतु के-तारी सो कन्याने तथा भानुवेगनी आठ कन्याने जे परणशे ते सनत्कुमार अवश्य चोथा चक्रवर्ती थशे ते आजथी एक महिने मानससरोवरे आवशे. तापथी अने श्रमथी व्याकुळ थयेला तेने असिताक्ष नामनो पूर्व भवनो वेरी यक्ष जोशे " आटलु सामळी कुमारे चद्रवेगने पूछ्यु के—" ते यक्ष मारो पूर्व भवनो वैरी शी रीते थयो छे ? ते तमे जाणता हो तो कहो. " त्यारे चद्रवेगे मुनिना मुखथी तेनो पूर्व भव सांभळ्यो हतो, तेथी तेणे आ प्रमाणे तेनो पूर्व भव कह्यो

आ भरत देशमा काचनपुर नामनु नगर छे. तेमां पराक्रमवडे पृथ्वीनु आक्रमण करनार विक्रमयशा नामे राजा हतो ते राजाने विश्वमां मनोहर एवी पांच सो राणीओ हती. ते नगरमां नागदत्त नामे एक धनवान सार्थवाह हतो तेने रूप, लावण्य, सौभाग्य अने यौवनना गुणोवडे देवांगनानो पण पराभव करनारी विष्णुश्री नामनी भार्या हती एकदा राजाए ते मनोहर स्त्रीने जोइ कामातुर थवाथी तेणीनु हरण करी तेणीने पोताना अत पुरमा राखी पोतानी प्रियानु हरण कर्यु जाणी वियोगथी व्याकुळ थयेलो नागदत्त रात्रिदिवस चिंता करवाथी उन्मत्त थइ प्रलाप करवा लाग्यो के—" हा चद्रमुखी ! तु क्यां गइ ? मने दर्शन आप " इत्यादिक बोलतो ते नगरमां भमवा लाग्यो विक्रमयशा राजा समग्र लोकापवादनो त्याग करी निर्लज्ज पणे ते विष्णुश्रीनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो तेमां एवो लीन थइ गयो के पोताना अत पुरमां रहेली पाचसो राणीओमांथी कोइनु नाम पण लेतो नहोतो एकदा ते सर्व राणीओए विचार करी काइ कार्मणादिक करी ते विष्णुश्रीने मारी नाखी तेणीना मरणथी राजा अत्यत शोकातुर थयो, ते पण नागदत्तनी जेम उन्मत्त

थयो, तेथी विष्णुश्रीना शरीरने अग्निदाह करवा दीधो नहीं. तेथी मंत्रीओए विचार करी राजानी दृष्टि चूकावी ते विष्णुश्रीनुं शरीर त्यांथी उपडावी एक अरण्यमां मूकाव्युं. तेनुं शरीर नहीं जोवाथी राजाए अन्न जळनो त्याग कर्यो. ते जोइ मंत्रीओए विचार्युं के—" आ राजा ! विष्णुश्रीनुं शरीर जोया विना मरण पामशे. " एम विचारी राजाने वनमां लइ जइ तेओए तेनुं शरीर बताव्युं. ते वखते ते शरीरमांथी दुर्गंधी पाणी नीकळतुं हतुं, आखा शरीरमां कीडा पडी गया हता, गीध पक्षीओए तेना स्तन ठोली नांख्या हता, कागडाओए तेनां नेत्रो काढी नांख्यां हतां, शीयाळोए तेनां आंतरडां खेंची काढयां हतां, अने आखे शरीरे माखीओ बणबणती हती. आवुं विष्णुश्रीनुं बीभत्स शरीर जोइ राजाए विचार कर्यो के " अहो ! आ असार संसारमां कांइ पण सारवाळी वस्तु देखाती नथी. में आ विष्णुश्रीना शरीरने चिरकाळ सुधी साररूप मान्युं हतुं ते मारी मूढताने धिक्कार छे. रे जीव ! जेने माटे तें कुळ, शीळ, यश, लज्जा ए सर्वनो त्याग कर्यो, तेनी आज आवी दशा थइ, ते हे उन्मत्त ! तुं जो. प्रिया मानीने जेने एक क्षणवार पण में मारा शरीरथी दूर करी नहोती तेने पण जोइने अत्यारे मारुं शरीर जाणे टाढ चडी होय तेम कंपे छे. हवे आ पापरूपी पंकथी मलिन थयेला मारा आत्माने धर्मक्रियारूपी जळवडे मारे निर्मळ करवो योग्य छे. " आ प्रमाणे विचार करी वैराग्य पामी राजाए राज्य, देश, अंतःपुर अने स्वजनवर्ग ए सर्वनो त्याग करी सुव्रत नामना आचार्य पासे जैनी दीक्षा ग्रहण करी. पछी उपवास, छठ्ठ, अठ्ठम विगेरे विचित्र तपवडे आत्माने भावता ते राजर्षि छेवटे संलेखना करी आयुष्यने क्षये सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने रत्नपुर नामना नगरमां जिनधर्म नामे श्रेष्ठीपुत्र थयो. ते बाल्या-

वस्थाथीज श्रावकधर्मनु पालन करतो हतो

अहीं नागदत्त सार्थवाहे विष्णुश्री पत्नीना विरहथी दुःख पामी आर्तध्यानथी मरण पामी अनेक वार तिर्यंच योनिमा भ्रमण कर्यु पछी सिंहपुर नामना नगरमां ते अग्निशर्मा नामनो ब्राह्मण थयो एकदा पुण्यनी आशाथी ते त्रिदंडी थयो पछी द्विमासादिकनो तप करतो ते फरतो फरतो एकदा रत्नपुर नगरे आव्यो त्या ते वखते नरवाहन नामे राजा हतो, ते त्रिदंडीनो भक्त हतो तेथी आ तपस्वी छे एम जाणी राजा पोताने घेर तेने पारणु करवा लइ गयो ते वखते त्यां दैवयोगे जिनधर्म आवेलो हतो तेने ते त्रिदंडीए जोयो तेने जोतां ज तत्काळ पूर्वभवना वेरने लीधे ते त्रिदंडी तेना पर अत्यत क्रोध पाम्यो पछी त्रिदंडीए राजाने कह्यु के—" हे राजा ! अत्यत उष्ण पायसनो भरेलो थाळ आ श्रेष्ठीनी पीठपर मूकी मने जमाडो तो हु जमु " ते सांभळी राजाए कह्यु—" हे पूज्य ! बीजा कोइ माणसनी पीठपर थाळ मूकीने तमने हु जमाडु, पण आ श्रेष्ठीने माटे तमे आग्रह न करो " ते सांभळी क्रोध पामेला त्रिदंडीए फरीथी कह्यु के—" आनी ज पीठपर थाळ मूकीने जमीश, नहीं तो अहीं जमीश नहीं, बीजे ठेकाणे जइश " ते सांभळी राजा तेनो भक्त हतो, तेथी तेणे तेनु वचन अंगीकार कर्यु पछी राजानी आज्ञा थवाथी जिनधर्म श्रेष्ठीए पोतानी पीठ तेनी पासे धरी, एटले ते तापस तेनापर अत्यत उष्ण पायसनो थाळ मूकी खावा लाग्यो ते विशुद्ध बुद्धिवाळा श्रावके पण ते थाळनो ताप शांतिथी सहन कर्यो, अने 'आ पोताना ज कर्मनो विपाक—उदय छे' एम विचारी पोते समभावमां रह्यो ज्यारे ते त्रिदंडी जमी रह्या त्यारे राजाना सेवकोए श्रेष्ठीनी पीठपरथी ते थाळ लइ लीधो—उपाड्यो, तेनी साथे ते श्रेष्ठीनी पीठनी

त्वचा, रुधिर अने मांस पण उखडी गयां. त्यारपछी शेठ पोताने घेर गयो. त्यां स्वजनो तथा नगरजनोनो यथायोग्य सत्कार करी ते सर्वने खमावी जिनधर्मे तत्काळ गुरु पासे जइ जैनी दीक्षा ग्रहण करी. पछी नगर बहार जइ पर्वतना शिखर-पर चडी ते मुनि अनशन करी पंदर दिवस सुधी पूर्वदिशा सन्मुख कार्योत्सर्गे उभा रह्या. ए रीते एक एक पखवाडीयुं अनुक्रमे बीजी त्रण दिशामां कायोत्सर्गे रह्या. ते वखते तेनी पीठनुं मांस कागडा, शीयाळ विगेरे खावा लाग्या, तेनी तीव्र वेदना सहन करी मरण पामीने सौधर्म देवलोकमां इंद्र थया. ते तापस पण मरण पामी पोते करेला आभियोग्य कर्मवडे ते ज इंद्रनुं वाहन ऐरावण हाथी थयो. त्यांथी चवीने ते त्रिदंडीनो जीव मनुष्य अने तिर्यंचोमां भ्रमण करी हाल असिताक्ष नामनो यक्ष थयो छे, अने इंद्र पण त्यांथी चवी हस्तिनापुरमां सनत्कुमार नामे चक्री थया छे. आ प्रमाणे ते मुनिना कहेवाथी में तमारो पूर्वभव तमने कह्यो. तथा असिताक्ष यक्षना वैरनुं कारण पण कह्युं.

तो हे स्वामी सनत्कुमार! भानुवेगनी आठ कन्या तमे परण्या छो. हवे मारी सो कन्याओने परणी मने कृतार्थ करो." आ प्रमाणे चंद्रवेगनुं वचन सांभळी कुमारे तेनी मागणी अंगीकार करी. एटले मारा पिता चंद्रवेग कुमारने लइ पोताना नगरमां आव्या. त्यां तमारा मित्र हुं विगेरे सो कन्याओने परण्या. त्यांथी कुमार सो पत्नीओने लइ अहीं आव्या अने कुल एक सो ने दश प्रियाओ साथे भोग भोगववा लाग्या. त्यारपछी आजे कुमारे कह्युं के—"अमे यक्षने जे ठेकाणे जीत्यो हतो त्यां आजे जवुं छे." एम कही ते अमने सर्वने लइ अहीं आव्या. अहीं रहेला कुमार नाटक जोता हता तेटलामां हे महेंद्रसिंह! तमे अहीं आवी पहोंच्या एटले तमने कुमारनो तथा अमारो मेळाप थयो."

आ प्रमाणे विपुलमतीए महेंद्रसिंहने कुमारनो सर्व वृत्तांत कह्यो, तेटलामां सनत्कुमार जागृत थया पछी महेंद्रसिंहने साथे लइ कुमार सर्व विद्याधरो अने परिवार सहित वैताढ्य पर्वतपर गया. त्यां अवसर पामीने महेंद्रसिंहे कुमारने विज्ञप्ति करी के- "हे कुमार ! तमारा मातपिता तमारा विरहथी महाकष्टे काळ निर्गमन करे छे माटे तेमना दर्शन माटे प्रसन्न थइने त्यां पधारो" आ प्रमाणे मित्रनुं वचन सांभळतां ज कुमार मातापितानां दर्शन करवामां उत्कंठित थयो तेथी तरत ज सर्व प्रियाओ अने मित्र सहित कुमार अनेक विद्याधरोने साथे लइ सप्तावय विमानोवडे आकाशमां सेंकडो ध्वजोने देखाडतो चाल्यो आकाश मार्गे अनेक हस्ती अने अश्वादिकपर आरुढ थइ इंद्रनी फरता देवोनी जेम अनेक विद्याधर राजाओ पोतपोताना सैन्य सहित कुमारनी फरता चालता हता ते वखते वाजिंत्रोना शब्दवडे आकाश शब्दमय थइ रह्युं हतुं आ रीते मोटा उत्सव सहित कुमार हस्तिनापुरमां आव्या त्यां पोताना दर्शनथी कुमारे मातापिताने तथा पुरजनोने अत्यंत आनंद आप्यो कुमारनी आवी असाधारण समृद्धि जोइ अश्वसेन राजा वाणीथी कही न शकाय तेवो हर्ष अने विस्मय पाम्या. पछी राजाना पूछवाथी महेंद्रसिंहे कुमारना अने पोतानो सर्व वृत्तांत कही राजा विगेरे सर्वने आश्चर्य पमाड्या त्यारपछी अश्वसेन राजाए कुमारने पोताना राज्यपर स्थापन कर्या अने महेंद्रसिंहने तेना सेनापतिनुं पद आप्युं पछी राजाए पोते श्री धर्मनाथ स्वामीना तीर्थना स्थविर मुनिनी पासे वैराग्यथी चारित्र ग्रहण करी पोतानो जन्म कृतार्थ कर्यो

अनुक्रमे सनत्कुमार राजा राज्य करता हता ते वखते तेने चक्र विगेरे चौद रत्नो प्राप्त थयां त्यारपछी चक्रना मार्गने अनुसरीने भरतक्षेत्रना छ खंड साधी तथा नव निधान प्राप्त करी एक हजार वर्षे सनत्कुमार पोताना पुरमां पाछा आव्या

पछी ज्यारे ते राजा पुरप्रवेश करता हता ते वखते सौधर्म इंद्रे अवधिज्ञानथी जाण्युं के—" पूर्व भवमां आ राजा अहींज मारे स्थाने मारी जेवा ज इंद्र हता. " एम विचारी तेमनापर अत्यंत स्नेह थवाथी इंद्रे कुबेरने आज्ञा करी के—" आ चोथा चक्रवर्ती मारा मित्र छे, तेथी त्यां जइने तेनो राज्याभिषेक करो. " आ प्रमाणे कही इंद्रे चक्रवर्तीने आपवा माटे धनदने बे चामर, छत्र, हार, मुगट, बे कुंडळ, सिंहासन, पादपीठ, बे देवदूष्य वस्त्रो अने बे पादुका एटली चीजो आपी, तथा रंभा अने तिलोत्तमा विगेरे अप्सराओने धनदनी साथे मोकली. ते सर्व लइ धनद हस्तिनापुर गयो, अने चक्रीनी पासे पोताने इंद्रे करेली आज्ञा निवेदन करी. पछी चक्रीनी अनुमति लइ धनदे एक योजन विस्तारवाळी माणिक्यनी पीठ विकुर्वी, तेनापर मणिमय मंडप कर्यो, तेनी वच्चे मणिना पादपीठ सहित सिंहासन मूक्युं, देवो पासे क्षीरसागरनुं जळ मंगाव्युं, पछी बहुमान पूर्वक चक्रीने ते सिंहासनपर बेसाडी इंद्रे मोकलेली सर्व वस्तु तेनी पासे भेट मूकी, अने क्षीरसागरना जळवडे सर्व देवोए तेनो चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो. ते वखते देवताओ मंगळवाजित्रोना शब्द करवा लाग्या, किन्नरनां मिथुनो मंगळ गीतो गावा लाग्या अने रंभा तथा तिलोत्तमा विगेरे अप्सराओ नाटक करवा लागी. पछी चक्रीने दीव्य वस्त्र, आभूषण अने विलेपनादिकवडे शणगारी हस्तीपर बेसाडी नगरमां प्रवेश कराव्यो. पछी रत्नादिकनी वृष्टिवडे पोतानी अलकानगरी जेवुं ते पुर करी धनद चक्रीनी रजा लइ स्वर्गे गयो. त्यारपछी सर्व राजाओए बार वर्ष सुधी तेनो चक्रवर्तीपणानो महोत्सव कर्यो. सनत्कुमार चक्री न्यायवडे प्रजानुं पालन करवा लाग्या अने मनोहर प्रियाओ साथे पांच इंद्रियोना सुख भोगवता तेणे घणा वर्षोने दिवसनी जेम व्यतीत कर्या.

एकदा सुधर्मा सभामा रहेला इद्र सौदामिन नामनु नाटक करावता हता, ते वखते ईशान देवलोकमाथी सगम नामनो देव सुधर्मा सभामां आव्यो तेनी रूपकांतिवडे सर्व देवोनी कांति ढकाइ जइ झांखी पडी गइ पछी ज्यारे ते देव त्यांथी गयो त्यारे सर्व देवोए आश्चर्य पामी शक्र इद्रने पूछ्यु के—" हे स्वामी ! आ देवनु रूप अने तेज सर्व देवोना रूप अने तेजना गर्वने हरण करे तेवु केम छे ? " इद्रे कह्यु के—" आ देवे पूर्वभवमां आचाम्लवर्धमान नामनो तप कर्यो हतो, तेथी तेनु रूप अने तेज उत्कृष्ट छे " फरी देवोए पूछ्यु के—" त्रण भुवनमां बीजो पण कोइ उत्कृष्ट रूप अने तेजवाळो छे ? " इद्रे कह्यु—" भरतक्षेत्रमा हस्तिनापुरने विषे सनत्कुमार चक्री छे, तेनु रूप अने तेज देवोथी पण अधिक छे "

आवा इद्रना वचनपर श्रद्धा नहीं थवाथी विजय अने वैजयत नामना बे देवो तेना रूपने जोवा माटे विप्रनु रूप लइ चक्रीना महेल पासे आव्या ते वखते चक्रीए स्नान करवानु प्रारभ्यु हतु, तोपण द्वारपाळनी विनतिथी राजाए ते परदेशी ब्राह्मणोने पोतानी पासे बोलाव्या ते वखते इद्रना कह्या करतां पण तेनु अधिक रूप जोइ ते देवो विस्मय पाम्या, अने बोल्या के—" अहो ! आ राजानु तेज सूर्यथी पण अधिक छे, आना जे जे अग उपर दृष्टि स्थापन करीए छीए ते ते अगमां जाणे चोंटी गइ होय तेम ते दृष्टि महाकष्टे खेंची शकाय छे. इद्रे आना रूपनु जे वर्णन कर्यु ते जरा पण मिथ्या नथी आपणे तेना वचनपर अश्रद्धा करी हती पण आजे आनु रूप जोवाथी आपणे कृतार्थ थया छीए अने इद्रना वचनो सत्य छता एवी प्रतीति थइ छे " पछी चक्रीए तेमने पूछ्यु के—" हे विप्रो ! तमे शा कारणथी अहीं आव्या छो ? " त्यारे तेओ बोल्या के—" हे महाराजा ! जगतमां आपना रूप अने तेजनी प्रशसा सांभळी अमे ते जोवा माटे ज अहीं

आव्या छीए, अने अमे तमारुं रूप जेवुं सांभळ्युं छे तेवुं ज नलके तेथी पण अधिक अत्यारे प्रत्यक्ष जोइए छीए." ते सांभळी राजाए रूपना गर्वथी कह्युं के—"हे उत्तम ब्राह्मणो! अत्यारे स्नान वखते तमे मारुं रूप जुओ छो तेमां शी शोभा होय? परंतु स्नानादिक करी वस्त्र आभूषण धारण करी जे वखते हुं सभामां बेठो होउं ते वखते तमारे मारुं रूप बराबर जोवुं." एम कही ते विप्रोने बीजे ठेकाणे मोकली पोते स्नान करी वस्त्रालंकारवडे शरीर शणगारी सभामां जइ सिंहासनपर बेठा. पछी राजाए ते विप्रोने बोलाव्या. तेओए आवी राजानुं रूप जोयुं तो प्रथमना करतां घणुं ज निस्तेज जोयुं, तेथी तेओ खेद पामी विचारवा लाग्या के—"अहो मनुष्यनुं रूपादिक सर्व अति चंचळ छे." तेमने खेदयुक्त जोइ राजाए पूछयुं के—"पहेलां मने जोइने तमे हर्ष पाम्या हता अने अत्यारे तमारुं मुख श्याम केम देखाय छे?" त्यारे तेओ बोल्या के—"हे राजा! अमे देवो छीए. इंद्रे वर्णन करेला तमारा रूप उपर श्रद्धा नहीं थवाथी तेनी परीक्षा करवा माटे आव्या छीए. पहेलां स्नान करती वखते तमारुं रूप इंद्रे कहेलाथी पण अधिक जोइ अमे हर्ष पाम्या हता, परंतु अत्यारे तेवुं नथी तेथी खेदयुक्त थया छीए. आटला अल्प काळमां ज तमारा शरीरमां व्याधिओरूपी राक्षसो उत्पन्न थया छे, तेथी तमारुं रूप, लावण्य अने कांति विगेरे झांखां पडी गयां छे." आ प्रमाणे कही ते देवो तत्काळ अदृश्य थइ गया.

चक्रीए पोताना शरीरपर दृष्टि नांखी तो धूळथी ढंकायेला सूर्यनी जेम तेणे पोतानुं शरीर निस्तेज जोयुं. ते वखते तेणे विचार कर्यो के—"जे शरीरने विविध प्रकारना व्याधिओ बाधा करे छे, तेवा शरीर उपर पंडितोए शी श्रद्धा

राखवी ? जे रूपादिक गुणो व्याधिथी भय पाम्या होय तेम नाशी जाय छे, ते रूपादिकनो गर्व डाह्यो माणस केम करे ? जे विषयो निरंतर सेवाता छतां पण घणवारमां जाणे रोष पाम्या होय तेम नष्ट थइ जाय छे, ते विषयोपर बुद्धिमान जनो शो मोह राखे ? जे परिग्रहथी वैराग्य अने विनय विगेरे गुणो नाश पामे छे तेवा परिग्रह उपर पडितोनो आग्रह क्यांथी होय ? तेथी करीने आज काल नाश पामनारा आ शरीरादिक उपरनी ममतानो त्याग करी शाश्वत सुख आपनार चारित्रनो हु स्वीकार करु " इत्यादिक विचार करी चक्रीए पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी विनयधर सूरिनी पासे दीक्षा ग्रहण करी

चक्रीउपरना गाढ स्नेहने लीधे सर्व रत्नो, सर्व राणीओ, सर्वे राजाओ, सर्व निधिओ, सर्व यक्षो अने सर्व प्रधानो तेनी पाछळ छ मास सुधी फर्या अने कहेवा लाग्या के—" हे स्वामी अपराध विना तमे अमने केम तजो छो ? " ते सौ मळीने राजर्षिए सिंहावलोकननी जेम पाछळ दृष्टि करीने तेमनी सन्मुख जोयु पण नहीं छेवट थाकीने ते सर्वे पोतपोताने स्थाने गया उग्र तपस्या करता एवा ते राजर्षि छट्ठने पारणे गोचरी गया. त्यांथी चणा अने बकरीना दूधनी छाश तेमने मळी ए रीते निरंतर छट्ठने पारणे अतप्रांत-नीरस आहार करवाथी तेमना शरीरमां–कडु १, कुक्षिपीडा २, नेत्रपीडा ३, कास ४, श्वास ५, ज्वर ६ अने अरुचि ७ ए सात व्याधिओ उत्पन्न थया तेने तेणे सातसो वर्ष सुधी सहन कर्या ए रीते बीजा पण सर्व परीषहोने सहन करता, तीव्र तप करता अने कोइ साथ वार्ता मात्र पण नहीं करता ते राजर्षिने मलौषधि १, आमर्षौषधि २, शकृदौषधि ३, मूत्रौषधि ४, कफौषधि ५, सर्वौषधि ६ अने संभिन्नश्रोत ७ ए नामनी सात लब्धिओ प्राप्त

थइ. तोपण ते महर्षिए पोताना व्याधिनी कांइपण चिकित्सा करी नहीं.

एकदा शक्र इंद्रे सुधर्मा सभामां सर्व देवो समक्ष कह्युं के—" अहो ! आ सनत्कुमार महर्षिनुं धैर्य मेरुपर्वतथी पण अधिक छे के जे चक्रवर्तीनी लक्ष्मीनो त्याग करी उग्र तप करे छे. रोगरूपी अग्निने बुझववामां मेघनी माळा समान अनेक लब्धिओ पाम्या छतां पण कायाने विषे तद्दन निस्पृह थयेला ते मुनि पोताना व्याधिनी चिकित्सा पण करता नथी." आवा इंद्रना वचनपर श्रद्धा नहीं थवाथी प्रथमना ज वे देवो वैद्यनुं रूप करी ते राजर्षि पासे आव्या अने बोल्या के—" हे साधु ! जो आपनी अनुज्ञा होय तो अमे धर्मवैद्यो छीए ते तमारा व्याधिनी चिकित्सा करीए." आ प्रमाणे तेमणे मुनिनी सन्मुख आवीने वारंवार कह्युं, त्यारे मुनिए कह्युं के—" तमे कर्मरोगनी चिकित्सा करो छो के शरीरना रोगनी चिकित्सा करो छो ?" त्यारे तेओ बोल्या के—" हे मुनिराज ! अमे शरीरना रोगनी चिकित्सा करीए छीए." ते सांभळी मुनिए पामा (खरज-खस) थी सडी गयेली पोतानी एक आंगळीने पोतानुं थुंक चोपडी सुवर्ण जेवा वर्णवाळी बनावी तेमने देखाडी कह्युं के—" शरीरना रोगने तो हुं पोते पण आ प्रमाणे चिकित्सा करी शकुं छुं, पण ते करवानी मारी इच्छा नथी. तेथी जो तमे कर्मरोगनी चिकित्सा करी शकता हो तो ते करो." ते जोइ आश्चर्य पामी तेओ बोल्या के—" कर्मरूपी व्याधिनो नाश करवामां तो हे मुनि ! तमे ज समर्थ छो." एम कही चक्रीमुनिने नमस्कार करी तेओ फरीथी बोल्या के—" लब्धि पाम्या छतां धीर एवा सनत्कुमार राजर्षि पोताना व्याधिनी पण चिकित्सा करता नथी. इत्यादिक इंद्रे करेली आपनी प्रशंसा सांभळीने अमे के जे प्रथम तमारुं रूप जोवा आव्या हता ते ज देवो आपना सत्त्वनी परीक्षा करवा अत्यारे

पण आव्या छीए अने अमे तमारु धैर्य मेरुपर्वत जेवु अचळ स्पष्टपणे जोयु छे " आ प्रमाणे कही तेमनी स्तुति करी ते देवो अदृश्य थया

सनत्कुमार राजर्षि कुमार अवस्थामां पचास हजार वर्ष रह्या, मांडलिकपणामां पचास हजार वर्ष रह्या, लाख वर्ष चक्रवर्तीपणामा रह्या अने लाख वर्ष चारित्रपर्यायमां रह्या ए प्रमाणे कुल त्रण लाख वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी छेवट समेतशिखरपर जइ अनशन ग्रहण करी आयुष्यने क्षये ते महर्षि, सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया त्यांथी च्यवी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य जन्म धारण करी मोक्षे जशे

इति सनत्कुमार चक्री कथा

चइत्ता भारह वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । संती संतिकरो लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥

अर्थ—(महिड्ढिओ) मोटी समृद्धिवाळा, (चक्कवट्टी) चक्रवर्ती, (लोए) लोकने विषे (संतिकरो) शांतिने करनार (संती) शांतिनाथ स्वामी (भारह वासं) भरतक्षेत्रनो—तेना राज्यनो (चइत्ता) त्याग करी (अणुत्तर गइ) अनुत्तर गतिने एटले मुक्तिने (पत्तो) पाम्या छे

श्री शांतिनाथनी कथा

आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे रत्नपुर नामनु पुर छे त्यां श्रीषेण नामे राजा हतो ते समग्र गुणोनो निधि

८

हतो. ते राजाने अभिनंदिता अने शिखिनंदिता नामनी बे राणीओ हती. तेमां अभिनंदितानी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयेला इंदुषेण अने बिंदुषेण नामना तेने बे पुत्रो हता. ते श्रीषेण राजाए विमळबोध नामना गुरु पासे धर्मोपदेश सांभळी समकित सहित श्राव॰ धर्म अंगीकार कर्यो हतो.

ते रत्नपुर नगरमां सत्यबुद्धिवाळा सत्यकि नामे एक उपाध्याय हता. तेने जंबुका नामनी प्रिया हती अने तेमने सत्यभामा नामनी पुत्री हती.

आ अवसरे मगध देशमां अचळ नामना गाममां वेद अने वेदांगना पारने पामेलो धरणिजट नामनो प्रसिद्ध ब्राह्मण हतो. तेने यशोभद्रा नामनी पत्नी हती अने तेनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेला नंदीभूति अने श्रीभूति नामना बे पुत्रो हता. तथा ते ब्राह्मणने कपिला नामनी दासी साथे चिरकाळ क्रीडा करतां तेणीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो कपिल नामे त्रीजो पुत्र पण हतो. ते हीन कुळनो होवाथी धरणिजट विप्र पोताना कुळवंत बे पुत्रोने ज निरंतर वेदाभ्यास करावतो हतो. परंतु कपिल बुद्धिमान हतो तेथी तेमने भणतां सांभळीने ज पोते पण सर्व भणी जतो हतो. ए रीते सांभळी सांभळीने ज ते कपिल सर्व विद्यामां कुशळ थयो. पछी ते गाममां दासीपुत्र होवाथी पोताने मान मळशे नहीं एम धारी ते कपिल ते गाममांथी नीकळी बे यज्ञोपवीतने धारण करी उत्तम ब्राह्मण तरीके पोतानी ओळखाण आपतो पृथ्वीपर विचरवा लाग्यो. अनुक्रमे ते रत्नपुरमां गयो, त्यां फरतां फरतां सत्यकि ब्राह्मणनी पासे गयो. सत्यकिए तेने पूछ्युं के—"तुं कोण छे? अने क्यांथी आवे छे?" ते बोल्यो के—"अचळ गाममां धरणिजट नामे ब्राह्मण छे, तेनो हुं कपिल नामनो पुत्र छुं. कौतुकथी पृथ्वीने जोतो जोतो

छु अहीं आव्यो छु" पछी ते सत्यकि पासे भणनारा विद्यार्थीओ वेदना विषयनी शंकाओ सत्यकिने पूछवा लाग्या ते सर्वना जवाब कपिले आपी तेमना संशयो दूर कर्या ते सांभळी तेनी उत्तम विद्वत्ताथी खुशी थयेला सत्यकिए पोतानी पुत्री सत्यभामाने तेनी साथे परणावी अने छात्रोने भणाववानु काम पण तेने ज सोंप्यु ते कपिल पण सत्यभामानी साथे निरंतर सुख भोगववा लाग्यो अने लोकोमां मान्य थवाथी तेओए आपेला द्रव्यवडे ते थोडा काळमां ज समृद्धिवाळो थयो

एकदा वर्षाऋतुमां कपिल कोइ ठेकाणे नाटक जोइ त्यांथी पाछो घर तरफ वळ्यो ते वखते वरसाद वरसवा लाग्यो मार्गमां घणो अंधकार होवाथी तथा निर्जनपणु होवाथी ते कपिल वस्त्रोने काखमां नांखी नग्न थइ पोताने घेर गयो घरना द्वार पास आवी लुगडां पहेरी ते घरमां गयो तेनां वस्त्रो भींजायां हशे एम धारी सत्यभामा बीजां वस्त्रो लावी तेणीने कपिले कह्यु के—" हे प्रिया ! विद्याशक्तिथी मारां वस्त्रो भींजायां नथी, तेथी बीजां वस्त्रोनी जरुर नथी "

ते वखते विजळीना प्रकाशथी सत्यभामाए तेनां वस्त्रो सुकां जोयां पण शरीर भीनु जोयु तथी तेणीए विचार्युं के—"विद्यावडे जे वस्त्रोनु रक्षण करे, ते शरीरनु रक्षण केम न करे ? तेथी खरेखर आ मार्गमां नग्न ज आव्या छे आ उपरथी ते शुद्ध ब्राह्मण होवा न जोइए कारण के कुलिननी आवी बुद्धि कदापि थाय ज नहीं वळी आ वेद भणेला छे, ते तो सारी बुद्धिने लीधे सांभळी सांभळीने भण्या जणाय छे " आ प्रमाणे विचार थवाथी ते सत्यभामानो स्नेह तेनापरथी उतरी गयो. तथी मन विना मात्र व्यवहारथी तेनी साथे सरखाइथी वर्तवा लागी

एकदा धरणिजट ब्राह्मण दैवयोगे दरिद्रताने पाम्यो, ते कपिलनी समृद्धि सांभळी धननी आशाथी त्यां आव्यो. कपिले स्नान, भोजन विगेरेवडे तेनी भक्ति करी. " अन्य अतिथि पण पंडितोने पूजवा योग्य छे, तो पितानी भक्ति करवी तेमां शुं आश्चर्य ? " भोजन वखते कांइ मिष करीने कपिल पितानी साथे भोजन करवा बेठो नहीं, तेथी तेमज बीजा पण आचार विचारमां पिता अने पुत्र वच्चे मोटो तफावत जोवाथी शंका पामेली सत्यभामाए एकांतमां श्वशुरने पूछ्युं के—" हे पूज्य पिता ! तमने ब्रह्महत्याना सोगन आपीने हुं पूछुं छुं के–आ तमारा पुत्रना माता अने पिता ए बन्ने पच शुद्ध छे के केम ? ते सत्य कहो." ते सांभळी सोगनथी भय पामता तेणे सत्य हकिकत कही. पछी कपिले पितानो सत्कार करी तेने विदाय कर्या एटले ते पोताने गामे गया.

त्यारपछी सत्यभामाए श्रीषेण राजा पासे जइने कह्युं के—" हे देव ! मारा स्वामी दैवयोगे अकुलीन जणाया छे, तेथी मने तेनाथी मुक्त करावो, के जेथी हुं दीक्षा ग्रहण करुं. " ते सांभळी राजाए कपिलने बोलावी कह्युं के—" आ तारी स्त्री ताराथी विरक्त थइ छे अने ते धर्मकर्म करवा इच्छे छे, तेथी तेने तुं छोडी दे. आ विरक्त थयेलीथी तने शुं भोगनुं सुख मळे तेम छे ? " त्यारे कपिल बोल्यो के—" हे देव ! ते मारी भार्या छे, तेने हुं छोडीश नहीं. तेना विना हुं जीवित धारण करवा समर्थ नथी. " ते सांभळी सत्यभामा बोली के—" जो ते मने नहीं छोडे तो हुं आपघात करीश." त्यारे राजाए कपिलने कह्युं के—" हे कपिल ! आनुं फोगट मरण न थाओ, एटलां माटे केटलोक समय धर्मक्रियामां तत्पर थइ मारे घेर तेने मारी पुत्री तरिके रहेवा दे." ते सांभळी बळात्कारे लइ जवामां असमर्थ एवा कपिले राजानुं वचन

माप कर्युं राजाए सत्यहृदयवाळी सत्यभामाने पोतानी बन्ने राणीओ पासे राखी त्या स्वच्छ मनवाळी ते दुस्तप तप करती रही

एकदा अनतमतिका नामनी मनोहर वेश्याने जोइ राजाना बन्ने पुत्रो इदुषेण अने बिंदुषेण तेणीने विषे आसक्त थया ते वश्यानी इच्छा राखता ते बन्ने भाइओ छतां पण परस्पर इर्ष्याथी युद्ध करवा लाग्या तेमनु युद्ध जोवाने के तेमने युद्धथी निवर्तन करवाने असमर्थ थयलो श्रीषेण राजा लज्जाने लीधे विषमिश्रित कमळने सुंघी मरण पाम्यो तेज प्रमाणे अभिनदिता अने शिखिनदिताए पण पोताना प्राणनो त्याग कर्यो, एटले कपिलथी भय पामती सत्यभामाए पण तेमना ज मार्गनो आश्रय कर्यो आ रीते चार जणा मरण पामीने तेओ अत्यत सरळ आशयवाळा होवाथी आ जबूद्वीपना उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे युगलीया थया. तेमां श्रीषेण राजा अने अभिनदितानु एक युगल थयु, तथा शिखिनदिता अने सत्यभामानु बीजु युगल थयु (शिखिनदितानो जीव पुरुष थयो) ते सर्वेनु शरीर त्रण कोश उचु हतु, तेओ त्रण पल्योपमना आयुष्यवाळा हता, अने चोथे दिवसे आहार करनारा हता तेओए त्या केवळ सुखमय समय निर्गमन कर्यो (भव बीजो)

अहीं श्रीषेण राजाना बन्ने कुमारो युद्ध करता हता, तेवामां त्यां विमानमां बेसीने कोइ विद्याधर आव्यो, तेणे तेमने कह्यु के—हे राजपुत्रो ! तमो अज्ञानपणाने लीधे तमारी बहेनने ज भोगववा तैयार थइ फोगट युद्ध न करो, हु तमारो हितेच्छु छु, माटे हु कहु ते तमे सांभळो —

आ ज जबूद्वीपमां महाविदेह क्षेत्रने विषे पुष्कलावती नामे विजय छे तेमां रहेला वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणिमां आदित्याभ नामनु श्रेष्ठ पुर छे तेमां सुकुडली नामे राजा छे, तेने अजितसेना नामनी प्रिया छे तेमनो हु मणिकु

डली नामनो पुत्र छुं. एकदा हुं आकाश मार्गे थइने पुंडरीकिणी नगरीमां गयो. त्यां अमितयशा नामना तीर्थंकरने में भक्तिथी वंदना करी. पछी में प्रभुने पूछ्युं के—" हुं विद्याधर शा पुण्यथी थयो ? " त्यारे तीर्थकर महाराज अमृत जेवी मधुर वाणीथी बोल्या के.—

पुष्करवरद्वीपना पश्चिम अर्ध भागमां शीतोदा नदीने दक्षिण कांठे सलिलावती नामना विजयमां वीतशोका नामनी श्रेष्ठ नगरी छे. त्यां कामदेवनी जेवा रूपवाळो रत्नध्वज नामे चक्रवर्ती हतो. तेने हेममालिनी अने कनकश्री नामनी बे प्रियाओ हती. तेमां पहेलीए पद्मा नामनी पुत्री प्रसवी अने बीजीए कनकलता तथा पद्मलता नामनी बे पुत्रीने जन्म आप्यो. लक्ष्मीनी जेवा अद्वितीय रूपवाळी पद्माए युवावस्थामां पण अजितसेना नामनी आर्या पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते पद्मा साध्वी उपवास विगेरे दुष्कर तप करवा लागी. तेणीए एकदा कोइ वेश्याने माटे युद्ध करता बे राजपुत्रोने जोइ विचार कर्यो के—" अहो! आ वेश्यानुं सौभाग्य अद्भूत छे, के जेने माटे आवा कामदेव जेवा रूपवाळा बे राजकुमारो युद्ध करे छे. तो जो आ मारा तपनुं कांइ फळ होय तो तेना प्रभावथी आवता जन्ममां हुं पण आवा ज सौभाग्यवाळी थाउं " आ प्रमाणे ते पद्मा साध्वीए नियाणुं कर्युं. पछी आयुष्यने छेडे ते नियाणानी आलोचना कर्या विना अनशन करी काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां देवी थइ. ते भवमां तेनी जे कनकश्री नामनी विमाता हती, तेणे त्यांथी मरी संसारमां केटलाक भव करी आ जन्मथी पूर्वना जन्ममां कांइक दानपुण्य कर्युं. तेना प्रभावथी तुं आ भवमां मणिकुंडली नामनो विद्याधर थयो छे. हवे ते कनकश्रीनी बे पुत्रीओ जे कनकलता अने पद्मलता हती ते संसारमां केटलाक भवो भमी पूर्वभवमां विविध प्रकारनुं शुभ-

कर्म करी आ जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमां रत्नपुर नामना नगरमां श्रीषेण राजाना इदुषेण अने बिंदुषेण नामना बे पुत्रो थया छे ते अवसरे पद्मा साध्वीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ते ज रत्नपुरमां गणिका थयो छे, अने तेणीने ज माटे हमणां इदुषेण अने बिंदुषेण परस्पर युद्ध करे छे. "

आ प्रमाणे तीर्थंकरना मुखथी आपणा सर्वेना पूर्वभवोने सांभळी हु तमने युद्धथी निवर्तन करवा अहीं आव्यो छु माटे तमे बोध पामो अने बहेनने माटे थइने युद्ध न करो हु तमारा पूर्वभवनी माता छु अने आ वेश्या तमारी पूर्वभवनी बहेन छे तो मोहनो त्याग करो अने तमारा आ दुष्कृत्यथी लज्जा पामी तमारा मातापिता पण विषप्रयोगथी मृत्यु पाम्या छे तेना रूपाल करी आ पापनी शुद्धि माटे तमे चारित्र व्रत ग्रहण करो "

आ प्रमाणे ते मणिकुंडली नामना विद्याधरना मुखथी पोताना पूर्वभवोनु वृत्तांत सांभळी इदुषेण अने बिंदुषेण बोल्या के—" हे विद्याधर मित्र ! तमे अमने ठीक प्रतिबोध कर्यो " एम कही ते बन्ने भाइओए चार हजार राजाओ सहित धर्मरुचि गुरुनी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं त्यां निरतिचार चारित्र पाळी उग्र तप करी ते बन्ने बुद्धिमान मोक्षपद पाम्या

अहीं श्रीषेण विगेरे चारे युगलीयाओ आयुष्य पूर्ण करी सौधर्म देवलोकमां गया (ए त्रीजो भव)

आ ज जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वत उपर श्री रथनूपुरचक्रवाल नामनु नगर छे तेमां महा बळवान अर्ककीर्ति नामनो खेचर राजा हतो तने चद्रने रोहिणीना जेवी ज्योतिर्माला नामनी प्रिया हती ते अर्ककीर्ति राजाने स्वयप्रभा नामनी बहेन हती तेणीने पोतनपुरनो राजा अचळनो नानो भाइ त्रिपृष्ठ नामनो पहेलो वासुदेव परण्यो हतो एकदा

श्रीषेण राजानो जीव प्रथम स्वर्गथी चवीने द्वीपने विषे मुक्ताफळनी जेम ज्योतिर्मालानी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां अमित (घणा) तेजवाळो सूर्य जोयो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये तेणीए श्रेष्ठ लक्षणवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. उगता सूर्यनी जेवा तेजवाळा ते पुत्रनुं नाम राजाए स्वप्नने अनुसारे अमिततेजा पाड्युं. पछी सत्यभामानो जीव स्वर्गथी चवीने अर्ककीर्तिनी प्रिया ज्योतिर्मालानी कुक्षिथी सुतारा नामनी पुत्री थइ. अभिनंदितानो जीव स्वर्गथी चवी त्रिपृष्ठ वासुदेवनी राणी स्वयंप्रभानी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेनुं नाम श्रीविजय पाड्युं. तथा शिखिनंदितानो जीव स्वर्गथी चवीने स्वयंप्रभानी कुक्षिमां पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेनुं नाम त्रिपृष्ठ वासुदेवे ज्योतिष्प्रभा पाड्युं. ते कपिलनो जीव संसारमां भमीने चमरचंचा नामनी नगरीमां अशनिघोष नामनो विद्याधर राजा थयो. अर्ककीर्तिए पोतानी सुतारा पुत्रीने त्रिपृष्ठना पुत्र श्रीविजयनी साथे परणावी. तथा त्रिपृष्ठे पण पोतानी पुत्री ज्योतिष्प्रभाने आनंदथी अमिततेजा साथे परणावी.

एकदा अभिनंदन अने जगन्नंदन नामना चारणमुनिनी पासे धर्मदेशना सांभळी अर्ककीर्ति राजाए पोताना राज्यपर अमिततेजाने स्थापन करी मुक्तिना सरल मार्गरूप प्रव्रज्याने अंगीकार करी. त्यारपछी विद्याधर राजाओना मुगट-वडे नमस्कार करातो महाबळवान अमिततेजा राज्यनुं पालन करवा लाग्यो. अहीं पोतनपुरना राजा त्रिपृष्ठ वासुदेव पण मरण पाम्या, त्यारे बळभद्र अचळे वैराग्य पामी राज्यपर श्रीविजयने स्थापन करी पोते प्रव्रज्या ग्रहण करी.

एकदा पोतानी बहेन सुतारा अने श्रीविजयने जोवानी उत्कंठा थवाथी अमिततेजा पोतनपुर गयो. ते वखते ते

पुरमां उचां तोरणो अने ध्वजो बांधेलां हतां, तथा आखु नगर आनदमय देखातु हतु, तेमज राजकुळ विशेषे करीने हर्ष पामेलु देखातु हतु, ते जोइ अमिततेजा विस्मय पाम्या तेने आकाशमाथी उतरतो जोइ श्रीविजय राजा हर्षथी तेनी सन्मुख उभो थयो परस्पर साळा बनेवी एवा ते बन्नेए अन्योन्य गाढ आलिंगन कर्युं पछी ते बन्ने सिंहासनपर बेठा त्यारे अमिततेजाए श्रीविजयने पूछ्यु के—" आजे शा निमित्ते उत्सव छे ? " त्यारे श्रीविजय बोल्यो के—

आजथी आठमा दिवस उपर अहीं एक नैमित्तिक आव्यो हतो तेने मे आववानु कारण पूछ्यु, त्यारे ते बोल्यो के—" हे प्रभु ! हु निमित्त कहेवा माटे आव्यो छु ते तमे सावधान चित्ते सांभळो—आजथी सातमे दिवसे मध्यान्ह समये पोतनपुरना राजा उपर उग्र वीजळीनो पात थशे " आवु तेनु कटुक वचन सांभळी क्रोध पामेला मुख्य मत्रीए तेने कह्यु के—" ते वखते तारा माथापर शु पडशे ? " त्यारे दैवज्ञ बोल्यो के—" हे मत्रीश्वर ! शास्त्रदृष्टिए मे जेवु जोयुं तेवु कह्यु छे, तेमां मारापर शा माटे कोप करो छो ? ते दिवसे मारा मस्तक उपर तो सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि पडशे " आ प्रमाणे ते दैवज्ञ कह्यु, त्यारे मे तेने पूछ्यु के—" हे दैवज्ञ ! आवु निमित्त तमे क्याथी शीख्या छो ? " त्यारे ते बोल्यो के—" ज्यारे अचळ स्वामीए दीक्षा ग्रहण करी त्यारे मारा पिता साथे मे पण बाल्यावस्था छतां दीक्षा लीधी हती. त्यां मे अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास कर्यो हतो पछी हु युवान थयो त्यारे विहारना क्रमे हु पद्मिनीखंड नामना पुरमां गयो त्यां हिरण्यलोमिका नामनी मारी फुइ रहे छे तेणीए बाल्यावस्थामां ज तेनी पुत्री चद्रयशा मने आपी हती परतु मे तो प्रव्रज्या लीधी तेथी तेणीने हु परण्यो नहोतो अत्यारे तेणीने युवावस्थावाळी जोइ हु अत्यत मोह पाम्यो अने

तेणीना भाइना कहेवाथी हुं व्रतनो त्याग करी तेणीने परण्यो. पछी धननी इच्छाथी में निमित्त निघावडे जोयुं तो आ महा वृत्तांत मारा जाणवामां आव्युं. तेमां मने घणो द्रव्यलाभ थशे एम जाणी हुं आ वृत्तांत आपने कहेवा अहीं आव्यो छु. हवे जेम उचित लागे तेम करो."

आ प्रमाणे निमित्तियानुं वचन सांभळी सर्व जनो विचारमां पड्या के 'आ बाबत शो उपाय करवो ?' तेमां एक मंत्री बोल्यो के—" समुद्रमां वीजळी पडती नथी, तेथी सात दिवस सुधी स्वामी नावमां आरूढ थइ समुद्रमां ज रहे तो विघ्न दूर थाय." ते सांभळी बीजो मंत्री बोल्यो के—" जो के समुद्रना जळमां वीजळी पडे नहीं, परंतु वहाणमां कदाच वीजळी पडे तो तेने कोण रोकी शके ? तेथी वैताढ्य पर्वतनी गुफामां जइने सात दिवस स्वामीए रहेवुं, एम मने ठीक लागे छे." ते सांभळी त्रीजो मंत्री बोल्यो के—" आ उपाय पण मने सारो लागतो नथी. कारण के जे अवश्य थवानुं होय ते गमे ते स्थाने पण थइ शके छे. तेथी हुं तो एम धारुं छुं के—आपणे सर्वेए सर्व उपद्रवोने नाश करनार तप करवो योग्य छे, कारण के तपवडे निकाचित कर्म पण क्षीण थाय छे." ते सांभळी चोथो मंत्री बोल्यो के—" आ नैमित्तिके पोतनपुरना स्वामी उपर वीजळीनो पात कह्यो छे, परंतु श्रीविजय स्वामीना उपर कह्यो नथी. तेथी सात दिवस सुधी आपणे पोतनपुरनो स्वामी बीजो करीए, तेम करवाथी वीजळी तेना पर पडशे अने श्रीविजय स्वामी अक्षत रहेशे." आवुं तेनुं वचन सांभळी दैवज्ञे अने बीजा सर्व मंत्रीओए तेम करवानुं पसंद कर्युं. अने तेना मतिज्ञाननी प्रशंसा करी. त्यारे में कह्युं के—" मारा प्राण बचाववानी खातर हुं बीजाना प्राणनो घात करावीश नहीं. कारण के सर्वेने पोताना प्राण प्रिय होय छे."

ते सांभळी विचार करी मंत्रीओ बोल्या के—“हे स्वामी ! ए विचार आप मूकी द्यो अने धनद यक्षनी प्रतिमानो राज्याभिषेक करशुं तेम करवाथी देवना माहात्म्यने लीधे जो उपद्रव नहीं थाय तो सर्व सारु ज छे, अने जो तेनापर वीजळी पडशे तो पण आपने जीवहिंसानु पाप लागशे नहीं, अने यक्षनी प्रतिमा बीजी सारी पण करावी शकाशे ” आ प्रमाणे तेमनु युक्तियुक्त वचन सांभळी में ते अंगीकार कर्युं पछी हु (अंत:पुर सहित) जिनचैत्यमां जइ पौषध ग्रहण करी दर्भना संथारा पर शुभध्याने रह्यो. अने राज्यपर अभिषेक करेला यक्षनी प्रतिमाने सर्व पुरजनो सेववा लाग्या अनुक्रमे दिवसो जतां सातमे दिवसे मध्यान्ह वखते आकाशमां गर्जना करतो मेघ चडी आव्यो, अने वडवाग्नि जेवो प्रचंड विद्युत्दंड तत्काळ यक्षनी मूर्तिपर पड्यो ते वखते प्रसन्न थयेला सर्व जनोए दैवज्ञना मस्तकपर रत्ननी वृष्टि करी पछी हु पण पौषध पारी चैत्य बहार नीकळ्यो एटले प्रजाजनोए मने फरीथी राज्याभिषेक कर्यो में पण प्रसन्न थइ ते नैमित्तिकने पद्मिनीखंड नामनु पुर इनाममां आपी विदाय कर्यो कारणके तेणे मारापर घणो उपकार कर्यो हतो पछी में धनदयक्षनी नवी उत्तम प्रतिमा करावी स्थापन करी आ रीते मारी उपरनु विघ्न शांत थयु, ते प्रसंगने लइने पुरजनो आ उत्सव करे छे ”

आ प्रमाणे उत्सवनु वृत्तांत सांभळी अमिततेजा पण आनंद पाम्यो. पछी पोतानी बहेन सुतारानो दिव्य वस्त्र तथा आभूषणोथी सत्कार करी ते पोताने घेर गया

एकदा श्रीविजय राजा सुतारा देवी सहित क्रीडा करवा माटे ज्योतिर्वन नामना उद्यानमां गयो. ते वखते कपिलनो

जीव के जे अशनिघोष नामनो विद्याधर राजा थयो हतो, ते आकाश मार्गे जतो हतो, तेणे पोताना पूर्वभवनी स्त्री सुताराने जोइ. पूर्वभवना संस्कारने लीधे तेणीपर ते अत्यंत आसक्त थयो, तेथी तेणीनुं हरण करवा माटे तेणे तेनी पासे विद्यावडे सुवर्णनो मृग विकुर्वीने मूक्यो. तेने अति मनोहर जाइ सुताराए प्रियने कह्युं के—" हे स्वामी ! मने क्रीडा करवा माटे आ मृग लावी आपो." ते सांभळी तेने पकडवा माटे दोडतो राजा दूर गयो, त्यारे एकली पडेली सुताराने ते अधम अशनिघोष हरी गयो. तथा श्रीविजय राजाने हणवा माटे तेणे प्रतारणी नामनी विद्याने आदेश कर्यो, एटले तेणे सुतारानुं रूप धारण करी उंचे स्वरे बूम पाडी के—" हे प्रिय ! मने कुक्कुट सर्प डस्यो छे. जलदी आवीने मारुं रक्षण करो." ते सांभळी अत्यंत आकुळ व्याकुळ थयेलो राजा तेणीनी पासे आव्यो, तेटलामां तो ते पृथ्वीपर पडी राजाना देखतां ज मरण पामी. ते जोइ राजा पण मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्यो. तेवामां तेना सेवकोए आवी तेने चंदनरस छांटी सावधान कर्यो.

राजा चेतना पामी विलाप करवा लाग्यो के—" हा प्रिया ! तारी आ शी दशा थइ ? हुं आजे सुवर्णना हरणथी ठगायो, अन्यथा हुं समीपे होउं तो शेषनाग पण तने करडवा समर्थ नथी. हे प्रिया ! तारा विना हुं चणवार पण जीवी शकुं तेम नथी. शुं पाणी विना माछलुं जीवी शके ? तारा वियोगथी उत्पन्न थयेला दुःखने हुं सहन करवा शक्तिमान नथी, तेथी हे जीवितेश्वरी ! शीघ्रपणे तारी पाछळ आ मारा प्राणो चाल्या जाओ." आ प्रमाणे कही सेवको पासे चिता करावी मोहथी मूढ थयेलो राजा प्रिया सहित ते चितामां पेठो. तेमां जेटलामां अग्नि सळगाव्यो, तेवामां त्यां बे विद्याधरो

आव्या. तेमांथी एक जणाए पाणी मंत्री चितामां छांट्यु, एटले तरत ज ते प्रतारणी विद्या अट्टहास करी शीघ्र नाशी गइ ते जोइ राजाए विचार कर्यो के—" आ स्त्री कोण ? मारी कांता क्यां गइ ? अने ते अग्नि क्यां गयो ? " ए प्रमाणे विचारी राजाए ते विद्याधर पुरुषोने पूछ्युं के—" आ शुं ? " त्यारे तेओए राजाने नमस्कार करी कह्युं के—" अमे अमित तेजा राजाना सेवको छीए अमे अरिहंतने नमवा माटे नीकळ्या छीए आ तरफ आवतां मार्गमां अमे आ प्रमाणे वाणी सांभळी के—" हा ! बंधु अमिततेजा ! हा ! प्राणनाथ श्रीविजय ! मने सुताराने आ विद्याधर थकी मूकावो " आवी वाणी सांभळतां ज अमे ते तरफ दोड्या, तो अमे तमारी प्रिया अने अमारा स्वामीनी बहेन सुताराने अशनिघोषे हरण करातीं जोइ तेणीने मूकाववा माटे अमे युद्ध करवा सज्ज थइ बोल्या के—"हे दुष्ट ! उभो रहे, उभो रहे " तेटलामां सुताराए अमने कह्युं के—" तमे हमणां ज्योतिर्वनमां जाओ त्यां प्रतारणी विद्याथी छेतराता मारा पति श्रीविजय राजानुं रक्षण करो " ते सांभळी तरत ज अमे अहीं आव्या, चितामां मंत्रेलुं पाणी छांटी अग्नि बुझाव्यो अने प्रतारणी विद्याने नसाडी दीधी."

आ प्रमाणे सुताराने हरण करेली जाणी श्रीविजय राजा खेद पाम्यो पछी तेने धीरज आपी पेला विद्याधरो तेने आग्रह पूर्वक वैताढ्य पर्वतपर लइ गया तेने जोइ अमिततेजा एकदम उभो थयो, अने तेनो आदरसत्कार करी आगमनानुं कारण पूछ्युं त्यारे श्रीविजयना कहेवाथी ते पेला विद्याधरोए सुताराना हरण संबंधी सर्व वृत्तांत कही समजाव्यो ते सांभळी अमिततेजा अत्यंत क्रोध पामी बोल्यो के—"तमारी प्रिया अने मारी बहेनने हरी जइने ते अशनिघोष केटलुं जीवशे ? "

एम कही तेणे श्रीविजयने शस्त्रावरणी, बंधनी अने मोचनी ए त्रण महाविद्याओ आपी. पछी सैन्य सहित पोताना पांचसो पुत्रोथी परिवरेला श्रीविजयने अमिततेजाए सुताराने लाववा माटे अशनिघोष साथे लडाइ करवा मोकल्या. श्रीविजय राजा विद्याधरना सैन्योवडे आकाशने आच्छादन करता शीघ्रपणे चमरचंचा नगरी पासे जइ पहोंच्या. अहीं अमिततेजा अशनिघोषने घणी विद्यावाळो जाणी परविद्याना बळने नाश करनारी महाज्वाळा नामनी महाविद्या साधवा माटे पोताना सहस्ररश्मि नामना पुत्रने साथे लइ हिमवंत गिरि उपर गयो. त्यां सहस्ररश्मिथी रक्षण करातो ते महा पराक्रमी अमिततेजा एक मासना उपवासनो नियम लइ विद्या साधवा बेठो.

अहीं चमरचंचा नगरी पासे आवीने श्रीविजय राजाए पोताना दूतने अशनिघोष पासे मोकल्यो. तेणे जइ तेने कह्युं के—' हे राजा ! प्रतारणी विद्यावडे श्रीविजय राजाने छेतरी तेनी प्रिया सुताराने हरण करतां वीरमानी एवा तने शुं कांइपण लज्जा आवी नहीं ? अथवा तो हीन पराक्रमवाळाने छळ ज बळ होय छे. परंतु सूर्य समान श्रीविजय राजा छतां अंधकार जेवा तारी शक्ति शी रीते स्फुरायमान थवानी छे ? माटे हवे श्रीविजय राजाने नमस्कार करी तेनी प्रिया सुतारा तेने पाछी सोंप. अन्यथा तारा प्राण सहित ते राजा पोतानी प्रियाने ग्रहण करशे. " ते सांभळी क्रोध पामी अशनिघोष बोल्यो के—" रे दूत ! तुं अत्यंत धृष्ट अने उद्धत छे, तें कह्युं ते जाण्युं. जो मंदबुद्धिवाळो श्रीविजय अहीं आव्यो छे तो तेथी शुं थयुं ? ते बिचारो मारा पराक्रमना एक अंशने पण सहन करी शकवानो नथी. शुं सूर्यना प्रकाशनो एक लेश पण घुवड सहन करी शके ? माटे ते श्रीविजय जेम आव्यो तेम ज पाछो चाल्यो जाय तो ठीक छे, अन्यथा सुताराने तो पामशे

नहीं, पण उलटी विशेष विगोपना पामशो." आ प्रमाणे तेनां वचन सांभळी ते दूत श्रीविजय राजा पासे आव्यो, अने तेणे सर्व वृत्तांत तेने कह्यो

ते सांभळी अत्यंत क्रोध पामेला श्रीविजय राजाए युद्धने माटे सर्व सैन्य सज्ज कर्युं ते जाणी अशनिघोषे सैन्य सहित पोताना अश्वघोष विगेरे पुत्रोने युद्ध करवा मोकल्या रणसंग्रामना वाजिंत्रोना शब्दथी आकाश पूर्ण थयुं, अने बन्ने सैन्यो वच्चे महा घोर युद्ध प्रवर्त्युं ते वखते ते युद्ध जोवा माटे देवताओ आकाशमां आवी उभा रह्या, तेमने केटलाक वीरोए बाणोनो मंडप करी जोवामां विघ्न कर्युं केटलाक वीरोए वडांनी जेम शत्रुओने भालामां परोवी उंचा कर्या, केटलाक सुभटोए दंडवडे पर्वतनी जेवा हाथीओना दांत भांगी नांख्या, केटलाक योद्धाओए घडानी जेम रथोने मुद्गरवडे मर्दन कर्या, केटलाके परिघवडे शत्रुओने चणानी जेम कुट्या, केटलाके खड्गवडे कोळानी जेम शत्रुओने फाडी नांख्या, केटलाके गदावडे नाळीयेरनी जेम शत्रुना मस्तको भेदी नांख्या, केटलाक वीरो आयुध खूटी जवाथी शत्रुना हाथीना दांत उखेडी तेवडे प्रहार करवा लाग्या, अने केटलाक महाबळवान योद्धाओ द्वंद्वयुद्ध करवा लाग्या, ए रीते हमेशां शस्त्र, अस्त्र, मंत्र अने मायावडे युद्ध करतां ते बन्ने सैन्योनो लगभग एक मास थवा आव्यो, ते वखते श्रीविजयना सुभटोए अशनिघोषना पुत्रोनो पराजय कर्यो त्यारे अशनिघोष राजा पोते युद्ध करवा आव्यो अने इक्षुने जेम बळद भांगी नांखे तेम तेणे अमिततेजाना पुत्रोने भांगी नांख्या--हराव्या, त्यारे श्रीविजय राजा पोते युद्धमां उतर्यो ते बन्ने महा पराक्रमी परस्परना प्रहारोने छतरता चिरकाळ सुधी युद्ध करवा लाग्या ते जोइ देवो पण आश्चर्य पाम्या छेवटे श्रीविजय राजाए खड्ग वडे

शत्रुना बे ककडा कर्या, त्यारे ते बे अशानिघोषरूप थया. श्रीविजये ते बन्नेना चार ककडा कर्या. त्यारे चार अशानिघोष थया. फरीथी ते चारेना श्रीविजये बबे ककडा कर्या, त्यारे आठ अशानिघोष थया. आ प्रमाणे श्रीविजय अशानिघोषना जेटला ककडा करतो तेटला अशानिघोष थवा लाग्या. तेथी श्रीविजय राजा हवे शुं करवुं? एम विचारमां मूढ बनी गयो. तेटलामां विद्या सिद्ध करीने अमिततेजा पोते आवी पहोंच्यो.

सिंहनी जेवो तेने आवतो जोइ हाथीनी जेम अशानिघोष तत्काळ नाशी गयो. तेने पकडी लाववा माटे अमिततेजाए महाज्वाळा नामनी विद्याने हुकम कर्यो, एटले आखा विश्वने जीतनारी ते विद्या अशानिघोषनी पाछळ दोडी. नासता अशानिघोषे कोइ पण ठेकाणे शरण जोयुं नहीं, तेथी ते अत्यंत आकुळ व्याकुळ थइ दक्षिण भरतार्धमां गयो. त्यां भमता तेणे सीमनग पर्वत उपर बळदेव मुनिने जोया. ते मुनिने तत्काळ केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं अने तेनी चोतरफ देवताओ परिवरेला हता. अेटले ते अशानिघोषे ते केवळीनुं ज शरण कर्युं, त्यारे महाज्वाळा विद्या तेनो त्याग करी पाछी आवी अने तेणीए सर्व वृत्तांत अमिततेजाने कह्यो. ते सांभळी अमिततेजा अने श्रीविजय ए बन्ने अत्यंत हर्ष पाम्या. त्यारपछी सुताराने लाववा माटे मारीच नामना दूतने मोकली ते बन्ने राजा सैन्य सहित विमानमां बेसी सीमनग पर्वत उपर गया, अने त्यां बन्नेए भक्तिथी अचळ बळदेव केवळीने वंदना करी. मारीच विद्याधर पण चमरचंचा नगरीमां गयो, अने तेणे अशानिघोषनी माने कह्युं के—" सुताराने लइ जवा माटे मने अमिततेजा राजाए अहीं मोकल्यो छे. " पछी तेनी माना कहेवाथी सुताराने लइ ते मारीच पण सीमनग पर्वतपर आव्यो, अने तेणे श्रीविजय तथा अमिततेजाने सुतारा सोंपी. ते वखते

अशनिघोषे हर्षथी श्रीविजय अने अमिततेजाने खमाव्या पछी तेमनी पासे अचळ केवळीए धर्मदेशना आपी देशनाने अंते अशनिघोष राजाए महर्षिने कह्यु के—"हे प्रभु ! में दुष्ट अभिप्रायथी आ सुतारानु हरण कर्यु नहोतु, परंतु प्रतारणी नामनी विद्याने साधी हु घर तरफ जतो हतो, तेवामां ज्योतिर्वनने विषे आ सुताराने में श्री विजय राजानी पासे रहेली जोइ, ते वखते कोइ पण कारणथी तेणीना उपर मारो अत्यंत राग थयो के जेथी तेणीने छोडीने हु आगळ जवा असमर्थ बन्यो परंतु श्रीविजयनी पासे रहेली होवाथी हु तेणीने हरी शक्यो नहीं. तेथी प्रतारणी विद्यावडे श्रीविजयने छेतरी तेने छुटो पाडी दूर मोकलीने में तेणीनु हरण कर्यु. पछी पाप रहित अने आकुळ व्याकुळ थयेली तेने में मारी मातानी पासे मूकी वाणीथी पण में तेने अनुचित वचन कह्यु नथी तो हे भगवान ! आने विषे मारो प्रेम शाथी थयो ? ते कहो "

त्यारे मुनि तेमनी पासे तेमना पूर्वभवनी श्रीषेण विगेरे सर्वनी कथा कहीने बोल्या के—"श्रीषेण, सत्यभामा, अभिनंदिता अने शिखिनंदिता मरीने युगलिया थया, त्यांथी मरीने देव थया, अने त्यांथी चवीने श्रीषेणनो जीव आ अमिततेजा थयो छे अने शिखिनंदितानो जीव आनी पत्नी ज्योतिष्प्रभा थयो छे. जे अभिनंदीतानो जीव हतो ते चवीने आ श्रीवि जय थयो छे अने सत्यभामानो जीव चवीने तेनी भार्या सुतारा थयो छे तथा कपिलनो जीव चिरकाळ सुधी तिर्यंच यो निमां भमी कोइ तापसनो पुत्र धर्मिल नामे धर्मिष्ठ थयो ते बाल्यावस्थाथी ज तीव्र अज्ञानतप करतो हतो. एकदा आ काशमां जता मोटी समृद्धिवाळा कोइ विद्याधरने जोइ तेणे नियाणु कर्यु के—" आ मारा तपनो जो प्रभाव होय तो हु

आवो विद्याधर थाउं." आ प्रमाणे नियाणुं करवाथी ते तापस कुमार मरीने तुं अशनिघोष थयो छे. पूर्वभवना संबंधथी सुताराने विषे तारो स्नेह थयो छे, कारण के स्नेह अने वैरनां संस्कार सेंकडो भव सुधी चाले छे."

आ प्रमाणे केवळीना मुखथी पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत सांभळी अमिततेजा विगेरे सर्वे मनमां विस्मय पाम्या. पछी अमिततेजाए भगवानने पूछयुं के—" हे पूज्य ! हुं भव्य छुं के नहीं ? " मुनि बोल्या के—" आ भवथी नवमे भवे आ ज भरतक्षेत्रमां तमे शांतिनाथ नामना पांचमा चक्रवर्ती अने सोळमा तीर्थंकर थशो. ते भवे आ श्रीविजय तमारो मोटो पुत्र तथा प्रथम गणधर थशे. " ते सांभळीने ते बन्ने राजाओए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो त्यारपछी अशनिघोषे मुनिने कह्युं के—" सन्मार्गने देखाडनार सद्गुरु विना मूढ पथिक अरण्यमां जेम भटके तेम हुं आ संसारमां चिरकाळ सुधी भटक्यो छुं. मोटा भाग्ये आज सिद्धिपुरीना मार्गने देखाडनारा तमने में जोया छे. तो हे प्रभु ! मारापर प्रसन्न थइ मने साधुधर्म आपो. " ते सांभळी मुनिए तेने चारित्र आपनानी अनुज्ञा आपी, एटले ते बुद्धिमान अशनिघोषे पोताना पुत्र अश्वघोषने अमिततेजाना उत्संगमां स्थापन करी कह्युं के—" आ मारा पुत्रने तमे पोताना पुत्रनी जेम राखजो. " ए प्रमाणे कही अचळ स्वामीनी पासे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी श्रीविजय अने अमिततेजा ऋषिने वंदना करी परिवार सहित पोताने स्थाने गया. बीजा जनो पण हर्ष पामी पोतपोताने स्थाने गया. खेचरेंद्र अमिततेजाए तथा नरेंद्र श्रीविजये श्राद्धधर्मनुं पालन करता अने जिनशासननी प्रभावना करता घणो काळ निर्गमन कर्यो.

एकदा श्रीविजय अने अमिततेजा साथे मळीने मेरुपर्वतपर शाश्वत जिनेश्वरोने वांदवा गया. त्यां जिनप्रतिमाओने-

वांदी एक सुवर्णनी शिलापर ध्यानमां बेठला विपुलमति अने महामति नामना बे चारण मुनिओने नम्या ते वखते ते महर्षिओए देशनामां सर्व अनित्यता देखाडी ते सांभळी ते बन्ने राजाओए पूछ्युं के—" हे प्रभु ! अमारुं आयुष्य केटलुं शेष छे ? " मुनिओए तेमने कह्युं के—" तमारुं आयुष्य आजथी छवीश दिवसनुं शेष छे " ते सांभळी ते बन्ने धर्मकृत्यमां उत्सुक थइ पोतपोताने घेर गया त्यां जिनचैत्योमां अष्टाह्निका महोत्सव करी, दीनादिकने दान आपी, पोतपोताना पुत्रोने राज्यपर स्थापन करी, अभिनंदन अने जगनंदन नामना गुरु पासे दीक्षा ग्रहण करी, हर्षथी पादपोपगमन नामनुं अनशन ग्रहण कर्युं त वखते श्रीविजये पोताथी अधिक ऋद्धिवाळा पोताना पितानुं स्मरण करी नियाणुं कर्युं के—" आ तपना प्रभावथी आवता भवमां हुं मारा पिता जेवो थाउं " पछी आयुष्य पूर्ण थये अमिततेजा अने श्रीविजय मुनि काळधर्म पामी प्राणत नामना स्वर्गमां वीश सागरोपमना आयुष्यवाळा उत्तम देवो थया

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेह क्षेत्रने विषे रमणीय नामना विजयमां शुभा नामनी श्रेष्ठ पुरी छे तेमां गुणरूपी रत्नोवडे परिपूर्ण स्तिमितसागर नामनो राजा हतो. तने सुंदर रूपवाळी वसुंधरा अने अनुद्धरा नामनी बे प्रियाओ हती प्राणत नामना स्वर्गथी अमिततेजानो जीव चवीने वसुंधरा देवीनी कुक्षिमां पुत्रपणे अवतर्यो ते वखते सुखे सुतेली ते कमळना सरखा मुखवाळी वसुंधराए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करता हाथी, वृषभ, चंद्र अने सरोवर ए चार पदार्थो जोया तरत ज जागृत थयेली तेणीए तेनुं फळ राजाने पूछ्युं, त्यारे राजाए कह्युं के—" हे प्रिया ! आ स्वप्नोवडे तारो पुत्र बळदेव थशे " ते सांभळी हर्ष पामेली राणीए गर्भ धारण कर्यो अनुक्रमे समय पूर्ण थये तेणीए शुभलक्षणवाळा

अने श्वेतवर्णवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं अपराजित नाम पाड्युं. पछी श्रीविजयनो जीव पण प्राणतकल्पमांथी चवी अनुद्धरा राणीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते सिंह, लक्ष्मी, सूर्य, कुंभ, समुद्र, रत्नराशि अने निर्धूम अग्नि ए सात पदार्थो राणीए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया. तरत ज जागृत थइने राणीए राजाने स्वप्नोनुं फळ पूछयुं, त्यारे राजाए कह्युं के —" हे प्रिया ! आ स्वप्नोथी तारो पुत्र वासुदेव थशे." पछी अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए श्याम वर्णवाळो मनोहर पुत्र प्रसव्यो. तेनुं नाम राजाए महोत्सव पूर्वक अनंतवीर्य पाड्युं.

ते बन्ने भाइओ अनुक्रमे वृद्धि पामता निरंतर प्रेमपूर्वक साथे ज क्रीडा करवा लाग्या. योग्य समये गुरु पासेथी सर्व कळाओ शीख्या. पछी वसंतऋतुवडे आम्रवृक्षनी जेम यौवनवडे भूषित थयेला ते बन्ने भाइओ भमरीनी जेम युवतिओनी दृष्टिने मोह पमाडवा लाग्या.

एकदा स्तिमितसागर राजा अश्वक्रीडा करवा नगरीनी बहार गयो. त्यां उद्यानमां रहेला स्वयंप्रभ नामना मुनिने जोइ तेणे तेमने वंदना करी. पछी मुनिनी पासे बेसी तेमनी देशना सांभळी राजा प्रतिबोध पाम्यो. एटले पोताना राज्यपर अनंतवीर्यने स्थापन करी ते मुनिनी पासे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. ते राजर्षिए मनोहर चारित्रनुं पालन कर्युं. परंतु छेवट व्रतनी कांइक विराधना करी, तेथी ते काळधर्म पामी चमर नामनो असुरेंद्र थयो.

उत्तम पराक्रमवाळो अनंतवीर्य राजा पोताना मोटाभाइ सहित इंद्रनी जेम साम्राज्य भोगववा लाग्यो. एकदा कोइ

विद्याधरनी साथे ते बन्ने भाइओने मित्राइ थइ तेमने ते विद्याधरे सर्व विद्याओ आपी, पछी ते विद्याधर वैताढ्य पर्वतपर गयो. अनतवीर्यनी पासे किराती अने बर्बरी नामनी बे दासीओ हती, ते गीत नाट्यादिकनी कळावडे जगतना चित्तने हरण करती हती, एकदा सभामां ते बन्ने भाइओ पासे त दासीओ नाट्य करती हती, ते वखते नारद त्या आवी चड्या. परतु ते बन्ने भाइओनु चित्त नाटक जोवामां तन्मय थयु हतु, तेथी तेमणे नारदनु सन्मान कर्यु नहीं एटले नारद मनमां क्रोध पामी त्यांथी नीकळी वैताढ्य पर्वतपर गया त्यां सर्व विद्याधरनो राजा दमितारि नामे प्रतिवासुदेव हतो, तेनी पासे नारद गया तेने जोइ दमितारि राजाए उभा थइ आदरपूर्वक सिंहासनपर बेसाड्या नारदे सिंहासनपर बेसी तेने आशीर्वाद आप्यो तेने राजाए पूछ्यु के—" हे पूज्य ! तमे समग्र पृथ्वीपर स्वेच्छाए अटन करो छो, तेथी काइपण अद्भुत जोयु होय तो ते कहो " ते सांभळी नारदे हर्ष पामी कह्यु के—"हे राजा ! हु शुभापुरीमां अनतवीर्य राजानी पासे गयो हतो त्यां किराती अने बर्बरी नामनी बे दासीओनु नाटक में जोयु, तेवु नाटक देवोने पण दुर्लभ छे, ते दासीओ विना हे राजा ! आ तमारु समग्र राज्य घी विनाना भोजननी जेवु तुच्छ लागे छे " आ प्रमाणे कही कलिप्रिय नारद आकाशमार्गे पोताने स्थाने गया

त्यारपछी दमितारि राजाए पोतानो दूत अनतवीर्य राजा पासे मोकल्यो ते दूते शुभापुरीमा जइ मोटाभाइ सहित अनतवीर्यने नमस्कार करी कह्यु के—" हे राजा ! आ अर्ध विजयमां जे काइ उत्तम पदार्थ होय ते सर्व दमितारि राजाने ज योग्य छे तेथी तमारी पासे जे बे दासीओ नाट्य करवामां कुशळ छे, तेमने दमितारि राजा पासे मोकलो " ते

सांभळी राजाए कह्युं के—" हे दूत ! तुं हमणां जा. हुं कांइक विचार करीने ते बन्ने दासीओने शीघ्रपणे मोकलीश. " ते सांभळी दूत त्यांथी गयो, त्यारे ते बन्ने भाइओए विचार कर्यो के—"आ दमितारि राजा विद्याशक्तिथी आपणापर हुकम चलावे छे, तेथी आपणे पण विद्याधर मित्रे आपेली सर्व विद्याओ साधी तेवा बळवान थइए. " आ प्रमाणे ते बन्ने भाइओ विचार करता हता, ते ज वखते प्रज्ञप्ति विगेरे सर्व विद्यादेवीओ तेमनी पासे आवीने बोली के—" तमे जेने साधवा इच्छो छो ते अमे सर्व विद्यादेवीओ जाते ज तमारी पासे आवी छीए. पूर्वभवमां तमे अमने साधी छे, तेथी अत्यारे साधवानी जरुर नथी. मात्र अमने तमारा शरीरमां प्रवेश करवानी अनुज्ञा आपो." ते सांभळी ते बन्ने भाइओए तेमने अनुज्ञा आपी, एटले ते सर्व विद्यादेवीओए तेमना शरीरमां प्रवेश कर्यो, पछी ते बन्ने भाइओए हर्ष पामी तेमनी श्रेष्ठ पूजा करी.

एवा अवसरे दमितारि राजाए फरीथी दूत मोकल्यो, तेणे आवी ते बन्ने भाइओने कह्युं के—" दासीओने मोकलवानुं कहीने पण तमे मोकली नहीं. तेथी एम जणाय छे के—तमने तमारा प्राणो करतां पण ते दासीओ वधारे प्रिय छे. हजु पण जो तमने तमारा प्राण वहाला होय तो ते दासीओने शीघ्र मोकलो, नहीं तो क्रोध पामेला स्वामी तमारा प्राणोने हरण करशे. " ते सांभळी ते बन्ने भाइओ बोल्या के—" स्वामीने तो घणा धनवडे पण संतुष्ट करवा जोइए, तो जो मात्र आ बे दासीओथी ज तेने संतोष थतो होय, तो ते दासीओने काले सवारे ज तमे लइने जाओ. " आ प्रमाणे कही तेमणे दूतने प्रसन्न कर्यो. पछी ते दूत तेमणे आपेला उतारामां गयो. पछी बुद्धिमान ते बन्ने भाइओ राज्यनो भार मंत्रीओने सोंपी प्रातःकाळे विद्यावडे ते दासीओनुं रूप धारण करी दूतनी पासे गया, अने तेने कह्युं के—" अमने अनंतवीर्य अने

तेना मोटाभाइए तमारी पासे मोकली छे " पछी ते दूत तेमने लइ हर्ष सहित वैताढ्य पर्वतपर गयो अत दमितारि राजाने ते बन्नेनी भेट करी हाथ जोडी बाल्यो के—" हे स्वामी ! अपराजित अने अनतवीर्य ए बन्ने आपनी आज्ञाने आधीन ज छे तेथी तेमणे आ बे दासीओ आपने भेट तरीके मोकली छे " ते सांभळी प्रसन्न थइ दमितारि राजाए ते बन्नेने नाट्य करवानी आज्ञा करी एटले तेमणे पूर्वरंग विगेरेना अनुक्रमे समग्र विश्वने मोह पमाडे तेवु रसिक नाट्य करी बताव्यु तमनु अद्भुत नाट्य जोइ दमितारि राजाए ते बन्ने दासीओने त्रण जगतना साररूप मानी पछी दमितारि राजाए रूपलक्ष्मीवडे समग्र विश्वने जीतनारी पोतानी कनकश्री नामनी पुत्रीने नाट्य शीखववा माटे ते बन्न दासीओने सोंपी, त्यारे ते मायावी दासीओ अनन्तवीर्यना रूपादिक गुणोनु अद्भुत गायन गाती सती ते कनकश्रीने नाट्य शीखववा लागी एकदा ते राजकन्याए तेमने पूछ्यु के—" तमे हमेशां जेना गुणो गाओ छो ते कोण छे ? " ते सांभळी मायाथी चेटी थयेला अपराजिते कह्यु के—" ते शुभापुरीनो राजा छे, तेनु रूप कामदेवना रूपनो तिरस्कार करे तेवु छे, कोइपण शत्रुथी पराभव न पामे तेवो महा पराक्रमी छे, ते अपराजितनो नानो भाइ छे, तेनु नाम अनतवीर्य छे, वयमां पण ते युवान छे, तेना गुण अमे गाइए छीए, जे युवतिए तेने जोयो नथी, तेनो जन्म वृथा ज छे." ते सांभळी कनकश्रीनु शरीर रोमांचथी उल्लास पाम्यु, ते मनथी अनतवीर्यपर आसक्त थइ अने ' ते प्रियने हु क्यारे जोइश ? ' एम ते चिरकाळ सुधी विचारमां न रही तेणीना इंगिताकारथी तेणीनु मन जाणी अपराजिते पूछ्यु के—" हे मृगाक्षी ! विश्वना अलंकाररूप ते अनतवीर्यने शु तु जोवाने इच्छे छे ? " कनकश्री बोली के—" मने तेनु दर्शन क्याथी थाय ? मद भाग्यवाळा प्राणी

ओने चिंतामणि रत्न दुर्लभ ज होय छे." अपराजिते कयुं—"हे कमळना सरखा नेत्रवाळी ! तुं शोक न कर. तारे माटे हुं विद्याथी ते युवानने तेना मोटाभाइ सहित अहीं लावी आपुं." ते सांभळीने हर्षथी गद्‌गद् वाणीए कनकश्री बोली के—"हे कळावाळी ! तारुं वचन सफळ कर." ते सांभळी ते बन्ने विद्यावडे पोतपोतानुं मूळ स्वरूप धारण करी प्रगट थया. पछी अपराजिते तेणीने कह्युं के—"हे पुण्यशाळी ! आ ज अनंतवीर्य छे. में तने तेना रूपादिक जेवां कह्यां छे, तेवां ज छे के नहीं ? तेनी तुं पोते ज खात्री कर." ते सांभळी ते चतुर कन्या पण निमेष रहित दृष्टिवडे अनंतवीर्यनी सामुं जोइ ज रही. त्यारपछी ते दमितारिनी पुत्री कामदेवथी पीडा पामी, तेथी लज्जानो त्याग करी तथा मानने दूर करी बोली के—"हे मनोहर ! आजसुधी में घणा युवानो जोया छे, परंतु तमारा विना कोइने विषे मारुं मन आनंद पाम्युं नथी. तो हवे मारापर प्रसन्न थइने शीघ्रपणे मारुं पाणिग्रहण करो अने मारापर अनुग्रह करो. तमारी जेवा सत्पुरुषो अनुरागी जननी उपेक्षा करे ज नहीं." ते सांभळी अनंतवीर्ये कह्युं के—"हे सुंदरी ! जो तारी तेवी इच्छा छे तो चाल. आपणे शुभापुरीमां जइए." त्यारे ते बोली के—"हे कांत ! हुं तमारी साथे आवीश ज. परंतु मारो पिता तमने अनर्थ करशे." अनंतवीर्ये कह्युं—"हे भीरु ! तेनाथी तारे जरापण भय राखवो नहीं." एम कही तेणे तरत ज विद्यावडे विमान विकुर्व्युं. तेमां ते बन्ने भाइओ साथे कनकश्री हर्षथी बेठी. पछी विमानने चलावी अनंतवीर्य उंचे स्वरे आ प्रमाणे बोल्यो के—"हुं अनंतवीर्य दमितारिनी आ पुत्रीने हरी जाउं छुं. जे कोइ शूरमानी होय तेणे पोतानुं बळ देखाडवुं."

ते सांभळी क्रोध पामेला दमितारि राजाए तेने हणवा माटे पोताना सुभटो मोकल्या. ते वखते ते बन्ने भाइओ

पासे एक चक्ररत्न सिवाय बीजां सर्व रत्नो प्रगट (उत्पन्न) थयां पछी महारथी एवा ते बळदेव अने वासुदेवे क्रोधथी शस्त्रो शस्त्रानी वृष्टि करनारा ते दमितारिना सुभटोनो शीघ्र पराजय कर्यो त्यारे सैन्यवडे आकाशने ढांकतो अने तेजस्वी शस्त्रो वडे वीजळीना उद्योतने करतो दमितारि राजा पोते युद्ध करवा चाल्यो तेने आवतो जोइ कनकश्री अत्यत भय पामी तेने धीरज आपी बळदेव सहित वासुदेव तेनी साथे युद्ध करवा पाछा वळ्या पछी वासुदेवे तेना सैन्यथी बमणु सैन्य विद्यावडे विकुर्वीने ते दमितारिना सुभटो साथे युद्ध शरु कर्युं अनुक्रमे दमितारिना सैन्ये अनतवीर्यना सैन्यनो पराभव कर्यो, ते जोइ वासुदेवे युद्धरूपी नाटकनी नांदीनो जाणे नाद होय एवो पचजन्य शखनो नाद कर्यो ते नाद सांभळतां ज दमितारिना सर्व सुभटो भय पामी नाशी गया. त्यारे दमितारिए पोते अनतवीर्य साथे चिरकाळ युद्ध कर्युं छेवट अनतवीर्यने दुर्जय जाणी दमितारिए चक्ररत्ननु स्मरण कर्युं, एटले जाणे बीजो सूर्य होय एवु तेजस्वी ते चक्र दमितारिना हाथमां प्राप्त थयु तरत ज तेणे ते चक्र अनतवीर्य उपर मूक्यु तेथी अनतवीर्य छातीमां ते चक्रना तुबनो आघात थवाथी मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्यो, परतु एक क्षणवारमा ज पाछो स्वस्थ थइ ते ज चक्र हाथमां लइ तेणे दमितारि उपर मूक्यु, तेनाथी ते प्रतिवासुदेव प्राण रहित थइ गयो ते वखते आकाशमां रहेला देवोए वासुदेवना मस्तक उपर पुष्पवृष्टि करीने कह्यु के—" हे जनो ! आ अनतवीर्य वासुदेव छे अने तेना मोटा भाइ बळदेव छे, तेमनी तमे सर्वे सेवा करो " ते सांभळी सर्व विद्याधरो वासुदेवने नम्या

त्यारपछी विद्याधर राजाओथी परिवरेला वासुदेव अने बळदेव पोतानी पुरी तरफ चाल्या. मार्गमां कनकगिरि नामनो पर्वत आव्यो, त्यारे खेचरेंद्रोए वासुदेवने कह्युं के—" हे स्वामी ! आ पर्वतपर जिनेश्वरोनां चैत्यो छे, तेमने वांदीने आगळ चालो." ते सांभळी वासुदेव सर्व परिवार सहित ते पर्वतपर उतर्या, त्यां चैत्योमां जिनप्रतिमाओने वंदन करी ते सर्व बहार नीकळ्या. तेवामां कोइ स्थाने तत्काळ उत्पन्न थयेला केवळज्ञानवाळा कीर्तिधर नामना मुनिने जोया. ते केवळीने नमस्कार करी वासुदेवे परिवार सहित धर्मदेशना सांभळी. देशनाने अंते कनकश्रीए केवळीने पूछ्युं के—" हे प्रभु ! मारे बंधुओनो विरह अने मारा पितानो घात कया कर्मने लीधे थयो ? ते कृपा करीने कहो." त्यारे मुनिराज बोल्या के—

धातकीखंडना भरतक्षेत्रमां शंख नामनुं गाम छे, तेमां श्रीदत्ता नामनी अति दुःखी, गरीब अने अन्यना घरमां कामकाज करीने आजीविका करनारी एक स्त्री हती. एकदा ते श्रीपर्वत उपर गइ. त्यां सत्ययशा नामना मुनिने जोइ तेमने वंदना करी. मुनिए तेणीने धर्माशिष आपी. पछी तेणीए मुनिने कह्युं के—" हे पूज्य ! हुं अत्यंत दुःखी स्थितिवाळी छुं, तो एवो धर्म बतावो के जेथी आलोक अने परलोकमां हुं सुखी थाउं." त्यारे साधुए तेणीने धर्मचक्रवाळ नामनो तप करवा

१ आ तपमां प्रथम अट्ठम करी, पारणुं करी, पछी एकांतर साडत्रीश उपवास करवा अने छेवट अट्ठम करवो. आ तपमां कुल बाशी दिवस थाय छे. बीजी रीत एवी छे के प्रथम छठ्ठ करी पछी एकांतर साठ उपवास करवा आ रीते करवाथी कुल १२३ दिवस थाय छे.

कर्यु. ते तप अंगीकार करीने ते पोताने घेर गइ ते तपना प्रभावथी तेणीने पारणाने दिवसे सारु भोजन मळवा लाग्यु एकदा पोताना घरनी भींतनो थोडो भाग पडी गयो, तेमांथी घणु सुवर्ण नीकळ्यु, ते जोइ श्रीदत्ता आनद पामी पछी तपने छेडे तेणीए पेला द्रव्यवडे मोटा उत्सव पूर्वक उत्तम उद्यापन कर्यु, ते दिवसे मासक्षपणने पारणे कोइ मुनि त्या आवी चड्या, तमने तेणीए भक्तिथी आहार पाणी वहोराव्यां, पछी मुनि आहार करी रह्या त्यारे ते श्रीदत्ता ते मुनिनी पासे गइ तेमना मुखथी धर्मोपदेश सांभळी तेणीए श्राद्धधर्म अंगीकार कर्यो त्यारपछी एकदा तेणीए विचार कर्यो के—" आ धर्मथी मने कांइ फळ थशे के नहीं ? " आ रीते धर्मने विषे विचिकित्सा करी तेनी आलोचना कर्या विना ज मरण पामीने हे वत्सा कनकश्री ! ते श्रीदत्ता तु ज मारा पुत्र दमितारिनी पुत्री थइ छे ते विचिकित्सानु आ फळ तने प्राप्त थयु छे कारण के धर्मनी थोडी पण विराधना घणु दुःख आपे छे "

आ प्रमाणे केवळीना मुखथी पोतानो पूर्वभव सांभळी कनकश्री वैराग्य पामी, तेथी तेणे वासुदेवने कह्यु के—" हे महाभाग्यवान् ! हु ससारथी भय पामु छु, माटे मने व्रत ग्रहण करवानी आज्ञा आपो " ते सांभळी विस्मय पामी अनत वीर्य कह्यु के—" हे कल्याणी ! हमणां तो तु शुभापुरीमां चाल पछी त्यां श्रीस्वयप्रभ जिनेश्वरनी पासे मोटा उत्सव पूर्वक दीक्षा ग्रहण करजे " आ प्रमाणे कही ते वासुदेव तेणीने साथे लइ मुनिने भक्तिथी प्रणाम करी परिवार सहित शुभापुरीए गया ते वखते त्यां प्रथमथी प्रतिवासुदेवे मोकलेला विद्याधर राजाओनी साथे वासुदेवना पुत्रने युद्ध करता जोइ महा बळवान बळभद्र तेमनी सन्मुख दोड्या, अने पोताना सीर (हळ) नामना हथियारने चोतरफ भमाडवा लाग्या

तेनाथी भय पामेला दमितारिना सुभटो तत्काळ जूदी जूदी दिशाओमां नाशी गया. पछी अनंतवीर्य पोताने घेर गया. त्यां सर्व राजाओए मळी वासुदेवनो राज्याभिषेक कर्यो.

एकदा श्रीस्वयंप्रभ जिनेश्वर शुभापुरीए पधार्या. ते सांभळी वासुदेव मोटा भाई सहित कनकश्रीने साथे लइ तीर्थंकरने वांदवा गया. त्यां जइ प्रभुने वांदी तेणे धर्मदेशना सांभळी. पछी हरिनी आज्ञा लइ कनकश्रीए महोत्सव पूर्वक जिनेश्वर पासे दीक्षा ग्रहण करी, अने अनुक्रमे निरतिचार चारित्रनुं पालन करी तथा उग्र तप करी सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षे गइ.

समकितवडे शासननो उद्योत करता ते वासुदेव अने बळदेवे चिरकाळ सुधी राज्य भोगव्युं. चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी वासुदेव उग्रकर्मने योगे पहेली नरक पृथ्वीमां उत्पन्न थया. त्यां तेनुं आयुष्य बेंताळीश हजार वर्षनुं हतुं. तेटलो काळ छेदन भेदनादिक दुःसह पीडा तेणे भोगवी. ते वखते तेना पूर्वभवना पिता के जे चमरेंद्र थया हता, तेणे तेनी पासे आवी कर्मनुं फळ शांतिथी भोगववा उपदेश आप्यो.

वासुदेवना मरणथी शोकमग्न थयेला बळदेवे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी सोळ हजार राजाओ सहित जयधर नामना गणधरनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अने अनुक्रमे दीक्षानुं पालन करी उग्र तप करी ते बळदेव मुनि आयुष्यने अंते काळधर्म पामी अच्युतेंद्र थया.

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वैताढ्य पर्वत उपर गगनवल्लभ नामनु नगर छे तेमां खेचर राजा मेघवाहन राज्य करतो हतो तेनी प्रियानी कुक्षिमां अनंतवीर्यनो जीव नरकमाथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो तेनु नाम मेघनाद पाडयु ते युवावस्थाने पाम्यो त्यारे मेघवाहने तेने राज्यपर स्थापन कर्यो मेघनाद राजाए अनुक्रमे वैताढ्यनी बन्ने श्रेणिओ साधीने पोताने आधीन करी पछी तेणे देशोना विभाग करीने पोताना पुत्रोने ते वहेंची आप्या एकदा ते मेघनाद मेरुपर्वतपर नंदनवनमां रहेला शाश्वत चैत्योने वांदवा गया त्यां अच्युतेंद्र पण आव्या हता तेणे अवधिज्ञानथी मेघनादने ओळखी हर्षथी प्रतिबोध कर्यो ते वखत त्यां अमरगुरु नामना चारणमुनि पधार्या तेमनी पासे ते खेचराधीश मेघनादे त्यांज दीक्षा ग्रहण करी ते मेघनाद मुनि तीव्र व्रतनु पालन करी परीषहो सहन करी अंते अनशनवडे काळधर्म पामी अच्युत देवलोकमा इंद्रना सामानिक देव थया

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहक्षेत्रना भूषणरूप मंगलावती नामनी विजयमां रत्नसंचया नामनी नगरी छे तेमां विश्वना जीवोनु क्षेमकुशळ करनार क्षेमंकर नामे राजा हतो तेने सद्गुणोवडे शोभती रत्नमाळा नामनी प्रिया हती अच्युतेंद्र बावीश सागरोपमनु आयुष्य पूर्ण करी अच्युत देवलोकथी चवीने अपराजितनो जीव रत्नमाळानी कुक्षिमां अवतर्या ते वखते रात्रिमा सुखे सुतेली तेणीए चौद महास्वप्नो जोया, तथा पंदरमु वज्रनु स्वप्न जोयु तरत ज जागृत थयेली राणीए ते वृत्तांत राजाने कह्यो राजाए तेणीने कह्यु के—" हे प्रिया ! तारे चक्रवर्ती पुत्र थशे " ते सांभळी राणी हर्ष पामी, अने ते दिवसथी तेणीए गर्भ धारण कर्यो अनुक्रमे समय पूर्ण थये रत्नमाळाए त्रण जगतने मनोहर एवा पुत्रने

प्रसव्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं पंदरमा स्वप्नने अनुसारे वज्रायुध नाम पाडयुं. अनुक्रमे ते युवावस्थाने पाम्यो त्यारे मोटा उत्सवथी लक्ष्मीवती नामनी राजपुत्रीने परण्यो. त्यारपछी अनंतवीर्यनो जीव अच्युत कल्पथी चवीने लक्ष्मीवती देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो, अने समय पूर्ण थये तेणीए पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. पिताए तेनुं नाम महोत्सवपूर्वक सहस्रायुध पाडयुं. ते कुमार पण अनुक्रमे वृद्धि पामी समग्र कळाओनो अभ्यास करी कामदेवना क्रीडोद्यान समान यौवनने पाम्यो.

एकदा क्षेमंकर राजा पुत्र सहित सभामां बेठा हता, ते समये ईशानकल्पना इंद्रे पोतानी सभामां वज्रायुधना समकितनी अति श्लाघा करी, ते उपर श्रद्धा न थवाथी चित्रचूल नामनो एक मिथ्यात्वी देव विवाद करवा माटे क्षेमंकर राजानी सभामां आव्यो. त्यां ते देव मिथ्यात्वनो आश्रय करी बोल्यो के—" पुण्य, पाप, परभव, आत्मा विगेरे कांइपण छे नहीं. " ते सांभळी अवधिज्ञानवाळा वज्रायुधे तेने हर्षथी कह्युं के—" हे देव ! तुं ज अवधिज्ञानवडे तारो पूर्वभव जो. ते भवमां तें आवा देवसंपत्तिना कारणरूप धर्मकर्म कर्युं हतुं, तेनुं ज फळ तने मळ्युं छे, ते तुं ज प्रत्यक्ष जो. आ प्रमाणे पुण्य अने पूर्वभव सिद्ध थवाथी जीव तो सिद्ध थाय ज छे. केमके ते विना परभवमां कोण जाय ? अने सुखदुःख कोण पामे? आम छतां तुं पुण्य पापादिकनो अभाव केम कहे छे ? " आ प्रमाणे वज्रायुधनुं वचन सांभळी चित्रचूल देव बोल्यो के—" हे कुमार ! मने कोइ प्रकारे बोध थाय तेम नहोतुं, छतां तमे श्रेष्ठ युक्तिपूर्वक मने तत्त्वनो बोध पमाड्यो ते बहु सारुं कर्युं. तो हवे मारापर प्रसन्न थइने मने मिथ्यामतिने शीघ्र बोधिरत्न आपो. केमके इर्ष्याथी पण सत्पुरुषनुं करेलुं दर्शन

निष्फळ थतु नथी " त्यारे वज्रायुधे ते देवने समकितनो बोध कर्यो तेथी प्रसन्न थइ ते देवे नि स्पृह एवा पण ते वज्रायुधने दिव्य आभूषणो आप्यां, पछी ईशानेंद्रनी सभामां जइ तेणे इद्रने कह्यु के–" हे स्वामी ! तमे वज्रायुधना समकितनी श्लाघा करी ते युक्त ज छे "

एकदा लोकांतिक देवोए आवी क्षेमकर प्रभुने तीर्थ प्रवर्तावयानो बोध कर्यो, एटले ते प्रभुए वार्षिक दान आप्यु, तथा वज्रायुधने राज्य आप्यु. पछी वज्रायुधे तथा देवोए प्रभुनो दीक्षामहोत्सव कर्यो प्रभु पण चारित्र ग्रहण करी अनुक्रमे केवळज्ञान पाम्या प्रभुना केवळज्ञाननी वार्त्ता सांभळी वज्रायुध राजा सर्व परिवार सहित प्रभु पासे जइ देशना सांभळी घेर आव्या ते वखते आयुधशाळाना रक्षके राजानी पासे आवी चक्ररत्ननी उत्पत्ति कही तथा ते ज वखते बीजां पण सर्व रत्नो उत्पन्न थयां. पछी वज्रायुध राजाए मोटा उत्सवपूर्वक चक्ररत्ननी पूजा करी त्यारपछी चक्ररत्नने अनुसरी तेणे मगलावती विजयना छए खड साध्या अने अखड आज्ञावाळा ते चक्रीए चिरकाळ सुधी छ खडनु राज्य भोगव्यु

एकदा क्षेमकर जिनेश्वर रत्नसचया नगरीना उद्यानमां समवसर्या तेना खबर उद्यानपाळोए चक्रीने आप्या ते सांभळी चक्रीए तेओने हर्षथी साडाबार करोड सुवर्णनु प्रीतिदान आप्यु पछी ते चक्री परिवार सहित जिनेश्वर पासे जइ तेमने वांदी तेमना मुखथी धर्मदेशना सांभळी वैराग्य पामी तत्काळ घेर आव्या अने तेणे आदरपूर्वक सहस्रायुधने राज्यपर स्थापन कर्यो पछी चार हजार पोतानी राणीओ, चार हजार राजाओ अने सातसो पुत्रो सहित लोकोए पूजेला वज्रायुधे क्षेमकर प्रभुनी पासे जइ चारित्र ग्रहण कर्यु, अने तीव्र तप करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या केटलोक काळ गया

पछी सहस्रायुध राजाए पण पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पिहिताश्रव नामना गणधरनी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. ते सहस्रायुध राजर्षि श्रुतना पारगामी थइ पृथ्वीपर विचरता एकदा वज्रायुध राजर्षिने मळ्या. त्यारपछी स्वाध्याय ध्यानमां तत्पर अने शुभ अंतःकरणवाळा ते बन्ने पितापुत्र चिरकाळ सुधी साथे ज विचर्या. एकदा ते बन्नेए ईषत्प्राग्भार नामना पर्वतपर चडी पादपोपगम नामनुं अनशन ग्रहण कर्युं, अने आयुष्य पूर्ण थये त्रीजा ग्रैवेयकमां पचीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देदीप्यमान देवो थया.

आ जंबूद्वीपमां पूर्व महाविदेहने विषे पुष्कलावती नामनी विजयमां मोटी समृद्धिवाळी पुंडरीकिणी नामनी नगरी छे. तेमां शत्रु राजाओना तेजरूपी अग्निने बुझाववामां अद्वितीय मेघ समान अने अद्भुत पराक्रमवाळो घनरथ नामे राजा हतो. महादेवने गंगा अने गौरीनी जेम ते राजाने प्रीतिमती अने मनोरमा नामनी बे प्रियाओ हती. हवे वज्रायुधनो जीव ग्रैवेयकथी चवीने प्रीतिमती देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करतो वीजळीवाळो, गर्जना करतो अने अमृतवृष्टिने वरसावतो मेघ जोयो. तरत ज जागृत थइने तेणीए ते स्वप्ननुं फळ राजाने पूछ्युं, त्यारे तेणे कह्युं के—" हे प्रिया ! मेघनी जेम पृथ्वीना संतापने दूर करनार एवो पुत्र तारे थशे. " त्यारपछी सहस्रायुधनो जीव पण ग्रैवेयकथी चवीने मनोरमा देवीना उदरमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां मनोहर रथ जोइ पतिने तेनुं फळ पूछ्युं, त्यारे राजाए कह्युं के—" हे प्रिया ! तारो पुत्र महारथी थशे. " पछी समय पूर्ण थये ते बन्ने राणीओए अद्भुत पुत्रोने जन्म आप्यो. ते पुत्रो जाणे के क्रीडा करवाना मिषथी मनुष्यभवमां आवेला इंद्र अने उपेंद्र होय तेवा शोभता हता. पछी राणी-

श्रोना स्वप्नने अनुसारे राजाए पहेलानु मेघरथ अने बीजानु दृढरथ नाम पाड्यु. ते बन्ने पुत्रो मेरुनी जेम ते नृपकुळने शोभावता हता अने बाळ कल्पवृक्षनी जेम वृद्धि पामता हता अनुक्रमे रत्नवडे सुवर्णनी जेम अने वसंत ऋतुवडे उद्याननी जेम यौवनवडे ते बन्नेनु रूप अत्यंत शोभा पाम्यु

आ अवसरे सुमंदिर नामना नगरमां जितशत्रु नामना राजाने जाणे त्रण भुवननी लक्ष्मी हरण करीने आणी होय एवी त्रण पुत्रीओ हती तेमां पहेलीनु नाम प्रियमित्रा, बीजीनु मनोरमा अने त्रीजीनु नाम सुमति हतु तेमांथी पहेली बे पुत्रीओ राजाए मेघरथने आपी अने एक नानी पुत्री दृढरथ कुमारने आपी देवीओनी साथे देवोनी जेम ते प्रियाओ साथे विषयसुख भोगवता ते बन्ने कुमारोए घणो काळ व्यतीत कर्यो

एकदा लोकांतिक देवोए आवी श्रीघनरथ राजाने बोध कर्यो, एटले तेणे वार्षिक दान आप्यु अने बन्ने कुमारोने अनुक्रमे राज्य तथा युवराज पदवी आपी पछी चारित्र ग्रहण करी केवळज्ञान पामी भव्य जीवोने प्रतिबोध करता श्रीघनरथ तीर्थंकर पृथ्वीपर विचरवा लाग्या

नमता एवा राजाओना मस्तकपरथी पडता पुष्पोवडे जेना चरणकमळ पूजाता हता, एवा मेघरथ राजा स्वर्गने इंद्रनी जेम पृथ्वीनु शासन करवा लाग्या एकदा ते राजा पौषधशाळामां पौषध ग्रहण करीने रहेला हता, तेवामां कोइएक पारापत (पारेवु) भयथी व्याकुळ थइ राजाना उत्संगमां आवीने पड्यु ते पक्षीए मनुष्यनी भाषा बोली राजानु शरण

माग्युं. त्यारे राजाए तेने कह्युं के—" तुं कोइना तरफथी भय पामीश नहीं. हुं तारुं रक्षण करीश. " ते सांभळी ते पारापत तेना उत्संगमां सुखे रह्युं. तेटलामां तेनी पाछळ सर्पनी पाछळ गरुडनी जेम एक श्येन पक्षी आव्युं, ते मनुष्यभाषाए बोल्युं के—" हे देव! आ मारुं भोजन छे, तेने तमे मूकी द्यो. " राजाए तेने जवाब आप्यो के—" हे श्येन! आ मारे आशरे आवेलाने हुं आपीश नहीं. कारणके क्षत्रियो प्राणांते पण शरणे आवेलाने मूकता नथी. वळी विवेकी एवा तारे पण आ प्रमाणे परना प्राणनो नाश करी पोताना प्राणनी तृप्ति करवी ए योग्य नथी. जेम तने तारुं जीवित इष्ट छे, तेम बीजाने पण पोतानुं जीवित इष्ट ज होय छे, तेथी करीने जेम तुं तारा आत्मानी रक्षा करे छे तेम अन्यना आत्मानी पण रक्षा कर. तेम ज आ पक्षीने खावाथी तने मात्र क्षणिक तृप्ति ज थशे अने आ पक्षीना तो आखा जीवितनो नाश थशे. बीजो आहार करवाथी पण क्षुधानी व्यथानो नाश थइ शके छे. परंतु प्राणीवध करवाथी जे नरकनी व्यथा प्राप्त थाय छे, तेनो चिरकाळे पण नाश थतो नथी. तेथी करीने हे बुद्धिमान्! प्राणीहिंसानो त्याग करी धर्मनो आश्रय कर, के जेथी आलोक अने परलोकमां उत्तम सुख प्राप्त थाय. " ते सांभळी श्येन पक्षीए मनुष्य भाषाथी राजाने कह्युं के—" हे स्वामी! आ कपोत माराथी भय पामीने तमारे शरणे आव्यो छे, तो क्षुधानी पीडाथी पीडित थयेलो हुं कोने शरणे जाउं? ते कहो. तेथी जेम तमे तेनुं रक्षण करो छो तेम मारुं पण रक्षण करो. प्राणीओने धर्म अधर्मनो विचार सुखी अवस्थामां ज थइ शके छे. बाकी भूख्यो प्राणी शुं पाप न करे? ए तमे शुं सांभळ्युं नथी? वळी हे राजा! बीजा भोजनथी मने तृप्ति थती नथी, केमके हुं निरंतर तत्काळ

हवेला प्राणीना मांसना स्वादमां ज आसक्त छु, तेथी करीने हे देव! क्षुधानी पीडाथी मरता एवा मने आ पत्नी आपी दो, कारण के महात्मा पुरुषो सर्व प्राणीओ उपर कृपालु होय छे " ते सांभळी राजाए तेने कह्यु के—" हे श्येन ! आ कपो तना शरीरमां जेटलु मांस छे, तेटलु मांस हु तने मारा शरीरमांथी कापी आपु, तु फोगट क्षुधाथी मर नहीं " ते सांभळी श्येन पक्षीए तेम करवानी हा कही त्यारे राजाए त्राजवा मगावी एक छाबडामां पारापतने मूक्यु अने बीजा छाबडामां पोतानु मांस कापी कापीने नांखवा मांडयु जेम जेम राजाए पोतानु मांस कापी कापीने नांख्यु, तेम तेम ते पारापतनु वजन वधवा लाग्यु तेथी छेवटे शुभमतिवाळा राजाए पोतानु आखु शरीर ते छाबडामां मूक्यु, ते वखते हाहाकार करता मुख्य मत्रीओ गद्गद् स्वरे राजाने कहेवा लाग्या के—" हे पृथ्वीपति ! आ शरीरवडे आखी पृथ्वीनु रक्षण करवानु छे, तो ते शरीरने एक पक्षीना रक्षणने माटे केम फोगट तजो छो ? वळी आ एक पक्षीनो भार आटलो वधो कोइ रीते संभवतो नथी, परतु आ कोइ मायावी सुर के असुर होवो जोइए " आ प्रमाणे ते मत्रीओ बोलता हता, तेटलामां तरत ज त्यां दिव्य अलकारवडे शोभतो कोइ देव प्रगट थइ हाथ जोडी राजा प्रत्ये बोल्यो के—" हे राजा ! ईशान इद्रे पोतानी सभामां तमारी स्तुति करी के—" अहो ! मेघरथ राजाने देवताओ पण धर्मथी चलायमान करवा समर्थ नथी " आवी प्रशसा सांभळी माराथी ते सहन थइ नहीं तेथी आ बे पत्नीओ चिरकाळथी युद्ध करता हता तेमना शरीरनो आश्रय करीने में आ तमारी परीक्षा करी छे तो हे महासत्त्ववाळा राजा ! तमने धन्य छे के जेथी तमे परप्राणीनी रक्षा करवामां तमारा प्रिय प्राणोने पण तृण समान गण्या छो " एम कही राजानु शरीर साजु बनावी ते देव स्वर्ग गयो ते सर्व जोइ

मंत्री विगेरे सर्व अत्यंत विस्मय पाम्या, अने तेमोए राजाने पूछ्युं के—" हे स्वामी ! आ देव कोण हतो ? अने आ पक्षीओने पहेलेथी शुं वेर हतुं ? ते कहो. " त्यारे अवधिज्ञानथी जाणीने राजाए कह्युं के—

" आ भवथी पहेलां पांचमे भवे हुं अपराजित नामनो बळराम हतो अने आ दृढरथ अनंतवीर्य नामनो वासुदेव हतो. ते वखते अमे दमितारि नामना प्रतिवासुदेवने मार्यो हतो. ते संसारमां भ्रमण करी कांइक अज्ञानकष्टने लीधे आ देव थयो छे. तथा जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रमां पद्मिनीखंड नामना नगरमां सागरदत्त नामना इभ्यने धन अने नंदन नामना बे पुत्रो हता. ते बन्ने भाइओ एकदा वेपारने माटे नागपुर नामना पुरमां गया. त्यां जेम बे गीध पक्षीओ मांसना पिंडने जुए तेम तेमणे एक रत्न जोयुं. ते रत्न लेवानी इच्छाथी ते बन्ने भाइओ छतां परस्पर युद्ध करवा लाग्या. कारण के एक पदार्थनो जे बेने अभिलाप ते ज वेरनुं कारण छे. ते बन्ने भाइओ नदीने कांठे युद्ध करता करता नदीमां पड्या अने मरीने महा अटवीमां तेओ आ पारापत अने श्येन थया छे. पूर्वभवना वेरने लीधे आ भवमां पण तेओ युद्ध करता हता. तेमने जोइ पेला देवे तेमनो आश्रय करी मारी परीक्षा करी छे. "

आ प्रमाणे राजानुं वचन सांभळी ते पक्षीओ पण तत्काळ जातिस्मरण पामी पोतानी भाषाथी बोल्या के—" हे राजा ! पूर्वभवमां रत्ननी जेम अमारो मनुष्य भव पण अमे लोभथी हारी गया छीए, तो हवे अमारी योग्यता प्रमाणे अमने धर्म कहीने अमारो अनुग्रह करो. " राजाए अवधिज्ञानवडे तेमनो अभिप्राय जाणी तेमने अनशन ग्रहण करवानुं कह्युं. ते तेमणे भावथी अंगीकार कर्युं, अने अनुक्रमे मरीने ते बन्ने भवनपति देव थया.

एकदा मेघरथ राजा अट्ठम तप करी प्रतिमाए रह्या हता. ते वखते 'तमने नमस्कार हो' एम बोली ईशानेंद्रे मेघरथने हर्षथी नमस्कार कर्या, ते जोइ इंद्रनी राणीओए तेने पूछ्युं के—"हे स्वामी! तमे ज विश्वने वंद्य छो, छतां तमे कोने नमस्कार कर्या?" त्यारे इंद्रे कह्युं के—"पुंडरीकिणी नगरीमां मेघरथ नामना राजा प्रतिमाए रहेला छे, ते जिनेश्वर थवाना छे तेमने जोइ में भक्तिथी नमस्कार कर्या छे मेरुनी जेम निश्चळ अने ध्यानमां रहेला महा सत्त्ववाळा तेने चलाववा माटे इंद्रोसहित देवताओ अने असुरो पण शक्तिमान नथी" आ प्रमाणे ते राजानी प्रशंसा सुरूपा अने अतिरूपा नामनी तेनी बे पट्टराणीओए सहन करी नहीं तेथी ते देवीओ राजाने क्षोभ पमाडवा माटे त्यां आवी पछी तेमणे कामरूपी वृक्षोनी नीक समान घणी स्त्रीओ विकुर्वीने ते राजाने अनुकूळ उपसर्गो करवा आरभ्या. तेमां कोइ चतुर स्त्री कटाक्षरूपी बाणोवडे तेने वींधवा लागी, कोइ स्त्री लज्जानो त्याग करी भृकुटिना विलास करवा लागी. पुष्ट-मोटा स्तनवाळी कोइ स्त्री पोताना केशपाश बांधवाना मिषथी हाथ उंचा करी सुवर्णना कुंभ जेवा पोताना कुचकुंभ देखाडवा लागी, श्रेष्ठ कटिभागवाळी कोइ स्त्री त्रिवळीए करीने मनोहर एवा उदरने देखाडवा लागी, कोइ स्त्री वापीना जेवी उंडी पोतानी नाभिने वारंवार प्रगट करवा लागी, कोइक स्त्री "आ मारा नितंब उपर नखक्षत थयेला होवाथी त्यां कटीमेखला (कंदोरो) घसावाथी बहु बाधा थाय छे" एम माया-कपटथी बोलती पोताना नितंबने प्रगट करवा लागी, कोइ स्त्री "हे सखी! मने अहीं ममरी करडी गइ" एवो मिष करी पहेरेलुं वस्त्र उंचुं करी साथळनुं मूळ देखाडवा लागी, कोइ स्त्री शृंगार रसरूपी वृक्षना पुष्पो जेवुं उज्ज्वळ स्मित करवा

११

लागी, कोइ स्त्री विकाररूपी अंकुराने मेघ समान गीतो गावा लागी, कोइ स्त्री पतिना संयोग अने वियोगनी कथा कहेवा लागी, कोइ स्त्री पोतानी अनुभवेली कामक्रीडानुं वर्णन करवा लागी अने केटलीक स्त्रीओ तेनी पासे जइ कहेवा लागी के—" हे स्वामी ! अमने प्रिय वचन कहो, मनोहर दृष्टिथी अमारी सामुं जुओ अने अमारा कंठमां तमारा हाथ स्थापन करो." आ प्रमाणे ते स्त्रीओए आखी रात्रि सुधी राजाने क्षोभ पमाडवा माटे घणी कुचेष्टाओ करी, परतुं तेथी तो उलटुं तेनुं ध्यान पाणीथी वाडवाग्निनी जेम अधिक देदीप्यमान थयुं. मेरु पर्वतने विषे वायुनी जेम ते राजाने विषे विकुर्वेली ते सर्व स्त्रीओ निष्फळ थइ. तेथी ते रूपोने संहरी ते बन्ने देवीओ राजाने नमस्कार करी स्वर्गे गइ.

आ प्रमाणे रात्रिना वृत्तांतथी राजाने संसारपरथी अधिक वैराग्य थयो. पछी अनुपम क्षमावाळा ते राजा प्रतिमाने पारी पोताने घेर गया.

त्यां एकदा घनरथ तीर्थंकर समवसर्या. तमने वांदवा माटे मेघरथ राजा पोताना नाना भाइ सहित उद्यानमां गया. त्यां प्रभुना मुखथी वैराग्यनी माता एटले वैराग्यने उत्पन्न करनारी देशना सांभळी ते राजा पोताने घेर आव्या, अने तेणे नाना भाइने कह्युं के—" हे बंधु ! मारे दीक्षा ग्रहण करवी छे, तेथी तुं आ राज्य ग्रहण कर." त्यारे ते बोल्यो के—" हे ज्येष्ठ बंधु ! मने संसारपर जरा पण प्रीति नथी, तेथी तमारी साथेज हुं पण दीक्षा लेवानो छुं." ते सांभळी राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो. पछी नाना भाइ दृढरथ सहित, सात सो पोताना पुत्रो सहित अने चार हजार राजाओ सहित ते मेघरथे तीर्थंकर पासे जइ प्रव्रज्या अंगीकार करी. पछी अग्यार अंगनो अभ्यास करी मेघरथ राजर्षि पृथ्वीपर

विचरवा लाग्या आर्जववाए करीने युक्त ते राजर्षिए अरिहंत अने सिद्धनी सेवा आदि वीश स्थानकोना आराधनवडे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं साधुओमां सिंह समान ते राजर्षिए सिंहनिक्रीडित नामनो तप कर्यो, एक लाख पूर्व सुधी उग्र चारित्रनु पालन कर्युं, पछी अंबरतिलक नामना गिरिपर आरोहण करी अनशन ग्रहण करी आयुष्यने क्षये सर्वार्थसिद्ध नामना विमानमां ते देव थया तेना भाइ दृढरथ मुनि पण केटलोक काळ गया पछी अनशन करी तेज विमानमां देव थया.

आ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रमां मोटी समृद्धिवडे इन्द्रनी नगरी जेवु श्रीहस्तिनापुर नामनु पुर छे अलका नगरीमां कुबेरनी जेम ते नगरमां विश्वसेन नामे राजा हता अग्निने स्वाहानी जेम ते राजाने अचिरा नामनी प्रिया हती ते रूप वडे इन्द्राणीने पण जीतनारी अने शीळरूपी अलंकारने धारण करनारी हती एकदा मेघरथनो जीव सर्वार्थसिद्धथी चवीने कमळने विषे हंसनी जेम अचिरादेवीनी कुक्षिमां अवतर्यो ते वखते सुखे सुतेली ते देवीए श्रेष्ठ आकारने धारण करनारा चौद शुभ स्वप्नो पोताना मुखमां प्रवेश करता जोयां तत्काळ जागृत थइ देवीए राजाने ते स्वप्नोनु फळ पूछ्यु, त्यारे राजाए कह्यु के—" हे प्रिया ! आ स्वप्नोथी तने तीर्थंकर के चक्रवर्ती पुत्र थशे " पछी प्रभु गर्भमां आव्या पहेलां अनेक शांतिना कर्मवडे पण जे रोगो तथा मरकी विगेरे उपद्रवो शांत थया नहोता ते प्रभुना प्रभावथी आखा कुरुदेशमां शांत थइ गया अनुक्रमे गर्भनो समय पूर्ण थयो त्यारे मध्यरात्रि समये अचिरादेवीए सुखे करीने सुवर्ण जेवा वर्णवाळा अने मृगना लांछनवाळा पुत्रने जन्म आप्यो ते वखते त्रणे भुवनमां उद्योत थयो अने नारकीओने पण क्षणवार सुख थयुं 'सर्व काळे सर्व तीर्थंकरोना सर्व कल्याणकोमां आ प्रमाणे थाय ज छे '

ते वखते आसन कंपवाथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी छप्पन दिक्कुमारीओए शीघ्रपणे त्यां आवी सूतिकर्मो कर्या. पछी आसन कंपवावडे अवधिज्ञानना उपयोगथी अरिहंतनो जन्म जाणी शक्र इंद्र परिवार सहित स्वामी पासे आव्या. जिनेश्वरने नमस्कार करी, जिनेश्वरनी माताने पोतानुं नाम जणावी, तेणीने अवस्वापिनी निद्रा आपी, तेणीनी पासे प्रभुनुं विकुर्वेलुं बीजुं प्रतिबिंब स्थापन करी इंद्रे पोतानां पांच रूप कर्यां. एक रूपवडे जिनेश्वरने पोताना हाथमां लइ, बे रूपवडे चामरने धारण करी, एक रूपवडे प्रभुपर छत्र राखी, तथा एक रूपवडे प्रभुनी आगळ वज्रने उछाळी ते इंद्र क्षणवारमां मेरुपर्वतना शिखरपर रहेली अतिपांडुकवला नामनी शिलापर आव्या. त्यां शक्र इंद्र पोताना उत्संगमां प्रभुने राखी सिंहासनपर बेठा. ते वखते बीजा त्रेसठ इंद्रो पण आसन कंपवाथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी पोतपोताना परिवार सहित आव्या. तेमांथी प्रथम अच्युतेंद्रे तीर्थनां जळवडे तीर्थंकरने अभिषेक कर्यो, अने त्यारपछी अनुक्रमे बीजा सर्व इंद्रोए अभिषेक कर्यो. त्यारपछी ईशानेंद्रना उत्संगमां प्रभुने स्थापन करी शक्रइंद्रे प्रभुनी चारे बाजुमां चार वृषभो विकुर्व्या, तेमना शींगडामांथी नीकळेला जळवडे तेमणे प्रभुनुं स्नात्र कर्युं, अने पछी चंदन, पुष्प अने अलंकारवडे प्रभुनी पूजा करी तेमनी स्तुति करी. त्यारपछी जिनेश्वरने प्रथमनी जेम लइ शक्रइंद्रे माताना देवीनी पासे जइ मूक्या, अने अवस्वापिनी निद्रा तथा प्रभुनु प्रतिबिंब हरी लीधुं. पछी प्रभुना विनोदने माटे तेमनी उपर उंचे श्रीदामगंडक अने ओशीका उपर रेशमी वस्त्र अने बे कुंडळ मूक्या. पछी " जिनेश्वर अने जिनेश्वरनी मातानुं कोइ पण अशुभ चिंतवन करशे, तेनुं मस्तक आर्जकनी मंजरीनी जेम सात प्रकारे भेदाइ जशे. " ए प्रमाणे देवताओ पासे आघोषणा करावी तथा कुबेर पासे सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि करावी शक्रइंद्र

नंदीश्वर द्वीप उपर गया त्यां अरिहंतोना शाश्वत चैत्योमां शक्रइंद्र तथा बीजा पण सर्व इंद्रो अष्टाह्निका महोत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया

अहीं हस्तिनापुरमां अचिरादेवी जाग्या अने पुत्रने जोयो त्यारे तेनी दासीओए विश्वसेन राजा पासे जइ पुत्रजन्मनी वधामणी आपी ते सांभळी राजाए तेमने पुष्कळ प्रीतिदान आपी मोटो जन्मोत्सव कर्यो पछी " आ पुत्र गर्भमां हतो त्यारे रोगादिक उपद्रवोनी शांति थइ हती " एम धारी राजाए तेनु शांति नाम पाडयु पछी शक्रइंद्रे अंगुठामां संक्रमावेला अमृतनु पान करता अनुपम तेज अने रूपवाळा ते जगत्पति वृद्धि पामवा लाग्या मातापिता ते पुत्रने जोवाथी, आलिंगन करवाथी अने मस्तकपर सुंघवाथी जाणे ब्रह्मानंदमां मग्न थया होय तेवु सुख अनुभववा लाग्या देवोने पण प्रिय लागे तेवा ते कुमारना मन्मन आलाप सांभळी जाणे अमृतपान करता होय तेम मातापिता अत्यंत आनंद पामवा लाग्या अनुक्रमे स्वामी मनोहर पगलां भरवावडे जाणे जंगम कल्पवृक्ष होय तेम राजमंदिरना आंगणाने शोभाववा लाग्या बाळकनां रूप धारण करीने आवेला देवोनी साथे प्रभु मनोहर बाळक्रीडा करता हता ' बाल्यावस्थामां एवी क्रीडा शोभे ज छे. '

अनुक्रमे पोताना शरीरनो सबंध करवाथी यौवनने शोभावता प्रभु चाळीश धनुष उंचा थया सता समग्र विश्वने आनंद आपवा लाग्या त्यारपछी मातापितानी आज्ञाने लीधे जिनेश्वर यशोमती आदि राजकन्याओने परण्या ते कन्याओ तेवा पतिने पामी पोताना आत्माने धन्य मानवा लागी प्रभु पचीश हजार वर्षना थया त्यारे राजाए प्रभुने राज्य आपी पोते

आत्मकार्य साध्युं. त्यारपछी ते शांतिनाथ नामना राजा नीतिथी राज्यनुं पालन करता सता स्त्रीओ साथे उत्तम भोग भोगववा लाग्या. ' भोगफळ आपनारुं निकाचित कर्म एज रीते क्षीण थाय छे. '

एकदा दृढरथनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमानथी चवीने यशोमती राणीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते यशोमतीए स्वप्नमां चक्र जोयुं. ते स्वप्ननुं फळ पूछवाथी जगत्पतिए कह्युं के—" हे देवी ! तने उत्तम पुत्र थशे. " त्यारपछी समय पूर्ण थये राणीए शुभ लक्षणवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. स्वामीए स्वप्नने अनुसारे तेनुं चक्रायुध नाम पाडयुं. ते कुमार अनुक्रमे वृद्धि पामी युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे स्वयंवर तरिके आवेली घणी राजपुत्रीओने ते परण्यो.

श्री शांतिनाथ राजाने राज्य करतां पचीश हजार वर्ष व्यतीत थया त्यारे एकदा आयुधशाळामां चक्ररत्न प्रगट थयुं. ते वखते चक्रनी पूजा करी पछी ते चक्रने मार्गे अनुसरी प्रभुए लीला मात्रमां ज छखंड भरत क्षेत्र साधी लीधुं. बत्रीश हजार राजाओथी जेमना चरणकमळ सेवातां हता एवा श्रीशांतिनाथ चक्री शत्रुओनी शांति करी हस्तिनापुरमां आव्या. पछी देवोए अने सर्व राजाओए मळीने बार वर्ष सुधी तेमने चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो. पछी अंतःपुरनी स्त्रीओनी जेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगवता प्रभुए पचीस हजार वर्ष व्यतीत कर्यां. ते वखते लोकांतिक देवोए आवी प्रभुने कह्युं के—" हे स्वामी ! धर्मतीर्थ प्रवर्तावो. " त्यारपछी प्रभुए वार्षिक दान दीधुं अने राज्यने विषे चक्रायुद्धने स्थापन करी सर्वार्थ नामनी शिबीकामां बेसी सुरेंद्रो, असुरेंद्रो अने नरेंद्रोए जेमनो दीक्षा महोत्सव कर्यो छे एवा प्रभुए सहस्राम्रवन नामना वनमां आवी शिबिकाथी उतरी ईशान दिशाए रही वस्त्राभूषणनो त्याग करी हजार राजाओ साथे दीक्षा अंगीकार

करी तेज वखते प्रभुने मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न थयुं पछी वायुनी जेम अप्रतिबंधपणे प्रभु पृथ्वीपर विचरवा लाग्या

अनुक्रमे एक वर्षे फरीथी प्रभु तेज सहस्राम्रवनमां पधार्या त्यां शुक्लध्यानना आश्रयथी प्रभुने केवळज्ञान प्राप्त थयु ते वखते आसननो कंप थवाथी प्रभुनु केवळज्ञान जाणी सर्व सुरेंद्रो तथा असुरेंद्रोए पोतपोताना परिवार सहित आवी मनोहर त्रण प्राकारवाळु समवसरण रच्युं तेमां पूर्वद्वारे प्रवेश करी पूर्वाभिमुखे सिंहासनपर प्रभु विराज्या ते वखते व्यंतरोए प्रभुना ज माहात्म्यथी बीजी त्रण दिशाए प्रभुनां त्रण रूप विकुर्यां उद्यानपाळोए चक्रायुध राजा पासे जई प्रभुना केवळज्ञाननी वधामणी आपी तेओने पुष्कळ प्रीतिदान आपी चक्रायुध राजा अत्यंत उत्सुकताथी प्रभु पासे सर्व परिवार सहित आव्या त्यां विधिपूर्वक प्रभुने वांदी तेणे एक चित्ते स्वामीनी मधुर देशना सांभळी देशनाने अंते प्रभुने नमस्कार करी चक्रायुध राजाए कह्यु के–" हे स्वामी ! करुणारूपी अमृतना सागर समान आपना दर्शन मने आजे थयां ते मारु अहो भाग्य छे आ छळनी गवेषणा करनार संसाररूपी राक्षसथी हु अत्यंत भय पाम्यो छु तेथी मने दीक्षारूपी रक्षा आपीने मारापर अनुग्रह करो " आ प्रमाणे तेणे विज्ञप्ति करी त्यारे प्रभुए तेने अनुमति आपी, एटले राजाए पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी पांत्रीश राजाओ सहित जिनेश्वर पासे आवीने दीक्षा अंगीकार करी ते छत्रीश मुनिओने श्री शांतिनाथे गणधरो कर्या तेओए त्रिपदीने अनुसारे द्वादशांगी रची ते, वखते बीजा पण घणा जनोए दीक्षा ग्रहण करी अने केटलाएके श्राद्धधर्म अंगीकार कर्यो. ए प्रमाणे जिनेश्वरे चार प्रकारना तीर्थनी स्थापना करी. त्यार पछी आकाशमां

१ समवायांग सूत्रमां श्री शांतिनाथना नवु गणधरो कह्या छे अने आवश्यक आदि घणा ग्रंथोमां छत्रीश कहेला छे सत्य वात ज्ञानीगम्य

सूर्यनी जेम कुमत-मिथ्यात्वरूपी अंधकारनो नाश करता अने भव्य प्राणीओरूपी कमळोने विकस्वर करता स्वामी चिरकाळ सुधी पृथ्वीपर विचर्या.

श्री शांतिनाथ स्वामीने बासठ हजार साधुओ, एकसठ हजार अने छ सो साध्वीओ, बे लाख ने नेवु हजार श्रावको तथा त्रण लाख ने त्राणुं हजार श्राविकाओ, एटलो गुणना सागर समान चतुर्विध संघनो परिवार थयो, ते चारे दिशामां चार प्रकारना धर्मनी प्रभावना करनार हतो. दीक्षाना दिवसथी पचीश हजार वर्ष गया त्यारे भगवान विहारना क्रमे संमेतशिखरपर पधार्या. त्यां भगवाने नव सो साधुओ सहित अनशन ग्रहण कर्युं, अने एक मासे शांतिनाथ स्वामी सिद्धिपदने पाम्या. पचीश हजार वर्ष कुमारपणामां, पचीश हजार मांडलिकपणामां, पचीश हजार चक्रवर्तीपणामां अने पचीश हजार वर्ष चारित्रमां ए रीते परिपूर्ण एक लाख वर्षनुं प्रभुनुं आयुष्य हतुं. त्रण जगतना दुःखने शांत करनार श्री शांतिनाथना निर्वाणनो महिमा सुरेंद्रोए अने असुरेंद्रोए आवीने कर्यो. अनुक्रमे केवळज्ञान पामेला श्री चक्रायुद्ध गणधर पण सिद्धिवधूने वर्या.

इति श्रीशांतिनाथ चरित्र.

इक्खागरायवसभो, कुंथू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्ती भयवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(इक्खागरायवसभो) इक्ष्वाकु वंशना राजाओमां वृषभ समान (कुंथू) कुंथु (नाम) नामना (नराहिवो) चक्रवर्ती

राजा थया, ते (विख्यातकीर्ति) विख्यात छे कीर्ति जेनी एवा (भगवान) भगवान एटले तीर्थंकर थइने (अनुत्तर गई) अनुत्तर गतिने एटले मोक्षने (पत्तो) पाम्या ३९

श्री कुंथुनाथनु संक्षिप्त चरित्र

आ जंबूद्वीपने विषे पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां आवर्त नामना विजयमां खड्गि नामनी नगरी छे तेमां सिंहावह नामे राजा हतो. तेणे एकदा वैराग्य पामी श्रीसंवराचार्यनी पासे दीक्षा ग्रहण करी निनसेवादिक वीश स्थानकोनी सेवाथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. चिरकाळ सुधी पवित्र चारित्रनुं अतिचार रहित पालन करी अंते अनशन ग्रहण करी आयुष्यने छेडे काळधर्म पामीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव थया.

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामनु पुर छे तेमां सूर नामे राजा हतो अने तेने श्री नामनी प्रिया हती. एकदा ते सिंहावहनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमानमांथी चवी श्रीदेवीनी कुक्षिमां अवतर्यो ते वखते राणीए चौद शुभ स्वप्नो जोयां अनुक्रमे ते देवीए छागना चिह्नवाळा अने कांचन जेवा वर्णवाळा पुत्रने जन्म आप्यो ते वखते आसनकंपथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी छप्पन दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्युं पछी सर्व इंद्रोए आवी मेरुपर्वतपर लइ जइ प्रभुनो जन्माभिषेक कर्यो. पछी सूर राजाए पण पुत्रजन्मनो महोत्सव कर्यो पछी आ प्रभु गर्भमां आव्या त्यारे राजाना सर्व शत्रुओ कुंथु जेवा एटले अल्पसत्ववाळा थइ गया, तथा माताए स्वप्नमां कुंथ एटले पृथ्वीपर रहेला रत्नना स्तूपने (संचयने-ढगलाने) जोयो हतो, तेथी महोत्सवपूर्वक राजाए तेमनु कुंथु नाम पाड्युं अनुक्रमे सर्व उत्तम गुणोना आधाररूप ते भगवान वृद्धि

पामी युवावस्था पाम्या, त्यारे राजाए तेमने घणी राजकन्याओ परणावी, तथा तेमने राज्य सोंपी पोते दीक्षा ग्रहण करी.

कुंथुराजा राज्य करता हता तेवामां एकदा आयुधशाळामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. तेनी पूजा करी तेना मार्गने अनुसरी कुंथुराजाए भरतना छ खंड साध्या. पछी स्त्रीरत्ननी जेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मी तेणे चिरकाळ सुधी भोगवी. एकदा लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्तावचा बोध करेलो कुंथुस्वामीए पोताना पुत्रने राज्य सोंपी वार्षिक दान दइ देवेंद्रो अने नरेंद्रोना करेला उत्सव सहित शिबिकामां आरूढ थइ सहस्राम्रवनमां जइ हजार राजाओ सहित चारित्र ग्रहण कर्युं. ते ज वखते तेमने मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते प्रभु भारंड पक्षीनी जेम अप्रमत्तपणे पृथ्वीपर विहार करी सोळ वर्षे फरीथी ते ज सहस्राम्रवनमां आव्या. त्यां घातीकर्मनो क्षय थतां स्वामीने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. एटले सर्व इंद्रोए आवी समवसरण रच्युं. तेमां पूर्व सन्मुख सिंहासनपर बेसी पांत्रीश धनुषनी कायावाळा प्रभुए पांत्रीश गुणवाळी मधुर वाणीवडे देशना देवानो प्रारंभ कर्यो, ते देशना सांभळी घणा जनोए प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. तेमांथी श्रीजिनेश्वरे पांत्रीश गणधरो स्थापन कर्या. भगवानना परिवारमां साठ हजार मुनिओ, साठ हजार ने छसो साध्वीओ, एक लाख ने ओगणएंशी हजार श्रावको तथा त्रण लाख ने एकाशी हजार श्राविकाओ आ प्रमाणे प्रभुने चतुर्विध संघ थयो. कुंथुनाथ प्रभुनुं कुल आयुष्य पंचाणु हजार वर्षनुं हतुं. तेमां कुमार अवस्थामां, मांडलिकपणामां, चक्रवर्तीपणामां अने चारित्र पर्यायमां समान अंशे एटले के पोणी चोत्रीश हजार वर्षो दरेकमां पसार कर्यां. छेवट हजार मुनिओ सहित संमेतशैलपर जइ एक मासना अनशनवडे प्रभु मोक्षे गया. पछी देवेंद्रोए आवी प्रभुना निर्वाण कल्याणकनो महोत्सव कर्यो. इति कुंथुनाथ कथा.

सागरंत चइत्ता ण, भरहं नरवरीसरो । अरो वि अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४० ॥

अर्थ—(सागरंत) समुद्रपर्यंत मर्यादावाळा (भरहं) भरतक्षेत्रने (चइत्ता ण) तजीने (अरो वि) अर नामना (नरवरीसरो) नरेश्वर चक्रवर्ती (अरयं) रजना एटले कर्मना अभावने (पत्तो) पाम्या सता (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्ष गतिने (पत्तो) पाम्या छे ४०

अरनाथनी साक्षिप्त कथा

आ जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमा वत्स नामना विजयमां सुसीमा नामनी पुरी छे, तेमां नि सीम पराक्रमवाळा धनपति नामे राजा हतो तेणे एकदा संवर नामना मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी अरिहंत आदि वीश स्थानोना सेवनवडे तेमणे जिननामकर्म उपार्जन कर्युं. चिरकाळ सुधी तीव्र तप करी उत्तम व्रतनु पालन करी छेवट अनशनवडे काळ धर्म पामी नवमा ग्रैवेयकने विषे ते राजर्षि श्रेष्ठ देवपणे उत्पन्न थया

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमा हस्तिनापुर नगरने विषे जेनु दर्शन लोकोने आनंद आपनारु छे एवो सुदर्शन नामे राजा हतो तेने देवीना जेवी सुदर देवी नामनी राणी हती एकदा ते धनपतिनो जीव नवमा ग्रैवेयकथी चवीने देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो ते वखते देवीए चौद महास्वप्नो जोयां अनुक्रमे त्रण ज्ञानने धारण करनार गर्भ पण वृद्धि पामवा लाग्यो. समय पूर्ण थये नंदावर्तना चिन्हवाळा अने कांचनवर्णवाळा पुत्रने देवीए जन्म आप्यो ते जाणी दिक्कुमारीओए आवी तेनु सूतिकर्म कर्युं, अने देवेंद्रोए आवी मेरुपर्वतपर लई जइ जन्मोत्सव कर्यो. प्रभुना माताए स्वप्नमां रत्नना अर—चक्रना आरा

'दीठा हता, तेने अनुसरीने राजाए महोत्सवपूर्वक अर नाम पाड्युं. ते प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामी त्रीश धनुषनी कायावाळा थइ युवावस्था पाम्या. ते वखते राजाए तेमने घणी राजकन्याओ परणावी. एकदा पितानी आज्ञाथी प्रभुए राज्यधुरा अंगीकार करी. पछी चक्रादिक रत्नो उत्पन्न थवाथी तेमणे भरतना छे खंड साधी आसक्ति रहितपणे जेम योगी भोजन करे तेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगवी. एकदा लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्ताववा बोध कर्यो त्यारे ते प्रभुए संवत्सरी दान आप्युं. पछी पुत्रने विषे राज्यनुं स्थापन करी शिबिकामां आरूढ थइ सुर, असुर अने मनुष्योना परिवार सहित सहस्राम्रवनमां गया. ते वखते तेमने चोथुं मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त थयु. पछी सिंहनी जेम भय रहित पृथ्वीपर विचरता प्रभु अनुक्रमे त्रण वर्षे फरीथी ते ज सहस्राम्रवनमां आव्या. त्यां प्रभुने केवळज्ञानरूपी सूर्यनो उदय थयो, एटले सर्व देवेंद्रोए आवी समवसरण रच्युं. तेमां पूर्वाभिमुखे सिंहासनपर बेसी एक योजन विस्तारवाळा सर्व भाषाने अनुसरनारी वाणीवडे जिनेश्वरे धर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी अनेक मनुष्योए जिनेंद्र पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. तेमांथी स्वामीए तेत्रीश गणधरो स्थाप्या. अरनाथस्वामीने कुल पचास हजार साधुओ साठ हजार साध्वीओ, एक लाख चोराशी हजार श्रावको अने त्रण लाख ने बोंतेर हजार श्राविकाओनो परिवार थयो. आ प्रमाणे भव्य प्राणीओनो अनुग्रह करवा माटे पृथ्वीपर विचरता प्रभुने गुणरूपी मणिओनो निधानरूप चतुर्विध संघ थयो. कुमारपणां[1] आदिक चार स्थानोमां थइने समान भागे भगवंते कुल चोराशी हजार वर्षनुं आयुष्य व्यतीत कर्युं छेवटे पोतानो निर्वाण समय जाणी प्रभु संमेतशैल पर्वतपर जइ हजार साधुओ सहित अनशन करी

1 कुमारपणामा, मंडलिकपणामा, चक्रवर्तीपणामां ने चारित्रपर्यायमां—

एक मासे मोक्षपद पाम्या ते वखते सर्व देवेंद्रोए आवी प्रभुना निर्वाण कल्याणकनो महिमा कर्यो.

इति श्री अरनाथ कथा

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढीओ । चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमो तवं चरे ॥ ४१ ॥

अर्थ—(भारह वास) भरतक्षेत्रनो (चइत्ता) त्याग करी तथा (उत्तमे भोए) उत्तम भोगोने (चइत्ता) तजी (महापउमो) महापद्म नामना (महिड्ढीओ) मोटी ऋद्धिवाळा (चक्कवट्टी) चक्रवर्तीए पण (तव चरे) तपनु आचरण कर्यु-चरित्र ग्रहण कर्यु. ४१

महापद्म चक्रीनी संक्षिप्त कथा

आ जम्बूद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे श्रीहस्तिनापुर नामनु पुर छे तेमां इक्ष्वाकु वंशरूपी सरोवरमां पद्म समान पद्मोत्तर नामे राजा राज्य करतो हतो तेने ज्वाळा नामनी जिनधर्मने विषे रक्त राणी हती तेणीने सिंहना स्वप्नथी सूचित एवो विष्णु नामे एक पुत्र थयो, तथा बीजो लक्ष्मीना घररूप महापद्म नामे पुत्र थयो बीजो पुत्र गर्भमां आव्यो त्यारे तेनी माताए चौद महास्वप्नो जोयां हतां ते बन्ने कुमारो अनुक्रमे वृद्धि पामी कलाचार्य पासे समग्र कळानो समूह भणीने अनुपम शोभाना मित्र समान बीजी वयने एटले युवावस्थाने पाम्या. तेमां महापद्मकुमार वधारे पराक्रमी होवाथी पद्मोत्तर राजाए तेने युवराज पदवी आपी कारण के ब्राह्मणोमां जे बुद्धिमान होय अने क्षत्रियोमां जे अत्यंत

- ११

जीते एवो होय ते ज प्रशंसापात्र गणाय छे.

आ अवसरे उज्जयिनी नगरीमां श्रीवर्मा नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने वितंडावाद करवामां चतुर अने नास्तिक एवो नमुचि नामनो प्रधान हतो. एकदा ते नगरीनी बहार उद्यानमां मुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य सुव्रत नामना सूरिराज पधार्या तेमने नमवा माटे जता लोकोने जोइ प्रासाद उपर बेठेला राजाए 'आ लोको क्यां जाय छे?' एम नमुचिने पूछ्युं. त्यारे नमुचिए जवाब आप्यो के-" हे देव! आजे नगरीनी बहार उद्यानमां कोइ साधु आवेला छे, तेने नमवा माटे तेना भक्तजनो जाय छे." ते सांभळी राजाए कह्युं के-" त्यारे आपणे पण त्यां जइए." त्यारे नमुचि बोल्यो के-" जो जवुं होय तो चालो जइए. परंतु त्यां आपे तो मध्यस्थ ज रहेवुं. हुं ज ते सर्व पाखंडीओने वादमां जीती लइश." त्यारे राजा 'बहु सारुं' एम कही मंत्री सहित उद्यानमां गया. त्यां नमुचिए मुनिने कह्युं के-" जो तमे धर्मने जाणता हो तो कहो." ते सांभळी 'आ कोइ नीच माणस छे.' एम जाणी आचार्य महाराज मौन रह्या. त्यारे ते अधम मंत्री जिनशासननी निंदा करतो आचार्यने उद्देशीने बोल्यो के-" आ तो बळदीया जेवो छे, तेने धर्मनी शी खबर पडे?" ते सांभळी गुरु बोल्या के-" जो तारा मुखमां खरज आवती होय तो अमे कांइक बोलीए." आ प्रमाणे गुरु बोल्या त्यारे तेमना एक क्षुल्लक साधुए गुरुने कह्युं के-" हे पूज्य! आ धृष्टनी साथे आपने जाते बोलवुं योग्य नथी, तेने हुं ज जीतीश. ते पोतानो जे पक्ष बोलवो होय ते भले बोले." ते सांभळी नमुचि क्रोधथी बोल्यो के-" जेओ वेदधर्मथी बाह्य होय अने शौचधर्मथी रहित होय तेमने देशमां वसवा देवा ज योग्य नथी. ए मारो पक्ष छे." ते सांभळी क्षुल्लक साधुए कह्युं के-

“ अहो ! वेदमां पाणीनो घडो (पाणीयारु), चूलो, सावरणी, घटी अने खांडणीयो ए पांच शूना एटले प्राणीओनां वध स्थानो कहेलां छे तथा जेओ आ पांच शूनाने सेवनारा होय तेज वेदबाह्य कहेवाय छे, अमे तो ते पांचेथी रहित छीए, तो केम वेदबाह्य कहेवाइए ? तथा अत्यंत अशौच तो मैथुन कहेवाय छे, ते मैथुननी जे सेवा करे तेने अशुचि कहेलो छे, अने अमे तो ते मैथुनथी विरति पामेला छीए, तेथी अमे अशुचि केम कहेवाइए ? ” आ रीते ते मंत्रीने क्षुल्लके निरुत्तर कर्यो, तथी ते मंत्री साधुओ उपर मोटु वैर धारण करी राजा साहित घेर गयो पछी रात्रीए मुनिने हणवा माटे क्रोधथी अंध थयेलो ते नमुचि उद्यानमां गयो, त्यां जेटलामां ते दुष्ट नमुचि मुनिने हणवा जाय छे, तेटलामां मुनि उपर भक्तिवाळी देवीए तेने स्तंभित कर्यो प्रात काळे तेनी स्थितिमां तेने जोइ सर्वे नगरना जनो तथा राजा पण विस्मय पाम्या पछी सूरि पासेथी धर्मनु श्रवण करी ते सर्व उपशमने पाम्या. सर्व लोकोए नमुचिनी अत्यंत निंदा करी, तेथी ते बहुज लज्जा पाम्यो देवीए तेने मुक्त कर्यो एटले ते त्यांथी नीकळीने हस्तिनापुरमां गयो त्यां ते महापद्म युवराजने मळ्यो, अने पूर्वना पुण्यथी तेनो मंत्री थयो

अहीं हस्तिनापुरना राज्यना सीमाडामां दुर्गम एवा दुर्ग (किल्ला) नो आश्रय करीने रहेलो सिंहनी जेवा उत्कट पराक्रमवाळो सिंहबळ नामनो राजा हतो ते वारंवार पद्मोत्तर राजाना देशमां धाड पाडीने पोताना दुर्गमां पेसी जतो हतो तेथी तेने कोइ पकडी शकतो नहोतो एकदा क्रोध पामेला पद्मोत्तर राजाए नमुचिने पूछ्यु के—“ आ सिंहबळने पकडवानो कांइ पण उपाय तु जाणे छे ? ” त्यारे नमुचिए हा कही पछी महापद्मनी आज्ञाथी ते नमुचि शीघ्रपणे सैन्य

साथे त्यां जइ तेना दुर्गने भांगी तेने बांधीने लइ आव्यो. ते जोइ हर्ष पामेला महापद्मे नमुचिने कहुं के—" तारी इच्छामां आवे ते माग." नमुचिए कहुं-" हे स्वामी ! समय आवे हुं मागीश." आ प्रमाणे, तेना वचनने महापद्मे अंगीकार कर्युं. पछी महापद्मे चिरकाळ सुधी युवराज पदवीनुं पालन कर्युं.

एकदा महापद्मनी माता ज्वाळादेवीए जैनरथ कराव्यो. ते वखते तेनी सपत्नी लक्ष्मी के जे मिथ्यादृष्टि हती तेणे ब्रह्मरथ कराव्यो. पछी ते लक्ष्मीए राजाने कहुं के-" आ मारा ब्रह्मरथने नगरमां पहेलो भमाडो." ते जाणी ज्वाळादेवीए राजाने कहुं के " जो मारो जैनरथ नगरमां पहेलो नहीं भमे तो हुं अनशन करीश." ते सांभळी बन्ने राणीओने क्लेश न थाय एवा हेतुथी राजाए बन्नेनी रथयात्रानो निषेध कर्यो. तेथी ज्वाळादेवीने महा दुःख थयुं. ते जाणी महापद्मे अत्यंत आतुर थइ विचार्युं के-" मारी जेवो पुत्र छतां जेम कंजुस माणसनी लक्ष्मी पृथ्वीमां विलय पामे तेम मारी मातानी इच्छा मनमां ज लय पामी जाय, अने जे पुत्र शक्तिमान छतां मातानां शुभ मनोरथने पूर्ण न करे, ते सत्पुत्रपणानुं अभिमान शी रीते करी शके ? वळी पिताए पण मारी मातानुं कांइपण विशेष मान राख्युं नहीं. बीजी राणीओ समान ज गणी. तेथी मानी एवा मारे मान विना अहीं रहेवुं योग्य नथी." एम विचारी रात्रिए सर्व लोको सुता हता, त्यारे ते पोताना पुरमांथी नीकळी स्वेच्छाए पृथ्वीपर भ्रमण करतो एक अरण्यमां तापसोना आश्रममां गयो. त्यां तापसोए तेनो सारो सत्कार कर्यो, तेथी ते महापद्म पोताना घरनी जेम सुखे करीने त्यां ज रह्यो.

आ अवसरे चंपा नामनी नगरीमां जनमेजय नामे राजा हतो. तेने काळ नामना राजाए लडाइमां हराव्यो, तेथी

ते नाशी गयो त्यारे काळ राजाना सैनिकोए चपानगरी भांगी, ते वखते सर्वे लोको सर्व दिशाओमां नाशी गया अतःपुरनी स्त्रीओ पण कोइ रक्षक नहीं होवाथी आकुळ व्याकुळ थइ तेमां चपापतिनी राणी नागवती पोतानी पुत्री मदनावळीने साथे लइ नाशीने ते ज तापसना आश्रममां आवी के ज्यां महापद्म रहेलो हतो त्यां महापद्म अने मदनाने परस्पर दर्शन थता लज्जाने मद करनारो परस्पर राग-प्रेम थयो ते जाणी नागवतीए मदनावळीने कह्यु के—" हे पुत्री ! जे ते पुरुषने जोइ तेनापर तु राग केम करे छे ? तु चक्रवर्तीनी मुख्य स्त्री थवानी छे एवु ज्ञानीनु वचन शु तु भूली गइ के जेथी आवी रीते उत्सुक थाय छे ?" आ ज रीते कुलपतिए पण मदनावळीने कह्यु, तो पण ' आ बन्ने परस्पर रागी थवाथी काइक उपद्रव करशे ' एम धारी कुलपतिए पद्मने कह्यु के—" तु तारी इच्छा होय त्यां जा." ते सांभळी मनमां काइक दुःख पामी पद्म त्यांथी नीकळी गयो ' प्रियजननो वियोग मोटा पुरुषोने पण दुःखदायक होय छे.' पछी पद्मे विचार कर्यो के—" हु चक्रवर्ती थवानो छु, तेथी आ मारी ज स्त्री थशे, तो हु क्यारे आ भरतक्षेत्रने साधी तेने परणीश ? तथा अरिहतना चैत्योवडे समग्र पृथ्वीने भूषित करी मारी मातानो रथयात्रानो मनोरथ हु क्यारे पूर्ण करीश ? " आ प्रमाणे मनोरथरूपी रथपर आरूढ थयेलो ते राजपुत्र फरतो फरतो श्रीसिधुनदन नामना पुरना उपवनमां गयो ते वखते ते उद्यानमां उजाणी करवा माटे नगरना जनो आवेला हता तथा स्त्रीओ पण आवेली हती तेवामां ते पुरना महासेन नामना राजानो पट्टहस्ती आलान स्तभने उखेडी नगरमां तोफान करी ते उद्यानमां आव्यो अने जाणे रोगथी व्याकुळ थयो होय तेम ते नगरनी स्त्रीओ सन्मुख दोड्यो, तेने आवतो जोइ भयभीत थयेली स्त्रीओ नासवाने शक्तिमान नहीं होवाथी बूम पाडवा

लागी के—" जे कोइ अहीं वीर पुरुष होय ते अमारुं रक्षण करो." आ प्रमाणे तेमनी बूम सांभळी पद्मकुमार एकदम हाथी तरफ गयो अने तेणे तेनी तर्जना करी. त्यारे ते हाथी पण पाछो वळी कुमार तरफ दोड्यो. तेने आवतो अटकाववा माटे कुमारे तेनी सन्मुख पोतानुं उत्तरीय वस्त्र फेंक्युं. ते वस्त्रने मनुष्य धारी क्रोधांध थयेलो हाथी तेनापर दंतप्रहार करवा लाग्यो. तेवामां त्यां स्त्रिओनो कोळाहळ सांभळी पुरजनो एकठा थया हता तथा महासेन राजा पण सामंतो अने मंत्रीओ सहित आवी पहोंच्यो हतो. तेथी ते राजाए उंचा हाथ करी कुमारने कह्युं के–" हे वीर! यमराजनी जेवा क्रोध पामेला आ हाथीथी तुं शीघ्रपणे पाछो हठी जा." ते सांभळी पद्मकुमारे कह्युं के—" हे महाराजा! एक क्षणवार स्वस्थ चित्ते जुओ. हमणां ज आ मदोन्मत्त हाथीने स्त्रीनी जेम हुं वश करी लउं छुं." एम कही कुमारे एकज मुठीना प्रहारथी ते हाथीनुं मुख नमावी दीधुं, एटले ते हाथी वस्त्रने तजी कुमारने पकडवा उंचो थयो, तेटलामां वीजळीनी जेम फलंग मारी कुमार तेनापर चडी गयो, अने तेणे चिरकाळ सुधी हाथ, पगना अंगुठा अने वचनरूपी अंकुशवडे ते हाथीने अत्यंत खेद पमाड्यो. एक नाना हाथीना बच्चानी जेम ते मत्त हाथीने क्रीडा करावता ते कुमारने जोइ सर्व लोको तथा राजा पण अत्यंत आश्चर्य पाम्या. आ रीते ते हाथीने वश करी कुमारे तेना मावतने सोंप्यो, अने पोते पर्वतपरथी सिंहनी जेम ते हाथीपरथी नीचे उतर्यो. ते कुमारनुं रूप अने पराक्रम जोइ राजाए तेने श्रेष्ठ कुळनो पुत्र जाण्यो, तेथी तेने बहुमानपूर्वक पोताने त्यां लइ गयो. त्यां तेनुं मोटुं गौरव करी राजाए तेने पोतानी सो कन्याओ परणावी. ' आवो जमाइ अगण्य पुण्यवडे ज प्राप्त थाय छे.' पछी ते राजपुत्रीओ साथे स्वेच्छाए क्रीडा करता छतां पण ते कुमार मदनावळीने भूली गयो नहीं. 'कदाच भमरो

लविंगलताना पुष्पोनो भोग करे तो पण शुं ते कमलिनीने भूले ? न ज भूले '

एकदा पद्मकुमार रात्रिए सुखे सुतो हतो, तेवामां वेगवती नामनी विद्याधरीए तेनु हरण कर्युं ते जाग्यो त्यारे तेणे पोतानी मूठी दृढ रीते बांधीने " अरे ! तु कोण छे ? " एम तेणीने पूछ्यु त्यारे ते बोली के—" हे वीर ! तमारु में हरण कर्युं छे, पण तेनु कारण सांभळो, क्रोध न करो वैताढ्य पर्वत उपर सूरोदय नामनुं श्रेष्ठ नगर छे तेमां इन्द्रधनु नामे राजा राज्य करे छे तेने श्रीकाता नामनी प्रिया छे तेमने जयचन्द्रा नामनी मनोहर पुत्री छे ते पुत्रीने योग्य पति नहीं मळवाथी ते पुरुषद्वेषिणी थइ छे. ' जो स्त्रीओने पोताथी हीन पति मळे तो ते अत्यत दु खदायक छे ' पछी में भरतक्षेत्रना समग्र राजाओना स्वरूपो चीत्री चीत्रीने तेणीने बताव्या, परतु तेणीने कोइ पण रुच्यो नहीं एकदा में तमारु स्वरूप आळेखीने तेणीने बताव्यु, ते जोइ अयस्कांत मणि जेम लोढानु आकर्षण करे तेम तमारा स्वरुपे तेणीना मननु आकर्षण कर्युं पछी तमारी प्राप्ति दुर्लभ जाणीने तेणीए प्रतिज्ञा करी के—" जो आ पति मने नहीं मळे तो हु अग्निमां प्रवेश करीश " आवी तेणीनी प्रतिज्ञा में शीघ्रपणे तेणीना मातापिताने कही, तेथी आनद पामीने तेओए तमने लाववा मने मोकली ते कन्याने धीरज आपवा माटे में तेनी पासे प्रतिज्ञा करी के—"जो हु ते पद्मकुमारने न लावु तो अग्निमां प्रवेश करु " एम कहीने हु अहीं आवी अने ते पद्मिनीने आनद पमाडवा माटे प्रभाकर (सूर्य) समान तमने हु लइ जाउ छु तमे ज तेणीना अने मारा जीवितरूप छो, तेथी तमे प्रसन्न थाओ " आ प्रमाणे ते वेगवतीना मुखथी हकीकत सांभळी कुमारे तेनी इच्छा प्रमाणे करवानी अनुज्ञा आपी, एटले ते तेने सूरोदय पुरमां लइ गइ प्रातःकाळे सूर्यनी जेम ते

कुमारनी इंद्रधनु राजाए पूजा करी. त्यारपछी " जे विधाताए आने उत्पन्न कर्यो छे तेनी हुं अनृण (देवा रहित) केवी रीते थाउं ? " एम विचार करती जयचंद्राने ते कुमार विधिथी परण्यो.

आ अवसरे ते जयचंद्राना मामाना पुत्रो गंगाधर अने महीधर नामना विद्याधरो के जेओ महाविद्यावाळा हता अने जयचंद्राने परणवा इच्छता हता, तेओए पद्मनी साथे परणेली तेणीने सांभळी, तेथी तेओ क्रोध पामी युद्ध करवा तैयार थइ सर्व सैन्य सहित सूरोदय पुरमां आव्या. ते जाणी महा पराक्रमी पद्मकुमार पण विद्याधरना सैन्य सहित पुर बहार नीकळी तेमना सैन्य साथे युद्ध करवा लाग्यो. युद्ध करता पद्मकुमारनी सन्मुख कोइ पण रथी, अश्ववार, हस्तीस्वार के पदाति रही शक्यो नहीं. नैर्ऋत दिशाना वायुवडे वादळांनी जेम पद्मकुमारवडे चोतरफ पोतानुं सैन्य वीखरायेलुं जोइ ते बन्ने खेचरो नाशी गया. त्यारपछी पद्मकुमारने त्यां ज चक्र विगेरे रत्नो उत्पन्न थयां, तेने अनुसारे तेणे भरतना छ खंड लीला मात्रथी साधी लीधा. एक स्त्रीरत्न विना सर्व चक्रीनी संपदाने ते पाम्यो, तो पण मदनावळी विना ते सर्व संपत्तिने पद्मराजा निःसार मानवा लाग्यो.

एकदा पद्म चक्री क्रीडाथी फरता फरता ते तापसना आश्रममां आव्या. त्यां तापसोए फळ, पुष्पादिकवडे तेनो सारो सत्कार कर्यो. तेवामां जनमेजय राजा पण फरतो फरतो त्यां ज आवी चड्यो. तेणे हर्षथी पोतानी मदनावळी पुत्रीने पद्मचक्री साथे परणावी.

त्यारपछी संपूर्ण चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने धारण करता पद्मचक्रीए पोताना नगरमां जइ हर्षथी मातापिताने नमस्कार

कर्या तेन भावी समृद्धिवाळो जोइ तथा तेनु अद्भुत चरित्र सांभळी तेना मातापिता पण अत्यंत हर्ष पाम्या आ अवसरे श्री सुव्रतस्वामीना शिष्य सुव्रत नामना आचार्य विहारना क्रमथी ते नगरनी बहार आव्या तेमनु आगमन सांभळी पद्मोत्तर राजा परिवार सहित तेमनी पासे गया गुरुने वांदी तेमना मुखथी मोहरूपी हिमनो नाश करवामां सूर्यनी प्रभा जेवी धर्मदेशना सांभळी राजाए हाथ जोडी कह्यु के—" हे पूज्य ! हु मारा पुत्रने राज्यपर स्थापन करी व्रत–चारित्र ग्रहण करवा अहीं आवुं, त्यांसुधी आप अहीं ज रहेवा कृपा करवी " ते सांभळी सूरिए कह्युं के—" हे राजा शुभकार्यमां विलंब करवो नहीं " आ प्रमाणे गुरुनु वचन अंगीकार करी राजा नगरमां गया त्यां मंत्रीओ अने सामंतो विगेरे सर्व परिवारने तथा विष्णु नामना मोटा पुत्रने बोलावी पद्मोत्तर राजाए कह्यु के—" श्री सुव्रत नामना आचार्य पासेथी संसारनी असारता सांभळीने आटलो काळ में व्रत विना निष्फळ गुमाव्यो एम हु मानु छु तेथी आजे ज हु ते पूज्य गुरुनी पासे व्रतनो स्वीकार करीश, तेथी आ मारा राज्यपर महा पराक्रमी एवा विष्णुकुमारने हु स्थापन करु छु " ते सांभळी तत्काळ विष्णुकुमारे नम्रताथी कह्यु के—" हे पिता ! किंपाकना फळ जेवा आ भोगोवडे मारे सर्युं पापकर्मनो नाश करवा माटे हु पण तमारी साथे ज दीक्षा ग्रहण करीश " ते सांभळी राजाए पद्मने बोलावी आग्रहथी कह्यु के—" हे पुत्र ! आ राज्य तु ग्रहण कर " त्यारे पद्मे कह्यु के—" हे प्रभु ! आ प्रभाववाळा मारा मोटा भाइ विष्णुने राज्याभिषेक करो अने हु तो तेनुं युवराजपणु अंगीकार करीश." ते सांभळी राजाए कह्युं—" हे कुशळ पुत्र ! तेने तो प्रथम ज में राज्य लेवानु कह्युं, परंतु ते ग्रहण करवा इच्छतो नथी. पण मारी साथे दीक्षा लेवा इच्छे छे " ते सांभळी पद्म कांइ बोल्यो नहीं,

एटले राजाए तेनो राज्याभिषेक कर्यो. पछी मोटा उत्सवपूर्वक सुव्रत आचार्यनी पासे जइ पद्मोत्तर राजाए विष्णुकुमार सहित दीक्षा ग्रहण करी.

त्यारपछी पद्म चक्रीए माताना हर्षने माटे जैनरथने आखा नगरमां फेरव्यो. तेने सर्व पौरजनोए पूज्यो. ते चक्रीए पोताना वंशनी जेम जिनशासननी उन्नति करी, तेथी घणा भव्य प्राणीओए जैनधर्म अंगीकार कर्यो. जैनधर्मना परम भक्त चक्रीए दरेक गाम.नगर, पुर अने आकर विगेरे स्थळे उंचां करोडो जिनचैत्यो कराव्यां.

केटलेक काळे पद्मोत्तर राजर्षि केवळज्ञान पामी मोक्षे गया, अने विष्णुकुमार मुनि उग्र तपस्या करी अनेक लब्धिओ पाम्या, तेथी ते पोतानुं शरीर मेरुनी जेवुं (लाख योजन) उंचुं-मोटुं करवा शक्तिमान हता, गरुडनी जेम आकाशमां उडी शकता हता, देवनी जेम अनेक रूप विकुर्वी शकता हता अने कामदेवथी पण अधिक पोतानुं शरीर रूपवान करी शकता हता. इत्यादिक अनेक शक्तिओ (लब्धिओ) तेने प्राप्त थइ हती. परंतु योगीजनोने कारण विना लब्धिओनो उपयोग करता नथी.

एकदा सुव्रत नामना आचार्य महाराज पोताना मोटा परिवार सहित हस्तिनापुरमां वर्षाचोमासुं रहेवा आव्या. ते जाणी पूर्वनुं वेर लेवाना हेतुथी नमुचिए चक्रीने विनंति करी के—" हे स्वामी ! तमे मने पूर्वे जे वरदान आप्युं हतुं, ते आज हुं मागुं छुं." त्यारे राजाए तेने कह्युं के—" तारी जे इच्छा होय ते खुशीथी मागी ले." आ प्रमाणे राजाए कह्युं, त्यारे तेणे माग्युं के—" हे स्वामी ! मारे यज्ञ करवो छे, तेथी ते यज्ञ संपूर्ण थाय त्यांसुधी मने तमारुं राज्य आपो." ते सांभळी

सत्य प्रतिज्ञावाळा राजाए ते नमुचिने राज्यपर स्थापन कर्यो, अने पोते शुद्ध हृदयवाळा थइ व्रत पुरमां जइने रह्या

त्यारपछी वगलानी जेवा मायावी ते नमुचिए पुरनी बहार नइ यज्ञपाटकमां कपटथी यज्ञनी दीक्षा लीधी तेनो राज्याभिषेक थयेलो होवाथी ते निमित्ते समग्र प्रजा तेनी पासे आवी तथा जैन मुनिओ विना बीजा सर्वे लिंगीओ (धर्मगुरुओ) तेनी पासे वर्धापन करवा–हर्ष करवा आव्या ते वखते " सर्व लिंगीओ मारी पासे आव्या छे, परतु जैन साधुओ आव्या नथी " एम इर्ष्याथी बोलता नमुचिए ते जैन साधुओनो मोटो अपराध गण्यो पछी सुव्रताचार्यने बोलावी ते अनार्य नमुचिए कह्यु के—" जे वखते जे नवो राजा थाय ते वखते सर्व लिंगीओए तेनी पासे जवु जोइए, कारणके राजा तपोवननु पण रक्षण करे छे, तेथी तपस्वीओ राजा पास जाय छ आवी दुनियानी स्थिति छे छतां तमे तो गर्विष्ट छो, लोकमर्यादाथी रहित छो अने मारी निंदा करनारा छो, तेथी मारी पासे आव्या नथी, माटे तमारे मारा राज्यमां रहेवु नहीं बीजे ठेकाणे जाओ जो कदाच तमारामांथी कोइपण मारा राज्यनी हदमां रहेशे, तो ते शठनो हु अवश्य वध करीश तमारी जेवा लोकविरोधी अने राजविरोधीने कोण वसवा दे ? " आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी सूरि बोल्या के—" अमारो आचार नहीं होवाथी अमे तमारी पास आव्या नथी, परतु तमारा अभिषेक बाबत अमे कांइपण निंदा करता नथी. " ते सांभळी दुष्ट बुद्धिवाळो नमुचि क्रोधथी बोल्यो के—" घणु कहेवाथी सर्यु आजथी सात दिवस पछी जो तमने कोइने हु अहीं जोइश, तो अवश्य चोरनी जेम तमारो घात करीश "

आ प्रमाणे तेनी उग्र आज्ञा सांभळी आचार्य महाराज पोताने उपाश्रये आव्या पछी सर्व मुनिओने एकत्र करी सर्व

वृत्तांत कही पूछ्युं के—"हवे आपणे शुं करवुं ?" ते सांभळी एक मुनि बोल्या के—"जे छ हजार वर्षथी दुस्तप तपस्या करे छे, ते विष्णुकुमार मुनि हालमां मेरुपर्वत उपर छे. ते पद्मराजाना मोटा भाइ होवाथी तेनी वाणीवडे आ नमुचि शांत थशे. माटे ते विष्णुकुमार ऋषिने बोलाववा तेवी लब्धिवाळा कोइ मुनिने अहींथी आपणे मोकलीए." ते सांभळी एक मुनि बोल्या के—"आकाश मार्गे मेरुपर्वतपर जवानी मारी शक्ति छे, पण त्यांथी पाछा आववानी शक्ति नथी. तेथी जो मारुं कार्य होय तो मने आज्ञा आपो." त्यारे गुरु महाराज बोल्या के—"विष्णुकुमार ज तमने अहीं लावशे, माटे तमे त्यां जाओ." ते सांभळी ते मुनि तत्काळ त्यांथी आकाशमां उडी क्षणवारमां विष्णुकुमार पासे गया. तेने आवता जोइ विष्णुकुमार मुनिए विचार्युं के—" अवश्य कांइक संघतुं मोटुं कार्य होवुं जोइए, अन्यथा वर्षाकाळमां आ साधु अहीं केम आवे ? " आ प्रमाणे ते विचार करता हता, तेटलामां ते मुनिए आवी तेमने नमस्कार कर्या, अने आववानुं प्रयोजन कह्युं. ते सांभळी तत्काळ विष्णुमुनि ते साधुने लइ हस्तिनापुरमां आव्या, अने तेमणे गुरुने नमस्कार कर्या. पछी घणा साधुओने साथे लइ विष्णु मुनि नमुचि पासे गया. त्यां एक नमुचि विना बीजा सर्व सामंत राजाओए अने मंत्रीओ विगेरेए तेमने नमस्कार कर्या. पछी विष्णुमुनिए प्रथम धर्मोपदेश आपी नमुचिने कह्युं के—" ज्यां सुधी वर्षाकाळ छे त्यां सुधी आ सर्व साधुओने आ नगरमां वसवा आपो. आ मुनिओ पोते ज एक ठेकाणे वधारे वखत रहेता नथी; परंतु वर्षाऋतुमां पृथ्वी जीवाकुळ होवाथी साधुओ विचरता नथी. आ मोटा नगरमां भिक्षावृत्तिथी आजीविका करनारा अमारी जेवा घणा भिक्षुओ वसे, तेथी हे कुशळ नमुचि ! तमने शुं नुकसान छे ? पहेलां तो भरतादिक मोटा राजाओ पण मुनिओने नमता हता. तमे तेवुं

न करता हो तो भले, पण तेमने काढी शामाटे मूको छो?" आ प्रमाणे विष्णुकुमारनु वचन सांभळी नमुचि क्रोधथी बोल्यो के—"वारवार कहेवाथी शु फळ छे ? जो पांच दिवस पछी तमने कोइने पण हु जोइश तो तेनो अवश्य हु निग्रह करीश " विष्णुमुनिए कह्यु—"आ मुनिओने पुरनी बहार उद्यानमां वसवानी छुट आपो " त्यारे क्रोध पामेलो नमुचि पथ्थर जेवा कठोर वचनथी बोल्यो—"पुर के उद्यान तो दूर रहो, परतु मारा समग्र राज्यमां पण सर्वथा प्रकारे ए अधम पाखडी श्वेतभिक्षुओने रहेवानु नथी तेथी करीने जो तमने तमारु जीवित प्रिय होय तो मारु राज्य शीघ्रपणे मूकी दो " आवा तेना कठोर वचनथी विष्णुकुमारने कांइक क्रोध आव्यो, तेथी ते बोल्या के—"हे नमुचि ! अमने मात्र त्रण पग लांज पृथ्वी आपो, तो तेमां पण अमे रही शकशु " ते सांभळी तत्काळ नमुचि बोल्यो के—" बहु सारु तमने त्रण पगलां पृथ्वी आपी परतु तेटली जग्याथी बहार जो कोइ पण रहेशे, तो तेने हु तत्काळ हणी नाखीश " आवु तेनु वचन कबुल करी कोप पामेला विष्णुकुमारे वैक्रियलब्धिथी पोतानु शरीर वधारवा माडयु. तेमां मुगट, कुडळ अने माळा सहित वज्र, धनुष अने खड्गने धारण कर्यां प्रलय काळना वायुनी जेम मोटा भयकर फूत्कार मूकवा लाग्या, पगना पछाडवावडे समग्र पृथ्वीने कपाववा लाग्या, समुद्रने उछाळवा लाग्या, पर्वतोना शिखरोने पाडवा लाग्या, धान्यकणना समूहनी जेम चद्र, सूर्य, नक्षत्रादिक ज्योतिश्चक्रने दूर खसेडवा लाग्या, विविध प्रकारना रूपोवडे सुर, असुर अने मनुष्योने क्षोभ पमाडवा लाग्या, ए रीते अनुपम शक्तिवाळा ते मुनि अनुक्रमे वृद्धि पामीने मेरुपर्यंत जेवडा थया त्रण जगतनो जय करवामां समर्थ. एवा ते विष्णु मुनि ते दुष्ट नमुचिने पृथ्वीपर पाडीने एक पग पूर्व समुद्रने काठे अने बीजो

थयो. अनुक्रमे चंद्रनी जेम वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळामां निपुण थयो अने पंदर धनुषना देहमानवाळो ते युवावस्थाने पाम्यो. एकदा पिताए तेने राज्यपर स्थापन कर्यो. त्यारपछी केटलेक दिवसे तेने चक्रादिक चौद रत्नो उत्पन्न थयां, एटले चक्रने अनुसरी तेणे छ खंड भरत क्षेत्र पोताने वश कर्युं. सर्व राजाओए मळी तेना चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो. त्यारपछी चिरकाळ सुधी तेणे भोग भोगव्या. एकदा लघुकर्मी होवाथी संसारथी विरक्त थयेला तेणे विचार कर्यो के—" मने पूर्वना पुण्यथी आ मोटी समृद्धि प्राप्त थइ छे, तेथी फरीने पण पुण्य उपार्जन करवानो उद्यम करुं. कारण के नवुं उपार्जन कर्या विना मूळ धन क्षय पामवाथी दरिद्रता प्राप्त थाय छे." इत्यादि विचार करी पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोते सद्गुरु पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे उग्र तपरूपी अग्निवडे कर्मरूपी घासने भस्म करी नांख्युं. कुल दश हजार वर्षनुं पूर्ण आयुष्य भोगवी श्रीहरिषेण चक्री मुनि घातीकर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करी महानंदपदने–मोक्षने पाम्या.

इति हरिषेण चक्री कथा.

अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाइ दमं चरे । जयनामो जिनक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥

अर्थ—(रायसहस्सेहिं) हजार राजाओ वडे (अन्निओ) अन्वित एटले साहित तथा (सुपरिच्चाइ) सम्यक् प्रकारे राज्यादिकनो त्याग करनार (जयनामो) जय नामना चक्रवर्तीए (जिनक्खायं) जिनेश्वरे कहेला (दमं) इंद्रिय अने नोइंद्रियना दमनरूप चारित्रनुं (चरे) आचरण कर्युं. तथा (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्षगतिने (पत्तो) पाम्या. ४३.

जय चक्रीनी सक्षिप्त कथा—

आ ज जबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां सपत्तिना गृहरूप राजगृह नामे नगर छे तेमां यशरूपी अमृतना समुद्ररूप समुद्रविजय नामे राजा हतो तेने पवित्र लावण्यवाळी, शीलरूपी अलकारने धारण करनारी अने मनोहर गुणश्रेणिना वप्र (किल्ला) समान वप्रा नामनी प्रिया हती तेमने चौद महास्वप्नोए सूचवन करेलो जय नामे पुत्र थयो ते शरीरनी लक्ष्मीवडे जयन्तना रूपने जीतनार हतो ते यमुना नदीनु अमृत समान जळ पीने[1] अनुक्रमे युवावस्थाने पाम्यो तेनु शरीर बार धनुष उचु थयु ते वखते तेणे पितानु राज्य धारण कर्यु पछी चक्र विगेरे रत्नो उत्पन्न थया त्यारे तेणे भरतना छ खड साधी स्त्रीरत्ननी जेम चक्रीनी लक्ष्मी चिरकाळ सुधी भोगवी एकदा ससार उपर वैराग्य थवाथी तेणे विचार कर्यो के—

" सुचिरमपि उषित्वा स्यात् प्रियैर्विप्रयोगः, सुचिरमपि चरित्वा नास्ति भोगेषु तृप्ति ।
सुचिरमपि सुपुष्ट याति नाश शरीर, सुचिरमपि विचिन्त्यो धर्म एक. सहाय. ॥ "

" चिरकाळ सुधी साथे रह्या छतां प्रियजनोनो वियोग थाय ज छे, चिरकाळ सुधी भोगव्या छतां भोगोने विषे तृप्ति थती ज नथी, चिरकाळ सुधी सारी रीते पुष्ट-पोषण कर्या छतां शरीर नाश पामे ज छे । अर्थात् जीवने कोइ पण सहाय

१ राजगृह पासे यमुना नदी होवाथी आम कह्यु छे

भूत थतुं नथी.) तेथी करीने चिरकाळ सुधी सहायरूप थनारो एक धर्म ज चिंतववा (करवा) योग्य छे. "

आ प्रमाणे विचारवडे तीव्र वैराग्य पामी पुत्रने राज्य सोंपी ते जयचक्रीए संवेगी गुरु पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे तपरूपी वायुवडे कर्मरूपी मेघनो नाश करी केवळज्ञान पामी जयचक्रीमुनि कुल त्रण हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्षे गया.

इति जयचक्री कथा.

दंसणरज्जं मुइअं, चइत्ता णं मुणी चरे । दसणभद्दो निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥

अर्थ—(सक्खं) साक्षात् (सक्केण) शक्र इंद्रे (चोइओ) अधिक संपत्ति देखाडवावडे प्रेरणा करायेला एवा (दसणभद्दो) दशार्णभद्र राजा (मुइअं) मुदित एटले समृद्धिवाळा (दसणरज्जं) दशार्ण देशना राज्यनो (चइत्ता णं) त्याग करीने (निक्खंतो) घरथी बहार नीकळ्या सता तथा(मुणी) मुनि थया सता (चरे) विचरता हवा.

दशार्णभद्र राजानी संक्षिप्त कथा.

आ ज भरतक्षेत्रने विषे दशार्ण नामना देशमां दशार्णपुर नामे नगर छे. तेमां भद्रपणानी खाणरूप दशार्णभद्र नामे राजा हतो. शुद्ध आत्मावाळो ते राजारूपी हंस सत्पुरुषोना चित्तरूपी कमळोमां वसतो हतो अने ते राजाना चित्तमां जिनेश्वरकहेलो धर्म वसतो हतो. तेना अंतःपुरमां मनोहर रूपवाळी पांचसो राणीओ हती. तेनी प्राप्तिनी चिंतावडे-इच्छावडे

ज देवताओ निद्रा लेता नथी, एम तर्क कराय छे ते राजाने समुद्रना जळनी जेम आखी पृथ्वीने ढांकी दे तेटली मोटी सेना हती तो पण समुद्र जेवो गभीर ते राजा मर्यादानु उल्लंघन करतो नहोतो

ए समये वराड देशमां धान्यना समूहथी भरेलु धान्यपुर नामनु पुर हतु तेमां कोइ धनवान महत्तर पुत्र रहेतो हतो तेने एक स्त्री हती, ते कुलटा हती ते तेनो स्वामी ज्यारे बहार जतो त्यारे एक सन्यासी साथे इच्छापूर्वक क्रीडा करती हती एकदा ते नगरमां कोइ नटोए आवी नाटक प्रारभ्यु, तेमां एक जुवान नट स्त्रीनो वेप पहेरी नृत्य करतो हतो तेने ते दम जाणवामां निपुण एवी कुलटाए कोइक रीते पुरुष छे एम जाणी लीधो तेथी तेनापर ते अत्यत आसक्त थइ ' कुलटा स्त्रीने वायुनी जेम क्यांइ पण प्रतिबध होतो नथी क स्थिरता होती नथी तेने तो जे कोइ जुवान अने दृढ शरीरवाळो पुरुष होय ते प्रिय लागे छे ' तेथी ते कुलटाए लज्जानो त्याग करी गुप्त रीते तेना नायकने कह्यु के—" जो आ तमारो नट ते ज वेपने धारण करी मारी साथे क्रीडा करे तो हु तमने उत्तम किंमती मनोहर वस्त्र बक्षीश तरीके आपु " ते सांभळी नटाधिपतिए हर्षथी तेनु वचन अगीकार कर्यु प्राये करीने नट लोको कुशीलीया ज होय छे तेमां पण स्त्रीओए ज प्रार्थना करी एटले तो पछी कहेवु ज शु ! पछी ते नटना स्वामीए तेणीने कह्यु के—" आ नट हमणां ज तारी साथे आवे, परतु तारु घर क्यां छे ? " त्यारे तेणीए पोतानु घर तेने देखाड्यु पछी ते कुलटाए घेर जइ ते नटने माटे खीर तैयार करी, तेटलामां ते नट पण स्त्रीवेषे ज तेणीने घेर आव्यो तेने ते कुलटाए प्रथम भोजन करवा बेसाड्यो. तेनी पासे मोटो थाळ मूकी तेमां खीर, घी अने खाड पीरसी जेटलामां ते नटे खावानो आरभ कर्यो, तेटलामां तेणीना जार

संन्यासीए द्वार पासे आवी कह्युं के—" हे प्रिया ! द्वार उघाड. " ते सांभळी व्याकुळ थयेली कुलटाए धीमेथी नटने कह्युं के—" आ तल भरेला घरमां दूर खूणामां जइने तुं बेसी जा. " त्यारे ते नट पण त्यां जइ छुपाइ गयो. पछी तेणीए द्वार उघाड्युं, एटले ते संन्यासी घरमां आव्यो. त्यां खीरनो पीरसेलो थाळ जोइ तेणे पूछ्युं के—' आ शुं छे ? ' ते मायाथी बोली के—" हुं भूखी थइ छुं, तेथी खावा बेसती हती त्यां तमे आव्या. " ते सांभळी संन्यासी बोल्यो के—" हुं भूख्यो छुं, माटे आ तो हुं ज खाइश. " एम कही ते संन्यासी बळात्कारे खावा बेठो, तेटलामां घरना स्वामीए आवी ' द्वार उघाड. ' एम कह्युं. घरधणीने आव्यो जाणी ' हवे हुं क्यां जाउं ? ' एम संन्यासीए तेणीने पूछ्युं, त्यारे ते बोली के—" आ तल भरेला घरमां जइ संताइ जाओ, पण तेमां दूर जशो नहीं. केमके तेना खूणामां सर्प रहेलो छे. तेथी जीवितनी इच्छावाळा तमारे आघा जवुं नहीं. " ते सांभळी बहु सारुं कही ते संन्यासी जार पण ते ज घरमां पेठो. त्यारपछी ते कुलटाए तरत ज द्वार उघाड्युं, सरळ प्रकृतिवाळो तेनो स्वामी घरमां आव्यो. तेणे पण पेलो थाळ पीरसेलो जोइ पूछ्युं के—" आ थाळमां खीर केम पीरसी छे ? " त्यारे ते बोली के—" हुं भूखी थइ छुं, तेथी खावा बेसती हती. " ते सांभळीने ते बोल्यो के—" मारे पाछुं कार्य माटे जवुं छे, तेथी हुं ज जमी लउं " त्यारे ते बोली के—" आजे आठम छे, तेथी स्नान कर्या विना शी रीते खाशो ? " त्यारे ते बोल्यो—" हे प्रिया ! तें स्नान कर्युं छे एटले में पण स्नान कर्युं छे एम जाणी ले. " ते सांभळी ते बोली.—" आपणो एवो धर्म नथी, माटे तमे एम न करो. आपणे शिवधर्मी छीए, तेथी स्नान कर्या विना भोजन थइ शके नहीं. " आ प्रमाणे तेणीना कह्या छतां पण ते स्नान कर्या विना ज

वडाग्कार अगरा पग.

मही सलना परमां घुसापला नटे विचार कर्यो के—" हु अहीं भूख्यो शा माटे मरी रहु ? ' एम विचारी तलने वे हाथवडे मगर्दने तथा कूडी कुकोने ग खावा लाग्यो ते वखते पेला मन्यामीए तनी कुको सांभळी विचार्यु के—" अहीं मप कूडादा मारतो जणाय छ, तथी आ परनो स्वामी भोजन करवामां व्यग्र छे, तेटलामां हु त न जाणे तेम बहार नीकळी जाउं " एम विचारी त शीघ्रपणे परमांथी नीकळी नासी गयो त जोइ ' मारो पण आ समय छे ' एम धारी नट पण तनी पाछळ नाठा तमने नीकळता जोइ गृहस्वामीए स्वच्छ हृदयथी पोतानी स्त्रीने पूछ्यु के—" आ बे स्त्री पुरुष गया ते कोण हुं ? " त्यारे तात्कालिक बुद्धिवाळी ते कुलटा बोली के—" में तमने प्रथम न कह्यु हतु के स्नान कर्या विना भोजन न करो में निरंतर सेवा करेल आपणा घरमां पार्वती अने शंकरने राख्या हता, ते त्यारे तमारु स्नान रहित भोजन जोइ एम नासी गया ते सांभळी " में आ बहु खोटु कर्यु " एम पश्चात्ताप करी तेणे प्रियाने कह्यु—" हे प्रिये ! आ देवो फरीथी शी रीत पाछा आपणे घेर आवे ? " ते सांभळी—" जो आ मारा पति परदेश जाय, तो हु स्वेच्छाए क्रीडा करी शकु " एम विचारी पतिनी रागिणी एवी ते स्वच्छाचारी कुलटाए कह्यु के—' जो तमे सारा उद्यमथी न्यायोपार्जित घणा द्रव्यवडे पार्वती अने शंकरनी पूजा करो, तो तेओ पाछा आपणे घर आवे " आ प्रमाणे प्रियानु वचन अंगीकार करी ते महत्तरपुत्र वधारे द्रव्य मेळववा माटे दशार्ण देशमां गयो ' धर्मना छळथी चतुर माणस पण छेतराय, तो बीजानु शु कहेवु ? '

त्यां कोइना घेरमां ते काम करवा रह्यो तेमां तेणे केटलाक दिवसे दश गद्याणा सुवर्ण उपार्जन कर्यु. तेटला अल्प

द्रव्यथी तेने संतोष थयो नहीं. तोपण तेने प्रियानुं स्मरण थतां ते घर तरफ जवा नीकळ्यो. मध्यान्ह समये कोइ ठेकाणे वनमां एक वृक्षनी नीचे ते विश्रांति लेवा बेठो. आ अवसरे दशार्णभद्र राजा विपरीत शिक्षावाळा अश्वथी हरण कराइने फरतो फरतो पाणीनी शोध करतो ते वृक्ष पासे आव्यो. तेने जोइ " आ आतिथिसत्कारने लायक कोइ महापुरुष छे. " एम विचारी ते महत्तरपुत्रे राजाने आवकार आपी जळ आप्युं. राजा पण ते जळनुं पान करी अश्वपरथी पर्याणने नीचे उतारी चणवार विश्रांति लेवा बेठो. पछी स्वस्थ थयेला राजाए 'तुं कोण छे ?' एम तेने पूछयुं, त्यारे तेणे पोतानो सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी बुद्धिमान राजाए विचार कर्यो के—" आनी स्त्री अवश्य कुलटा छे, तेथीज तेणीए आने छेतर्यो छे. परंतु आनुं धार्मिकपणुं जोइ मने मनमां आश्चर्य थाय छे, के जे द्रव्य रहित छतां पण द्रव्यने उपार्जन करी पोताना देवनी पूजा करवा इच्छे छे. कुशळ पुरुषो द्रव्य छतां पण तेनो व्यसनादिकमां दुरुपयोग करे छे, अने आ मुग्ध छतां पण धर्मने माटे धन उपार्जन करवा क्लेश सहन करे छे. तेथी आ धार्मिक पुरुषनो हुं शो प्रत्युपकार करुं ? " आ प्रमाणे राजा विचार करतो हतो, तेटलामां अश्वना पगलांने अनुसरतुं तेनुं सैन्य आवी पहोंच्युं. पछी राजा ते उपकारी पुरुषने साथे लइ पोताना नगरमां गयो. त्यां तेनो भोजनादिकवडे सारो सत्कार कर्यो.

ते अवसरे वनपालक पुरुषोए आवी राजाने वधामणी आपी के—" हे देव ! आजे आपणा उद्यानमां छेल्ला तीर्थंकर महावीरस्वामी समवसर्या छे. " आ प्रमाणे कर्णने अमृत समान तेमनुं वचन सांभळी राजाना शरीरमां रोमांचरूपी कंचुक व्याप्त थया, अने तरत ज आसनपरथी उभा थइ तेणे जिनेंद्रनी दिशा तरफ पृथ्वी सुधी मस्तक नमावी प्रभुने नमन कर्युं. पछी ते उद्यानपालकोने घणुं प्रीतिदान आपी सत्पुरुषोमां अग्रेसर एवा ते श्रेष्ठ राजाए विचार कर्यो के—आ परदेशी

पुरुष तथाप्रकारना विवेक रहित छतां पण पोताना देवने सर्व सपत्तिवडे पूजवा इच्छे छे, तो सर्व सामग्रीवडे सहित अमारी जेवा विवेकी पुरुषोए विशेषे करीने अरिहंतनी पूजा करवी योग्य छे " आ प्रमाणे विचारी राजाए हाथी विगेरेना अधिकारीओने बोलावी आज्ञा आपी के—" प्रात काळे जगद्गुरुने वांदवा जवु छे, तेथी सर्व सैन्य विगेरेनी उंचामां उंची शोभा थाय तेम करजो " आ प्रमाणे आज्ञा आपीने पछी आखा नगरमां आघोषणा करावी के-"प्रभात काळे सर्वज्ञने वांदवा जवा माटे सर्व सामतो, मत्रीओ अने पुरजनोए पण श्रेष्ठ सामग्री तैयार करवी, ने ते सहित राजा साथे वांदवा आववु " पछी राजाए पोताना सेवको पासे नगरना मार्गो तृण, छाण, राख विगेरे कचरो कढावी साफ कराव्या, तेमां चदन मिश्रित जळ छटावी पुष्पना समूहोवडे विचित्र रचना करावी, ठेकाणे ठेकाणे जाणे लक्ष्मीने क्रीडा करवानी हींचोळा खाट होय तेवी वदनमाळाओ–तोरणनी श्रेणीओ–बधावी. तेनापर जाणे कलक रहित चद्रो मूक्या होय तेवा रुपाना कळशो मूकाव्या ते वखते ठेकाणे ठेकाणे करेला सुगधी धूपना धूमाडाने लीधे जाणे अकाळे मेघ चड्यो होय तेम ते नगरमां देखावा लाग्यु अने माणिक्यनां तोरणो बधाववाथी जाणे इद्रधनुषने धारण कर्यु होय एवु आकाश जणावा लाग्यु मगळना हेतुरूप करोडो ध्वजाओवडे आखु नगर शोभितु कराव्यु अने स्थाने स्थाने मनोहर मांचाओ मडाववाथी ते नगर विमाननी जेम शोभवा लाग्यु राजानी आज्ञाथी-जल्ल, मल्ल अने नट विगेरे जनो स्थाने स्थाने पोतपोतानी कळाओ देखाडवा लाग्या आ रीते राजाए अधिकारीओ पासे साक्षात् स्वर्गना नगर जेवु पोतानु नगर बनाव्यु त्यारपछी प्रात काळे राजाए स्नान कर्यु, चदनवडे शरीरने विलेपन कर्यु, बे देवदूष्य वस्त्रो धारण कर्या, शरीरे देदीप्यमान

अलंकारो पहेर्यां.

पछी " क्यार सुधी कोइए न वांद्या होय एवी रीते हुं आजे प्रभुने वांदीश. " एम अभिमानयुक्त विचार करी राजा पट्टहस्तीपर आरुढ थयो, तेना मस्तकपर पूर्णचंद्र जेवु उज्वळ छत्र धारण करवामां आव्युं, चारे बाजु फीणनी जेवा उज्वळ चार चामरो तेने वींझावा लाग्या. तेनी फरता हजारो सामंत राजाओ श्रेष्ठ शणगार धारण करी पोत पोताना हाथीओपर आरुढ थइ जेम इंद्रने सामानिक देवो वींटाइ वळे तेम वींटाइ गया. त्यारपछी ते श्रेष्ठ राजाए हाथीने पगवडे प्रेरणा करी एटले ते हाथी जाणे के ' मारा चालवाथी पृथ्वी भांगी जशे ' एम धारतो होय तेम धीमे धीमे चाल्यो. ते वखते मणिना आभूषणोथी शणगारेला बीजा हजारो हाथीओ जाणे चालता पर्वत होय तेम चाल्या. तेनी पाछळ सूर्यना अश्वोना जाणे सहोदर होय तेवा अने घणा आभूषणोथी शणगारेला एवा लाखो अश्वो शोभामां वृद्धि करता चाल्या. तेनी पाछळ घोडा जोडेला, मनोहर लक्ष्मीवाळा जाणे सूर्यना ज रथ होय एवा हजारो रथो चाल्या. तेमनी पाछळ विपत्तिनो नाश करनारा, विविध आयुधने धारण करनारा तथा अति पराक्रमवाळा करोडो पत्तियो[1] चाल्या. तेमनी पाछळ पांच सो राणीओना मीयानाओ जाणे देवीओ सहित विमानो होय तेम चाल्या. ते वखते शब्द करती घुघरीओना अवाजथी दिशाओने वाचाळ करता एवा अने आकाश सुधी उंचा एवा पांच वर्णना हजारो ध्वजो साथे चालता शोभी रह्या हता. भंभा, भेरी विगेरे लाखो वाजित्रो एक साथे वागता हता, तेथी आखुं जगत शब्दमय थयुं होय एम जणातुं हतुं. मंगलपाठको

१ चालता सीपाइओ.

हर्षथी मांगलिक वचनो बोलता हता, अने गवैयाओ कर्णने अमृत समान संगीत गाता हता. अप्सराओनी जेवी वेश्याओ राजानी आगळ पगले पगले भगवानना गुणोना गायन सहित नृत्य करती चालती हती

आ रीते मोटी ऋद्धिवडे भव्यजनोना मनने आनंद आपतो, सद्भावरूपी अमृतवडे पुण्यरूपी वृक्षोने सींचतो, कल्प वृक्षनी जेम याचकोने अत्यंत दान आपतो अने अहंकारथी पोताने उत्कृष्ट संपत्तिनु स्थान मानतो ते दशार्णभद्र राजा सर्व परिवार, पुरजनो अने ते महत्तरपुत्र सहित समवसरणनी समीपे जइ पहोंच्यो त्यां हस्तीपरथी उतरी छत्र, चामरादिक राजचिह्नोनो त्याग करी सर्व परिवार सहित जिनेश्वरने त्रण प्रदक्षिणा करी विधिपूर्वक भगवानने नम्यो पछी हर्षथी गद्गद् वाणीए मोटा अर्थवाळा स्तोत्रोवडे जिनाधीशनी स्तुति करीने ते जनाधीश (राजा) योग्यस्थाने बेठो

आ वखते अवधिज्ञानवडे दशार्णभद्रनो तेवो गर्वमय अभिप्राय जाणी शक्र इंद्रे विचार कर्यो के—" अहो ! दशार्ण भद्रनी प्रभुविषे अनुपम भक्ति छे, परंतु आ बाबतमां गर्व करवो तेने योग्य नथी केमके आखे भुवनवडे पण भगवाननी संपूर्ण भक्ति थइ शके तेम नथी " आ प्रमाणे विचार करी संपत्तिना अधिकपणाथी उत्पन्न थयेला तेना मानने हरवा माटे तथा तेने बोध करवा माटे शक्र इंद्रे ऐरावण नामना देवने आज्ञा करी, तेथी तेणे उज्वलपणाथी अने उंचाइथी कैलास पर्वतनो पण पराभव करे एवा चोसठ हजार हाथीओ विकुर्व्या एक एक हाथीने पांच सो ने बार बार मुख विकुर्व्यां, दरेक मुखे आठ आठ दांत विकुर्व्या, दरेक दांते आठ आठ मनोहर वावो विकुर्वी, दरेक वावमां आठ आठ कमळो विकुर्व्यां, दरेक कमळने एक एक लाख पत्रो विकुर्व्यां, दरेक पत्रमां बत्रीशबद्ध नाटक विकुर्व्युं तेम ज ते दरेक कमळनी

मध्यनी कर्णिकाए चार मुखवाळा प्रासादो विकुर्व्या. ते सर्व प्रासादोमां इंद्र आठ आठ पट्टराणीओ सहित बेसीने ते सर्व नाटको जोवा लाग्या. आ रीते करवाथी दरेक हाथीने कुल ५१२ मुख, तेना ४०९६ दांत, तेनापर ३२७६८ वावो, तेमां २६२१४४ कमळो, तेटला ज प्रासादो अने इंद्रो, तेनाथी आठ गुणी एटले २०९७१५२ इंद्राणीओ तथा २६२१४४००००० कमळना पत्रो अने तेटला ज बत्रीशबद्ध नाटको हतां. आटलो एक हाथीनो विस्तार हतो, तेवा चोसठ हजार हाथीओवडे आकाशने व्याप्त करतो इंद्र शीघ्रपणे जिनेश्वरना समवसरणमां आव्यो. तेणे हाथी उपर बेसीने ज जिनेश्वरने प्रदक्षिणा करी अने पोताना शरीरनी कांतिवडे सूर्यनो पण पराभव करनार ते इंद्रे प्रभुने वंदना करी.

आवा प्रकारनी इंद्रनी समृद्धि जोइ बुद्धिमान दशार्णभद्र राजाए विचार कर्यो के—" अहो ! तुच्छपणाने लीधे में मारी संपत्तिनो वृथा गर्व कर्यो. आ इंद्रनी आवी संपदा पासे मारी संपदा कइ गणतरीमां छे? सूर्यनी कांति पासे पतंगीयाना बच्चानी कांति केटलीक होय ? तेथी हुं धारुं छुं के नीच जनोने तुच्छ संपत्तिथी पण मद प्राप्त थाय छे. केमके देडकाओ कादववाळुं जळ पामीने पण अत्यंत आनंदथी नाद करे छे. आ इंद्रे पण आवी समृद्धि पुण्यना प्रभावथी ज मेळवी छे, जो धर्माराधन सिवाय आवी संपत्ति मळती होय तो सर्व प्राणीओने आवी ज संपत्ति केम न मळे ? तेथी हवे मारे ते निपेनो खेद न करतां निर्मळ धर्मनो ज आश्रय करवो योग्य छे, अने तेम करवाथी मारो गर्व पण कृतार्थ थशे." आ प्रमाणे विचार करी दशार्णभद्र राजाए बे हाथ जोडी नम्रताथी जिनेश्वरने विज्ञप्ति करी के—" हे प्रभु ! हुं संसारपरथी उद्वेग पाम्यो छुं, तेथी मने दीक्षा आपी मारापर अनुग्रह करो." आ प्रमाणे कहीने ते राजाए पोताने हाथे ज मस्तकपरना केशनो लोच कर्यो, पछी

मतना अर्थी एवा त राजाने विश्ववत्सल प्रभुए पोते ज दीक्षा आपी तेनी पाछळ तत्काळ ते महत्तर पुत्रे पण दीक्षा ग्रहण करी 'सत्पुरुषोनो संग कल्याण आपवामां कामदुघा सदृश छे' त्यारपछी ते राजर्षिने प्रणाम करी शक्र इंद्रे कह्यु के —" हे मुनि ! तमे आवी मोटी समृद्धिनो सहसा त्याग कर्यो, माटे तमने धन्य छे हे सत्य प्रतिज्ञाशाळा ! मोटा साम्राज्यनो त्याग करी व्रत अंगीकार करवाथी तमे तमारी प्रतिज्ञा पण सत्य करी छे केमके जिनेश्वरनी अर्चा करवी ते द्रव्यपूजा छे अने जे चारित्र ग्रहण करवु ते भावपूजा छे, द्रव्यपूजा करनार करतां भावपूजा करनारने अत्यंत अधिक मानेलो छे, तेथी तमे भावपूजा करीने मने जीती लीधो छे मारी बीजी घणी शक्ति छे, पण व्रत लेवानी मारी शक्ति नथी " आ प्रमाणे ते राजर्षिनी स्तुति करी शक्र इंद्र स्वर्गे गयो अने ते राजर्षि उग्र तप करी सर्व कर्मनो क्षय करी मुक्तिपुरीमां गया.

इति श्रीदशार्णभद्र राजर्षि कथा

नमी नमेहि अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ॥ ४५॥

अर्थ—(वइदेही) विदेह देशना स्वामी (नमी) नमि नामना राजा (सक्खं) साक्षात् (सक्केण) शक्र इंद्रे (चोइओ) प्रेर्या सता एटले ज्ञानचर्याने विषे परीक्षा कर्या सता (अप्पाणं) पोताना आत्माने (नमेहि) नीतिमां स्थापन करता हवा एटले जरा पण कषाय करता न हवा, तथा (गेहं) गृहवासनो (चइऊण) त्याग करीने (सामण्णे) साधुपणामां–चारित्र धर्मने विषे (पज्जुवट्ठियो) स्थिर थया एटले उद्यमवंत थया ४५

करकंडु कलिंगेसु, पंचालेसु अ दुम्मुहो । नमिराया विदेहेसु, गंधारेसु अ नग्गई ॥ ४६ ॥

एए नरिंदवसहा, निक्खंता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिआ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(कलिंगेसु) कलिंग देशमां (करकंडु) करकंडु राजा हता, (पंचालेसु अ) तथा पांचाळ देशमां (दुम्मुहो) द्विमुख राजा हता, तथा (विदेहेसु) विदेह देशमां (नमिराया) नमि राजा हता, (गंधारेसु अ) तथा गंधार देशमां (नग्गई) नग्गति नामना राजा हता. (एए) ए चारे (नरिंदवसहा) श्रेष्ठ राजाओ (पुत्ते) पोतपोताना पुत्रोने (रज्जे) राज्य उपर (ठवेऊणं) स्थापन करीने (जिणसासणे) जिनशासनने विषे ज (निक्खंता) प्रव्रज्या लेता हवा, तथा (सामण्णे) साधुधर्मने विषे (पज्जुवट्ठिआ) स्थिर थया–उद्यमवंत थया. ४६–४७.

(आ चारे प्रत्येकबुद्धनी कथा प्रथम एटले नवमा अध्ययनमां कही गया छीए, तेथी अहीं लखता नथी.)

सोवीररायवसहो, चइत्ताण मुणी चरे । उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४८ ॥

अर्थ—(सोवीररायवसहो) सौवीर देशने विषे राजवृषभ एटले श्रेष्ठ राजा (उदायणो) उदायन नामना हता. ते (चइत्ताण) राज्यने तजीने (मुणी) मुनि थया सता (चरे) विचरता हवा. तेथी (पव्वइओ) प्रव्रजित थया सता (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्ष गतिने (पत्तो) पामता हवा. ४८.

श्री उदायन राजानी संक्षिप्त कथा

आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां सिंधुसौवीर नामनो देश छे, तेमां सार्थक नामवाळुं वीतभय नामनुं नगर छे तेमां उदायन नामे राजा राज्य करतो हतो ते राजा सुकृतना उदयने करनार हतो तथा स्वाभाविक एवा शौर्य, धैर्य अने औदार्यादिक गुणोवडे विराजित हतो ते वीतभय विगेरे त्रणसो ने त्रेसठ पुरनो तथा सिंधुसौवीर विगेरे सोळ देशोनो पालक हतो. ते महासेन विगेरे दश महा पराक्रमी राजाओथी सेवातो हतो. ए रीते ते उदायन राजा लक्ष्मीए करीने जाणे बीजो इंद्र होय तेम काळ निर्गमन करतो हतो तेने चेटक राजानी पुत्री प्रभावती नामनी प्रिया हती. ते निरंतर पोताना मनमा पतिनी जेम श्रीजिनधर्मने धारण करती हती ते राजाने प्रभावतीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो अभिची नामनो युवराज पुत्र हतो, अने ते राजानी बहेननो पुत्र केशी नामनो हतो ते बन्ने कुमार साथे क्रीडा करता हता

आ समये चंपा नामनी पुरीमां मोटो धनवान कुमारनंदी नामनो एक सोनी हतो, तेनुं मन निरंतर स्त्रीओमां ज आसक्त हतुं कोइपण ठेकाणे कोइ पण सुंदर कन्याने ते जोतो तो तेणीने ते पांच सो सोनामहोर आपीने परणतो हतो ए रीते ते पांच सो स्त्रीओने परण्यो हतो, तो पण तेने तृप्ति थइ नहोती ' प्राये करीने स्त्री धन, आयुष्य अने भोजनने विषे प्राणीओ अतृप्त ज रहे छे.' ' आ मारी स्त्रीओ बीजा कोइ पुरुषने मळी न जाओ ' एम विचारी ते सोनी एक स्तंभना महेल उपर सर्व प्रियाओने राखी तेमनी साथे रात्रि दिवस विलास करतो हतो

आ अवसरे समुद्रनी मध्ये रहेला पंचशैल नामना द्वीपमां विद्युन्माली नामनो महर्धिक व्यंतर हतो, ते एकदा पोतानी प्रिया हासा अने प्रहासा नामनी देवीओ सहित इंद्रनी आज्ञाथी नंदीश्वर द्वीपे जतो हतो. त्यां मार्गमां ज आयुष्य

पूर्ण थतां ते चवी गयो. एटले तेंनी प्रियाओए चिंतातुर थइ विचार कर्यो के—" आपणे कोइ स्त्रीलुब्ध पुरुषने लोभ पमाडीए, जेथी ते मरण पामीने आपणो पति थाय." एम विचारी ते बन्ने देवीओ पृथ्वीपर सर्वत्र जोवा लागी, तेटलामां महेलना उपरना भागमां पांच सो स्त्रीओ साथे रमता ते सोनीने जोयो. तेने जोइ 'आ ज आपणने योग्य छे.' एम निश्चय करी ते देवीओए जगतने मोह पमाडे एवुं दिव्य रूप तेने बताव्युं, ते जोइ अत्यंत मोह पामीने तेणे तेमने पूछयुं के—" तमे कोण छो ? " ते सांभळी विलास-हावभाव सहित ते बन्ने बोली के—" अमे मोटी समृद्धिवाळी हासा अने प्रहासा नामनी देवीओ छीए. जो तमे अमने वांछता हो तो पंचशैल नामना द्वीप उपर आवजो." एम कही वीजळीना चमकारानी जेम ते बन्ने देवीओ तत्काळ अदृश्य थइ-आकाशे उडी गइ. ते जोइ शून्य मनवाळो थयेलो ते सोनी चिरकाळ सुधी तेज दिशा सामुं जोइ रह्यो. पछी तेणे विचार कर्यो के--" आ पांच सो स्त्रीओथी मारे शुं फळ छे. नेत्रना जेवी ते बे विना आ आखुं विश्व मने शून्य भासे छे. रत्न जेवुं तेमनुं रूप जोइने आ काच जेवी स्त्रीओने विषे कोण रंजन थाय ? तेथी ते बे देवीओने माटे ज हुं शीघ्र प्रयास करुं." आ प्रमाणे विचार करी ते सोनीए राजसभामां जइ घणुं धन भेट करी राजानी आज्ञा मेळवीने आखा नगरमां आघोषणा करावी के—" जे कोइ श्रेष्ठ नाविक कुमारनंदी सोनीने पंचशैल द्वीप उपर लइ जशे, तो तेने ते कुमारनंदी कोटि द्रव्य आपशे." आवी आघोषणा सांभळी एक अति वृद्ध नाविक के जे जीववानी स्पृहावाळो नहोतो तेणे ते पडह अंगीकार करी भातुं पाणी भरीने वहाण तैयार कर्युं. पछी पोताना पुत्रोने ते कोटि द्रव्य आपी ते वृद्ध नाविक कुमारनंदीने लइ वहाणमां चड्यो. केटलेक दिवसे ते वहाण समुद्रमां घणे दूर गयुं, त्यारे ते वृद्ध नाविके कुमारनं-

दीने कह्यु के—" आगळ दूर तु कांइ देखे छे ? " तेणे कह्यु—" कांइक काळु काळु देखाय छे " नाविके कह्यु—" ते समुद्रने कांठे रहेला पर्वतना नितम्बमां उगेलो वटवृक्ष छे आ आपणु वहाण अवश्य ते वट वृक्षनी नीचे जशे ते वखते तु कूदीने ते वृक्षपर चडी जजे रात्रिए ते पर्वतपर भारन्डपक्षीओ वसे छे, तेओ प्रातःकाले चरवा माटे पंचशैल पर्वतपर जाय छे, ते पक्षीओ सुइ जाय त्यारे कोइ पण पक्षीना त्रण पगमांथी वच्चेना पगे एक वस्त्रवडे तु तारा शरीरने बांधीने पड्यो रहेजे. प्रातःकाले ते पक्षीओ उडशे ते तने पंचशैल पर्वतपर लइ जशे हु वृद्ध होवाथी ते वटवृक्ष पकडी शकीश नहीं परतु वडनी आगळ मोटा आवर्त छे, तेमा आ वहाण पडशे, तेथी तेमां वहाण सहित मारो विनाश थशे, तेथी तु पण जो व्यग्रताने लीधे ते वटवृक्षन ग्रहण नहीं करे तो तु पण मारी साथे ज मरण पामीश" आ प्रमाणे ते नाविक कहेतो हतो, तेटलामां ते वहाण ते वटवृक्षनी नीचे पहोंच्यु. एटले तरत ज ते सोनी वटवृक्षने वळगी गयो. पछी नाविकना कहेवा प्रमाणे करी ते पंचशैल पर्वतपर पहोंच्यो भोगमां उत्कंठित थयेला तेने आवेलो जोइ ते देवीओए तेने कह्यु के—" आ मनुष्यना शरीरवडे तु अमारी साथे भोग भोगववा लायक नथी. कान पण वींधावानी व्यथाने सहन करे छे तो ज ते अलंकार पहेरी शके छे अने दाह दिकने सहन करे छे तो ज सुवर्ण पण मणिने पामी शके छे माटे तु पण तारे घेर जइ दीन, हीन विगेरेने घणु दान आपी अग्निप्रवेशनु कष्ट सहन करी नीयाणु करीने आ द्वीपनी लक्ष्मीनो अने अमारो पण स्वामी था. मोटा लाभने माटे कांइक कष्ट पण सहन करवु जोइए " ते सांभळी ते रागवाळा सोनीए कह्यु के—" हु अहींथी मारे घेर शी रीते जइ शकु ? " ते सांभळी तरत ज ते देवीओए ते कामांध सोनीने उपाडीने चंपापुरीमां मूकी दीधो तेने जोइ नगरजनोए पूछ्यु के—" हे कुमार

नंदी! तुं शी रीते पाछो आव्यो? त्यां तें शुं आश्चर्य जोयुं?" त्यारे ते सोनी "अहो! ते हासा अने प्रहासा क्यां गइ?" ए प्रमाणे वारंवार बोलवा लाग्यो. त्यारपछी ते मूर्ख इंगिनीमरणवडे मरवा तैयार थयो. तेने तेना मित्र नागिल नामना श्रावके कह्युं के—"हे मित्र! सिंहने घास खावुं अयोग्य छे, तेम तारे आवुं कुपुरुषने लायक कार्य करवुं योग्य नथी. वळी अत्यंत तुच्छ भोगने माटे आ दुर्लभ मनुष्य भवने तुं हारी न जा. जो कदाच तने भोगनी इच्छा होय तोपण तुं कल्पवृक्षनी जेम इष्ट वस्तुने आपनार धर्मनुं ज आचरण कर." आवा मित्रना उपदेशने पण ते उन्मत्ते गणकार्यो नहीं. तेथी तेणे पगथी मस्तक पर्यंत आखुं शरीर बकरीनी लींडीओथी ढांकी दीधुं. पछी तेमां अग्नि सळगावी ते बन्ने देवीओनुं ज स्मरण करी मरण पामी ते विद्युन्माली नामनो देव थयो. आ प्रमाणे इंगिनीमरणथी मरण पामेला तेने जोइ नागिल श्रावक वैराग्य पाम्यो, अने "अहो! मूढ पुरुषो भोगने माटे केटलुं कष्ट भोगवे छे?" इत्यादि विचार करतो ते नागिल दीक्षा ग्रहण करी शुभ ध्याने मरण पामी अच्युत नामना स्वर्गमां देव थयो. त्यांथी तेणे अवधिज्ञानवडे पोताना पूर्वभवना मित्रने जोयो.

एकदा नंदीश्वर द्वीपनी यात्रानो महोत्सव प्राप्त थयो. ते वखते पटह वगाडवानुं काम ते विद्युन्मालीने करवानुं हतुं, तोपण ते पटह वगाडवाने इच्छतो नहोतो, तेथी ते आम तेम नाशी जवा लाग्यो, तोपण बळात्कारे पटह तेना कंठमां आवीने वळगी गयो. ते वखते हासा अने प्रहासाए तेने कह्युं के—"जे अमारो स्वामी होय तेणे अवश्य पटह वगाडवानो ज छे, माटे तमे केम नाशी जाओ छो?" ते सांभळी विद्युन्माली व्यंतर शांत थयो अने शक्र इंद्रनी आगळ पटह वगाडतो नंदीश्वर द्वीपपर गयो, त्यां आ नागिल श्रावकदेव पण आव्यो हतो, तेणे तेने जोयो. तेथी ते श्रावकदेव जेम जेम ते व्यंत-

रनी पासे जवा लाग्यो, तेम तेम तेनु तेज सहन नहीं थवाथी ते व्यतर दूर दूर नासवा लाग्यो त्यारे ते श्रावक देवे पोतानु तेन महरीने तेने कह्यु के—"तु मने जाणे छे ?" ते बोल्यो के—"इद्रादिक देवोने कोण न जाणे ?" ते सांभळी ते श्राद्धदेवे पोतानु पूर्वभवनु रूप देखाडी तेने कह्यु के—"हु नागिल नामनो तारो पूर्वभवनो मित्र छु ते वखते तारु कुमरण जोइ में वैराग्यथी दीक्षा ग्रहण करी हती, तेथी हु आवी लक्ष्मी पाम्यो छु ते वखते में तने निषेध कर्यो छतां तु बाळमरणवडे मरण पामी आवु कुदेवपणुं पाम्यो छे परतु जो तें ते वखते जिनधर्म अगीकार कर्यो होत, तो मारी जेम तु पण आवी स्वर्गलक्ष्मी पाम्यो होत" आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी प्रतिबोध पामी ते विद्युन्माली बोल्यो के—"गयेली बाबतनो शोक करवाथी शु फळ छे ? हवे कांइक तेवु कहो, के जेथी परभवमां मने शुभ फळ प्राप्त थाय" त्यारे श्राद्धदेवे तेने कह्यु के—"श्री महावीर स्वामीनी प्रतिमा तु बनाव तेथी ज तने बीजा भवमां बोधिरत्न—समकित सुलभ थशे अरिहतनी प्रतिमा करनारने दारिद्र्य, दुर्गति अने दुःख प्राप्त थतां नथी अने स्वर्ग तथा मोक्षना सुखने आपनार धर्म प्राप्त थाय छे" आ प्रमाणे ते श्राद्धदेवनो उपदेश अगीकार करी ते विद्युन्माली देव क्षत्रियकुड नामना गाममां श्रीमहावीरस्वामी पासे गयो त्यां शरीरपर अलकारो धारण करेला, विकार रहित, सुदर आकृतिवाळा, सद्गुणना निधानरूप अने भावयतिपणु साधता होवाथी गृहस्थाश्रममां पण कायोत्सर्गे रहेला श्रीवर्धमानस्वामीने जोइ तेणे प्रणाम कर्यो त्यारपछी ते देव तरत ज महाहिमवान पर्वतपर गयो, अने त्यांथी तेणे अत्यत सुगधवडे विश्वने आनद आपे तेवु गोशीर्ष चदननु काष्ठ ग्रहण कर्यु ते वडे जेवु जोयु हतु तेवु प्रभुनु प्रतिबिंब बनावी जेम हारने दाबडामां नांखे तेम ते प्रतिमाने एक काष्ठना सपुटमां स्थापन करी

पछी ते विद्युन्माली देवे समुद्रमां दृष्टि करी तो त्यां उत्पातने लीधे छ मासथी आम तेम अथडातुं एक वहाण जोयुं. तेमां बेठेला सांयात्रिक लोको आकुळ व्याकुळ थयेला हता. आवी स्थिति जोइ ते देवे तरत ज उत्पातनुं हरण करी सांयात्रिक लोकोने प्रत्यक्ष थइ तेमने ते काष्ठसंपुट आपी कह्युं के–" हे लोको ! आ संपुटमां देवाधिदेवनी चंदनमय प्रतिमा स्थापन करेली छे. आने तमारे वीतभय नामना पत्तनमां लइ जइ त्यांना राजाने आपी कहेवुं के–" आ संपुट हर्षथी देवाधिदेवनुं नाम लेवाथी भेदाय तेम छे. " तमारो छ मासनो उत्पात में हरण कर्यो छे, तेथी आटलुं मारुं कार्य तमारे करवानुं छे. " आ प्रमाणे देवनुं वचन ते सांयात्रिकोए हर्षथी अंगीकार कर्युं. पछी विद्युन्माली देव तत्काळ अदृश्य थयो.

अनुक्रमे ते सांयात्रिको समुद्रनो पार पामी वीतभय पत्तनमां गया. त्यां तापसना धर्ममां भक्तिवाळा उदायन राजानी पासे ते संपुट लइ गया, अने देवे कहेलुं वृत्तांत पण तेओए राजाने जणाव्युं. ते सांभळी घणा ब्राह्मणो अने योगीओ विगेरे त्यां एकठा थया. तेमांथी केटलाक बोल्या के–" वेद अने सृष्टिना रचनार होवाथी ब्रह्मा ज देवाधिदेव छे, तेथी तेना नामथी आ संपुट भेदी शकाशे. " एम कही तेओए ब्रह्मानुं नाम लइ ते संपुटनी वच्चे तीक्ष्ण कुठार नांख्यो, परंतु शास्त्र भूली जवाथी जेम पंडित स्खलना पामे तेम ते कुठार स्खलना पाम्यो. पछी बीजा केटलाक बोल्या के–" जे देव युगने अंते जगतने पोताना उदरमां धारण करे छे, तथा दुनियाना शत्रुरूप दैत्योनो जे विनाश करे छे, ते विष्णु ज देवाधिदेव छे. " एम कही तेनुं नाम लइ तेओए पण कुठार चलाव्यो, परंतु ते पण निष्फळ थयो. पछी बीजा केटलाक बोल्या के–"

ब्रह्मा अने विष्णु पण जेना अंशरूप छे, जे पोतानी मेळे उत्पन्न थयेला छे अने जे सर्व विश्वनु कारण छे ते महादेव ज देवाधिदेव छे " एम कही तेनु नाम लइ तेओए पण ते सपुटपर कुठारनो प्रहार कर्यो परन्तु सिंहना पुच्छवडे पर्वतना तटनी जेम ते कुठारवडे ते सपुट भेदायु नहीं त्यारपछी ते सर्वे विलखा थइने विचार करवा लाग्या तेटलामां ते वृत्तांत सांभळी प्रभावती राणी पण कौतुकथी त्यां आवी. तेणीए विधि प्रमाणे ते सपुटनी पूजा करी अमृत जेवी मधुर वाणीथी कह्यु के–" जेणे राग द्वेष अने मोहनो सर्वथा विनाश कर्यो छे, तथा जे अष्ट महाप्रातिहार्योवडे युक्त छे, ते देवाधिदेव सर्वज्ञ जिनेश्वर मने दर्शन आपो " आ प्रमाणे कही ते राणीए कुठारवडे ते सपुटनो जराक स्पर्श कर्यो के तरत ज सूर्यना किरणवडे कमळनी जेम ते सपुट विकास पाम्यु–उघडी गयु, एटले तेमांथी समुद्रमांथी लक्ष्मीनी जेम नहीं करमायेला पुष्पनी माळाने धारण करती अने सर्व अगे मनोहर एवी श्री महावीरस्वामीनी मूर्ति प्रगट थइ तेने जोइ प्रभावती राणी वचनथी न कही शकाय तेवा हर्षने पामी पछी भक्तिवडे ते प्रतिमानी पूजा करी रसिक स्तवनोवडे तेनी स्तुति करी आ प्रमाणे प्रत्यक्ष आश्चर्य थवाथी लोकोमां जैनधर्मनी महा प्रभावना थइ अने उदायन राजा पण जैनशासनमां कांइक रुचिवाळो थयो तेथी ते राणाए अन्त पुरमा ज मनोहर चैत्य कराव्यु महोत्सव पूर्वक तेमां ते सर्वज्ञनी प्रतिमा स्थापन करी पछी हमेशां प्रभावती राणी भक्तिथी तेनी त्रिकाळ पूजा करवा लागी, अने पूजाने अते ते राणी प्रभुनी पासे नृत्य करती, ते वखते राजा पोते वीणा वगाडतो हतो

एकदा प्रभावती राणी विधिपूर्वक प्रभुनी पूजा करी तेनी पासे नृत्य करवा लागी ते वखत राजाए तेणीनु मस्तक

जोयुं नहीं. तेथी व्यग्र थयेला राजाना हाथमांथी वीणानी कंबा नीचे पडी गइ. ते वखते नृत्यमां भंग थवाथी कोपायमान थयेली राणीए राजाने कह्युं के–" शुं मारा नृत्यमां कांइपण दोष आव्यो के जेथी तमे वीणा वगाडवानो त्याग कर्यो ?" ते सांभळी राजाए कांइपण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं. त्यारे राजाने आग्रहथी पूछयुं, एटले राजाए तेणीने सत्य हकीकत कही. ते सांभळी महा सत्त्ववाळी राणी बोली के–" हे स्वामी ! हुं चिरकाळथी श्रावकधर्मनुं सेवन करुं छुं, तेथी मारे मृत्युनो भय नथी, तो आ अल्प आयुष्यने सूचवनारा निमित्तथी तमे शामाटे खेद पामो छो ?" आ प्रमाणे कही तेणीए राजाने शांत कर्यो.

एकदा प्रभावती राणीए स्नान करी पूजाने माटे वस्त्रो लाववानुं दासीने कह्युं, त्यारे ते दासी संभ्रमथी–उतावळथी श्वेत वस्त्रने बदले रातां वस्त्र लावी. ते जोइ कोप पामेली राणीए कह्युं के—" जिनेश्वरनी पूजा करवा माटे चैत्यमां मारे जवुं छे, ते वखते आ रातां वस्त्रो मने केम आपे छे ?" एम कही राणीए दासी उपर पोताना हाथमां रहेला दर्पणनो प्रहार कर्यो, ते तेणीने मर्मस्थानमां लागवाथी ते तत्काळ मरण पामी. ते जोइ पश्चात्ताप करती राणीए विचार कर्यो के–" आ निरपराधी दासीनो घात करवाथी मारा व्रतनो भंग थयो. तेथी हवे अनशन ग्रहण करीने आ पापनो हुं नाश करुं. कारण के व्रतनो भंग थवाथी विवेकी माणसे जीववुं योग्य नथी." आ प्रमाणे विचारी राणीए पोतानो अभिप्राय राजाने कह्यो. ते सांभळी राजाए कह्युं के—" हे देवी ! मारुं जीवित तारे स्वाधीन छे, तेथी हुं तने अनुमति आपतो नथी." ते सांभळी देवीए कह्युं के–"हे स्वामी ! ते वखतना दुर्निमित्तथी तमे मारुं अल्प आयुष्य जाणो छो, छतां मारा स्वार्थनो तमे

विनाश केम करो छो ?" त्यारे राजाए कह्यु के–"हे प्रिया! जो तु देवपणु पामीने मने सारी रीते जैनधर्ममां प्रतिबोध पमाड, तो हु तने रजा आपु " ते सांभळी राजानु वचन अंगीकार करी प्रभावती राणी अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गइ "श्राद्धधर्मनी आराधना करनारने आ स्वर्गप्राप्तिरूप फळ मळे ते तो प्रासंगिक फळ छे. मुख्य फळ तो तेनु मोक्ष छे."
त्यारपछी देवदत्ता नामनी कुब्जा दासी निरंतर भक्तिपूर्वक ते जिनप्रतिमानी पूजा करवा लागी

हव ते प्रभावती देव स्वर्गादिकथी राजाने प्रतिबोध करवा लाग्यो परंतु ते राजाए तापसनी भक्तिनो त्याग कर्यो नहीं त्यारे ते देव एकदा तापसनु रूप लइ राजानी पासे आव्यो, अने तेने मनोहर अमृतफळ आप्या तेनो स्वाद लइ आनंद पामेला राजाए तेने पूछ्यु के–" हे पूज्य ! आवा फळो क्यां थाय छे" ? तेणे कह्यु के–"हे राजा ! आ नगरथी थोडे दूर अमारो आश्रम छे, त्यां आवां फळो घणां थाय छे." ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के–" एक वखत तृप्ति थाय त्यां सुधी आवां फळो खाउ तो ठीक " एम विचारी ते तापसनी साथे ते राजा तेना आश्रममां गयो त्यां मनोहर फळो जोइ राजा ते लेवा गयो, तेटलामां त्यां रहेला बीजा मायावी तापसो आक्रोश सहित बोल्या के–" अरे ! तु कोण छे ? केम अहीं आव्यो ?" इत्यादिक कही क्रोधथी राजाने मारवा दोड्या ते जोइ राजा भय पाम्या, अने "आ तापसोनो परिचय करवो सारो नथी " एम विचारी तेओना मारथी बचवा माटे एकदम नाठो मार्गमां कोइ उद्यानमां मुनिओने जोइने राजा तेमने शरणे गयो, अने बोल्यो के—"हे पूज्यो ! आ पापी तापसोथी मारु रक्षण करो " मुनिओ बोल्या के—"हे राजा ! तमे भय पामशो नहीं " आ प्रमाणे मुनिओए कह्यु के तरत न जाणे लज्जा पाम्या होय तेम ते तापसो पाछा वळी पोताने

स्थाने चाल्या गया. त्यारपछी निर्भय थयेला वीतभय नगरना स्वामीने मुनिओए अमृत जेवां वचनोवडे जैनधर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी प्रतिबोध पामी राजाए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. 'देवनो करेलो उपाय प्रातःकाळना मेघनी गर्जनानी जेम निष्फळ थतो नथी.' पछी ते देव तत्काळ प्रगट थइ राजाने धर्ममां स्थिर करी स्वर्गे गयो. राजाए पण तरत ज पोताने सभामां बेठेलो जोयो. त्यारपछी ते राजा निरंतर नवी नवी पूजाओवडे मोटा वैभवथी ते प्रतिमानी पूजा करवा लाग्यो.

आ अवसरे गांधार नामनो कोइ श्रावक चारित्र ग्रहण करवानी इच्छा थवाथी जिनेश्वरनां कल्याणकोनां सर्व स्थानो वांदवा नीकळ्यो. अनुक्रमे वैताढ्य पर्वतपर रहेली शाश्वती प्रतिमाओने वांदवानी इच्छा थवाथी तेणे उपवास करी शासनदेवीनी आराधना करी. तेथी तुष्टमान थयेली देवीए तेने ते प्रतिमाओनां दर्शन कराव्यां, अने सकळ वांछितनी सिद्धि करनार सो गुटिकाओ तेने आपी. त्यांथी पाछा फरेला ते श्रावके देवनी आपेली ते चंदननी प्रतिमा सांभळी, तेथी तेने वांदवा माटे ते वीतभय पत्तनमां आव्यो. त्यां ते दैवयोगे मांदो पडयो. ते वखते ते कुब्जा दासीए पितानी जेम तेनी सारी भक्ति करी. केटलेक दिवसे ते श्रावक सारो थयो, त्यारे ते सर्व गुटिकाओ कुब्जा दासीने आपी तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी दासीए हर्ष पामी विचार्युं के—"आ गुटिकाना प्रभावथी हुं सुंदर आकृतिवाळी अने सुवर्ण जेवा वर्णवाळी थाउं." एम विचारी तेणीए एक गोळी खाधी. तत्काळ ते देवी जेवी मनोहर थइ गइ. तेथी ते सुवर्णगुलिका नामथी प्रसिद्ध थइ. एकदा तेणीए विचार कर्यो के—"आ मारुं रूप पति विना अरण्यना पुष्पनी जेम निष्फळ छे. आ राजा तो मारा पिता समान होवाथी तेनापर मने राग थतो नथी, तेथी मोटी समृद्धिवाळो चंडप्रद्योत राजा मारा भर्ता थाओ." एम विचारी तेणीए

एक गुटिका खाधी तेना प्रभावथी देवीए चंडप्रद्योत राजा पासे जइ सुवर्णगुलिकाना रूपनु वर्णन कर्युं ते सांभळी प्रद्योत राजाए तेणीने बोलावी लाववा माटे पोताना एक दूतने वीतभय पत्तनमां मोकल्यो ते दूते जइ तेणीने राजानो संदेशो कह्यो, त्यारे ते बोली के—' जो मने लइ जवी होय तो प्रद्योत राजा पोते मने तेडवा आवे, कारण के में तेमने कोइ पण वखते जोया नथी " आ प्रमाणे तेणीनु वचन दूते जइ प्रद्योत राजाने कह्यु त्यारे ते राजा पण अनलगिरि नामना गंधहस्तीपर आरूढ थइ रात्रिने वखते वीतभयपत्तनमां आवी तेणीने मळ्या तेने जोइ सुवर्णगुलिका तेनापर आसक्त थइ अने बोली के—" हे राजा ! जो आ प्रभुनी प्रतिमा तमे साथे लइ ल्यो, तो हु तमारी साथे आवु " ते सांभळी प्रद्योते कह्यु के—" आने ठेकाणे बीजी एवी ज प्रतिमा मूकवी जोइए, माटे ते लइने हु आवु छु " एम कही ते अवंतीपति तत्काळ अवंती नगरीमां गया. अने तेना जेवी ज नवी वीरप्रभुनी प्रतिमा भरावी कपिल नामना महर्षि पासे तेनी प्रतिष्ठा करावी फरीथी गंधहस्ती पर आरूढ थइ रात्रिने समये वीतभयपत्तनमां आव्यो हस्तीने नगर बहार मूकी ते नवी प्रतिमाने लइ प्रद्योत राजा राजमहेलमां गयो त्यां नवी प्रतिमा मूकी आगळनी प्रतिमाने लइ सुवर्णगुलिका सहित ते प्रद्योत राजा हस्तीपर आरूढ थइ एकदम अवंती नगरीमां आव्यो ते वखते ते गंधहस्तीए वीतभय पत्तननी बहार विष्टा तथा मूत्र कर्यां हता, तेना गंधथी ते पत्तनना सर्व हस्तीओनो मद नाश पाम्यो प्रात काळे चकरा जेवा थइ गयेला ते हाथीओने जोइ भयभ्रांत थयेला महावतोए ते हकीकत राजाने कही त्यारे राजाए पोताना सेवकोने तेनो निर्णय करवा हुकम कर्यो, एटले तेओए अवंतीना मार्गमा हाथीनां पगलां जोइ पाछा आवी राजाने कह्यु के—" खरेखर अनलगिरि हस्तीपर आरूढ

थइ चंडप्रद्योत राजा अहीं आव्यो होनो जोइए. केमके तेना विना बीजा कोइ पासे गंधहस्ती छे एम सांभळ्युं नथी. ते हस्तीना ज गंधथी आपणा हाथीओ सर्वे मदरहित थइ गया छे." आ प्रमाणे तेओ वात करे छे, तेटलामां कोइ कंचुकीए आवी राजाने कह्युं-"आपणा महेलमां आजे सुवर्णगुलिका दासी नथी." ते सांभळी राजाए कह्युं के-"ते राजा पोते आवी सुवर्णगुलिका दासीने हरी गयो जणाय छे, तेमां आपणने कांइ हरकत नथी. परंतु ते प्रभुनी प्रतिमा छे के नथी ? तेनी तपास करो." सेवकोए स्थूळदृष्टिए जोइने कह्युं के-" प्रतिमा तो ते ठेकाणे छे." पछी पूजाने समये राजा पोते चैत्यमां गयो, त्यां करमाइ गयेला पुष्पनी माळा जोइ खेद पामी राजाए विचार्युं के—" जे मूळ प्रतिमा हती तेने स्थाने आ बीजी प्रतिमा मूकी छे, तेम न होय तो आ पुष्पो कदापि करमाय नहीं." त्यारपछी राजाए पोतानो दूत प्रद्योत राजा पासे मोकल्यो. तेणे जइ प्रद्योतने कह्युं के—" श्री उदायन राजा मारा मुखवडे तमने कहेवरावे छे के—चोरनी जेम दासीने अने प्रतिमाने लइ जतां तमने लज्जा केम आवी नहीं ? अथवा दासीपर आसक्त थयेला तमारी आवी चेष्टा होय ते योग्य ज छे. तोपण कार्याकार्यने जाणनारा मारे दासीनुं कांइ पण प्रयोजन नथी. मात्र मारी प्रतिमानुं ज हुं कुशळ इच्छुं छुं. माटे ते शीघ्रपणे मोकली आपो. जो ते प्रतिमाने नहीं आपो तो श्रीउदायन राजा प्रलयकाळना उछळता समुद्र जेवी सेना सहित अहीं आवशे. एम तमारे नक्की जाणवुं." ते सांभळी क्रोध पामेलो चंडप्रद्योत राजा बोल्यो के—" हे दूत ! खरेखर तुं निर्लज्ज छे, के जेथी मारी पासे पण आवां वचन बोले छे. रत्नरूप प्रतिमा अने दासीनुं हरण करतां मने लज्जा शानी ? गमे ते प्रकारे रत्नने पोतानुं करवुं एम शुं तें सांभळ्युं नथी ? दासीने के प्रतिमाने पाछी आपवा माटे हुं हरी लाव्यो नथी, छतां तेने

ग्रहण करता जो तारो स्वामी इच्छा करशे, तो ते अवश्य मारा हाथथी मरण पामशे, माटे तेने अहीं आववानो प्रयास करवो निष्फळ छे. छतां आवशे तो मने ते जीती शकवानो नथी हाथी अति बळवान होय तो पण कांइ पर्वतने चलावी शकतो नथी " आ प्रमाणे तेना वचनो दूते जइ उदायन राजाने कह्यां ते सांभळी राजाए तत्काळ यात्रानी भेरी वगडावी ते वखते जेष्ठ मास हतो तोपण उदायन राजाए सर्व सैन्य अने दश मुकुटबद्ध राजाओ सहित अवंती तरफ प्रयाण कर्युं अनुक्रमे सैन्यवडे पृथ्वीने अने धूळवडे दिशाओने आच्छादन करतो ते राजा निर्जळ प्रदेशवाळी मरुभूमिमां आव्यो त्यां जळ विना समग्र सैन्य कंठप्राण थइ गयु ते वखते राजाए प्रभावती देवनु स्मरण कर्युं, एटले तत्काळ ते देवे आवी त्रण सरोवर जळथी भरी दीधा तेमाथी शीतळ जळपान करी सर्व सैन्य स्वस्थ थयु " अन्न विना जीवी शकाय छे, पण जळ विना जीवी शकातु नथी " पछी राजानी रजा लइ ते देव स्वस्थाने गयो अने उदायन राजा पण अनुक्रमे अवंती पहोंच्यो तेणे प्रद्योतने दूतद्वारा कहेवराव्यु के—" घणा मनुष्योनो विनाश करवाथी शु फळ छे ? आपणा बनेनु परस्पर युद्ध हो तेमां पण तमे रथ, अश्व के हस्तीपर आरूढ थइने के वाहन विनान जे रीते युद्ध करवा इच्छता हो, ते कहो, के जेथी हु पण ते ज प्रमाणे युद्धमां उतरु " ते सांभळीने प्रद्योते कह्यु के— " रथमां बेसीने आपणु युद्ध थाओ " आवु वचन दूतना कहेवाथी जाणी उदायन राजा रथमां आरूढ थयो अहीं प्रद्योत राजाए विचार कर्यो के—" रथमां बेसीने हु उदायन राजाने जीती शकीश नहीं " एम विचारी अनलगिरीने सज्ज करी तेनापर बेसीने अवंतीस्वामी युद्धमां आव्यो तेने गजारूढ जोइ उदायन राजाए कह्यु के—" हे पापी ! तु तारी प्रतिज्ञानो लोप करी हाथीपर चडीने आव्यो

छे, तो पण हुं तने छोडीश नहीं." एम कही बुद्धिमान उदायन पोताना रथने गोळ मंडळरूपे भमाडवा लाग्यो. अने प्रद्योत पण पोताना हाथीने रथनी पाछळ पाछळ भमाडवा लाग्यो. तेमां ते गंधहस्ती चालतां चालतां जे जे पग उंचो करतो हतो ते ते पगने उदायन राजा तीक्ष्ण बाणोवडे वींधवा लाग्यो. सर्व पगो वींधाइ जवाथी ते हस्ती नीचे पडयो के तरत ज बळवान उदायने ते राजाने हाथीपरथी नीचे पाडी बांधी लीधो. पछी ते प्रद्योतना कपाळमां 'आ मारी दासीनो पति छे' एवा अक्षरो लखी हर्षथी ते दिव्य प्रतिमा लेवा गयो. प्रतिमानी नमस्कारपूर्वक पूजा करीने तेने उपाडवानो घणो उद्यम कर्यो, पण ते प्रतिमा जरा पण चलायमान थइ नहीं. ते वखते आकाशवाणी थइ के—"वीतभय पत्तन धूळनी वृष्टिथी स्थळरूप थइ जवानुं छे, तेथी हे राजा! हुं त्या आवीश नहीं." ते सांभळी उदायन राजा पाछो फरी प्रद्योत राजाने साथे ज लइ पोताना देश तरफ चाल्यो. मार्गमां जतां वर्षाकाळ आव्यो, तेथी प्रयाण न थइ शकवाने लीधे राजाए त्यां ज सैन्यनो पडाव नांख्यो. ते वखते चोतरफ धूळनो किल्लो करी ते दशे राजाओ तेनी रक्षा करवा लाग्या. त्यां वेपार करवा माटे घणा वेपारीओ पण आवीने रह्या. ते शिबिरनुं नाम कोइ पूछतुं त्यारे लोको तेने दशपुर कहेता हता.

उदायन राजा हमेशां चंडप्रद्योत राजाने पोतानी साथे ज भोजनादिक करावतो हतो. तेवामां पर्युषणा पर्व आव्युं, त्यारे उदायन राजाए ते दिवसे उपवास कर्यो. तेथी राजानी आज्ञाथी रसोइयाए प्रद्योतने "आजे तमारे शुं भोजन करवुं छे?" एम पूछ्युं, ते सांभळी तेणे विचार कर्यो के—"कोइ दिवस मने भोजनादिक माटे पूछ्युं नथी, अने आजे ज पूछ्युं, माटे जरुर मने आजे विषादिक खवरावी मारी नांखवो हशे." एम विचारी तेणे रसोइयाने पूछ्युं के—"तुं मने

आजे केम पूछे छे ?" रसोइयाए कह्यु के—"आजे सांवत्सरिक पर्व होवाथी अमारा स्वामीए परिवार सहित उपवास कर्यो छे तेथी आजे मात्र तमे न जमवाना होवाथी तमने पूछु छु" ते सांभळी अवंतीपतिए कह्यु के—"तें मने आजे वार्षिक पर्व समारी आप्यु ते बहु ठीक थयु मारे पण आजे उपवास छे केमके मारा मातापिता पण श्रावक हता" आवु प्रद्योतनु वचन रसोइयाए उदायन राजाने कह्युं ते सांभळी तेणे कह्यु के—"ते केवो श्रावक छे ! ते हु जाणु छु, परंतु ते मायावी श्रावक पण बंधनमां हशे त्यांसुधी मारु पर्युषणा पर्वनु प्रतिक्रमण शुद्ध थशे नहीं" एम कही तेणे प्रद्योतने छोडी मूक्यो क्षमा अने पराक्रमना स्थानरूप उदायन राजाए तेना कपाळना अक्षरो ढांकवा माटे तेने कपाळे पट्टबंध कर्यो, त्यारथी राजाओने ते पट्टबंध लक्ष्मीना (शोभाना) स्थानरूप थयो पछी उदायन राजा तेने ते देश आपी वर्षाकाळ उतर्या पछी पोताना वीतभयपत्तने गयो वेपारने माटे आवेला वणिग्जनो त्यां ज रह्या, तेथी त्यां दशपुर नामनु नगर थयु.

एकदा उदायन राजा पौषध करीने पौषधशाळामां रह्या हता, त्यां रात्रिए धर्मजागरण करतां तेने विचार थयो के—"ते नगर, गाम, आकर अने द्रोण विगेरे धन्य छे के जेने जगद्गुरु श्री वर्धमानस्वामी पोताना चरणवडे पवित्र करे छे जेओ वीरप्रभुनी वाणी सांभळी श्रावकधर्मने अने चारित्रने ग्रहण करे छे ते राजाओने पण धन्यवाद घटे छे जो कदाच प्रभु पोताना चरणकमळवडे आ वीतभयपत्तनने पवित्र करे तो हु तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी कृतार्थ थाउ" आवा तेना विचारने जाणी श्रीवीरप्रभु चंपानगरीथी विहार करी वीतभयपत्तनना उद्यानमां समवसर्या प्रभुनु आगमन सांभळी हर्ष पामेला उदायन राजाए प्रभु पासे आवी वंदना करीने देशना सांभळी पछी आ प्रमाणे विनंति करी के—

" हे पूज्य ! मारा पुत्रने राज्य सोंपी हुं दीक्षा लेवा आपनी पासे आवुं, त्यांसुधी आप कृपा करीने अहीं ज रहेजो. " स्वामीए कह्युं—" आ बाबतमां प्रमाद करवो नहीं. " ते सांभळी राजा स्वामीने नमी घेर आवी विचार करवा लाग्यो के—" जो हुं मारा अभीचि नामना पुत्रने राज्य आपीश तो ते राज्यमां मूर्छा पामशे अने तेथी ते चिरकाळ सुधी भवभ्रमण करशे. तेथी करीने प्रारंभमां मनोहर अने परिणामे भयंकर एवुं आ विषफळनी जेवुं राज्य हुं मारा पुत्रने नहीं आपुं. " एम विचारी तेणे पोतानी व्हेनना पुत्र केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो अने केशिए करेला उत्सवपूर्वक राजाए प्रभुपासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी एक उपवासथी आरंभीने मासक्षपण पर्यंतना दुस्तप तपवडे ते राजर्षि कर्मनुं अने कायानुं शोषण करीने विचरवा लाग्या. एकदा अंतप्रांत आहार करवाथी तेमना शरीरमां अनेक रोग उत्पन्न थया. ते वखते तेने वैद्योए ते रोगनुं औषध दहीं छे एम कह्युं. तेथी ते राजर्षि गोकुळमां विचरवा लाग्या. केमके त्यां निर्दोष दहींनी भिक्षा सुलभ होय छे.

एकदा उदायन राजर्षि विहारना क्रमे वीतभयपत्तनमां गया. ते वखते अकारण शत्रुरूप मंत्रीओए केशिराजाने कह्युं के—" हे राजा ! आ तमारा मामा परिषहोथी पराभव पाम्या छे, तेथी राज्य लेवानी इच्छाथी अहीं आव्या छे, तेनो तमारे विश्वास करवो नहीं. " ते सांभळी केशि राजा बोल्यो के—" ते राज्यना स्वामी पोतानुं राज्य ले, तो तेमां मारे शुं ? शेठ पोतानुं धन ग्रहण करे, तेमां वाणोतरने कोप शानो ? " ते सांभळी प्रधानो बोल्या के—" आ क्षत्रियोनो धर्म नथी. केमके क्षत्रियो तो पिता पासेथी पण बळात्कारे राज्य लइ ले छे. तेथी तमे तेने राज्य पाछुं आपो ते योग्य नहीं. एवी रीते कोइ पण पाछुं आपे ज नहीं. " ते सांभळी केशिए तेमने पूछ्युं के—" त्यारे मारे शुं करवुं ? "

ते दुष्टोए जवाब आप्यो के—" तेने कोइनी मारफत विष अपावो " आ प्रमाणे मंत्रीओना भरमाववाथी ते मंदबुद्धिवाळा केशिए तेमनु वचन अंगीकार कर्युं पछी केशिराजाए कोइ आभिरी पासे ते राजर्षिने विषमिश्रित दहीं अपाव्यु परंतु देवीए तेमांथी विषने हरी लीधु अने कह्यु के—" हे मुनि ! विषमिश्रित दहीं तमने मळशे, माटे तमे दहींनो त्याग करो." त्यारे तेणे दहींनो त्याग कर्यो एटले दहीं विना तेनो व्याधि वधवा लाग्यो तेथी मुनिए फरी दहीं लेवा मांडयु तेमां पण विष आव्यु, ते देवीए हरी पूर्वनी जेम दहींनो निषेध कर्यो त्रीजीवार पण देवीए विष हरी लीधु, अने ते मुनिनी भक्तिमां लीन थयली होवाथी ते तेनी पाछळ ज भमवा लागी एकदा देवी प्रमादमां रही, ते वखते मुनिए दहीं खाधु. " जे थवानु होय ते कोइ पण प्रकारे थाय न छे " त्यारपछी मुनिए पोताना अगनी व्याकुळता जोइ विषभक्षण थयानु जाणी तत्काळ समताभावमां रही अनशन ग्रहण कर्युं त्रीश दिवस सुधी अनशन पाळी समाधिमा रही केवळज्ञान पामी ते राजर्षि मोक्षे गया

ते उदायन राजर्षि मुक्ति पाम्या पछी देवी तेनी पासे आवी अने मुनिने काळधर्म पाम्या जोइ ते मनमां अत्यंत क्रोध पामी तेथी धूळनी वृष्टि करीने ते देवीए वीतभयपत्तनने स्थळरूप बनावी दीधु मात्र एक कुमार,के जे मुनिनो शय्यातर होवाथी निरपराधी हतो तेने ते देवी त्यांथी सिनपल्लीमां लइ गइ, ते ज मात्र एक जीवतो रह्यो त्यां तेना नामथी ते देवीए कुंभकारकृत नामनु नगर वसाव्यु देवनी शक्तिथी शु न थाय !

अहीं जे वखते उदायन राजाए केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो, ते वखते मनमा खेद पामेला अभीचिए विचार कर्यो के—

" हुं प्रभावतीनी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयो छुं, नीतिवाळो छुं अने भक्तिमान पण छु; छतां राजाए केशिने राज्य आप्युं, ते मारा पिताए विवेकी छतां योग्य कर्युं नथी. "भाणेजने घरमां लाववो नहीं" एम लोकमां पण कहेवत छे ते सत्य छे. पुत्रने छोडी भाणेजने राज्य आपतां मारा पिताने केम कोइए वार्या पण नहीं ? तेम ज तेने केम अपशुकन पण थयां नहीं ? अथवा तो मारा पिता प्रभु छे तेथी तेणे पोतानी इच्छा प्रमाणे कर्युं, तो भले कर्युं, परंतु हुं उदायन राजानो पुत्र थइने मारे केशिनी सेवा करवी ते योग्य नथी." एम विचारी ते अभीचि नगरमांथी नीकळी चंपानगरीमां पोतानी मासीना पुत्र कूणिक राजा पासे गयो. त्यां कूणिक राजाए तेनो सारो सत्कार कर्यो, तेथी ते मोटी समृद्धिने पाम्यो. तेणे चिरकाळ सुधी अतिचार रहित श्राद्धधर्मनुं पालन कर्युं, परंतु पिताना तिरस्कारनुं स्मरण थवाथी तेनापरना वैरनो तेणे त्याग कर्यो नहीं. ते अभीचि घणा वर्षो सुधी श्रावकधर्मने पाळी पितापरना वैरनी आलोचना कर्या विना एक पक्षनुं अनशन करी काळधर्म पाम्यो अने असुरकुमारने विषे एक पल्योपमना आयुष्यवाळो ते महर्द्धिक देव थयो. त्यांथी आयुष्यने क्षय च्यवी महाविदेहमां जन्म पामी ते अभीचिनो जीव सिद्धिपदने पामशे.

इति श्री उदायन राजर्षि कथा.

तहेव कासीराया, सेओसच्चपरक्कमे । कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥

अर्थ—(तहेव) तेज प्रमाणे (सेओसच्चपरक्कमे) अत्यंत प्रशंसा करवा लायक एवा सत्यने विषे एटले चारित्रने विषे पराक्रमवाळा (कासीराया) काशी देशना नंदन राजाए (कामभोगे) कामभोगनो (परिच्चज्ज) त्याग करीने (कम्म-

महावण) कर्मरूपी महावननो (पहणे) नाश कर्यो ४६

काशीराजनी कथा

वाराणसी नगरीमां अग्निशिख नामे राजा हतो तेने जयती नामनी प्रिया हती तेनी कुक्षिथी सातमो बळदेव पुत्र उत्पन्न थयो तेनु नदन नाम पाडयु त्यारपछी ते ज राजानी शेषवती नामनी बीजी राणीथी दत्त नामनो वासुदेव पुत्र उत्पन्न थयो अवसरे राजाए दत्तने राज्य आप्यु तेणे नदननी सहायथी त्रण खड भरत साध्यु चिरकाळ सुधी छवीश धनुषनी कायावाळा एवो भाइओए राज्यलक्ष्मी भोगवी अनुक्रमे छप्पन हजार वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी दत्त वासुदेव पांचमी नरकपृथ्वीमां गयो तेना मरण पछी वैराग्य पामेला नदने दीक्षा ग्रहण करी. छेवट केवळज्ञान प्राप्त करी पांसठ हजार वर्षनु आयुष्य भोगवी नदन मुनि मोक्षपद पाम्या

इति काशीराजकथा

तेहेव विजंओ रीया, आणट्ठाकित्ति पंव्वए । रज्जं तुं गुणसमिद्ध, पयहित्तु महायसो ॥ ५० ॥

अर्थ—(तहेव) तेमज वळी (आणट्ठाकित्ति) नाश पामी छे अपकीर्ति जेनी अथवा ' आणट्ठा ' एटले आर्त्तध्यान रहित अने ' कित्ति ' कीर्तिवाळो तथा (महायसो) महा यशस्वी एवो (विजओ) विजय नामनो (राया) राजा बीजो बळदेव (गुणसमिद्ध तु) गुणे करीने समृद्धिवाळा एवा पण (रज्ज) राज्यनो (पयहित्तु) त्याग करीने (पव्वए) प्रव्रजित

थयो. अहीं गुणे करीने समृद्धिवाळुं राज्य कह्युं तेमां गुण एटले स्वामी, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग अने सैन्य-ए सप्तांग राज्य जाणवुं अथवा गुण एटले कामभोग जाणवा. ५०.

विजयराजानी कथा.

द्वारका नगरीमां ब्रह्मराजनो पुत्र सुभद्रानी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो विजय नामनो बीजो बळदेव हतो. तेनो नानो भाइ द्विपृष्ठ वासुदेव हतो. ते बोंतेर लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मरण पामी नरके गयो, त्यारे विजये वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी, अनुक्रमे केवळज्ञान उत्पन्न करी पंचोतेर लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी विजयमुनि मोक्षपद पाम्या. आ बन्नेनुं देहमान सीत्तेर धनुष्य हतुं.

इति विजयराजकथा.

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेअसा । महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(तहेव) तथा वळी (महब्बलो) महाबळ नामना (रायरिसी) राजर्षि (सिरसा) मस्तकवडे (सिरिं) चारित्रलक्ष्मीने (आदाय) ग्रहण करी एटले माथा साटे अर्थात् जीवितनी अपेक्षा रहितपणे चारित्रलक्ष्मी ग्रहण करीने (अव्वक्खित्तेण) व्यग्रता रहित—स्थिर (चेअसा) चित्तवडे (उग्गं) उग्र (तवं) तप (किच्चा) करीने त्रीजे भवे मोक्ष पाम्या. (ए अध्याहार छे.) ५१.

महाबळ राजानी कथा

आ ज भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामना नगरने विषे अतुल बळवाळो बळ नामे राजा हतो तेने देदीप्यमान कांतिवाळी प्रभावती नामनी राणी हती एकदा रात्रे सुखे सुतेली ते राणीए स्वप्नमां सिंह जोयो. तत्काळ जागृत थइ हर्ष पामीने तेणीए राजाने ते स्वप्न कही तेनु फळ पूछयु राजाए कह्यु—" आ स्वप्नथी तने आपणा कुळरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चंद्र समान पुत्र थशे " ते सांभळी हर्ष पामेली राणीए गर्भ धारण कर्यो अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए शुभ लक्षणोवडे संपूर्ण पुत्र प्रसव्यो त्यारे बळराजाए हर्षथी मोटो उत्सव करी तेनु महाबळ नाम पाडयु पांच धात्रीओथी लालन पालन करातो ते कुमार कळाना समूहने प्राप्त करी मनोहर युवावस्थाने पाम्यो. त्यारे राजाए तेने जाणे आठे दिशाओनी लक्ष्मी होय तेवी आठ राजकन्याओ महोत्सवथी एक दिवसे परणावी पछी राजाए कुमारने तथा वहुओने घणी समृद्धि आपी तेथी ते कुमार सद्गुणवडे मनोहर एवी ते आठे प्रियाओ साथे इच्छा प्रमाणे कामभोग भोगववा लाग्यो

एकदा ते नगरना उद्यानमां पांचसो शिष्योना परिवार सहित श्री विमळनाथ तीर्थंकरनी पट्टपरंपरामां थयेला धर्मघोष नामना आचार्य महाराज पधार्या तेमनु आगमन सांभळी आनंद पामेलो महाबळ कुमार गुरु पासे गयो तेमने वंदना करी कर्मरूपी मळने धोवामां जळसमान धर्मदेशना सांभळी तेथी ते कुमार मंदभाग्यवाळा प्राणीओने दुर्लभ एवो वैराग्य पाम्यो एटले तेणे गुरुने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—" हे पूज्य ! रोगी माणसने जीवाडे तेवा औषधनी जेम मने आ धर्म रुच्यो छे, तेथी हु मारा मातापितानी रजा लइ दीक्षा लेवा माटे अहीं आवु, त्यांसुधी आप मारापर कृपा

करी अहीं ज रहेजो. " ते सांभळी आचार्य महाराजे कह्युं के—" हे राजकुमार! तमारो विचार योग्य छे. माटे आ बाबतमां विलंब करवो नहीं. " पछी कुमारे घेर जइ मातापिताने प्रणाम करी कह्युं के—" हुं धर्मघोष गुरुनी धर्मदेशना सांभळी आनंद पाम्यो छुं. तेथी आप पूज्योनी अनुज्ञाथी हुं तेमनी पासे दीक्षा लेवा इच्छुं छुं. वहाण मळ्या पछी कयो माणस समुद्रमां डुबतो रहे ? " आ प्रमाणे कुमारनुं वचन सांभळी प्रभावती राणी पृथ्वीपर मूर्छा खाइने पडी गइ. पछी शीतोपचारथी सावधान थइ सती ते रुदन करती बोली के—" हे पुत्र ! अमे तारा वियोगने सहन करवा शक्तिमान नथी. तेथी ज्यांसुधी अमे जीवीए छीए त्यांसुधी तुं गृहस्थाश्रममां ज रहे. पछी दीक्षा ग्रहण करजे. " कुमारे कह्युं—" आ जगतमां सर्व संयोगो स्वप्ननी जेवा क्षणिक अने असत् छे, तथा मनुष्यनुं आयुष्य वायुथी हलता दर्भना अग्रभागपर रहेला जळना बिंदु जेवुं चंचळ छे. तेथी हुं नथी जाणतो के पहेलुं कोण जशे ? माटे मने आजे ज प्रव्रज्या लेवानी आज्ञा आपो. " माताए कह्युं—" हे वत्स ! आ तारुं यौवन वयवाळुं शरीर अति मनोहर अने कोमळ छे, माटे हमणां सुख भोगव अने पछी वृद्धावस्थामां दीक्षा ग्रहण करजे. " कुमारे कह्युं—" हे माता ! आ शरीर रोगोथी व्याप्त छे, अशुचिथी भरेलुं छे, मळथी मलिन छे, अने कारागृहनी जेवुं असार छे. आवा शरीरथी मनुष्यने शुं सुख छे ? वळी शरीरमां शक्ति होय त्यारे ज चारित्र लेवुं योग्य छे, वृद्धावस्थामां शरीर अशक्त थवाथी चारित्र बरावर पाळी शकातुं नथी, अथवा ते वखते मन न होय तो पण व्रत जेवुं ज छे, माटे युवावस्थामां ज दीक्षा सफळ थाय छे." प्रभावती माता बोली—" समग्र गुणना स्थानरूप आ आठ स्त्रीओनी साथे हमणां तुं भोग भोगव. हमणां व्रत लेवाथी शुं ? " महाबळ कुमार बोल्यो—

" कष्टथी साधी शकाय तेवा, अज्ञानी जनोए सेवेला, दुःखना अनुबंधवाळा अने विषफळनी उपमावाळा भोगोथी शु फळ छे ? वळी मोक्षने आपनारा आ मनुष्य भवने कयो डाह्यो माणस भोगने माटे हारी जाय ? एक कोडीने माटे रत्नने कोण गुमावे ? " माता बोली—" हे पुत्र ! आ वंश परंपराथी आवेला द्रव्यनो भोगवटो कर, आ पण पुण्यरूपी वृक्षनुं ज फळ छे " कुमारे कह्यु—" हे माता ! जे धन वचगाळामां गोत्रिओ, चोर अने अग्नि विगेरेने आधीन थाय छे, ते धनथी मने लोभ केम पमाडो छो ? वळी अनंत सुखने आपनारो धर्म परभवमां पण साथे आवे छे, अने धन तो तेनाथी विपरीत छे, तेनी तुल्यता शी रीते थइ शके ? " माताए कह्यु—" हे पुत्र ! चारित्र तो अग्निनी ज्वाळानु पान करवा जेवु दुष्कर छे, ते तु सुकुमार अंगवाळो शी रीते पाळी शकीश ? " कुमार हसीने बोल्यो—" हे माता ! एवु शु बोलो छो ? कायर पुरुषोने ज व्रत दुष्कर होय छे जे धीर पुरुषो होय ते तो प्राणनो नाश थाय तोपण पोतानी प्रतिज्ञानु पालन करे छे. तेवा परलोकना अर्थीने ते व्रत काइपण दुष्कर नथी तो हे पूज्य मातुश्री ! मारापरना मोहनो त्याग करी मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो बीजो पण कोइ धर्मनु आचरण करवा इच्छतो होय तेने उत्साह आपवो जोइए, तो पोताना पुत्रने उत्साह आपवो तेमां शु कहेवु ? " आ प्रमाणे उत्कट वैराग्यने पामेला ते कुमारने तेना माता पिता समजावी शक्या नहीं, एटले निरुपाय थइ तेने व्रत लेवानी आज्ञा आपी

त्यारपछी ते महाबळ कुमारने तीर्थना जळवडे अभिषेक कर्यो, चंद्रिकानी जेवा चंदनना द्रव्यवडे तेना शरीरने विलेपन कर्युं, अश्वना मुखना फीण जेवा उज्वळ बे देवदुष्य वस्त्रो तेने पहेराव्यां, पगथी मस्तक पर्यंत मणिमय आभूषणोवडे तेने

शणगारवामां आव्यो, विकस्वर कमळनी जेवुं श्वेत छत्र तेना मस्तकपर धारण करवामां आव्युं, बन्ने बाजु उछळता जळतरंगोनी जेवा चपळ चामरो वींझावा लाग्या, ए रीते हजार मनुष्योए वहन करेली शिबिकामां ते कुमार बेठो. तेनी पाछळ बळराजा सर्व सैन्य सहित चाल्यो. ते वखते भेरी विगेरे वाजित्रोना नादवडे मेघगर्जनानी भ्रांतिथी क्रीडामयूरो पण नृत्य करवा लाग्या. " जे नवा यौवनवाळो छतां मनोहर राज्यलक्ष्मीनो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करे छे, ते आ महाबळ कुमारनो जन्म कृतार्थ छे. " इत्यादिक अनेक प्रकारे सर्व लोको तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. आ रीते चिंतामणिनी जेम अर्थीओने वांछित दान आपतो महाबळ कुमार नगरनी बहार नीकळी आचार्ये पवित्र करेला उद्यानमां आव्यो.

पछी कुमार शिबिकामांथी नीचे उतर्यो. तेने आगळ करीने राजा तथा राणी गुरुपासे जइ हाथ जोडी बोल्या के— "आ अमारो प्रिय पुत्र विरक्त थयो छे, तेथी आपनी पासे दीक्षा ग्रहण करवा आव्यो छे, तेथी अमे पण आपने शिष्यरूप भिक्षा आपीए छीए. " ते सांभळी गुरुए ' बहु सारुं ' एम कह्युं, एटले ते कुमारे ईशान खूणामां जइ सर्व अलंकारोने जाणे विकार होय तेम दूर कर्या. ते अलंकारोने ग्रहण करती प्रभावती राणी मुक्ताफळ जेवा अश्रुना बिंदुओने मूकती बोली के— " हे वत्स ! तुं कदापि धर्मकार्यमां प्रमाद करीश नहीं, अने उत्तम मंत्रनी जेम निरंतर गुरुमहाराजनी आराधना करजे. " पछी गुरुमहाराजने नमस्कार करी राणी सहित राजा पोताने घेर गया, महाबळ कुमारे जाते पोताना केशनो पंचमुष्टि लोच कर्यो, अने धर्मघोष गुरुने भक्तिवडे नमस्कार करी विज्ञप्ति करी के—" हे पूज्य ! संसारसागरमां डूबता मने दीक्षारूपी नाव आपो. " त्यारे सूरिमहाराजे तेने विधिपूर्वक दीक्षा आपी. महा बुद्धिमान ते महाबळ मुनिए तीव्र व्रतनुं पालन करतां

चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो बार वर्ष सुधी अति उग्र तप करी छेवट एक मासनु अनशन करी पांचमा देवलोकमां ते देव थयो त्यां दश सागरोपमनु आयुष्य पूर्ण करी त्यांथी च्यवी वाणिज नामना गाममां सुदर्शन नामे श्रेष्ठ श्रेष्ठी थयो त्यां समकित दर्शनवडे पवित्र आत्मावाळा ते सुदर्शन श्रेष्ठीए चिरकाळ सुधी श्रावकधर्मनु पालन कर्यु.

एकदा ते गाममां श्री महावीर स्वामी समवसर्या ते सांभळी श्रेष्ठी अत्यंत आनंद पाम्यो पछी जिनेश्वर पासे जइ तेमने वंदना करी तेमनी पासे धर्म सांभळी प्रतिबोध पामी विरक्त थयेला सुदर्शन श्रेष्ठीए अर्थीजनोने वांछित द्रव्य आपी प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी पछी ते श्रेष्ठीमुनि सर्व पूर्वनो अभ्यास करी उग्र तप करी अंते सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या

इति महाबलर्षि कथा

आ प्रमाणे महापुरुषोना दृष्टांतवडे ज्ञानपूर्वक क्रियानु फळ बतावी हवे उपदेश आपे छे—

कह धीरे अहेऊहिं, उम्मत्तो व्व महिं चरे । एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥

अर्थ—(सूरा) शूरवीर अने (दढपरक्कमा) दृढ पराक्रमवाळा (एए) आ भरतादिक महापुरुषोए (विसेस) अन्य दर्शनो करतां जैन दर्शनमां उत्तमतारूप विशेष छे एम (आदाय) ग्रहण करीने—जाणीने तेनो ज आश्रय कर्यो छे, माटे (धीरे) धीर पुरुष (अहेऊहिं) क्रिया, अक्रिया, विनय अने अज्ञानरूप कुहेतुवडे (उम्मत्तो व्व) उन्मत्तनी जेम (कह) केम (महिं) पृथ्वीपर (चरे) विचरे ? सत्तत्त्वनो अपलाप करी असत्प्ररूपणानु प्रतिपादन करी पृथ्वीपर केम विचरे ?

न ज विचरे. तेथी करीने धीर पुरुषे आ जिनशासनने विषे ज दृढ चित्त करवुं, ए उपदेश छे. ५२.

अच्चंतनिआणखमा, सच्चा मे भासिआ वई । अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥ ५३ ॥

अर्थ—जिनशासन ज आश्रय करवा लायक छे ए प्रमाणे (मे) में जे (सचा) सत्य (वई) वाणी (भासिआ) कही छे, ते वाणीवडे ज (अच्चंतनिआणखमा) अत्यंत निदान—कर्ममळनुं शोधन, तेने विषे समर्थ एवा पूर्वना जनो (अतरिंसु) आ संसारसमुद्रने तरी गया छे, वर्तमान काळना (एगे) केटलाक जनो (तरंति) महाविदेहमां संसारसमुद्रने तरे छे, अने (अणागया) अनागत काळमां अनेक जनो (तरिस्संति) संसारसमुद्रने तरी जशे. अहीं निदाननी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे—नितरां दीयते–शोध्यते पवित्रीक्रियते आत्माऽनेनेति निदानं. 'दैप् शोधने' इत्यस्य रूपम् ॥ ५३ ॥

तेथी करीने—

कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परिआवसे । सव्वसंगविणिम्मुक्के, सिद्धे हवइ नीरए त्ति बेमि ॥५४॥

अर्थ—(धीरे) धीर एवो साधु (अहेऊहिं) अहेतुवडे एटले क्रियावादी विगेरे कुमतिओना वचननी युक्तिवडे (अत्ताणं) पोताना आत्माने (कहं) केम (परिआवसे) वासित करे ? एटले कुत्सित हेतुना स्थानमां केम वास करावे ? न ज करावे. आ रीते करवाथी शुं फळ थाय ? ते कहे छे—(सव्वसंगविणिम्मुक्के) द्रव्य अने भाव एम सर्व संगथी विनिर्मुक्त एटले धन धान्यादिक द्रव्य अने क्रियावादादिक भावसंगथी रहित, तथा (नीरए) कर्मरूपी रजथी रहित थयो थको (सिद्धे) सिद्ध

(हवइ) थाय छे–सिद्धपणाने पामे छे आ प्रमाणे उपदेश आपीने ते क्षत्रियमुनि पृथ्वीपर विचरवा लाग्या, अने संयतमुनि पण निरतिचार चारित्रनु पालन करी मोक्षपदने पाम्या (त्तिबेमि) एम हु कहु छु, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्यु. ५४

इत्यष्टादशमध्ययनम् १८.



अथ मृगापुत्रीय नामनु ओगणीशमु अध्ययन १९

अढारमा अध्ययनमां भोगनी ऋद्धिनो त्याग करवानु कह्यु ते त्याग अप्रतिकर्मपणाथी एटले शरीरनी शुश्रूषा–सेवा न करवाथी थाय छे तेथी आ अध्ययनमां मृगापुत्रना दृष्टांतवडे अप्रतिकर्मताने कहे छे—

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए। राया बलभद्द त्ति, मिआ तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥

अर्थ—(काणणुज्जाणसोहिए) कानन एटले मोटा वृक्षोवाळा वनो अने उद्यान एटले क्रीडा करवाना बगीचाओवडे शोभित तथा (रम्मे) मनोहर एवा (सुग्गीवे) सुग्रीव नामना (नयरे) नगरने विषे (बलभद्द त्ति) बळभद्र एवा नामनो (राया) राजा हतो (तस्स) ते राजाने (मिआ) मृगा नामनी (अग्गमाहिसी) पट्टराणी हती १

तेसिं पुत्ते बलसिरी, मिआपुत्ते त्ति विस्सुए। अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

अर्थ—(तेसिं) ते बळभद्र राजा तथा मृगा राणीने (बलसिरी) बळश्री नामे (पुत्ते) पुत्र हतो, एटले तेना माता

पिताए तेनुं नाम बळश्री पाडयुं हतुं, तथा (मिश्रापुत्ते त्ति) लोकमां मृगापुत्र एवा नामे (विस्सुए) प्रसिद्ध हतो, एटले लोकोए मृगा राणीनो पुत्र होवाथी तेनुं मृगापुत्र नाम पाड्युं हतुं. ते पुत्र (अम्मापिऊण) मातापिताने (दइए) अत्यंत वल्लभ हतो, तथा (जुवराया) युवराज पद्वीने पामेलो हतो. पिता जीवतां छतां राजने योग्य जे कुमार होय ते युवराज कहेवाय छे. तथा ते कुमार (दमीसरे) दमी एटले इंद्रियोने दमन करनारा साधुओनो ईश्वर–स्वामी हतो. अहीं आ कुमार साधुनो स्वामी थवानो छे माटे भावीने विषे भूतकाळनो निर्देश करीने आ विशेषण आप्युं छे, अथवा द्रव्यनिक्षेपाने आश्रीने आ विशेषण आप्युं छे. २.

नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं । देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइअमाणसो ॥ ३ ॥

अर्थ—(उ) तु पुनः (सो) ते कुमार (निच्चं) निरंतर (मुइअमाणसो) हर्ष पाम्युं छे मन जेनुं एवो सतो (नंदणे) वास्तुशास्त्रमां कहेला लक्षणवाळो होवाथी समृद्धिवाळा नंदन नामना (पासाए) प्रासादने विषे (दोगुंदगो) दोगुंदक जातिना (देवो चेव) देवोनी जेम (इत्थिहिं) स्त्रीओनी (सह) साथे (कीलए) क्रीडा करतो हतो. निरंतर भोगमां ज तत्पर रहेता त्रायस्त्रिंश देवोने पण दोगुंदक कहे छे. ३.

मणिरयणकुट्टिमतले, पासायालोअणे ठिओ । आलोएइ नयरस्स, चउक्कतिगचच्चरे ॥ ४ ॥

अर्थ—ते कुमार एकदा (मणिरयणकुट्टिमतले) मणि अने रत्नोथी जडेलुं छे तळीयुं जेनुं एवा (पासायालोअणे)

प्रासादना गवाक्षमां (ठिओ) बेठो थको (नयरस्स) नगरना (चउकतिगचच्चरे) चतुष्क, त्रिक अने चत्वरोने (आलोएइ) जोतो हतो चतुष्क एटले चार मार्ग एकठा थता होय ते स्थान, त्रिक एटले त्रण मार्ग एकठा थता होय ते स्थान अने चत्वर एटले बजार–चौटु तेने जोतो हतो ४

ते वखते शु थयु ? ते कहे छे—

अह तत्थ अइच्छंत, पासई समणसंजय । तवनियमसंजमधर, सीलड्ढ गुणआगर ॥ ५ ॥

अर्थ—(अह) ते वखते (तत्थ) त्यां त्रिकादिक मार्गने विषे (अइच्छंत) गमन करता, (तवनियमसंजमधर) उपवासादि तप, द्रव्यादिकना अभिग्रहरूप नियम अने सत्तर प्रकारना संयमने धारण करनारा, तेथी करीने ज (सीलड्ढ) शील एटले अढार हजार शीलांगे करीने सहित, अने तेथी करीने ज (गुणआगर) ज्ञानादिक गुणोनी खाणरूप एवा (समणसंजय) संयत साधुने तेणे (पासई) जोया ५.

त देहइ मिआपुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ । कहि मन्नेरिस रूव, दिट्ठपुव्व मए पुरा ॥ ६ ॥

अर्थ—(मिआपुत्ते) ते मृगापुत्र (अणिमिसाए उ) निमेष रहित एवी ज (दिट्ठीए) दृष्टिवडे (त) ते मुनिने (देहइ) जोतो हवो जोइने तेणे विचार कर्यो के (मन्ने) हु मानु छु के (एरिस) आवु (रूव) रूप (मए) में (पुरा) पूर्वे जन्ममां (कहि) क्यांक (दिट्ठपुव्व) प्रथम जोयेलु छे ? एम विचारतां तेने हर्ष थयो ६.

साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे । मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥७॥

अर्थ—(तस्स) ते (साहुस्स) साधुना (दरिसणे) दर्शन थये सते (सोहणे) शोभन एटले प्रशस्त एवा (अज्झवसाणम्मि) अध्यवसायने विषे एटले मनना परिणामने विषे अर्थात् क्षायोपशमिक भावने विषे वर्ततां में आवुं रूप क्यां जोयुं छे ? एवुं चिंतवन करतां (मोहं) मूर्छाने (गयस्स संतस्स) पाम्या सता ते मृगापुत्रने (जाईसरणं) जातिस्मरण ज्ञान (समुप्पन्नं) उत्पन्न थयुं, एटले के प्रथम साधुनुं दर्शन थयुं, पछी मनना शुभ परिणाम थया, पछी ते संबंधी ऊहापोह करतां मूर्छा आवी अने ते मूर्छा वळी एटले जातिस्मरण ज्ञान थयुं. ७.

ते जातिस्मरण ज्ञान केवुं होय छे ? ते कहे छे.—

देवलोगचुओ संतो, माणुस्सं भवमागओ । सन्निनाणे समुप्पन्ने, जातिस्सरणं पुराणयं ॥ ८ ॥

अर्थ—(देवलोगचुओ संतो) हुं देवलोकथी चव्यो सतो (माणुस्सं) मनुष्य संबंधी (भवं) भवने विषे (आगओ) आव्यो छुं. ए प्रमाणे (सन्निनाणे) संज्ञीज्ञान एटले गर्भज पंचेंद्रियने थतुं ज्ञान ते (समुप्पन्ने) उत्पन्न थये सते (पुराणयं) पूर्वभवनुं (जातिस्सरणं) जातिस्मरण ज्ञान कहेवाय छे. ८.

जाईसरणे समुप्पन्ने, मिआपुत्ते महिड्ढिए । सरइ पोराणिअं जाइं, सामण्णं च पुराकडं ॥ ९ ॥

अर्थ—(जाईसरणे) जातिस्मरण ज्ञान (समुप्पन्ने) उत्पन्न थये सते (महिड्ढिए) महा ऋद्धिवाळो एटले राजलक्ष्मीवडे युक्त एवो (मिआपुत्ते) मृगापुत्र (पोराणिअं) पूर्वनी (जाइ) जातिने–भवने (च) तथा (पुराकड) पूर्व भवमां करेला–पाळेला (सामण्णं) चारित्रने (सरइ) स्मरण करतो हवो ९

त्यारपछी तेणे शु कर्यु ? ते कहे छे —

विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो संजमम्मि अ। अम्मापिअर उवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ १० ॥

अर्थ—(विसएसु) विषयोने विषे (अरज्जंतो) रागी नहीं थतो (अ) अने (संजमम्मि) संयमने विषे (रज्जंतो) रागी थतो एवो ते मृगापुत्र (अम्मापिअरं) माता पिता पासे (उवागम्म) आवीने (इम) आ प्रमाणे (वयण) वचन (अब्बवी) बोल्यो १०

जे वचन बोल्यो, ते कहे छे —

सुआणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो म्हि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥ ११ ॥

अर्थ—(मे) में (पंच) पांच (महव्वयाणि) महाव्रतो पूर्व भवमां (सुआणि) सांभळ्यां छे तथा (नरएसु) नरकने विषे (दुक्खं) जे दुःख (च) अने (तिरिक्खजोणिसु) तिर्यंच योनिने विषे पण जे दुःख ते में सांभळ्यु छे

अथवा अनुभव्युं छे, तथा उपलक्षणथी देव अने मनुष्यने विषे जे दुःख छे ते पण में सांभळ्युं छे. तेथी करीने (महण्णवाओ) महार्णव थकी एटले संसाररूपी समुद्रथकी (निव्विण्णकामो) नाश पाम्यो छे अभिलाप जेनो एवो (म्हि) हुं थयो छुं. तो (अम्मो) हे माता ! (अणुजाणह) मने अनुज्ञा आपो. (पव्वइस्सामि) हुं प्रव्रज्या ग्रहण करीश. ११.

कदाच मातापिता भोग भोगववानुं कहेशे एम धारी तेनो निषेध करवा कहे छे.—

अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा । पच्छा कडुअविवागा, अणुबंधदुहावहा ॥ १२ ॥

अर्थ—(अम्मताय) हे माता पिता ! (मए) में (विसफलोवमा) विषना फळनी उपमावाळा एटले विषना फळ जेवा (भोगा) कामभोगो पूर्वे (भुत्ता) भोगव्या छे. ते भोगो पहेलां भोगवे समये मधुर लागे छे, परंतु (पच्छा) भोगव्या पछी (कडुअविवागा) कटुक विपाकवाळा एटले परिणामे कडवां फळ आपनारा छे, तथा (अणुबंधदुहावहा) निरंतर दुःखने वहन करनारा–आपनारा छे. १२.

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइ असुइसंभवं । असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १३ ॥

अर्थ—हे माता पिता (इमं सरीरं) आ शरीर (अणिच्चं) अनित्य छे, (असुइ) अशुचि एटले अपवित्र छे, (असुइसंभवं) अपवित्र एवा शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थनारुं छे, (असासयावासं) अनित्य निवासवाळुं एटले तेमां जीवनो निवास पण अनित्य छे, तथा (इणं) आ शरीर (दुक्खकेसाण) दुःखना हेतुरूप जे क्लेशो एटले

ज्वरादिक रोगो तेमनु अथवा दु ख एटले जन्म, जरा, मृत्यु विगेरे अने क्लेशो एटले धनहानि, स्वजन वियोग विगेरे, तेनु (भायण) भानन एटले स्थान छे. १३

अंसासए सरीरंम्मि, रंइ नोवंलभामि ह । पच्छा पुरा यें चइअंव्वे, फेणवुव्वुअसान्निभे ॥ १४ ॥

अर्थ—तेथी करीने ह माता पिता ! (पच्छा) भोग भोगव्या पछी (य) अथवा (पुरा) भोग भोगव्या पहेलां (चइअव्वे) त्याग करवा लायक तथा (फेणवुव्वुअसाम्निभे) पाणीना फीणना परपोटा जेवा (असासए) अनित्य (सरीरम्मि) आ शरीरने विपे (ह) हु (रइ) प्रीतिने (न उवलभामि) पामतो नथी १४.

माणुसत्ते असारंम्मि, वाहीरोगाणं आलेए । जरामरणंघरथम्मि, खणं पि न रमामि ह ॥ १५ ॥

अर्थ—वळी हे माता पिता ! (वाहीरोगाण) व्याधि एटले अगाध पीडाना हेतुरूप कुष्ठादिक अने रोग एटले वात, पित्त अने कफथी उत्पन्न थता ज्वरादिक तेमना (आलए) स्थानरूप, तथा (जरामरणघत्थम्मि) जरा अने मरणवडे ग्रस्त-व्याप्त एवा आ (असारम्मि) सार रहित (माणुसत्ते) मनुष्य भवने विपे (खण पि) क्षणवार पण (ह) हु (न रमामि) आनद पामतो नथी १५

जंम्म दुक्खं जंरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि अ। अंहो दुक्खो हु ससारो, जत्थ कीसति जंतुणो ॥१६॥

अर्थ—(जम्म) जन्म थवो ते (दुक्ख) दु ख छे, (जरा) वृद्धावस्था थाय ते (दुक्ख) दु.ख छे, (रोगा य)

१७

रोगो, तथा (मरणाणि अ) मरण पण दुःख ज छे, (अहो) अहो ! (हु) निश्चे (संसारो) संसार ज (दुक्खो) दुःखरूप छे, के (जत्थ) जे संसारमां (जंतुणो) जंतुओ (कीसंति) क्लेश पामे छे. १६.

खित्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवे । चइत्ता णं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥ १७ ॥

अर्थ—(खित्तं) क्षेत्रने, (वत्थुं) वास्तु एटले घर, हाट विगेरेने, (हिरण्णं च) सुवर्णने, तथा (पुत्तदारं च) पुत्र, स्त्री विगेरेने, तथा (बंधवे) भाइ, काका विगेरे बांधवोने, तथा (इमं) आ (देहं) देहने पण (चइत्ता णं) तजीने (अवसस्स) परवश एवा (मे) मारे (गंतव्वं) परभवने विषे जवानुं छे. १७.

जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो । एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥ १८ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (किंपागफलाणं) किंपाकना फळखावानुं (परिणाम) परिणामो (न सुंदरो) सारुं नथी, (एवं) एज प्रमाणे (भुत्ताण) भोगव्या एवा (भोगाणं) कामभोगनुं (परिणामो) परिणाम पण (न सुंदरो) सारुं नथी. किंपाकना फळो जोवामां मनोहर होय छे अने खातां अति स्वादिष्ट लागे छे, तेज रीते विषयो पण जोवामां मनोहर अने भोगवतां पण सुखकारक लागे छे, परंतु परिणामे किंपाकना फळनी जेम मरण तथा नरकादिक गतिने आपे छे. १८.

आ प्रमाणे भोगादिकनी असारता कही. हवे बे दृष्टांतवडे पोतानो अभिप्राय प्रगट करे छे—

अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहिज्जो पवज्जई । गच्छंतो सो दुही होइ, छुहातण्हाहिं पीडिए ॥ १९ ॥

अर्थ—(जो) जे मनुष्य (महत तु) मोटा–लांबा (अद्धाण) मार्ग प्रत्ये (अपाहिज्जो) भाता विना (पवज्जई) गमन करे छे, अने तेवी रीते (गच्छतो सो) जतो एवो ते (छुहातण्हाहिं) क्षुधा अने तृषावडे (पीडिए) पीडा पाम्यो सतो (दुही होइ) दु खी थाय छे १९

एवं धम्मं अकाऊण, जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो दुही होइ, वाहिरोगेहिं पीडिए ॥ २० ॥

अर्थ—(एव) एज प्रमाणे एटले धर्मरूपी भाता विनाना मार्गे जता पुरुषनी जेम (जो) जे पुरुष (धम्म) धर्मने (अकाउण) नहीं करीने (पर भव) पर भव प्रत्ये (गच्छइ) जाय छे, तो (गच्छतो) जतो एवो (सो) ते पुरुष (वाहिरोगेहिं) व्याधि अने रोगोवडे (पीडिए) पीडा पाम्यो सतो (दुही) दु:खी (होइ) थाय छे २०

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहिज्जो पवज्जइ । गच्छंतो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (महत तु) मोटा–लांबा एवा (अद्धाण) मार्ग प्रत्ये (सपाहिज्जो) भाता सहित (पवज्जइ) गति करे छे, तो (गच्छतो सो) जतो एवो ते (छुहातण्हाविवज्जिओ) क्षुधा अने तृषाथी रहित एवो सतो (सुही) सुखी (होइ) थाय छे २१

एवं धम्मं पि काऊण, जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो सुही होई, अप्पकम्मे अवेअणे ॥ २२ ॥

अर्थ—(एव) एज प्रमाणे (धम्म पि) धर्मने पण (काऊण) करीने (जो) जे प्राणी (पर भव) पर भव प्रत्ये

(गन्छइ) जाय छे, तो (गच्छंतो) जतो एवो (सो) ते प्राणी (अप्पकम्मे) कर्म रहित—अल्प अशुभ कर्मवाळो अने (अवेअणे) वेदना रहित एटले असातावेदनीय रहित थयो सतो (सुही होइ) सुखी थाय छे. २२.

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू । सारभंडाइं नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥ २३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (गेहे) कोइ घर (पलित्तम्मि) अग्निवडे बळवा मांड्ये सते (तस्स) ते (गेहस्स) घरनो (जो) जे (पहू) स्वामी होय ते (सारभंडाइं) सारभूत एटले महा मूल्यवाळां भांडो एटले वस्त्राभरणादिक किंमती वस्तुओने (नीणेइ) बहार काढे छे, अने (असारं) असार एवा भांडोने (अवउज्झइ) तजी दे छे—जता करे छे. २३.

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य । अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

अर्थ—(एवं) ते ज प्रमाणे (लोए) आ लोक (जराए) जरावस्थावडे (य) तथा (मरणेण) मरणवडे (पलित्तम्मि) बळते सते एटले आकुळ व्याकुळ थये सते (तुब्भेहिं) तमारा वडे (अणुमन्निओ) आज्ञा अपायो एवो हुं (अप्पाणं) सारभूत मारा आत्माने (तारइस्सामि) तारीश एटले संसारमांथी बहार काढीश अने असार एवा कामभोगादिकनो त्याग करीश. तेथी मने तमे आज्ञा आपो. २४.

हवे वीश गाथावडे मातापिता जवाब आपे छे—

तं वितम्मापिअरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं । गुणाणं तु सहस्साइं, धारेअव्वाइं भिक्खुणो ॥ २५ ॥

अर्थ—हवे (अम्मापिअरो) माता पिता (त) ते मृगापुत्रने (बिंति) कहेता हवा, के (पुत्त) हे पुत्र ! (सामण) साधुधर्म (दुच्चर) दु खे आचरी शकाय तेवो छे, केमके (गुणाण तु) गुणोना (सहस्साइ) सहस्रोने-हजारो गुणोने (भिक्खुणो) भिक्षुए (धारेअव्वाइ) धारण करवाना छे २५

समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे । पाणाइवायविरई, जावज्जीवाइ दुक्कर ॥ २६ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (सव्वभूएसु) सर्व जीवोने विषे (वा) अथवा (जगे) जगतमा (सत्तुमित्तेसु) शत्रु अने मित्र उपर (समया) समता धारण करवानी छे, तथा (जावज्जीवाए) जावजीव पर्यंत (पाणाइवाइविरई) प्राणातिपात-जीवहिंसानी विरति धारण करवानी छे, ते (दुक्कर) अति दुष्कर छे २६

निच्चकालप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण । भासिअव्व हिअ सच्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥ २७ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! (निच्चकालप्पमत्तेण) निरतर अप्रमत्तपणे (मुसावायविवज्जण) मृषावादनु पण वर्जन करवानु छे, तथा (हिअ) जीवोने हितकारक एवु (सच्च) सत्यवचन ज (भासिअव्व) बोलवानु छे, तथा (निच्चाउत्तेण) निरतर आयुक्तपणाए करीने एटले तेना सत्यताना उपयोगे करीने सहित रहेवानु छे, ते (दुक्कर) दुष्कर छे २७

दतसोहणमाइस्स, अदिण्णस्स विवज्जण । अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्कर ॥ २८ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (दतसोहणमाइस्स) दातने शोधवानी-खोतरवानी सळी विगेरे (अदिण्णस्स) अदत्त वस्तुने (विव

ज्जणं) वर्जवानी छे. तृणनी सळी जेनी चीज पण कोइना दीधा विना ग्रहण करवानी नथी. तथा (अणवज्जेसणिज्जस्स) दीधेली वस्तुमां पण निर्दोष अने एषणीय वस्तुनुं ज (गिण्हणा) ग्रहण करवानुं छे, (अवि) ते पण (दुक्करं) दुष्कर छे. २८.

विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसण्णुणा । उग्गं महव्वयं बंभं, धारेअव्वं सुदुक्करं ॥ २९ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (कामभोगरसण्णुणा) कामभोगना रसने जाणनार एवा तारे (अबंभचेरस्स) अब्रह्मचर्यनी एटले मैथुननी (विरई) विरति करवी ते अति दुष्कर छे, तथा (उग्गं) उग्र एवुं (बंभं) ब्रह्मचर्यरूप (महव्वयं) महाव्रत (धारेअव्वं) धारण करवानुं छे, ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे. २९.

धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणा । सव्वारंभपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥ ३० ॥

अर्थ—(धणधन्नपेसवग्गेसु) धन, धान्य अने नोकरवर्गने विषे (परिग्गहविवज्जणा) परिग्रहनो एटले ए सर्वनो त्याग करवानो छे, तथा (सव्वारंभपरिच्चाओ) सर्व प्रकारना आरंभनो त्याग करवानो छे, तथा (निम्ममत्तं) ममता रहितपणे रहेवानुं छे, ते सर्व (सुदुक्कर) अति दुष्कर छे. ३०.

चउव्विहे वि आहारे, राईभोअणवज्जणा । संनिहिसंचओ चेव, वज्जेअव्वो सुदुक्करं ॥ ३१ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! वळी (चउव्विहे वि) चारे प्रकारना (आहारे) आहारने विषे (राईभोअणवज्जणा) रात्रिभोजननुं वर्जन करवानुं छे, (चेव) तथा (संनिहिसंचओ) घी, गोळ विगेरे उचित काळथी वधारे वखत राखवा, ते संनिधि कहे-

वाय छे, तेनो सचय एटले सग्रह (वज्जेअव्वो) वर्जवानो छे एटले पासे एवी कोइ चीज राखी शकाती नथी, ते पण (सुदुकर) अति दुष्कर छे ३१

आ प्रमाणे छ व्रतनी दुष्करता कही. हवे परीषहोनी दुष्करता कहे छे —

छुहा तण्हा य सीउण्ह, दसमसगवेअणा । अक्कोसा दुक्खसिज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३२ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! (छुहा) क्षुधा, (तण्हा य) तृषा, तथा (सीउण्ह) शीत, उष्ण, (दसमसगवेअणा) दश अने मच्छरनी वेदना सहन करवानी छे, तथा (अक्कोसा) आक्रोश एटले बीजानां दुर्वचनो (दुक्खसिज्जा य) दु खशय्या एटले उपाश्रयनु दु ख, तथा (तणफासा) सथाराने विषे तृणना स्पर्शनु दु ख, (य) अने (जल्लमेव) मळनो परीषह, ए सर्व सहन करवानु छे ते अति दुष्कर छे ३२

तालणा तज्जणा चेव, वहबधपरीसहा । दुक्ख भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(तालणा) हस्तादिवडे कोइ ताडन करे तो ते सहन करवानु छे, (तज्जणा) आंगळी आदिक वडे तर्जना करे तो ते सहन करवानी छे, (चेव) तथा (वहबधपरीसहा) वध एटले यष्टि विगेरेना मार अने दोरडा आदिकना बधनरूप परीषहो सहन करवाना छे, ते दुष्कर छे, वळी (भिक्खायरिया) भिक्षाचर्या करवी ते पण (दुक्ख) दु खरूप छे तथा (जायणा य) याचना करवी अने तेमां पण (अलाभया) लाभ न थाय ते सहन करवु अति दुष्कर छे ३३

काबोआ जा इमा वित्ती, केसलोओ अ दारुणो । दुक्खं बंभव्वयं घोरं धारेउं अ महप्पणा ॥३४॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! साधु धर्मने विषे (जा) जे (इमा) आ (काबोआ) कपोत संबंधी (वित्ती) वृत्ति छे, ते अति दुष्कर छे. जेम कपोत एटले पारेवा निरंतर शंका सहित ज भक्ष्य ग्रहण करवामां प्रवर्ते छे, अने खाधा पछी कांइ पण साथे राखता नथी, ते ज प्रमाणे साधुओ पण आहारना दोषनी शंकावाळा सता ज आहार ग्रहण करवा प्रवर्ते छे, अने आहार कर्या पछी कांइ पण संचय करता नथी-राखी मूकता नथी ते (अ) तथा साधुने (केसलोओ) केशनो लोच करवो पडे छे ते (दारुणो) भयंकर छे, (अ) तथा (महप्पणा) महात्मा एटले उत्तम साधुए (घोरं) अल्प सत्त्वाळाने भयंकर एवुं (बंभव्वयं) ब्रह्मचर्यव्रत (धारेउं) धारण करवुं ते पण (दुक्खं) अति दुःखरूप छे. उपर २९ मी गाथामां ब्रह्मव्रतने दुष्कर कह्युं हतुं अने अहीं फरीथी तेने ज दुष्कर कह्युं ते तेनुं अति दुष्करपणुं जणाववा कह्युं छे. ३४.

हवे ते व्रतादिकनी दुष्करतानो उपसंहार करे छे-समाप्त करे छे.—

सुहोइओ तुमं पुत्ता !, सुकुमालो अ सुमज्जिओ । न हु सि पहू तुमं पुत्ता !, सामण्णमणुपालिआ ।३५।

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (सुहोइओ) सुखने उचित छे-सुखनो भोक्ता छे. (सुकुमालो) अति सुकुमाल छे (अ) तथा (सुमज्जिओ) सारी रीते अभ्यंगनादि पूर्वक स्नान करनारो छे, तथा उपलक्षणथी सर्व अलंकारवडे अलंकृत रहेनारो छे, तेथी (पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (सामण्णं) चारित्रने (अणुपालिआ) पाळवाने (हु) निश्चे (पहू) समर्थ (न सि) नथी. ३५.

असमर्थपणाने ज दृष्टांतवडे सिद्ध करे छे —

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाण तु महब्भरो । गरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता ! होई दुव्वहो ॥३६॥

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र ! (जो) जे (गुणाण तु) चारित्रना मूळ अने उत्तर गुणोनो (महब्भरो) मोटो भार छे, ते (लोहभारु व्व) लोढाना भारनी जेम (गरुओ) मोटो-अत्यंत (दुव्वहो होइ) दुर्वह छे-वहन करवो अशक्य छे, केमके ते गुणोनो भार (जावज्जीव) जावजीव पर्यंत (अविस्सामो) विश्रांति रहित छे जो कदाच बीजो कोइ भार वहन न करी शकाय तो ते कोइ ठेकाणे नीचे उतारी वीसामो लइ शकाय छे परंतु चारित्रना गुणनो भार तो कदी पण उतारातो नथी ते तो जीवित पर्यंत वहन करवानो ज छे ३६

आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो । बाहाहिं सागरो चेव, तरिअव्वो गुणोदही ॥३७॥

अर्थ—(आगासे) आकाशमां रहेली (गंगसोउ व्व) गंगा नदीनो प्रवाह जेम दुस्तर छे-दु ले तरी शकाय तेवो छे तथा (पडिसोउ व्व) बीजी नदीओनो प्रतिश्रोत एटले सामो प्रवाह-सामे पूरे तरवु ते जेम (दुत्तरो) दुस्तर होय छे, (चेव) तथा (बाहाहिं) बे हाथवडे (सागरो) समुद्र तरवो दुष्कर छे, तेम (गुणोदही) ज्ञानादिक गुणोनो समुद्र (तरिअव्वो) तरवानो छे एटले ते तरवो अति दुष्कर छे ३७

वालुआकवले चेव निरस्साए उ संजमे । असिधारागमण चेव, दुक्कर चरिउ तवो ॥३८॥

अर्थ—(चेव*) जेम (वालुआकवले) वेळुना कोळीया नीरस छे, तेम (संजमे) संयम (निरस्साए उ) नीरस—स्वाद रहित छे. (चेव) तथा जेम (असिधारागमणं) खड्गनी धारपर गमन करवुं दुष्कर छे, तेम (तवो) चारित्ररूपी तप (चरिउं) आचरवुं, ते (दुक्करं) दुष्कर छे. ३८.

अही वेगंतदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त! दुच्चरे। जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३९॥

अर्थ—(पुत्त) हे पुत्र! (दुच्चरे) दुःखे करीने आचरी शकाय तेवा (चरित्ते) चारित्रमार्गने विषे (अही व) सर्पनी जेम (एगंतदिट्ठीए) एकांत—निश्चय दृष्टिवडे चालवानुं छे, जेम सर्प एकाग्र दृष्टिए चाल्यो जाय छे, आडुं अवळुं जोतो नथी, तेम साधुए पण मोक्ष प्रत्ये ज एकाग्र दृष्टि राखीने चारित्रमार्गमां चालवानुं छे, तेथी ते चारित्रमार्ग दुःखे करीने आचरी शकाय तेवो छे. (चेव) तथा जेम (लोहमया) लोहमय एटले लोढाना (जवा) जव (चावेयव्वा) चाववा ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे, तेम चारित्र पण पाळवुं ते अति दुष्कर छे. ३९.

जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करं। तह दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जहा) जेम (दित्ता) देदीप्यमान एवी (अग्गिसिहा) अग्निनी ज्वाळा (पाउं) पीवी ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर (होइ) छे, (तह) तेम (तारुण्णे) युवावस्थामां (समणत्तणं) चारित्र (करेउं) पाळवुं ते (दुक्करं) अति दुष्कर छे. (जे) 'जे' शब्द पादपूर्ति माटे छे. ४०.

* 'च' पादपूर्त्ति माटे छे, अने 'इव' उपमाना अर्थमा छे. ए ज रीते सर्वत्र जाणवुं.

जेहा दुक्ख भरिउ जे, होई वायस्स कुत्थलो। तहा दुक्कर करेउ जे, कीवेण समणत्तण ॥ ४१ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (कुत्थलो) वस्त्रनो कोथळो (वायस्स) वायुथी (भरेउ) भरवो ते (दुक्ख) दु खरूप एटले दुष्कर (होइ जे) छे, (तहा) तेम (कीवेण) सत्त्व रहित प्राणीए (समणत्तण) चारित्र (करेउ) पाळवु ते (दुकर जे) दुष्कर छे ४१

जेहा तुलाए तोलेउ, दुक्कर मंदरो गिरी । तहा निहुअनीसक, दुक्कर समणत्तण ॥ ४२ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (मदरो) मेरु (गिरी) पर्वत (तुलाए) त्राजवावडे (तोलउ) तोळवो ते (दुकरं) दुष्कर छे, (तहा) तेम (समणत्तण) श्रमणपणु एटले चारित्र शरीरवडे पाळवु (निहुअनीसक) निश्चळपणे अने नि शकपणे (दुक्कर) दुष्कर छे ४२

जेहा भुजाहि तरिउ, दुक्कर रयणायरो । तहा अणुवसतेण, दुक्कर दमसायरो ॥ ४३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (रयणायरो) रत्नाकर एटले समुद्र (भुजाहिं) बे भुजावडे (तरिउ) तरवो (दुकर) दुष्कर छे, (तहा) तेम (अणुवसतेण) अनुपशांत एटले उपशमने नहीं पामेला अर्थात् कषायवाळा पुरुषे (दमसायरो) दम एटले चारित्ररूपी सागर तरवो (दुक्कर) दुष्कर छे ४३

भुजे माणुस्सए भोए, पचलक्खणए तुम । भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्म चरिस्ससि ॥४४॥

अर्थ—तेथी करीने (जाया) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (माणुस्सए) मनुष्य संबंधी (पंचलक्खणए) पांच प्रकारना (भोए) भोगोने (भुंज) भोगव, (तओ पच्छा) त्यारपछी (भुत्तभोगी) भोगव्या छे भोग जेणे एवो थइने एटले भोग भोगवीने (धम्म) चारित्र धर्मनुं (चरिस्ससि) आचरण करजे. ४४.

आ प्रमाणे मातापिताए कह्युं त्यारे मृगापुत्रे तेमने जे कह्युं ते एकत्रीश गाथावडे कहे छे.—

सो बिंतम्मापिअरो !, एवमेअं जहाफुडं । इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥ ४५ ॥

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (बिंति) कहे छे के (अम्मापिअरो) हे मातापिता ! (एवमेअं) ए एमज छे, जेम तमे कहो छो ते तेमज छे (जहाफुडं) प्रगटपणे प्रव्रज्या दुष्कर छे ए वात सत्य छे. परंतु (इह लोए) आ लोकने विषे (निप्पिवासस्स) तृष्णा रहित एटले निःस्पृह एवा पुरुषने (किंचि वि) कांइपण (दुक्करं) दुष्कर (नत्थि) नथी. कह्युं छे के—"निःस्पृहस्य तृणं जगत्" निस्पृहने आखुं जगत तृण समान छे. जे स्पृहावाळो होय तेने परिग्रहनो त्याग करवो दुष्कर छे, परंतु निःस्पृहने तो साधुधर्म सुकर ज छे. हुं निःस्पृह छुं तेथी मारे साधुधर्म पाळवो सुकर छे. ४५.

निःस्पृह थवानुं कारण कहे छे.—

सारीरमाणसा चेव, वेअणाओ अणंतसो । मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि अ ॥ ४६ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (मए) में (अणंतसो) अनंतवार (चेव) निश्चे (सारीरमाणसा) शरीर अने मन

सबधी (भीमाओ) भयकर (वेअणाओ) वेदनाओ (य) तथा (असइ) वारवार (दुक्खभयाणि) दु'खने उत्पन्न करनारां भयो अथवा दु ख अने भयो (सोढाओ) सहन कर्यां छे ४६

जेरामरणकंतारे, चोउरते भैयागरे । मैए सोढोणि भीमोणि, जेम्माणि मरणाणि अँ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(जरामरणकतारे) जरा अने मरणरूपी गाढ अरण्यवाळा, तथा (चाउरते) देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक ए चार अवयववाळा, तथा (भयागरे) भयनी खाणरूप आ ससारने विषे (मए) में (भीमाणि) भयकर एवा (जम्माणि) जन्मो (य) अने (मरणाणि) मरणो (सोढाणि) सहन कर्यां छे ४७

जहा ईह अगेणी उपेहो, एत्तोऽणर्तगुणा तोहिं। नरएसु वेअंणा उंण्हा, अंसाया वेईआ मंए ॥४८॥

अर्थ—(इह) आ मनुष्य लोकमां (जहा) जेवो (अगणी) अग्नि (उण्हो) उष्ण छे, (एत्तो) तेथी-ते करतां (तहिं) ते (नरएसु) नरकोने विषे (अणतगुणा) अनत गुणी (उण्हा) उष्ण (असाया) असाता-दु ख उपजावनारी (वेअणा) वेदना (मए) में (वेइआ) अनुभवी छे नरकमां बादर अग्निनो अभाव छे, परतु ते पृथ्वीनो स्पर्श ज तेवा प्रकारनो उष्ण छे अर्थात् तेनी वेदना अग्निनी वेदना तुल्य छे ४८

जेहा ईह ईम सीअं, एत्तोऽणर्तगुणा तोहिं । नरएसु वेअणा सीआं, अंसाया वेइआ मए ॥४९॥

अर्थ—(इह) आ मनुष्य लोकमां (जहा) जेवु (इम) आ (सीअ) शीत छे, (एत्तो) तेनाथी पण (तहिं)

ते (नरएसु) नरकोमां (अणंतगुणा) अनंतगुणी (असाया) असाता-दुःख उपजावनारी (सीआ) शीत (वेअणा) वेदना (मए) में (वेइआ) अनुभवी छे. ४९.

कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो । हुआसणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥ ५० ॥

अर्थ—(कंदंतो) आक्रंद करतो, (उड्ढपाओ) उंचा पगवाळो अने (अहोसिरो) नीचे मस्तकवाळो एवो हुं (कंदुकुंभीसु) लोढानी कुंभीने विषे (जलंतम्मि) देदीप्यमान (हुआसणे) अग्निमां (अणंतसो) अनंतवार (पक्कपुव्वो) पूर्वे पकावायो हतो. ५०.

महादवग्गिसंकासे, मरुम्मि वइरवालुए । कलंबवालुआए अ, दड्ढपुव्वो अणंतसो ॥ ५१ ॥

अर्थ—(महादवग्गिसंकासे) महा दावानळनी जेवा तथा (मरुम्मि) मरुदेशनी रेती जेवा (वइरवालुए) वज्रवालुका नदीने कांठे (अ) अने (कलंबवालुआए) कलंबवालुका नदीने कांठे (अणंतसो) अनंतीवार (दड्ढपुव्वो) हुं पूर्वे नरकमां बळ्यो छुं-भुंजायो छुं. ५१.

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो । करवत्तकरकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ५२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (रसंतो) आक्रंद करतो (अबंधवो) बंधु रहित एवो हुं (कंदुकुंभीसु) कंदुकुंभीने विषे (उड्ढं) उंचे वृक्षनी शाखामां (बद्धो) बंधायो सतो (करवत्तकरकयाईहिं) करवत अने क्रकच नामनी नानी करवत वडे

(अणंतसो) अनतीवार (छिन्नपुव्वो) पूर्वे छेदायो छु हुं नाशी जइ न शकु तेटला माटे मने उंचो बांधी कदुकुंभीमां नांखी करयतवडे लाकडानी जेम मने अनतीवार छेद्यो छे–वेर्यो छे ५२

अइतिक्खकंटयाइण्णे, तुंगे सिंबलिपायवे । खेविअं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥ ५३ ॥

अर्थ—(अइतिक्खकंटयाइण्णे) अति तीक्ष्ण कांटाए करीने व्याप्त अने (तुंगे) उंचा एवा (सिंबलिपायवे) शबलि-शाल्मलि वृक्ष उपर (पासबद्धेण) पाशथी बंधायेला में (कड्ढोकड्ढाहिं) परमाधामीए करेला आकर्षण अने अपकर्षणवडे (दुक्करं) दुःखे सहन थइ शके तेवो (खेविअं) खेद अनुभव्यो छे एटले पूर्वे उपार्जन करेला कर्मनुं फळ भोगव्युं छे ५३

महाजंतेसु उच्छू व, आरसंतो सुभेरवं । पीलिओमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥ ५४ ॥

अर्थ—(सुभेरवं) अत्यंत भयानक (आरसंतो) आक्रंद करतो अने (पावकम्मो) पाप कर्मवाळो हुं (सकम्मेहिं) मारा पोताना कर्मे करीने (अणंतसो) अनंतीवार (महाजंतेसु) महा यंत्रोने विषे (उच्छू व) शेरडीनी जेम (पीलिओमि) पीलायो छुं ५४

कूयंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि अ । पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५५॥

अर्थ—(कूयंतो) आक्रंद करता एवा मने (कोलसुणएहिं) भुंड अने कुतराना रूपने धारण करता (सामेहिं)

श्याम नामना (अ) तथा (सबलेहि) शवल नामना परमाधामीओए (अणेगसो) अनेकवार (पाडिओ) पृथ्वीपर पाडी नांख्यो छे, तथा (फालिओ) जीर्ण वस्त्रनी जेम फाड्यो छे अने (विप्फुरंतो) तडफडता एवा मने (छिन्नो) अनेकवार छेद्यो भेद्यो छे. ५५.

असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लीहिं पट्टिसेहि अ। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो अ, उववण्णो पावकम्मुणा ॥५६॥

अर्थ—(पावकम्मुणा) पापकर्मे करीने (उववण्णो) नरकमां उत्पन्न थयेलो हुं (अयसिवण्णाहिं) अतसीपुष्पनी जेवा श्याम वर्णवाळा (असीहि) खड्गोवडे, तथा (भल्लीहिं) भालाओवडे (अ) तथा (पट्टिसेहि) पट्टिश नामना शस्त्रवडे अनेकवार (छिन्नो) छेदायो छुं, तथा (भिन्नो) भेदायो छुं, (अ) अने (विभिन्नो) विशेष भेदायो छुं एटले सूक्ष्म ककडा करायो छुं. ५६.

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजोत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५७ ॥

अर्थ—कोइ वखत परमाधामीए (जलंते) अग्निवडे जाज्वल्यमान अने (समिलाजुए) झुसरी अने जोतरे करीने सहित एवा (लोहरहे) लोढाना रथने विषे (अवसो) पराधीन एवा मने (जुत्तो) जोड्यो छे. पछी (तोत्तजोत्तेहिं) परोणा अने राशवडे—नासिकाए बांधेला दोरडावडे (चोइओ) मने हांकवामां आव्यो छे अने पछी (रोज्झो वा) रोझ नामना पशुनी (जह) जेम (पाडिओ) मने पाडी दीधो छे एटले लाकडी विगेरेथी कुटीने मने पृथ्वीपर पाडी दीधो छे. ५७.

हुँआसणे जलतम्मि, चिँआसु महिसो विव । दड्डो पक्को अ अवसो, पावकम्मेहिँ पाविओ ॥५८॥

अर्थ—हे मातापिता ! (पावकम्मेहिं) पाप कर्मे करीने (पाविओ) व्याप्त अथवा नरकने पामेला एवा अने (अवसो) पराधीन एवा मने (चिआसु) परमाधामीए रचेली चिताने विषे (महिसो विव) पाडानी जेम (जलतम्मि) जाज्वल्यमान एवा (हुआसणे) अग्निमां (दड्डो) बाळवामां आव्यो छे (अ) अने (पक्को) रांधवामां आव्यो छे ५८

बला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिँ पक्खिहिं । विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिँऽणंतसो ॥ ५९ ॥

अर्थ—(संडासतुंडेहिं) सांडसी जेवा मुखवाळा अने (लोहतुंडेहिं) लोढाना एटले वज्र जेवा मुखवाळा (ढंकगिद्धेहिं) परमाधामीए विकुर्वेला ढंक अने गीध (पक्खिहिं) पक्षीओए (विलवंतोऽहं) विलाप करता एवा मने (अणंतसो) अनंतीवार (बला) बळात्कारे (विलुत्तो) विविध प्रकारे छेद्यो छे. ५९

तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेअरणिं नइं । जलं पाहं ति चिंतंतो, खुरधाराहिँ विवाइओ ॥६०॥

अर्थ—(तण्हाकिलंतो) तृषावडे व्याप्त थयेलो हुं (धावंतो) दोडतो दोडतो (वेअरणिं) वैतरणी (नइं) नदीए (पत्तो) गयो त्यां (जलं) जळने (पाहं) हुं पीउं (ति) एम (चिंततो) विचार करतो हतो तेटलामां (खुरधाराहिं) क्षुरनी धारावडे (विवाइओ) हुं हणायो वैतरणी नदीना जळना तरंगो क्षुरनी धारा जेवा छे तेथी पाणी पीवानो विचार करतां ज हुं तेनाथी छेदायो ६०

उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं । असिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६१ ॥

अर्थ—(उण्हाभितत्तो) वज्रवालुकादिकना तापथी तपेलो एवो हुं (असिपत्तं) खड्ग जेवा पत्रवाळा वृक्षो होवाथी असिपत्र नामना (महावणं) महा वनमां (संपत्तो) छायाने माटे प्राप्त थयो-गयो, तो त्यां वृक्षोपरथी (पडंतेहिं) पडतां एवां (असिपत्तेहिं) खड्ग जेवां तीक्ष्ण धारवाळां पांदडांओवडे (अणेगसो) अनेक वार (छिन्नपुव्वो) पूर्वे छेदायो छुं. ६१.

मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि अ । गयासं भग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खमणंतसो ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भग्गगत्तेहिं) गात्रने एटले शरीरने भांगी नांखनारा (मुग्गरेहिं) मुद्गरवडे, तथा (मुसंढीहि) मुसंढी नामना शस्त्रवडे, तथा (सूलेहिं) त्रिशूळवडे, (अ) तथा (मुसलेहि) मुशळवडे (गयासं) रक्षणनी आशा रहितपणे में (अणंतसो) अनंतीवार (दुक्खं) दुःख (पत्तं) प्राप्त कर्युं छे. ६२.

खुरेहिं तिक्खधाराहिं, छुरिआहिं कप्पणीहि अ । कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो अ अणेगसो ॥६३॥

अर्थ—(तिक्खधाराहिं) तीक्ष्ण धारवाळा (खुरेहिं) क्षुर नामना मस्तक मुंडवाना शस्त्रवडे, तथा (छुरिआहिं) छुरिकावडे, (अ) तथा (कप्पणीहि) कातरवडे (अणेगसो) अनेक वार (कप्पिओ) हुं कपायो छुं, तथा (फालिओ) वस्त्रनी जेम फडायो छुं, तथा (छिन्नो) छेदायो छुं, (अ) तथा (उक्कित्तो) चामडी दूर करवा वडे उतरडायो छुं. ६३.

पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं । वाहिओ बद्धरुद्धो अ, बहुसो चेव विवाइओ ॥६४॥

अर्थ—हे माता पिता! (मिओ वा) मृगनी जेम (अवसो) पराधीन एवो (अहं) हुं (पासेहिं) पाशवडे तथा (कूडजालेहिं) कूट एटले कपटयुक्त जाळवडे (बहुसो) घणीवार (वाहिओ) ठगायो छुं, (बद्धरुद्धो अ) तथा बंधनवडे बंधायो छुं अने बहार जइ न शकुं तेम रुंधायो छुं (चेव) तथा (विवाइओ) विनाश करायो छुं ६४.

गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ अ अणंतसो॥६५॥

अर्थ—(अवसो) पराधीन एवो (अहं) हुं (मच्छो वा) मत्स्यनी जेम (गलेहिं) बडिशवडे एटले मत्स्यना गळाने वींधे तेवी मांस युक्त सोयवडे, तथा (मगरजालेहिं) परमाधामीए विकुर्वेला मघरोवडे अने तेमणे करेली तेने पकडवानी जाळवडे (अणंतसो) अनंती वार (उल्लिओ) वींधायो छुं, (फालिओ) लाकडानी जेम चीरायो छुं, (गहिओ) ग्रहण करायो छुं अने (मारिओ अ) मरायो–कुटायो छुं ६५

विदंसएहिं जालेहिं, लिप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो अ बद्धो अ, मारिओ अ अणंतसो।६६।

अर्थ—(सउणो विव) पक्षीनी जेम हुं (विदंसएहिं) विशेषे करीने दश करनारा श्येनादिक पक्षीओवडे, तथा (जालेहिं) जाळवडे, तथा (लिप्पाहिं) वज्रलेपादिक लेपवडे अनुक्रमे (अणंतसो) अनंतीवार (गहिओ) ग्रहण करायो छुं (लग्गो अ) तथा लेप वडे आश्लेष करायो छुं (बद्धो अ) तथा जाळवडे बंधायो छुं अने (मारिओ अ) सर्ववडे मरायो छुं ६६

कुहाडपरसुमाईहिं, वड्ढइहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ अ अणंतसो ॥६७॥

अर्थ—(दुमो विव) वृक्षनी जेम हुं (कुहाडपरसुमाईहिं) कुहाडा अने परशु विगेरे वडे, (वड्ढइहिं) परमाधामीए विकुर्वेला सुथारोथी (अणंतसो) अनंतीवार (कुट्टिओ) कूटायो एटले सूक्ष्म ककडा करायो छुं (फालिओ) फडायो छुं (छिन्नो) छेदायो छुं (तच्छिओ अ) तथा छोलायो छुं. ६७.

चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पि व । ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ अ अणंतसो ॥६८॥

अर्थ—(कुमारेहिं) लुहारोए घण विगेरेवडे (अयं पि व) लोढाने कुटे तेम मने परमाधामीओए (चवेडमुट्ठिमाईहिं) चपेटा एटले लात अने मुठी विगेरेवडे (अणंतसो) अनंतीवार (ताडिओ) ताडना करी छे (कुट्टिओ) कुट्यो छे (भिन्नो) भेद्यो छे (चुण्णिओ अ) तथा चूर्णरूप कर्यो छे. ६८.

तत्ताइं तंबलोहाइं, तउआणि सीसगाणि अ । पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥ ६९ ॥

अर्थ—(सुभेरवं) अति भयंकर (आरसंतो) आक्रंद करता एवा मने परमाधामीओए विकुर्वेला (तत्ताइं) तपावेला अने (कलकलंताइं) कलकल शब्द करता एटले अत्यंत उकाळेला–खदखदता (तंबलोहाइं) तांबा, लोढा (तउआणि) कथीर (सीसगाणि अ) अने सीसानो रस (पाइओ) अनेकवार पायो छे. ६९.

तुहं पिआइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लिगाणि अ । खाइओमि समंसाइं, अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥ ७० ॥

अर्थ—“(तुहं) तने (मंसाइं) मांस (पिआइं) बहु प्रिय हतुं,” ए प्रमाणे मने परमाधामीए पूर्वभवनुं स्मरण

करावीने पछी (समसाइ) मारा पोताना ज मासने (खडाइ) ककडारूप करी (सोल्लगाणि अ) शेकी तथा (अग्गिवण्णाइ) अग्निनी जेवा वर्णवालु करी (णेगसो अनेकवार (खाइओमि) मने खवराव्यु छे ७०.

तुहं पिआ सुरा सीहू, मेरओ अ महूणि अ । *पाइओमि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि अ ॥७१॥

अर्थ—" (तुह) तने (सुरा) सुरा–चद्रहास नामनी मदिरा, तथा (सीहू) सीधु–ताड वृक्षथी बनेली मदिरा –ताडी तथा (मेरओ अ) मेरक–लोटनी बनेली मदिरा, तथा (महूणि अ) मधु–पुष्पनी बनेली मदिरा (पिआ) पूर्वभवमां बहु प्रिय हती " ए प्रमाणे स्मरण करावीने मने परमाधामीओए (जलतीओ) जाज्वल्यमान एटले तपावेली (वसाओ) मारी पोतानी ज चरबी (रुहिराणि अ) तथा रुधिर (पाइओमि) पायां छे ७१

निच्चं भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य। परमा दुहसंबद्धा, वेअणा वेइआ मए ॥ ७२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (निच्च) निरतर (भीएण) भय पामेला, (तत्थेण) त्रास पामेला, (दुहिएण) दु खी थयेला (वहिएण य) तथा व्यथा पामेला एटले सर्व अगे कपता एवा (मए) में नरकने विषे (दुहसबद्धा) दु खना सबधवाळी (परमा) उत्कृष्ट (वेअणा) वेदना (वेइआ) वेदी छे–अनुभवी छे ७२

तिव्वंचडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा । महाभयाओ भीमाओ, नरएसु वेईआ मए ॥ ७३ ॥

* ' पज्जिओमि ' इत्यपि पाठ

अर्थ—हे मातापिता ! (मए) में (नरएसुं) नरकने विषे (तिव्वचंडप्पगाढाओ) तीव्र-अधिक रसवाळी, चंड-कही न शकाय तेवी उत्कट, प्रगाढ-घणी स्थितिवाळी, (घोराओ) घोर-जे सांभळवाथी पण शरीर कंपे तेवी भय आपनारी, (अइदुस्सहा) अत्यंत दुःसह, तेथी करीने ज (महाभयाओ) महा भय आपनारी तथा (भीमाओ) भीम-सांभळी थकी पण भय आपनारी एवी वेदनाओ अनेकवार (वेइआ) वेदी छे-अनुभवी छे. आ तीव्र विगेरे सर्व विशेषणो नरकनी वेदनानी कर्कशता सूचवनारा एक ज अर्थवाळा छे. ७३.

वळी ते तीव्रादिक वेदना केवी छे ? ते कहे छे—

जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेअणा । एत्तो अणंतगुणिआ, नरएसुं दुक्खवेअणा ॥७४॥

अर्थ—(ताया) हे पिता ! (माणुसे लोए) आ मनुष्यलोकमां (जारिसा) जेवा प्रकारनी (वेअणा) शीतोष्णादि वेदना (दीसंति) जोवामां आवे छे. (एत्तो) तेनाथी (अणंतगुणिआ) अनंतगुणी (नरएसुं) नरकने विषे (दुक्खवेअणा) दुःखनी वेदनाओ छे. ७४.

केवळ नरकने विषे ज में दुःखवेदना अनुभवी छे एटलुंज नहीं, परंतु सर्व गतिने विषे पण अनुभवी छे. ते उपर कहे छे.

सव्वभवेसु असाया, वेअणा वेइआ मए । निमेसंतरमित्तं पि, जं साया नत्थि वेअणा ॥ ७५ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! (मए) में (सव्वभवेसु) सर्व त्रस अने स्थावर भवोने विषे (असाया वेअणा) असाता

37

वेदना (वेइआ) अनुभवी छे (ज) जे कारण माटे (निमेसतरामित्त पि) निमेषनु आंतरु पडे तेटलो वखत पण (साया) साता (वेअणा) वेदना (नत्थि) वेदीज नथी विषयसबधी सुख पण इर्ष्यादिक अनेक दुःखोवडे व्याप्त होवाथी तथा परिणामे कडुक होवाथी दुःखरूप ज छे आ आखा प्रकरणनो अभिप्राय ए छे जे—में आवा प्रकारना दु खो अनुभव्यां छे, तेथी हु तपथी सुखने योग्य के सुकुमाळ केम होइ शकु ? जेणे आवी वेदनाओ सहन करी छे, तेने दीक्षा दुष्कर शी रीते होय ? तेथी मारे दीक्षा ग्रहण करवी ए ज योग्य छे. ७५.

आ प्रमाणे कहीने मृगापुत्र मौन रह्या ते वखते—

तं बिंतेऽम्मापिअरो, छंदेण पुत्तं ! पव्वया । नवर पुण सामण्णे, दुक्ख निप्पडिकम्मया ॥ ७६ ॥

अर्थ—(अम्मापिअरो) माता पिता (त) ते मृगापुत्रने (बिंति) कहेता हवा, के (पुत्त) हे पुत्र ! (छदेण) तारी इच्छा प्रमाणे (पव्वयः) तुं प्रव्रज्या ग्रहण कर (पुण) परंतु (नवर) विशेष कहेवानु ए छे जे—(सामण्णे) चारित्रने विषे (निप्पडिकम्मया) निःप्रतिकर्मता एटले रोगादिक उत्पन्न थया छतां पण तेनो प्रतिकार—औषधादिक उपाय करवानो नथी, ए (दुक्ख) अति दु ख छे ७६.

आ प्रमाणे मातापिताए कह्यु, त्यारे—

सो बिंतेऽम्मापिअरो !, एवमेअं जहाफुड । परिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मिअपक्खिण ? ॥७७॥

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (बिंति) कहे छे के—(अम्मापिअरो) हे माता पिता ! (एअं) आ तमे कह्युं ते (एवं) ए ज प्रमाणे (जहाफुडं) सत्यज छे. परंतु (अरण्णे) अरण्यने विषे (मिअपक्खिणं) मृग एटले पशु अने पक्षीओना (परिकम्मं) प्रतिकारने एटले चिकित्साने (को कुणइ) कोण करे छे ? वनमां रहेता पशुपक्षीओ व्याधिथी पीडाय छे त्यारे तेमने कोइ पण चिकित्सा करतुं नथी. ७७.

तेथी करीने—

एगभूओ अरण्णे वा, जहा उ चरई मिगो। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७८ ॥

अर्थ—(जहा उ) जेम (अरण्णे) अरण्यने विषे (मिगो) मृग (एगभूओ) एकलो ज स्वेच्छाए करीने (चरई) विचरे छे, (एवं) ए ज प्रमाणे हुं पण (संजमेण) सतर प्रकारना संयमवडे (तवेण य) तथा बार प्रकारना तपवडे (धम्मं) चारित्र धर्मनुं (चरिस्सामि) आचरण करतो विचरीश. ७८.

जया मिअस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई। अच्छंतं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥७९॥

अर्थ—(जया) ज्यारे (महारण्णम्मि) मोटा अरण्यमां (मिअस्स) मृगने (आयंको) आतंक–रोग (जायई) उत्पन्न थाय छे, (ताहे) त्यारे (रुक्खमूलम्मि) वृक्षना मूळने विषे (अच्छंतं) रहेला एवा तेने (को णं) कयो वैद्य (तिगिच्छई) चिकित्सा करे छे ? ७९.

को वा से ओसह देई ?, को वा से पुच्छई सुहं ?। को वा से भत्तपाणं च, आहरित्तु पणामए ? ।८०।

अर्थ—(वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (ओसह) औषध (देइ) आपे छे ? (वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (सुह) सुख साता (पुच्छई) पूछे छे ? (वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (भत्तपाणं च) भात पाणी-आहार (आहरित्तु) लावीने (पणामए) आपे छे ? कोइ ज नहीं ८०

त्यारे तेनो निर्वाह शी रीते थतो हशे ? ते उपर कहे छे—

जेया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोअरं। भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि अ ॥ ८१ ॥

अर्थ—(जया य) अने ज्यारे (से) ते मृग (सुही) सुखी एटले रोग रहित (होइ) होय छे-थाय छे, (तया) त्यारे (गोअर) गायनी जेम चरवाने स्थाने (गच्छइ) जाय छे, अने त्यां (भत्तपाणस्स) भोजन पाणीने (अट्ठाए) अर्थे (वल्लराणि) लीला घासना स्थानोने (सराणि अ) तथा सरोवरोने शोधे छे ८१

खाइत्ता पाणिअं पाउ, वल्लरेहिं सरेहि अ। मिगचारिअं चरित्ता णं, गच्छई मिअचारिअं ॥ ८२ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! ते व्याधि रहित मृग (मिगचारिअं) मृगनी चर्यावडे एटले मृगने खावा पीवानी विधिवडे (चरित्ता णं) चरीने (वल्लरेहिं) लीला घासना प्रदेशथी (सरेहि अ) तथा सरोवरथी (खाइत्ता) खाइने अने (पाणिअं पाउ) पाणी पीने (मिअचारिअं) मृगने विश्रांति लेवानी भूमि प्रत्ये (गच्छई) जाय छे ८२.

आ प्रमाणे दृष्टांत कहीने हवे बे गाथावडे उपसंहार करे छे—

एवं समुट्ठिते भिक्खू, एवमेव अणेगगो। मिगचारिअं चरित्ता णं, उड्ढं पक्कमई दिसिं ॥ ८३ ॥

अर्थ—(एवं) ए ज प्रमाणे (समुट्ठिते) चारित्रनी क्रिया पाळवामां उद्यमवंत थयेलो एटले मृगनी जेम रोगनी उत्पत्ति सते पण चिकित्सा नहीं करनार तथा (एवमेव) ए ज प्रमाणे एटले मृगनी जेम (अणेगगो) अनेक ठेकाणे अनियमित रीते रहेनार (भिक्खू) साधु (मिगचारिअं) मृगना जेवी चर्याने (चरित्ता णं) आचरण करीने–पाळीने सर्व कर्मनो नाश करी (उड्ढं दिसिं) ऊर्ध्व दिशा प्रत्ये एटले मोक्ष प्रत्ये (पक्कमई) जाय छे. ८३.

मृगचर्याने ज स्पष्ट करे छे.—

जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोअरे अ ।
एवं मुणी गोअरिअं पविट्ठे, नो हीलए नो वि अ खिंसइज्जा ॥ ८४ ॥

अर्थ—(जहा मिए)जेम मृग (एग) एकलो–सहाय रहित, तथा (अणेगचारी) अनियत विहार करनार, तथा (अणेगवासे) अनेक स्थाने निवास करनार (अ) तथा (धुवगोअरे) निश्चित गोचरवाळो एटले निरंतर गोचरमां ज मळेली वस्तुनो आहार करनार होय छे, (एवं) एज रीते (मुणी) मुनि पण तेवा ज विशेषणवाळो (गोअरिअं) गोचरीने विषे (पविट्ठे) गयो थको (नो हीलए) कोइनी हीलना न करे एटले कदन्नादिक मळे तो ते अन्ननी के तेना आपनारनी निंदा न करे (वि अ)

तेमज वळी (नो खिसइज्जा) खिंसा न करे एटले आहारनी प्राप्ति न थाय तो ते प्रसगे पण पोतानी के परनी निंदा न करे ८४

[redacted] प्रमाणे मृगचर्यानु स्वरूप कहीने मृगापुत्रे जे कह्यु, [redacted] मातापिताए जे कह्यु, अने पछी मृगापुत्रे जे कर्यु ते हवे कहे छे.—

मिगचारिअं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं । अम्मापिईहिंऽणुण्णाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८५॥

अर्थ—(मिगचारिअं) " शरीरनी चिकित्सा न करवी ए आदि मृगचर्याने (चरिस्सामि) हु आचरीश " ए प्रमाणे मृगापुत्रे कह्यु, त्यारे मातापिताए जवाब आप्यो के-(पुत्ता) " हे पुत्र ! (एव) जो एवी तारी इच्छा छे तो (जहासुह) जेम सुख उपजे तेम तु कर " ए प्रमाणे (अम्मापिईहिं) मातापिताए (अणुण्णाओ) अनुज्ञा आपी (तओ) त्यारे ते मृगापुत्रे (उवहिं) सर्व परिग्रहनो (जहाइ) त्याग कर्यो ८५

उपर कहेला अर्थने ज विस्तारथी कहे छे —

मिअचारिअं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं समणुण्णाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ।८६।

अर्थ—मृगापुत्रे कह्यु के—हे मातापिता ! (तुब्भेहिं) तमोए (समणुण्णाओ) अनुज्ञा आप्यो एवो हु (सव्वदुक्खविमोक्खणिं) सर्व दुःखनो नाश करनारी (मिअचारिअं) मृगचर्याने-दीक्षाने (चरिस्सामि) आचरीश " त्यारे मातापिताए

कह्युं के—(पुत्त) हे पुत्र ! (जहासुहं) जेम सुख उपजे तेम (गच्छ) तुं जा—मृगचर्यानुं आचरण कर. ८६.

एवं से अम्मापिअरो, अणुमाणित्ता ण बहुविहं । ममत्तं छिंदई ताहे, महानागुव्व कंचुअं ॥८७॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (स) ते मृगापुत्र (अम्मापिअरो) मातापितानी (अणुमाणित्ता ण) अनुज्ञा लइने (ताहे) ते वखते (महानागु) मोटो सर्प (व्व) जेम (कंचुअं) कांचळीनो त्याग करे तेम (बहुविहं) घणा प्रकारना (ममत्तं) ममत्वने (छिंदई) छेदतो हवो—त्याग करतो हवो. आ गाथावडे आभ्यंतर उपधिनो त्याग कह्यो. ८७.

हवे बाह्य उपधिनो त्याग कहे छे.—

इड्ढी वित्तं च मित्ते अ, पुत्त दारं च नायओ । रेणुअं व पडे लग्गं, निध्धुणित्ता ण निग्गओ ॥८८॥

अर्थ—(पडे) वस्त्रने विषे (लग्गं) लागेली—चोंटेली (रेणुअं व) रजनी जेम (इड्ढी) समृद्धिने, (वित्तं च) धनने तथा (मित्ते अ) मित्रोने तथा (पुत्त) पुत्रोने तथा (दारं च) स्त्रीओने तथा (नायओ) ज्ञातिने (निध्धुणित्ता ण) तजीने (निग्गओ) ते मृगापुत्र गृह बहार नीकळ्या. ८८.

त्यारपछी ते मृगापुत्र केवा थया ? अने तेने केवुं फळ प्राप्त थयुं ? ते कहे छे.—

पंचमहव्वयजुत्तो, पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो अ । सब्भिंतरबाहिरए, तवोवहाणम्मि उज्जुत्तो ॥८९॥

अर्थ—(पंचमहव्वयजुत्तो) पांच महाव्रतोथी युक्त, तथा (पंचहिं) पांच समितिवडे (समिओ) सहित, तथा (तिगुत्ति-

गुत्तो अ) त्रण गुप्तिवडे गुप्त, तथा (सब्भितरबाहिरए) आभ्यतर सहित बाह्य एवा (तवोवहाणम्मि) तप सबधी उपधानने विषे-कर्त्तव्यने विषे (उज्जुत्तो) उद्यमवत थया ८९

निम्ममो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो । समो अ सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ ॥ ९० ॥

अर्थ—तथा (निम्ममो) ममता रहित, (निरहकारो) अहकार रहित, (निस्सगो) बाह्य अने आभ्यतर सग रहित, (चत्त गारवो) त्रण गारव रहित, (अ) तथा (सव्वभूएसु) सर्व प्राणीओने विषे एटले (तसेसु) त्रस प्राणीओने विषे (थावरेसु अ) अने स्थावर प्राणीओने विषे (समो) समान परिणामवाळा थया ९०.

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा । समो निंदापससासु, समो माणावमाणओ ॥ ९१ ॥

अर्थ—(लाभालाभे) लाभ अने अलाभने विषे, (सुहे) सुख अने (दुक्खे) दु खने विषे, (जीविए) जीवित अने (मरणे) मरणने विषे, (तहा) तथा (निंदापससासु) निंदा अने प्रससाने विषे (समो) समान, तथा (माणावमाणओ) मान अने अपमानने विषे (समो) समान थया ९१

गारवेसु कसाएसु, दंडसल्लभएसु अ । निअत्तो हाससोगाओ, अनिआणो अबधणो ॥ ९२ ॥

अर्थ—(गारवेसु) त्रण गारव थकी (निअत्तो) निवृत्त थया, तथा (कसाएसु) चार कषायथी निवृत्त थया, तथा (दंड-सल्लभएसु अ) त्रण दड, त्रण शल्य अने सात भयथी निवृत्त थया, तथा (हाससोगाओ) हास्य अने शोकथी निवृत्त थया,

तथा (अनिआणो) नियाणा रहित थया, तथा (अबंधणो) राग द्वेषना बंधन रहित थया. ९२.

अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ । वासीचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तहा ॥९३॥

अर्थ—(इहं लोए) आ लोकने विषे पण (अणिस्सिओ) कोइनी निश्रा एटले सहाय रहित, तथा (परलोए) परलोकने विषे पण (अणिस्सिओ) निश्रा रहित अर्थात् आ लोकमां राज्यादिकनी अने परलोकमां स्वर्गसुखनी वांछा रहित थया. (वासीचंदणकप्पो अ) तथा वासी अने चंदनने विषे समान एटले कोइ पुरुष वांसलावडे छेदे अथवा कोइ माणस चंदनवडे पूजा करे ते बन्नेने विषे समान दृष्टिवाळा थया, (तहा) तथा (असणे) आहारने विषे अने (अणसणे) अनशनने विषे पण समान एटले आहार करवामां अने नहीं करवामां अथवा आहार मळे के न मळे तोपण ते बन्नेमां समान दृष्टिवाळा थया. ९३.

अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहिआसवो । अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणो ॥९४॥

अर्थ—(अप्पसत्थेहिं) अप्रशस्त एटले कर्म उपार्जन करवाना हेतुरूप हिंसादिक (दारेहिं) द्वारोथी निवृत्त थया, तेथी करीने ज (सव्वओ) चोतरफथी (पिहिआसवो) रुंध्या छे आश्रव एटले पापव्यापारो जेणे एवा थया, तथा (अज्झप्पज्झाणजोगेहिं) आत्माने विषे शुभ ध्यानना व्यापारोवडे (पसत्थदमसासणो) प्रशस्त छे दम एटले उपशम अने शासन एटले सर्वज्ञनो सिद्धांत जेने एवा थया. अर्थात् उपशमवाळा अने शासनना आराधक थया. ९४.

एवं नाणेण चरणेणं, दंसणेण तवेण य । भावणाहि अ सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥ ९५ ॥

अर्थ—(एव) एज प्रमाणे (नाणेण) मति, श्रुत विगेरे ज्ञानवडे, (चरणेण) यथाख्यात नामना चारित्रवडे, (दंसणेण) शुद्ध समकितवडे, (तवेण य) तथा बार प्रकारना तपवडे (य) तथा (सुद्धाहिं) शुद्ध एटले नियाणादिक दोषरहित एवी (भावणाहि) महाव्रत संबंधी पचीश भावनावडे अथवा अनित्यादिक बार भावनावडे (अप्पय) पोताना आत्माने (सम्म) सम्यक् प्रकारे (भावित्तु) भावीने एटले निर्मळ करीने—९५

बहुआणि उ वासाणि, सामणमणुपालिआ । मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥ ९६ ॥

अर्थ—(बहुआणि उ) घणा (वासाणि) वर्षो सुधी (सामण) चारित्रने (अणुपालिआ) पाळीने (मासिएण उ) एक मासना (भत्तेण) अनशनवडे (अणुत्तर) सर्वोत्कृष्ट एवी (सिद्धिं) सिद्धिने (पत्तो) पाम्या ९६

हवे अध्ययननो उपसहार करतां उपदेश आपे छे —

एवं करंति संबुद्धा, पंडिआ पविअक्खणा । विणिअट्टंति भोगेसु, मिअापुत्ते जहा मिसी ॥ ९७ ॥

अर्थ—(सबुद्धा) सम्यक् प्रकारे तत्त्वना जाण, तथा (पंडिआ) पंडित एटले हेय अने उपादेय जाणनारा, तथा (पविअक्खणा) अति विचक्षण एवा पुरुषो (एव) उपर कह्या प्रमाणे (करंति) करे छे, तेथी (भोगेसु) भोग थकी (विणिअट्टंति) पाछा वळे छे (जहा) जेम (मिसी) ऋषि (मिअापुत्ते) मृगापुत्र भोगथी निवृत्त थइ चारित्र ग्रहण करी मोक्षे गया तेम ९७ बीजी रीते उपदेश आपे छे

महापभावस्स महाजसस्स, मिआपुत्तस्स निसम्म भासिअं ।
तवप्पहाणं चरिअं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोअविस्सुअं ॥ ९८ ॥

अर्थ---(महापभावस्स) मोटा प्रभाववाळा, तथा (महाजसस्स) मोटा यशवाळा (मिआपुत्तस्स) मृगापुत्रना (भासिअं) संसारनुं असारपणुं विगेरे जणावनारा वचनने (निसम्म) सांभळीने (च) तथा (तवप्पहाणं) तप छे प्रधान-मुख्य जेमां एवुं तथा (उत्तमं) उत्तम एवुं, तथा (गइप्पहाणं च) मोक्षरूप गतिए करीने प्रधान एवुं, तथा (तिलोअविस्सुअं) त्रण जगतमां प्रसिद्ध एवुं (चरिअं) ते मृगापुत्रनुं चरित्र सांभळीने---९८.

विआणिआ दुक्खविवड्ढणं धणं, ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह निव्वाणगुणावहं महं ॥ ९९ ॥ त्ति बेमि ॥

अर्थ---तथा (धणं) धन (दुक्खविवड्ढणं) दुःखने वधारनार छे, (च) तथा (ममत्तबंधं) ममत्वनुं बंधन छे अने (महब्भयावहं) महा भयने वहन करनार छे एम (विआणिआ) जाणीने (सुहावहं) सुखने आपनार, (अणुत्तरं) सर्वोत्कृष्ट, (निव्वाणगुणावहं) मोक्ष प्राप्त करावनारा गुण जे अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य तेने धारण करनार थाओ तथा (महं) मोटी एवी (धम्मधुरं) धर्मधुराने (धारेह) धारण करो. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहेता हवा. ९९.

इति एकोनविंशतितममध्ययनम् ॥ १९ ॥

अथ महानिर्ग्रंथीय नामनुं वीशमु अध्ययन २०

ओगणीशमा अध्ययनमां निःप्रतिकर्मपणु एटले शरीरनी सारवार न करवी एम कह्यु ते अनाथपणा विना पाळी शकाय नहीं तेथी आ वीशमा अध्ययनमां अनेक प्रकारनु अनाथपणु कहे छे आ संबंधथी आवेला आ अध्ययनतु प्रथम सूत्र कहे छे —

सिद्धाण नमोकिच्चा, सजयाण च भावओ। अत्थधम्मगइ तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

अर्थ—(सिद्धाण) तीर्थकरादिक पदर प्रकारना सिद्धोने (सजयाण च) तथा संयतोने एटले आचार्य, उपाध्याय अने साधुओने (भावओ) भावथी (नमोकिच्चा) नमस्कार करीने (अत्थधम्मगइ) प्रार्थना करवा लायक धर्मनु ज्ञान छे जेने एवी अने (तच्च) सत्य एवी (मे) माराथी कहेवाती एवी (अणुसिट्ठि) शिक्षाने-उपदेशने (सुणेह) तमे सांभळो १.

आ सूत्रमां धर्मकथानुयोग होवाथी धर्मकथाना द्वारवडे ज उपदेश आपे छे.—

पभूअरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो। विहारजत्त निज्जाओ, मंडिकुच्छिसि चेइए ॥ २ ॥

अर्थ—(पभूअरयणो) गज अश्वादिक अथवा वैडुर्यादिक घणा रत्नोवाळो (मगहाहिवो) मगध देशनो अधिपति (सेणिओ) श्रेणिक नामनो (राया) राजा एकदा (विहारजत्त) विहार यात्राए एटले अश्वक्रीडा करवा माटे नगरथी (निज्जाओ) नीकळ्यो थको (मडिकुच्छिसि) मंडितकुक्षि नामना (चेइए) चैत्यने विषे-वनने विषे गयो २

ते उद्यान केवुं हतुं ? ते कहे छे.—

नाणादुमलयाइण्णं, नाणापक्खिनिसेविअं । नाणाकुसुमसंछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणादुमलयाइण्णं) विविध प्रकारना वृक्षो अने लताओवडे व्याप्त, (नाणापक्खिनिसेविअं) विविध पक्षीओए सेवेलु तथा (नाणाकुसुमसंछन्नं) विविध जातिना पुष्पो सहित एवुं (उज्जाणं) ते उद्यान (नंदणोवमं) नंदन वननी जेवुं हतुं. ३.

तत्थ सो पासई साहुं, संजयं सुसमाहिअं । निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइअं ॥ ४ ॥

अर्थ—(तत्थ) ते उद्यानमां (सो) ते श्रेणिक राजाए (संजयं) सम्यक् प्रकारे यतना करता, (सुसमाहिअं) सारी समाधिवाळा, (रुक्खमूलम्मि) वृक्षना मूळमां (निसन्नं) बेठेला, (सुकुमालं) अति कोमळ अने (सुहोइअं) सुखने एटले सुख भोगववाने योग्य एवा एक (साहुं) साधुने (पासई) जोया. ४.

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए । अच्चंतं परमो आसि, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अर्थ—(तस्स) ते मुनिनुं (रूवं तु) रूप (पासित्ता) जोइने (राइणो) श्रेणिक राजाने (तम्मि संजए) ते मुनिने विषे (अच्चंतं) अत्यंत (परमो) उत्कृष्ट (अउलो) अतुल—कोइनी उपमा न अपाय एवो (रूवविम्हओ) रूपना विषयवाळो विस्मय (आसि) थयो. ५

ते विस्मयने ज बतावे छे—

अहो ! वण्णो ! अहो ! रूव !, अहो ! अज्जस्स सोमया ! ।
अहो ! खन्ती ! अहो ! मुत्ती !, अहो ! भोगे असंगया ! ॥ ६ ॥

अर्थ—राजा विचार करे छे के—(अहो) अहो ! आ मुनिना शरीरनो (वण्णो) वर्ण ! (अहो रूव) अहो एनु रूप ! (अहो) अहो ! (अज्जस्स) आ आर्यनी–पूज्यनी (सोमया) चंद्रना जेवी सौम्यता–सुंदरता ! (अहो खंती) अहो ! आनी क्षमा ! (अहो मुत्ती) अहो ! आनी मुक्ति—निर्लोभता ! (अहो भोगे असंगया) अहो ! भोगने विषे आनी निःस्पृहता ! सर्व अति आश्चर्यकारक छे ६

तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं । नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

अर्थ—एम विचारी (तस्स) ते मुनिना (पाए उ) पादने (वंदित्ता) वंदन करीने (य) तथा (पयाहिणं) प्रदक्षिणा (काऊण) करीने (नाइदूर) अति दूर नहीं तेमज (अणासन्ने) अति समीपे नहीं एवी रीते बेसीने (पंजली) बे हाथ जोडी (पडिपुच्छइ) राजाए प्रश्न कर्यो ७

तरुणोऽसि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ! । उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एअमट्ठं सुणामि ता* ॥८॥

---

* ते इति वा पाठ

अर्थ—(अज्जो) हे आर्य ! (तरुणोऽसि) तमे युवान छो, (संजया) हे मुनि ! (भोगकालम्मि) भोग भोगववाने समये (पव्वइओ) तमे प्रव्रज्या लीधी छे, (सामण्णे) चारित्रने विषे (उवाट्ठिओऽसि) उद्यमवंत थया छो. (एअमट्ठं) आ अर्थने एटले आ युवावस्थामां प्रव्रज्या लेवाना कारणने (ता) प्रथम (ते) तमारी पासे (सुणामि) हुं सांभळुं—सांभळवा इच्छुं छुं, अने पछी तमे बीजुं जे कहेशो ते पण सांभळीश. ८.

हवे ते मुनि जवाब आपे छे.—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जई । अणुकंपगं सुहिं वा वि, कंची नाभिसमेमहं ॥९॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (अणाहोमि) हुं अनाथ छुं. (मज्झ) मारो कोइ (नाहो) नाथ (न विज्जइ) नथी. (वा) अथवा (अणुकंपगं) दयाने चिंतवनार (कंची) कोइ (सुहिं) सुहृद्-मित्रने (वि) पण (नाभिसमेमहं) हुं पाम्यो नथी. आ कारणथी में प्रव्रज्या लीधी छे. ६. आ प्रमाणे मुनिए कह्युं त्यारे—

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्डिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ॥१०॥

अर्थ—(तओ) ते वखते (सो) ते (मगहाहिवो) मगध देशनो अधिपति (सेणिओ) श्रेणिक (राया) राजा (पहसिओ) हस्यो के—(एवं) आ प्रकारे (इड्डिमंतस्स) ऋद्धिवाळा एवा (ते) तमारो (नाहो) नाथ (कहं) केम (न विज्जई) नथी ? अहीं सर्वत्र ते काळनी अपेक्षाए वर्तमानकाळ लखेलो छे. ११.

जो व्रत अंगीकार करवामां अनाथता ज कारण होय तो—

होमि नाहो भयताण, भोगे भुंजाहि संजया ! । मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

अर्थ—(भयताण) पूज्य एवा आपनो हुं (नाहो) नाथ (होमि) थाउं (संजया) हे मुनि ! (मित्तनाईपरिवुडो) मित्र अने ज्ञातिथी परिवर्या थका (भोगे) भोगोने (भुंजाहि) भोगवो कारण के (माणुस्सं) मनुष्यपणुं पामवुं (खु) खरेखर (सुदुल्लहं) अत्यंत दुर्लभ छे ११

ते सांभळी मुनि बोल्या —

अप्पणा वि अणाहोऽसि, सेणिआ ! मगहाहिवा ! । अप्पणा अणाहो संतो, कह नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥

अर्थ—(मगहाहिवा) हे मगधना अधिपति (सेणिआ) श्रेणिक राजा ! (अप्पणा वि) तमे पोते ज (अणाहोऽसि) अनाथ—नाथ रहित छो (अप्पणा) तेथी पोते ज (अणाहो संतो) अनाथ सता (कह) केवी रीते मारा (नाहो) नाथ (भविस्ससि) थशो ? १२

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ । वयणं अस्सुअपुव्वं, साहुणा विम्हयं निओ ॥१३॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (साहुणा) मुनिए (अस्सुअपुव्वं) पूर्वे नहीं सांभळेला (वयणं) वचन प्रत्ये (वुत्तो) कहेवायो एवो (सो) ते (नरिंदो) श्रेणिक राजा (सुसंभंतो) अत्यंत संभ्रांत थने (सुविम्हिओ) अत्यंत विस्मित थई

(विम्हयं निओ) आश्चर्य पाम्यो. प्रथम ते मुनिना रूपादिक जोइने राजा आश्चर्य पाम्यो हतो, ते फरीथी आवुं अपूर्व वचन सांभळी वधारे आश्चर्य पाम्यो. १३.

पछी राजा आ प्रमाणे बे गाथावडे बोल्यो.—

आसा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे। भुंजामि माणुसे भोए, आणाइस्सरिअं च मे ॥१४॥

अर्थ—हे मुनि ! (मे) मारे (आसा) घणा अश्वो छे, तथा (हत्थी) हाथीओ छे, तथा (मणुस्सा) मनुष्यो-सेवको अने स्वजनादिक छे, (च) तथा (मे) मारे (पुरं) नगर छे, तथा (अंतेउरं) राणीओनो समूह छे, तथा हुं (माणुसे) मनुष्य संबंधी (भोए) कामभोगोने (भुंजामि) भोगवुं छुं, (च) तथा (मे) मारे (आणाइस्सरिअं) अस्खलित शासनरूप आज्ञा अने ऐश्वर्य एटले समृद्धि-स्वामीपणुं छे. मारा राज्यमां कोइ पण मारी आज्ञानो भंग करतुं नथी. १४.

एरिसे संपयग्गामि, सव्वकामसमप्पिए। कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुसं वए ॥ १५ ॥

अर्थ—(एरिसे) आवा प्रकारनी (सव्वकामसमप्पिए) सर्व मनवांछितने पूर्ण करनार (संपयग्गम्मि) संपदानो प्रकर्ष-मोटी समृद्धि सते (कहं) केवी रीते हुं (अणाहो) अनाथ (भवइ) थाउं ? कारण के हुं सर्व संपत्तिनो नाथ छुं. (हु) तेथी करीने (भंते) हे पूज्य ! आप (मुसं) मृषा (मा वए) न बोलो. १५.

त्यारे मुनि आ प्रमाणे बोल्या —

णं तुम जाणे अणाहस्स, अत्थ पोत्थं च पत्थिवा ।। जहा अणाहो हवइ, सणाहो व नराहिवा ! ॥१६॥

अर्थ—(पत्थिवा) हे राजा ! (तुम) तमे (अणाहस्स) अनाथ शब्दना (अत्थ) अर्थने (पोत्थं च) तथा प्रोत्थानने एटले कथा अभिप्रायथी में अनाथ शब्द कह्यो तेनी मूळ उत्पत्तिने (ण जाणे) तमे जाणता नथी, के (जहा) जे प्रकारे (अणाहो) अनाथ (व) के (सणाहो) सनाथ (हवइ) होय, ते प्रकारे (नराहिवा) हे नराधिप ! तमे जाणता नथी १६

सुणेह मे महाराय !, अव्वक्खित्तेण चेअसा । जहा अणाहो भवति, जहा मे अ पवत्तिअ ॥१७॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जहा) जे प्रकारे मनुष्य (अणाहो) अनाथ (भवति) थाय छे, (अ) अने (जहा) जे प्रकारे (मे) में ते अनाथपणु (पवत्तिअ) प्रवर्ताव्यु एटले प्ररूप्यु-कर्यु छे, ते प्रकारे (मे) कहेता एवा मारा थकी तमे (अव्वक्खित्तेण) अव्याक्षिप्त-स्थिर (चेअसा) चित्तवडे (सुणेह) सांभळो १७

आ प्रमाणे कहीने पछी मुनि पोतानी कथा कहेवा लाग्या —

कोसंबी नाम नयरी, पुराणपुरभेअणी । तत्थ आसी पिआ मज्झ, पभूअधणसंचओ ॥ १८ ॥

अर्थ—(पुराणपुरभेअणी) जूनां नगरोने भेदनारी एटले जूनां नगरोथी पण अधिक शोभावाळी (कोसंबी नाम)

कौशांबी नामनी (नयरी) नगरी छे. (तत्थ) तेमां (पभूअधणसंचओ) घणा धननो संचय-संग्रह करनार धनसंचय नामे (मज्झं) मारो (पिआ) पिता (आसी) हतो. प्राये करीने जूनां नगरोमां वसनारा लोको चतुर, धनवान, घणा अनुभवी अने विवेकी होय छे एवुं रहस्य जणाववा माटे जूना नगरने भेदनारी आ नगरी कही छे. १८.

पढमे वए महाराय!, अउला मे अच्छिवेअणा। अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा! ॥१९॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा! (पढमे वए) पहेली वयमां एटले युवावस्थामां (मे) मने एकदा (अउला) अतुल एवी (अच्छिवेअणा) नेत्रनी पीडा (अहोत्था) थइ, तेथी (पत्थिवा) हे राजा! (सव्वगत्तेसु) मारा सर्व अवयवोने विषे (विउलो) विपुल-मोटो (दाहो) दाह थवा लाग्यो. १९.

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरंतरे। आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेअणा ॥२०॥

अर्थ—(जहा) जेम कोइ (कुद्धो अरी) क्रोध पामेलो शत्रु (सरीरविवरंतरे) कर्ण, नासिका विगेरे शरीरना विवरोनी मध्ये (परमातिक्खं) अत्यंत तीक्ष्ण (सत्थं) शस्त्रने (आवीलिज्ज) गाढ रीते नांखे अने तेथी जेवी वेदना थाय (एवं) एवी असह्य (मे) मने (अच्छिवेअणा) नेत्रनी पीडा थती हती. २०.

तिअं मे अंतरिच्छं च, उत्तिमंगं च पीडेई। इंदासणीसमा घोरा, वेअणा परमदारुणा ॥२१॥

अर्थ—(मे) मारा (तिअं) कटिभागने, तथा (अंतरिच्छं) खान, पान, रमण विगेरे अंदरनी इच्छाने, तथा

(उत्तिमग च) मस्तकने ते (इंदासणीसमा) इंद्रना वज्र जेवी अति दाह उत्पन्न करनारी (घोरा) भयकर एटले बीजाने पण भय उत्पन्न करनारी अने (परमदारुणा) पोताने अत्यत दुःख उत्पन्न करनारी (वेयणा) वेदना (पीडई) पीडा करवा लागी २१

उवट्ठिया ¹मे आयरिआ, विज्जामततिगिच्छगा । अबीआ* सत्थकुसला, मतमूलविसारया ॥ २२ ॥

अर्थ—ते वखते (मे) मने-मारी पासे (आयरिआ) आचार्यो एटले वैद्यो (उवट्ठिआ) प्राप्त थया एटले मारी चिकित्सा करवा आव्या ते वैद्यो (विज्जामततिगिच्छगा) विद्या अने मत्रवडे चिकित्सा करनारा हता, तथा (अबीआ) अद्वितीय एटले तेमनी जेवा बीजा कोइ निपुण नहोता, अथवा (अधीआ) सारी रीते भणेला हता, तेथी ज (सत्थकुसला) शास्त्रने विषे कुशळ हता, तथा (मतमूलविसारया) देव अधिष्ठित मत्रो अने जडीबुट्टी आदि मूळीयांमा विचक्षण हता, एटले मत्र अने मूळना गुणोने जाणनारा हता २२

¹ते ²मे तिगिच्छं कुव्वति, चाउप्पाय जहाहिअं । न य दुक्खा विमोअति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥

अर्थ—(ते) ते वैद्यो (जहाहिअं) जेम हित थाय तेम (चाउप्पाय) चार प्रकारे (मे) मारी (तिगिच्छं) चिकित्सा (कुव्वति) करवा लाग्या अहीं वैद्य, औषध, रोगी अने सारवार करनार, अथवा वमन, विरेचन, मर्दन अने

* अधीआ इति वा पाठ

स्वेदन—परसेवो आवे तेवुं, अथवा अंजन, बंधन, लेपन अने मर्दन ए रीते शास्त्रमां कहेली चार चार प्रकारनी चिकित्सा जाणवी. ए रीते गुरुपरंपरा प्रमाणे चिकित्सा करवा लाग्या, (य) तोपण तेओए मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोअंति) मुक्त कर्यो नहीं—मुक्त करी शक्या नहीं. (एसा) ए ज (मज्झ) मारी (अणाहया) अनाथता छे. २३.

पिआ मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥

अर्थ—(मे) मारा (पिआ) पिताए (मम कारणा) मारे कारणे ते वैद्योने (सव्वसारं पि) घरनो सर्व सार—सर्व धनादिक सार वस्तु (दिज्जाहि) आपी. (य) तोपण तेणे मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोएइ) मुक्त कर्यो नहीं. (एसा) ए (मज्झ) मारी (अणाहया) अनाथता छे. अर्थात् सर्वस्व आपीने पण मारा पिता मारुं दुःख दूर करी शक्या नहीं, ए ज मारी अनाथता छे. २४.

माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिआ*। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (पुत्तसोगदुहट्टिआ) पुत्रना शोकरूपी दुःखमां रहेली अथवा (दुहट्टिआ) दुःखे करीने पीडायेली (मे) मारी (माया वि) माता पण (दुक्खा) दुःखथी मने (न य विमोएइ) मूकावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) ए ज मारी अनाथता छे. २५.

* दुहट्टिआ इति वा.

भायरो मे महाराय !, सगा जिट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोअति, एसा मज्झं अणाहया ॥२६॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जिट्ठकणिट्ठगा) मोटा अने नाना (सगा) सहोदर (मे) मारा (भायरो) भाइओ मने (दुक्खा) दुःखथी (न य विमोअति) मूकावी शक्या नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) ए मारी अनाथता छे २६

भइणिओ मे महाराय ! सगा जिट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोअति, एसो मंज्झ अणाहया ॥२७॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जिट्ठकणिट्ठगा) मोटी अने नानी (सगा) सहोदरी (मे) मारी (भइणिओ) पहेनो मने (दुक्खा) दुःखथी (न य विमोअति) मूकावी न शकी, (एसा मज्झ अणाहया) ए मारी अनाथता छे २७

भारिया मे महाराय !, अणुरत्ता अणुव्वया । असुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ॥ २८ ॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (अणुरत्ता) प्रीतिवाळी अने (अणुव्वया) पतिव्रता एवी (मे) मारी (भारिया) भार्या (असुपुण्णेहिं) अश्रुवडे पूर्ण एवा (नयणेहिं) नेत्रोवडे (मे उरं) मारा उर स्थळने (परिसिंचइ) सिंचती हती परंतु ते पण मने दुःखथी मूकावी शकी नहीं ए मारी अनाथता छे २८

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंधमल्लविलेवणं । मए णायमणाय वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥

अर्थ—(सा बाला) ते मारी भार्या (मए) में (णाय) जाण्युं (अणायं वा) के न जाण्युं तेम एटले मारा

जाणता के न जाणता (अन्नं) अन्न, (पाणं च) पाणी, तथा (एहाणं च) स्नान, तथा (गंधमल्लविलेवणं) गंध, पुष्पमाळा अने विलेपन एमांनुं कांइ पण (न उवभुंजइ) भोगवती नहोती, मारा दुःखथी सर्व भोगो तेणीए पण तज्या हता. २९.

खणं पि मे महाराय !, पासओ वि न फिट्टई। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (खणं पि) एक क्षणवार पण (मे) मारी (पासओ वि) पासेथी–समीप भागथी जरा पण (न फिट्टई) दूर जती नहोती, (य) तोपण ते मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोएइ) मूकावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) आ मारी अनाथता छे. ३०.

तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो। वेअणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले सर्व उपायो निष्फळ थया पछी (हं) हुं (एवं) आ प्रमाणे (आहंसु) बोल्यो के—(हु) निश्चे (जे) " जे (वेअणा) वेदना (अणुभविउं) अनुभववाने (दुक्खमा) दुःसह छे, ते वेदना (अणंतए) आ अनंत एवा (संसारम्मि) संसारने विषे (पुणो पुणो) वारंवार में भोगवी छे. ३१.

तेथी करीने—

सइं च जइ मुच्चिज्जा, वेअणा विउला इओ। खंतो दंतो निरारंभो, पव्वए अणगारिअं ॥ ३२ ॥

अर्थ -(नइ) जो (सइ च) एक वार हु (इओ) आ (विउला) मोटी (वेअणा) वेदनाथी (मुच्चिजा) मूकाउं, तो हु (खतो) क्षमावाळो, (दंतो) इंद्रिय अने नोइंद्रियना दमनवाळो अने (निरारंभो) सर्व सावद्य आरंभ रहित एवो थइने (अणगारिअं) साधुपणाने-चारित्रने (पव्वए) अंगीकार करीश के जेथी संसारनो ज नाश थवाथी कोइ वखत पण फरीने वेदना प्राप्त थशे ज नहीं " ३२

एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तोमि नराहिवा !। परिअत्ततीइ राईए, वेअणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(नराहिवा) हे नराधिप ! केवळ आ प्रमाणे बोलीने ज नहीं, परंतु (एवं च) ए प्रमाणे (चिंतइत्ताणं) मनमां चिंतवन करीने (पसुत्तोमि) हुं सुइ गयो, तेवामां (राईए) रात्रि (परिअत्ततीइ) अतिक्रमण थतां एटले जेम जेम रात्रि जवा लागी तेम तेम (मे) मारी (वेअणा) वेदना (खयं गया) क्षय पामी ३३

तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ता ण बंधवे । खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओ अणगारिअं ॥३४॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले वेदनानो क्षय थया पछी (कल्ले) रोग रहित थयेला में (पभायम्मि) प्रात काळने विषे ज (बंधवे) बांधवोने (आपुच्छित्ता ण) पूछीने एटले तेमनी रजा लइने (खंतो) क्षमावान, (दंतो) इंद्रियोना दमनवाळो अने (निरारंभो) आरंभ रहित थइ (अणगारिअं) चारित्रने (पव्वइओ) अंगीकार कर्युं ३४

तओ हं नाहो जाओ, अप्पणो अ परस्स य । सव्वेसिं चेव भूआणं, तसाणं थावराण य ॥ ३५ ॥

अर्थ—(तओ) त्यार पछी एटले दीक्षा ग्रहण कर्या पछी (हं) हुं (अप्पणो अ) पोतानो एटले मारो अने (परस्स य) परनो एटले बीजानो (नाहो जाओ) योग क्षेम करनारो नाथ थयो छुं. ए प्रमाणे (सव्वेसिं चेव) सर्वे एवा ज (तसाणं) त्रस (थावराण य) अने स्थावर (भूआणं) प्राणीओनो हुं नाथ थयो छुं. ३५.

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी केम नाथ थया ? पहेलां केम न थया ? ते उपर कहे छे.—

अप्पा नई वेअरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥ ३६ ॥

अर्थ—हे राजा ! (अप्पा) मारो आत्मा ज (वेअरणी) नरकमां रहेली वैतरणी नामनी (नई) नदीरूप छे, (मे) मारो (अप्पा) आत्मा ज (कूडसामली) नरकमां रहेलुं कूटशाल्मली नामनुं वृक्ष छे, (अप्पा) मारो आत्मा ज (कामदुहा धेणू) कामदुघा गाय छे, तथा (मे) मारो (अप्पा) आत्मा ज (नंदणं वणं) नंदन वनरूप छे. अर्थात् स्वर्ग नरकादिक आपनार आत्मा ज छे. ३६.

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिअ सुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

अर्थ—हे महाराजा ! (अप्पा) आत्मा ज (दुहाण य) दुःखनो अने (सुहाण य) सुखनो (कत्ता) कर्ता-करनार अने (विकत्ता य) विकर्ता एटले नाश करनार पण छे, तथा (अप्पा) आत्मा ज (मित्तं) मित्र (अमित्तं च) अने अमित्र पण छे, तथा आत्मा ज (दुप्पट्ठिअ) दुःप्रस्थित एटले दुराचारी अने (सुपट्ठिओ) सुप्रस्थित एटले सदाचारी छे. तेमां दुराचारी सतो समग्र दुःखनो हेतु होवाथी वैतरणी नदी आदि जेवो छे अने सदाचारी सतो समग्र सुखनो हेतु होवाथी

कामधनु सदृश छे तेथी करीने प्रव्रज्याने विषे ज सदाचारीपणु होवाथी तथा स्वपरनु योग क्षेम करवापणु होवाथी हु नाथरूप थयो छु ३७

फरीथी बीजे प्रकारे अनाथपणु कहे छे —

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !, तमेगचित्तो निहुओ सुणाहि ।
निग्गंठधम्मं लहिआण वी जहा, सीदंति एगे बहु कायरा नरा ॥३८ ॥

अर्थ—(निवा) हे राजा ! (इमा) आ एटले हमणां हु कहीश ते (हु) निश्चे (अन्ना वि) बीजी पण (अणाहया) अनाथता छे, (त) तने तमे (एगचित्तो) एकाग्र चित्तवाळा अने (निहुओ) निश्चळ एवा सता (सुणाहि) सांभळो (जहा) ते ए के–(एगे) केटलाएक (बहु कायरा) घणा कायर (नरा) मनुष्यो (निग्गंठधम्मं) साधुधर्मने (लहिआण वी) पामीने पण (सीदंति) सीदाय छे—साधुना आचार पाळवामां शिथिल थाय छे तेओ सीदाता थका पोतानु अने परनु रक्षण करवा समर्थ थता नथी, तेथी तेमनी आ सीदन नामनी बीजी अनाथता जाणवी ३८.

ते ज बतावे छे —

जो पव्वइत्ता ण महव्वयाइ, सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिंदइ बंधणं से ॥ ३९ ॥

अर्थ—हे राजा ! (जो) जे मनुष्य (पव्वइत्ता ण) प्रव्रज्या ग्रहण करीने पछी (पमाया) प्रमादथी (महव्वयाइं) पांच महाव्रतोने (सम्मं च) सम्यक् प्रकारे (नो फासयई) सेवतो नथी, (से) ते मनुष्य (अणिग्गहप्पा) नथी वश कर्यो आत्मा जेणे एवो (य) तथा (रसेसु) मधुरादिक रसने विषे (गिद्धे) गृद्धिवाळो सतो (बंधणं) संसारनां कारणरूप रागद्वेपना लक्षणवाळा कर्मबंधनने (मूलओ) मूळथी (न छिंदइ) छेदी शकतो नथी—सर्वथा प्रकारे रागद्वेषने निवारी शकतो नथी. ३९.

आउत्तया जस्स य नत्थि काई, ईरिआइ भासाइ तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेव दुगंछणाए, न धीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जस्स य) वळी जे साधुने (इरिआइ) ईर्याने विषे एटले गमनागमननी समितिने विषे, तथा (भासाइ) भाषासमितिने विषे, (तहा एसणाए) तथा एषणा—आहार ग्रहण करवानी समितिने विषे, तथा (आयाणनिक्खेव) उपगरण आदि वस्तु लेवा अने मूकवानी समितिने विषे, तथा (दुगंछणाए) परिष्ठापनानी समितिने विषे (काई) कांइ पण (आउत्तया) उपयोग (नत्थि) नथी, ते साधु (धीरजायं) धीरयात एटले धीर पुरुषोए पामेला (मग्गं) मोक्षमार्गने (न अणुजाइ) पामतो नथी. ४०.

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनिअमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होई हु संपराए ॥ ४१ ॥

अर्थ—(से) ते पूर्वे कहेलो पंच समिति रहित साध्वाभास (अथिरव्वए) अस्थिर व्रतवाळो तथा (तवनिअमेहि) अनशनादिक तप अने अभिग्रहादिक नियमथी (भट्ठे) भ्रष्ट-रहित एवो सतो (चिर पि) चिरकाळ सुधी (मुंडरुई) मात्र मुंडनने विषे ज-लोचने विषे ज रुचिवाळो (भवित्ता) थइने (चिर पि) चिरकाळ सुधी (अप्पाण) पोताना आत्माने (किलेसइत्ता) क्लेश पमाडीने (संपराए) संसारनो (पारए) पारगामी (न होइ हु) थतो ज नथी ४१

पोल्लेव मुट्ठी जह से असारे, अयंतिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलिअप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥

अर्थ—(से) ते मुंडरुचिवाळो द्रव्यसाधु (पोल्लेव) पोली ज (मुट्ठी जह) मुठीनी जेम (असारे) असार छे-अंतःकरणमां धर्म नहीं होवाथी खाली मुठीनी जेवो सार रहित ज छे, तथा (कूडकहावणे वा) कूट कार्षापण-खोटा रुपीयानी जेम (अयंतिए) अनियंत्रित एटले अनादर करवा लायक-उपेक्षा करवा लायक छे. (हु) कारण के (वेरुलिअप्पगासे) वैडूर्य मणिनी जेवा प्रकाशवाळो छतां पण (राढामणी) काचमणि (जाणएसु) मणिनी परीक्षा जाणनाराओने विषे (अमहग्घए होइ) अमहार्घ्य थाय छे-मूल्यवान थतो नथी. ४२

कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणो, विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥ ४३ ॥

अर्थ—(से) साधुना आचार रहित एवो ते (कुसीललिंगं) पासत्थादिक कुशीलीयाना लिंगने (धारइत्ता) धारण करीने तथा (जीविय) आजीविकाने माटे (इसिज्झयं) ऋषिध्वजने एटले रजोहरणने अने मुखवस्त्रिकाने (वूहइत्ता) वृद्धि पमाडीने एटले आ वेष ज मुख्य छे एम कहीने (असंजए) संयमी नहीं छतां पण (संजयलप्पमाणो) 'हुं संयमी छुं' एम बोलतो सतो (इह) आ संसारमां (चिरं पि) चिरकाळ सुधी (विणिघायं) विविध प्रकारनी पीडाने (आगच्छइ) पामे छे. ४३.

तेनुं कारण बतावे छे.—

विसं पिवित्ता जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीअं ।
एमेव धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेआल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥

अर्थ—(जह) जेम (कालकूडं) काळकूट नामनुं (विसं) विष (पिवित्ता) पीधुं सतुं प्राणने (हणाइ) हणे छे, तथा (जह) जेम (सत्थं) शस्त्र (कुग्गहीअं) खराब रीते एटले विपरीतपणे ग्रहण कर्युं सतुं पोताने ज हणे छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (धम्मो) धर्म पण (विसओववन्नो) शब्दादिक विषयोथी युक्त सतो आत्माने (हणाइ) हणे छे. कोनी जेम ? ते कहे छे–(अविवन्नो) मंत्रादिकवडे नहीं वश करेलो (वेआल इव) वेताळ–पिशाच जेम उलटो हणनार थाय छे तेम. ४४.

जो लक्खण सुविण पउजमाणे, निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥ ४५ ॥

अर्थ—(जो) जे साधु (लक्खण) स्त्रीपुरुषना लक्षणना शास्त्रनो तथा (सुविण) स्वप्नशास्त्रनो एटले स्वप्नना शुभाशुभ फळ कहेनारा शास्त्रनो (पउजमाणे) उपयोग करतो होय, तथा जे साधु (निमित्तकोऊहलसंपगाढे) भूकंपादिक निमित्त कहेवुं अने कौतुक एटले पुत्रादिक थवा माटे जे स्नानादिक बतावबुं, तेमां आसक्त होय, तथा जे साधु (कुहेडविज्जा सवदारजीवी) कुहेटक विद्या एटले खोटा आश्चर्य बतावनारा मंत्र तंत्रादिकनी विद्या, ते ज कर्मबंधनो हेतु होवाथी आश्रव द्वार कहेवाय छे, ते कुहेटक विद्यारूपी आश्रवद्वारवडे आजीविका करवाना स्वभाववाळो होय, ते साधु (तम्मि काले) ते लक्षणादिकनो उपयोग करवाथी बंधायेला कर्मना उदयकाळे एटले नरकादिकनां दुःख भोगवती वखते (सरणं) ते दुःखथी रक्षण करनार कोइ पण शरणने (न गच्छई) पामतो नथी ४५

आ ज अर्थने विस्तारथी कहे छे—

तमतमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परिआसुवेइ ।
संधावइ नरगतिरिक्खजोणी, मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥

अर्थ—(असीले) कुशीळीयो एवो (से) ते द्रव्य साधु (तमतमेणेव उ) अत्यंत अज्ञानवडे करीने ज (सया) सदा

(दुही) दुःखी थयो सतो (विप्परियास उवेइ) तत्त्वने विषे विपरीतपणाने पामे छे, तथा (असाहुरूवे) असाधुरूप एवो ते द्रव्यसाधु (मोणं) चारित्रनी (विराहित्तु) विराधना करीने (नरगतिरिक्खजोणी) नरक अने तिर्यंचनी योनि प्रत्ये (संपधावइ) निरंतर दोडे छे--जाय छे. अर्थात् चारित्रनी विराधनाथी दुर्गतिनो अनुबंध-वारंवार संबंध थाय छे. ४६.

शी रीते चारित्रनी विराधना करे छे ? अथवा शी रीते नरक अने तिर्यग्गति प्रत्ये दोडे छे ? ते कहे छे.—

उद्देसिअं कीअगडं निआगं, न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥ ४७ ॥

अर्थ—जे साधु (उद्देसिअं) औद्देशिक एटले साधुने उद्देशीने करेलो, (कीअगडं) क्रीत एटले साधुने माटे खरीद करेलो, आहृत एटले साधुनी सन्मुख आणेलो, (निआगं) नित्यकं एटले हमेशां एक ज गृहस्थने घेरथी लीधेलो-एवो (किंचि) कांइ पण-कोइपण रीते (अणेसणिज्जं) अनेषणीय एटले साधुने न कल्पे एवो जे आहार तेने (न मुंचई) मूके नहीं-तजे नहीं, ते (अग्गी विवा) अग्निनी जेम (सव्वभक्खी) सर्वने भक्षण करनारो (भवित्ता) थइने (इओ) आ मनुष्य भवथी (चुओ) चव्यो थको-मरण पाम्यो थको (पावं) पाप (कट्टु) करीने, दुर्गतिमां (गच्छइ) जाय छे. ४७.

ने 'त अरी कंठछित्ता करोति, जं 'से करे अप्पणिआ दुरप्पा ।
'से नाहिइ मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥

अर्थ—(से) तेवा पापी साधुने (अप्पणिआ) पोतानी ज (दुरप्पा) दुरात्मता–दुष्टता (ज) जे अनर्थने (करे) करे छे, (त) तेवा अनर्थने (कंठछित्ता) कंठने छेदनार (अरी) शत्रु पण (न करोति) करी शकतो नथी (तु) वळी (दयाविहूणो) दया रहित एवो (से) ते साधु (मच्चुमुह) मृत्युना समयने (पत्ते) पामे छे त्यारे (पच्छाणुतावेण) पश्चात्तापे करीने (नाहिइ) 'हा ! में बहु दुष्कृत कर्यां !' ए प्रमाणे कदी पोतानी दुष्टताने जाणशे केमके दुष्टता अनर्थनु कारण छे अने पश्चात्तापनु पण कारण छे. परतु पछी जाणवु ज्ञान आवशे नहीं तेथी पहेलेथी ज तेने जाणीने तेनो त्याग करवो उचित छे. ४८.

जे कोइ मरण समये पण मोहने लीधे पोतानी दुरात्मताने जाणे नहीं, तो तेनु शु थाय ? ते कहे छे —

निरट्ठिआ नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तिमट्ठ विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्झइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥

अर्थ—(जे) जे द्रव्यसाधु (उत्तिमट्ठ) उत्तमार्थे एटले अंत समयनी आराधनाने विषे पण (विवज्जास एइ) विपर्यासने पामे छे एटले दुरात्माने पण सुदरपणे माने छे, (तस्स) तेनी (नग्गरुई) नाग्यरुचि एटले चारित्रनी रुचि

(निरट्ठिआ उ) निरर्थक ज छे. (से) तेवा साधुने (इमे वि) आलोक पण नथी अने (परे वि लोए) परलोक पण (नत्थि) नथी. (तत्थ) ते उभय लोकनो अभाव सते (लोए) जगतने विषे (दुहओ वि) आलोक अने परलोकना अभावने लीधे बन्ने प्रकारे (से) ते साधु (झिज्झइ) चीण थाय छे–सुखथी भ्रष्ट थाय छे. अने आलोकमां तथा परलोकमां संपत्तिवाळा जीवोने जोइने 'बन्ने लोकथी भ्रष्ट थयेला मने धिकार छे.' एम पश्चात्ताप करतो सतो विशेष चीण थाय छे. ४९.

त्यारपछी ते जे प्रकारे पश्चात्ताप पामे छे, ते बतावे छे.—

एमेवहाछंदकुसीलरूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोआ परितावमेइ ॥ ५० ॥

अर्थ—(एमेव) ए ज रीते एटले महाव्रतनी विराधनादिक प्रकारे करीने (अहाछंदकुसीलरूवे) यथाछंद एटले इच्छा प्रमाणे वर्तनार अने कुशीलरूप एटले दुष्ट शीळना स्वभाववाळो साधु (जिणुत्तमाणं) जिनेश्वरोना (मग्गं) मार्गनी (विराहित्तु) विराधना करीने (भोगरसाणुगिद्धा) भोगना–जिव्हाने स्वाद आपनार मांसना रसमां लुब्ध थयेली अने (निरट्ठसोआ) निरर्थक शोकवाळी (कुररी विवा) पक्षिणीनी जेम (परितावं एइ) पश्चात्तापने पामे छे. जेम मांसमां लुब्ध थइने जेणे मुखमां मांसनी पेशी नांखी छे एवी पक्षिणी बीजा मोटा पक्षीओथी विपत्ति पामे छे त्यारे ते शोक करे छे, अने ते वखते तेने कांइपण आपत्तिनो प्रतिकार सूझतो नथी, तेम भोगरसमां लुब्ध थयेलो साधु पण आलोक अने परलोकना

कष्ट प्राप्त थाय त्यारे शोक करे छे, पण ते स्वपरनु रक्षण करवामां असमर्थ होवाथी अनाथ छे ५०

हवे जे करवा लायक छे, ते कहे छे.—

सोच्चाण मेहावि सुभासिअं ईमं, अणुसासणं नाणगुणोववेअं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानिअंठाण वए पहेणं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(मेहावि) हे बुद्धिमान् राजा ! (सुभासिअं) सारी रीते कहेला अने (नाणगुणोववेअं) ज्ञानगुणे करीने सहित एवा (इमं) आ (अणुसासणं) उपदेशनां वचनो (सोच्चाण) सांभळीने (कुसीलाण) कुशीलीयाना (सव्वं) सर्व (मग्गं) मार्गने (जहाय) तजीने, तमे (महानिअंठाण) महा निर्ग्रंथना (पहेणं) मार्गे (वए) चालो ५२ (आ उपदेश सर्वने माटे छे, मात्र राजा माटे नथी)

तेम करवाथी शुं फळ थाय ? ते कहे छे—

चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालिआण ।
निरासवे संखविआण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥

अर्थ—(तओ) ते महानिर्ग्रंथना मार्गे जवाथी (चरित्तमायारगुणन्निए) चारित्राचार एटले चारित्रनु सेवन अने गुण एटले ज्ञान, शील विगेरे गुणो, तेणे करीने सहित, तथा (निरासवे) आश्रव रहित एवो साधु (अणुत्तरं) सर्वोत्तम

एवा (संजम) सतर प्रकारना संयमने (पालिआणं) पाळीने तथा (कम्मं) आठ प्रकारना कर्मने (संखविआण) खपावीने (विउलुत्तमं) विशाळ, उत्तम अने (धुवं) निश्चळ एवा (ठाणं) मोक्षस्थानने (उवेइ) पामे छे. ५२.

हवे मुनि पोतानुं कहेवुं समाप्त करे छे.—

एवुग्गदंते वि महातवोधणे, महामुणी महापइण्णे महायसे ।
महानियंठिज्जमिणं महासुअं, से काहए महया वित्थरेणं ॥ ५३ ॥

अर्थ—(एव) आ प्रमाणे (उग्गदंते वि) कर्मरूपी शत्रु प्रत्ये उग्र–भयंकर, तथा दांत एटले इंद्रियो अने मनने दमन करनार, तथा (महातवोधणे) महा तपरूपी धनवाळा, तथा (महापइण्णे) महा प्रतिज्ञावाळा एटले दृढ व्रतवाळा, तथा (महायसे) महा यशवाळा एवा (से) ते (महामुणी) महामुनिए (महानियंठिज्जं) महानिर्ग्रंथीय एटले साधुओने हितकारक (इणं) आ (महासुअं) उपर कहेलुं महाश्रुत (महया) मोटा (वित्थरेणं) विस्तारथी (काहए) कह्युं छे. ५३.

त्यार पछी.—

तुट्ठो अ सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली । अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसिअं ॥ ५४ ॥

अर्थ—(तुट्ठो अ) तुष्टमान थयेला (सेणिओ राया) श्रेणिक राजा (कयंजली) हाथ जोडीने (इणं उदाहु)

आ प्रमाणे बोल्या के—हे महामुनि ! (जहाभूय) यथार्थ-सत्य एवु (अणाहत्त) अनाथपणु तमे (मे) मने (सुट्ठु) सारुं (उवदंसिअं) देखाडयु छे-समजाव्यु छे॰ ५४

तुब्भे सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिआ मग्गि जिणुत्तमाणं ॥ ५५ ॥

अर्थ—(महेसी) हे महर्षि ! (तुब्भ) तमारो (मणुस्सजम्म) मनुष्य भव (सुलद्ध खु) सारो प्राप्त थयेलो ज छे-सफळ ज छे, (य) तथा (तुमे) तमने (लाभा) रूप, वर्ण, विद्या विगेरे लाभो (सुलद्धा) सारा प्राप्त थयेला छे, (य) तथा (तुब्भे) तमे ज (सणाहा) सनाथ-आत्माना नाथ होवाथी नाथ सहित छो, (य) तथा (सबंधवा) तमे ज ज्ञाति कुटुंबादिक पक्षु सहित छो॰ (जं) कारण के (भे) तमे (जिणुत्तमाण) जिनेश्वरना (मग्गि) मार्गने विषे (ठिआ) रहेला छो ५५॰

तं सि णाहो अणाहाणं, सव्वभूआण संजया । खामेमि ते महाभाग !, इच्छामु अणुसासिउं ॥ ५६ ॥

अर्थ—(संजया) हे मुनीश्वर ! (तं) तमे (अणाहाण) नाथ रहित एवा (सव्वभूआण) त्रस अने स्थावर सर्व प्राणीओना (णाहो) नाथ (सि) छो (महाभाग) हे महा भाग्यवान ! (ते) तमने हुं (खामेमि) खमावु छुं में प्रथम तमारो मारु सनाथपणु कहीने जे अपराध कर्यो तेनी हुं क्षमा मागु छुं, अने (अणुसासिउं) मारा आत्माने अनुशा-

सन करवा (इच्छामु) इच्छुं छुं, एटले तमे मने शिक्षा-उपदेश आपो, एम इच्छुं छुं. हुं तमारी आज्ञामां छुं. ५६.

फरीथी विशेषे करीने क्षमा मागे छे.—

पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो उ जो कओ। निमंतिआ य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेह मे ॥५७॥

अर्थ—हे महर्षि ! (मए) में (तुब्भं) तमने (पुच्छिऊण) दीक्षा लेवानुं कारण पूछीने (जो) जे (झाणविग्घो उ) तमारा ध्यानमां विघ्न (कओ) करेल छे, (य) तथा (भोगेहिं) भोगोवडे-भोग भोगववा (निमंतिआ) तमने में निमंत्रण कर्युं छे, (तं सव्वं) ते सर्व (मे) मारा अपराधने (मरिसेह) क्षमा करो. ५७,

हवे आ अध्ययनने समाप्त करतां कहे छे.—

एवं थुणित्ताण स रायसीहो,-ऽणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरिअणो सबंधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेअसा ॥ ५८ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रकारे (स) ते (रायसीहो) राजाओना मध्यमां सिंह समान श्रेणिक राजा (अणगारसीहं) मुनिओने विषे सिंह समान एवा ते मुनिने (परमाइ भत्तिए) उत्कृष्ट भक्तिवडे (थुणित्ताए) स्तवीने-स्तुति करीने (सओरोहो) अंतःपुर सहित, तथा (सपरिअणो) परिवार सहित, तथा (सबंधवो) बंधुजन सहित (विमलेण चेअसा) निर्मळ चित्तवडे (धम्माणुरत्तो) धर्मने विषे अनुरक्त-रागी थयो. ५८.

ऊससिअरोमकूवो, काऊँण य पयाहिणं । अभिवदित्ता सिरसा, अतिजातो नराहिवो ॥ ५९ ॥

अर्थ—(ऊससिअरोमकूवो) मुनिना दर्शनथी तथा तेना वाक्य श्रवण करवाथी विकस्वर थया छे रोमकूप एटले रोमांच जेना एवो (नराहिवो) नराधिप एटले श्रेणिक राजा (पयाहिण) ते मुनिने प्रदक्षिणा (काऊण य) करीने तथा (सिरसा) मस्तकवडे (अभिवदित्ता) तेमना चरणने वांदीने (अतिजातो) अतियात एटले पोताने स्थाने गयो ५९

इअरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ अ ।

विहंग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो त्ति बेमि ॥ ६० ॥

अर्थ—(इअरो वि) श्रेणिक राजानी अपेक्षाए इतर-बीजा एटले ते महर्षि पण (गुणसमिद्धो) मुनिना सत्तावीश गुणे करीने सहित, तथा (तिगुत्तिगुत्तो) मन, वचन अने काया ए त्रण गुप्तिथी गुप्त, तथा (तिदंडविरओ अ) मन, वचन अने कायाना त्रण दंडे करीने एटले अशुभ व्यापारे करीने रहित, तथा (विहग इव) पक्षीनी जेम (विप्पमुक्को) कोइ पण ठेकाणे प्रतिबंध रहित एटले परिग्रह रहित, तथा अनुक्रमे (विगयमोहो) मोह रहित एटले मोहनीय कर्मनो क्षय करवाथी केवळज्ञानवाला थया सता (वसुहं) पृथ्वीपर (विहरइ) विचरवा लाग्या (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्यु ६०

॥ इति विंशतितममध्ययनम् ॥ २० ॥

अथ समुद्रपालीय नामनुं एकवीशमुं अध्ययन. २१.

वीशमा अध्ययनमां अनाथपणुं कह्युं. तेनो विचार विविक्त-एकांत चर्यावडे थइ शके छे, तेथी आ एकवीशमा अध्ययनमां समुद्रपाळना दृष्टांते करीने विविक्त चर्या कहे छे.—

चंपाए पालिए नामं, सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥

अर्थ—(चंपाए) चंपा नगरीमां (पालिए नामं) पालित नामनो (सावए) श्रावक एटले देशविरतिने धारण करतो (वाणिए) वणिक (आसि) हतो. (सो उ) ते (महप्पणो) महात्मा (महावीरस्स) श्रीमहावीर (भगवओ) भगवाननो (सीसे) शिष्य हतो. महावीरस्वामीए तेने प्रतिबोध करी श्रावक कर्यो हतो तेथी तेमनो ते शिष्य कहेवाय छे. १.

निग्गंथे पावयणे, सावए से विकोविए। पोएण ववहरंते, पिहुंडं नगरमागए ॥ २ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधुना एटले वीतरागना (पावयणे) सिद्धांतमां (विकोविए) अत्यंत पंडित एवो (से) ते (सावए) पालित श्रावक एकदा (पोएण) वहाणवडे (ववहरंते) वेपार करतो सतो (पिहुंडं) पिहुंड नामना (नगरं) नगरने विषे (आगए) आव्यो. चंपा नगरीथी वहाणमां बेसीने वेपारने माटे पिहुंड नगरे आव्यो. २.

पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूअरं। तं ससत्तं पइगिज्झ, संदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥

अर्थ—(पिहुडे) पिहुड नगरमां (ववहरतस्स) वेपार करता छता ते पालितने तेना गुणथी रंजन थयेला कोइ (वाणिओ) वणिके (धूअर) पोतानी पुत्री (देइ) आपी–परणावी. (अह) त्यारपछी त्यां केटलोक वखत रहीने (ससत्तं) गर्भवती थयेली (तं) तेणीने (पइगिज्झ) साथे लइ ते पालित (सदेसं) पोताना देश तरफ (पत्थिओ) चाल्यो ३

अह पालिअस्स घरणी, समुद्दम्मि पसवई । अह दारए तहिं जाए, समुद्दपालो त्ति नामए ॥४॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (पालिअस्स) पालितनी (घरणी) स्त्रीने (समुद्दम्मि) समुद्रने विषे ज (पसवई) प्रसव थयो. (अह) तेथी (तहिं) त्यां समुद्रमां (दारए) पुत्र (जाए) उत्पन्न थये सते (समुद्दपालो त्ति) समुद्रपाळ एवु (नामए) तेनु नाम पाड्यु ४

खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं । संवड्ढइ घरे तस्स, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥

अर्थ—(वाणिए) ते वणिक (सावए) श्रावक (खेमेण) क्षेम कुशळताथी (चंपं) चंपा नगरीमां (घरं) पोताने घेर (आगए) आवे सते (सुहोइए) सुखने उचित एवो (से) ते (दारए) बाळक–समुद्रपाळ (तस्स घरे) ते पालितने घर (संवड्ढइ) वृद्धि पामवा लाग्यो ५

बावत्तरिं कलाओ अ, सिक्खिए नीइकोविए । जोव्वणेण यं संपन्ने, सुरूवे पिअदंसणे ॥ ६ ॥

अर्थ—(अ) तथा ते समुद्रपाळ (बावत्तरिं) बहोंतेर (कलाओ) कळाओने (सिक्खिए) शीख्यो सतो (नीइकोविए) नीतिमां निपुण थयो एटले लोकनीति अने धर्मनीतिमां चतुर थयो, (य) तथा (जोव्वणेण) युवावस्थाए करीने (सुरूवे) सारा रूपवाळो अने (पिअदंसणे) मनोहर दर्शनवाळो (संपन्ने) थयो. ६.

तस्स रूववइं भज्जं, पिआ आणेइ रूविणिं । पासाए कीलेए रम्मे, देवो दोगुंदगो जहा ॥ ७ ॥

अर्थ—(तस्स) ते समुद्रपाळनो (पिआ) पिता (रूववइं) रूपवाळी (रूविणिं) रूपिणी नामनी (भज्जं) भार्याने—कन्याने समुद्रपाळ माटे (आणेइ) लाव्यो अने ते रूपिणी नामनी कन्या साथे समुद्रपाळने परणाव्यो पछी ते (रम्मे) मनोहर (पासाए) प्रासादने विषे (दोगुंदगो) दोगुंदक जातिना (देवो) देवनी (जहा) जेम (कीलए) इच्छा प्रमाणे तेणीनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो. ७.

अह अन्नया कयाइ, पासायालोअणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (अन्नया) एकदा (कयाइ) कदाचित् (पासायालोअणे) प्रासादना आलोकनमां एटले गोखमां (ठिओ) बेठेला एवा ते समुद्रपाळे (वज्झमंडणसोभागं) रातुं चंदन अने करवीरना पुष्पनी माळा विगेरे वध्यना भूषणोथी शोभावेला तथा (वज्झगं) वध्यभूमि तरफ लइ जवाता एक (वज्झं) वध्यने—चोरने (पासइ) जोयो. ८.

तं पासिऊण संवेगं, समुद्दपालो इणमब्बवी । अहो असुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥

अर्थ—(त) ते वध्यने (पासिऊण) जतो जोइने (सवेग) वैराग्य पामेलो (समुद्पालो) समुद्रपाळ (इण) आ प्रमाणे (अब्बवी) बोल्यो के (अहो) अहो ! (असुहाण) अशुभ (कम्माण) कर्मोनो (इम) आ (पावग) अशुभ (निज्जाण) निर्याण-अवसान एटले उदय केवो आश्चर्यकारक छे ! के जेथी आ विचारो वधने माटे आ प्रमाणे लइ जवाय छे ९

सबुध्धो सो तहिं भयव, परम सवेगमागओ । आपुच्छऽम्मापिअरो, पव्वए अणगारिअं ॥ १० ॥

अर्थ—(सो) ते समुद्रपाळ (भयव) भगवान-पूज्य (तहिं) ते गवाक्षमां ज (सबुद्धो) बोध पाम्या सता तथा (परम) अत्यत (सवेग) वैराग्यने (आगओ) पाम्या सता (अम्मापिअरो) मातापिताने (आपुच्छ) पूछीने-तेमनी रजा लइने (अणगारिअ) अनगारपणाने-चारित्रने (पव्वए) अगीकार करता हवा १०

प्रव्रज्या लइने तेणे जे रीते आत्माने शिक्षा आपी तथा जे रीते प्रवृत्ति करी ते कहे छे—

जहित्तु सग च महाकिलेस, महतमोह कसिण भयावह ।
परिआयधम्म चऽभिरोयइज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे अ ॥ ११ ॥

अर्थ—ते विचारे छे के—हे आत्मा ! (महाकिलेस) महा क्लेशकारक, तथा (महतमोह) महामोहवाळा, तथा (कसिण) समग्र अथवा कृष्णलेश्यानु कारण होवाथी कृष्ण, तथा (भयावह) भयदायक एवा (सग च) स्वजनादिक

संबंधने (जहित्तु) तजीने (परिआयधम्मं च) पर्याय धर्मने विषे-चारित्रधर्मने विषे (अभिरोयइज्जा) तुं रुचिवाळो था, एटले के (वयाणि) मूळगुणरूपी पांच महाव्रतोने विषे, तथा (सीलाणि) पिंडविशुद्ध्यादिक उत्तरगुणोरूपी शीळने विषे, (अ) तथा (परीसहे) बावीश परीषहो सहन करवाने विषे रुचिवाळो था. ११.

त्यारपछी जे करवानुं छे ते कहे छे.—

अहिंस सच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिआ पंच महव्वयाइं, चरिज्ज धम्मं जिणदेसिअं विऊ ॥ १२ ॥

अर्थ—(अहिंस) अहिंसा, (सच्चं च) सत्य, तथा (अतेणगं च) अचौर्य, तथा (तत्तो य) त्यारपछी (बंभं) ब्रह्मचर्य, (अपरिग्गहं च) तथा अपरिग्रह, ए (पंच) पांच (महव्वयाइं) महाव्रतोने (पडिवज्जिआ) अंगीकार करीने हे आत्मा ! (विऊ) विद्वान एवो तुं (जिणदेसिअं) जिनेश्वरे कहेला (धम्मं) धर्मनुं (चरिज्ज) आचरण-सेवन कर. १२.

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिक्खमे संजयबंभयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥ १३ ॥

अर्थ—(सव्वेहिं) सर्व (भूएहिं) प्राणीओने विषे (दयाणुकंपी) हितोपदेशरूप अने रक्षणरूप दयाए करीने

अनुकंपाना स्वभाववाळो, तथा (खंतिक्खमे) क्षांतिए करीने बीजाना दुर्वचनादिकने सहन करनार, तथा (संजय) साधुना आचारने पाळनार, तथा (बंभयारी) ब्रह्मचर्यने धारण करनार एवो (भिक्खू) भिक्षुरूप तु हे आत्मा ! (सावज्जजोग) सावद्य योगने (परिवज्जयंतो) वर्जतो-त्याग करतो सतो (सुसमाहिइंदिए) सारी रीते वश करी छे इंद्रियो जेणे एवो (चरेज्ज) चारित्रमार्गने विषे विचर-विहार कर १३.

कालेण कालं विहरिज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिअ अप्पणो अ।
सीहो व सद्देण न संतसिज्जा, वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥ १४ ॥

अर्थ—हे आत्मा ! (कालेण) पौरुषी-पोरसी आदिक काळे (कालं) काळने उचित एवी पडिलेहणादिक क्रियाने करीने (अ) तथा (अप्पणो) पोताना (बलाबलं) बळाबळने एटले उपसर्गादिकने सहन करवापणुं अने नहीं सहन करवापणु तेने (जाणिअ) जाणीने (रट्ठे) देशने विषे तथा उपलक्षणथी ग्रामादिकने विषे (विहरिज्ज) तु विचर, जेम संयमयोगनी हानि न थाय तेम विहार करवो तथा (सीहो व) सिंहनी जेम (सद्देण) भयानक शब्दवडे-शब्द सांभळीने (न संतसिज्जा) त्रास पामीश नहीं, तथा (वयजोग) अशुभ एवा वचनयोगने (सुच्चा) सांभळीने पण (असब्भ) असभ्य वचन-अयोग्य वचन (न आहु) बोलीश नहीं. १४.

त्यारे शु करवु ? ते कहे छे —

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पिअमप्पिअं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोअइज्जा, न यावि पूअं गरहं च संजए ॥ १५ ॥

अर्थ—(उ) तु पुनः वळी (उवेहमाणो) परना कहेला अशुभ वचननी उपेक्षा करता सता तारे (परिव्वएज्जा) विचरवुं. तथा (पिअं अप्पिअं) लोकोना प्रिय के अप्रिय (सव्व) सर्व वचनोने (तितिक्खएज्जा) सहन करवां, तथा (सव्व) सर्व वस्तुने विषे (सव्वत्थ) सर्व ठेकाणे (न अभिरोअइज्जा) रुचि-इच्छा करवी नहीं. (यावि) तथा वळी (पूअं) लोकोनी करेली पूजाने-स्तुतिने (गरहं च) अने निंदाने (संजए) संयमवाळा तारे (न) इच्छवी नहीं-तेना पर तारे रागद्वेष करवो नहीं. १५.

अहीं कोइने शंका थाय के-भिक्षुने पण आवो अन्यथा भाव होय ? के जेथी आत्माने आ प्रमाणे शिक्षा आपवी पडे ? ते उपर कहे छे.—

अणेग छंदा मिह माणवेहिं, जे भावओ संपकरेइ भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइंति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥

अर्थ—(मिह) आ जगतने विषे (माणवेहिं) मनुष्योने (अणेग) अनेक (छंदा) अभिप्रायो-इच्छाओ थाय छे. के (जे) जे अभिप्रायोने (भिक्खू) कर्मने वश रहेलो साधु पण (भावओ) भावथी-मनथी (संपकरेइ) अत्यंत करे छे.

वळी (तत्य) ते साधुपणाने विषे (भयभेरवा) भय उत्पन्न करवावडे करीने भयंकर, अने (भीमा) अति रौद्र एवा (दिव्वा) देवसबधी, (मणुस्सा) मनुष्यसबधी (अदुवा) अथवा (तिरिच्छा) तिर्यंचसबधी उपसर्गो (उइति) उदयमां आवे छे—उत्पन्न थाय छे १६

तथा —

परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीदंति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥

अर्थ—(दुव्विसहा) दुःखे करीने सहन थइ शके तेवा (अणेगे) अनेक (परीसहा) परीषहो पण उत्पन्न थाय छे, के (जत्था) जे उपसर्गो अने परीषहो उत्पन्न थये सते (बहुकायरा) घणा कायर (नरा) मनुष्यो (सीदंति) सीदाय छे एटले चारित्र पाळवामां शिथिल थाय छे (से) हवे (तत्थ) ते उपसर्ग अने परीषहोने विषे (पत्ते) प्राप्त थयेलो अथवा उपसर्गो अने परीषहो प्राप्त थये सते (भिक्खू) साधु थयेलो तु (संगामसीसे) संग्रामना मोखरामां प्राप्त थयेला (नागराया इव) हाथीनी जेम (न वहिज्ज) व्यथा पामीश नहीं—सत्त्वथी चलायमान थइश नहीं १७

सीतोसिणा दंसमसा य फासा, आयंका विविहा फुसंति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥ १८ ॥

अर्थ—(सीतोसिणा) शीत, उष्ण, (दंसमसा य) दंश, मशक, (फासा) तृणादिकना स्पर्शो, तथा (विविहा) विविध प्रकारना (आयंका) व्याधिओ विगेरे सर्व परीषहो (देहं) तारा शरीरने (फुसंति) स्पर्श करे छे—पीडा उपजावे छे. (तत्थ) ते शीतादिक परीषहोनो स्पर्श थये सते (अकुक्कुओ) आक्रंद कर्या विना ज तारे (अहियासएज्जा) ते परीषहोने सहन करवा. एम करवाथी तुं (पुरेकडाइं) पूर्वे करेला (रयाइं) कर्मरूपी रजने (खेवेज्ज) क्षय करी शकीश. १८.

पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं विअक्खणो ।
मेरुव्व वाएण अकंपमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥

अर्थ—(सययं) निरंतर (विअक्खणो) विचक्षण एटले तत्त्वना विचारमां तत्पर एवो (भिक्खू) साधु (रागं च) रागने (तहेव) तथा (दोसं) द्वेषने (मोहं च) तथा मोहने (पहाय) तजीने (वाएण) वायुवडे (मेरु व्व) मेरु पर्वतनी जेम परीषहोवडे (अकंपमाणो) नहीं कंपतो सतो तथा (आयगुत्ते) काचबानी जेम आत्माने एटले इंद्रियोने गुप्त करतो सतो (परीसहे) परीषहोने (सहेज्जा) सहन करे छे. १९.

अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूअं गरिहं च संजए ।
से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए, निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥ २० ॥

अर्थ—(अणुन्नए) अनुन्नत एटले अभिमान रहित अने (नावणए) नावनत एटले दीनता रहित एवा जे (महेसी) महर्षि (पूअ) पूजानो–स्तुतिनो (गरिह च) तथा गर्हानो–निंदानो (न यावि सजए) संग न ज करे एटले स्तुति अने निंदानो प्रसंग न करे, अर्थात् साधु पोतानी स्तुति सांभळी हर्ष न करे अने निंदा सांभळी दुःख न पामे (से) ते (सजए) साधु (उज्जु भाव) सरळताने (पडिवज्ज) अंगीकार करीने (विरए) पापथी विराम पाम्या सता (निव्वाणमग्ग) मोक्षमार्गने (उवेइ) पामे छे २०

वळी ते साधु केवा थइने शु करे छे ? ते कहे छे —

अरइरइसहे पहीणसंथवे, विरए आयहिए पहाणव ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥

अर्थ—(अरइरइसहे) संयममां अरति अने असंयममां रति तेने सहन करनार एटले नाश करनार, तथा (पहीण संथवे) नाश पाम्यो छे संस्तव एटले पूर्वनो अने पछीनो गृहस्थ सायेनो परिचय जेनो एवा, तथा (विरए) पापक्रियाथी निवृत्त थयेला, तथा (आयहिए) आत्मा अने सर्व जीवोने हितकारक, तथा (पहाणव) प्रधान एटले संयमवाळा, तथा (छिन्नसोए) नाश कर्यो छे शोक अथवा मिथ्यात्वादिक श्रोतस् जेणे एवा, ए ज कारण माटे (अममे) ममता रहित अने ए ज कारण माटे (अकिंचणे) परिग्रह रहित एवो ते साधु (परमट्ठपएहिं) परमार्थना–मोक्षना स्थानोने विषे (चिट्ठई) रहे छे–रहेता हवा २१

विवित्तलयणाणि भइज्ज ताई, निरूवलेवाईं असंथडाइं ।
इसीहिं चिंणाइँ महायसेहिं, कायेण फासेज्ज परीसहाइं ॥ २२ ॥

अर्थ—(ताई) छकाय जीवनी रक्षा करनार ते समुद्रपालित मुनि (निरूवलेवाइं) द्रव्यथी छाण विगेरेना लेप रहित अन भावथी राग एटले ममतारूपी लेप रहित, तथा (असंथडाइं) असंस्कृत एटले शालि विगेरे बीजना संघट्टा रहित, तथा (महायसेहिं) महा यशवाळा (इसीहिं) मुनिओए (चिणाइं) सेवेलां एवां (विवित्तलयणाणि) विविक्त एटले स्त्री, पशु, पंडक रहित एवां आलय एटले उपाश्रयने (भइज्ज) सेवता हवा, तथा (कायेण) कायावडे (परीसहाइं) परीषहोने (फासेज्ज) स्पर्श एटले सहन करता हवा. २२.

त्यारपछी ते केवा थया ? ते कहे छे.—

से नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरेनाणधरे जसंसी, ओभासई सूरिइ वंतालिक्खे ॥ २३ ॥

अर्थ—(नाणनाणोवगए) ज्ञान एटले श्रुतज्ञान, तेणे करीने जे ज्ञान एटले सम्यक् प्रकारे क्रियाना समूहनुं जाणवुं, तेणे करीने सहित अर्थात् श्रुतज्ञान अने क्रियाना ज्ञाने करीने सहित एवा (स) ते समुद्रपाळ नामना (महेसी) महर्षि (अणुत्तरं) सर्वोत्तम (धम्मसंचयं) धर्मना समूहने एटले क्षांत्यादिक दश प्रकारना चारित्रधर्मने (चरिउं) सेवीने

(अणुत्तरेनाणधरे) सर्वोत्तम ज्ञान न केवळज्ञान तन धारण करनारा तथा (जससी) यशस्वी थया सता (अतालिक्खे) आकाशने विषे (सूरिए व) सूर्यनी जेम (ओभासई) प्रकाशता हवा–शोभता हवा. २३

हवे उपसहार–समाप्त करवा पूर्वक तेनु ज फळ कहे छे —

दुविह खविऊण ये पुण्णपाव, निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्द व महाभवोह, समुद्दपालो अपुणागम गए त्ति बेमि ॥ २४ ॥

अर्थ—(य) तथा (दुविह) घाती अने भवोपग्राहि—अघाती एम बे प्रकारना (पुण्णपाव) शुभ अने अशुभ प्रकृतिरूप कर्मने (खवेऊण) खपावीने–क्षय करीने (निरगणे) निरगन–गयु छे अगन एटले चालवु जेनाथी एटले सयममा निश्चळ तथा (सव्वओ) सर्वथी एटले बाह्य अने आभ्यतर परिग्रहथी (विप्पमुक्के) रहित एवा (समुद्दपालो) समुद्रपाळ मुनि (समुद्द व) समुद्रनी जेवा (महाभवोह) मोटा स्वर्गादिक भवना समूहने (तरित्ता) तरीने (अपुणागम) जेनाथी पाछु आववानु नथी एवा अपुनरागमने एटले मोक्षने (गए) पाम्या (त्ति बेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्यु २४

इति एकविंशमध्ययनम् ॥ २१ ॥

अथ रथनेमीय नामनुं बावीशमुं अध्ययन. २२

एकवीशमा अध्ययनमां विविक्तचर्या कही, ते धैर्यवंतने सुखेथी पाळी शकाय छे, छतां कदाचित् कोइक प्रकारे मनना परिणाम धर्मथी भ्रष्ट थाय ते वखते रथनेमिनी जेम चारित्रने विषे धृति करवी, एम जणाववा माटे आ अध्ययन रच्युं छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । वसुदेव त्ति नामेणं, रायलक्खणसंजुए ॥ १ ॥

अर्थ—(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना (नयरे) नगरमां (महिड्ढिए) मोटी ऋद्धिवाळा तथा (रायलक्खणसंजुए) हाथ पगना तळीयामां चक्र, स्वस्तिक, अंकुश विगेरे अथवा औदार्य, धैर्य, गांभीर्य विगेरे राजानां लक्षणोवडे युक्त (वसुदेव त्ति नामेणं) वसुदेव एवा नामे (राया) राजा (आसि) हता. जो के शौर्यपुरमां समुद्रविजय विगेरे दश दशार्हो, दश भाइओ हता, तेमां वसुदेव सौथी नाना हता, तोपण वसुदेवना पुत्र कृष्ण थया छे तेथी अहीं वसुदेवनुं वर्णन कर्युं छे. १.

तस्स भज्जा दुवे आसि, रोहिणी देवई तहा । तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥२॥

अर्थ—(तस्स) ते वसुदेवने (रोहिणी) रोहिणी नामनी (तहा) तथा (देवई) देवकी नामनी (दुवे) बे (भज्जा) भार्या (आसि) हती. जो के वसुदेवने बहोंतेर हजार स्त्रीओ हती. तोपण अहीं तेनी ज जरुर होवाथी बे ज लखी छे.

(तासिं) ते (दोण्ह पि) बन्ने भार्याओने (अइट्ठा) अत्यत इष्ट-वल्लभ एवा (रामकेसवा) बळराम अने केशव-कृष्ण नामना (दो पुत्ता) बे पुत्रो थया राम अने केशव प्रथम उत्पन्न थया हता तथा श्रीनेमिनाथना विवाहादिक कार्यमां तेमनी जरुर छे तेथी तेमने प्रथम लख्या छे २

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए। समुद्दविजए नाम, रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥

अर्थ—(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना (नयरे) नगरमां (महिड्ढिए) मोटी ऋद्धिवाळा अने (रायलक्खणसंजुए) राजानां लक्षणोए करीने युक्त एवा (समुद्दविजए नाम) समुद्रविजय नामना (राया) राजा (आसि) हता अहीं वसुदेव अने समुद्रविजय साथे ज रहेता हता एटलु जणाववा मात्र फरीथी शौर्यपुर लख्यु छे ३.

तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्ते महायसे। भयवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥

अर्थ—(तस्स) ते समुद्रविजयने (सिवा नाम) शिवा नामनी (भज्जा) भार्या हती (तीसे) ते शिवादेवीना (पुत्ते) पुत्र (भयवं) भगवान (अरिट्ठनेमि त्ति) श्रीअरिष्टनेमि एवा नामना (महायसे) महा यशवाळा, (लोगनाहे) त्रण लोकना नाथ अने (दमीसरे) मुनिओना स्वामी हता ४ (हवे पछी थवाना होवाथी ते अपेक्षाए दमीश्वरनु विशेषण आप्यु छे)

अहीं प्रसगने लीधे श्रीनेमिनाथनु चारित्र सक्षेपथी कहे छे —

आ ज भरतक्षेत्रमां अचलपुर नामनुं पुर छे. तेमां श्रीविक्रमधन नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामनी राणी हती. तेमने धन नामनो पुत्र हतो. ते सर्व कळाना समूहने पामीने अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते कुसुमपुरना राजा सिंहनी धनवती नामनी कन्याने परण्यो. लक्ष्मीनी साथे विष्णुनी जेम ते धनवतीनी साथे क्रीडा करतो ते धनकुमार एकदा ग्रीष्म ऋतुमां मध्याह्न समये क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो. त्यां तेणे पृथ्वीपर मूर्छित थयेला एक मुनिने जोया. ते मुनिनुं ताळवुं तृषाथी सुकाइ गयुं हतुं, तपवडे तेनुं शरीर अति कृश हतुं, अने गुणवडे तो ते शांतरसना समुद्र हता. तेमनी आवी स्थिति जोइ ते बन्ने दंपतीए तेमनी पासे जइ शीतळ उपचार करी शीघ्रपणे तेमने स्वस्थ कर्या. पछी विनयथी मुनिने वंदना करी धनकुमारे तेमने पूछयुं के—" हे भगवान् ! आपनी आवी अवस्था केम थइ ? " मुनिए जवाब आप्यो के—" हुं मुनिचंद्र नामनो साधु छुं. मोटा गच्छनी साथे विहार करतां सार्थथी भ्रष्ट थयो, तेथी आ वनमां दिशा नहीं सूझवाथी आमतेम भ्रमण करवा लाग्यो. अनुक्रमे क्षुधा अने तृषाथी पीडा पाम्यो, चालतां चालतां थाकी गयो, अने आ ग्रीष्म ऋतुना तापथी अकळाइ गयो, तेथी अहीं मूर्छा आववाथी पडी गयो हतो. तेटलामां तमारा आववाथी, ने तमे करेला उपचारथी हुं चेतना पाम्यो छुं. तेथी धर्ममां सहाय आपनारा तमने धर्मलाभ हो. वळी हे महानुभाव ! जेम प्रतिमा विना देवालय शोभतुं नथी, तेम धर्म विना आ मनुष्यभव शोभतो नथी, तेथी बुद्धिमान पुरुषोए निरंतर धर्ममां उद्यम करवो योग्य छे. " आ प्रमाणे कहीने मुनिए ते दंपतीनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी प्रतिबोध पामी ते बन्नेए ते मुनि पासे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. पछी मुनिने निमंत्रण करी पोताने घेर लइ जइ तेमने अन्न पाणी

वहोराव्यां, अने धर्म शीखवा माटे मुनिने थोडा दिवस त्यां ज राख्या मुनिए पण केटलाक दिवस त्यां रही तेमने धर्ममां दृढ करी अन्यत्र विहार कर्यो

ते दंपती पण परस्परना प्रेमनी जेम अखंडपणे श्राद्धधर्मनु पालन करवा लाग्या अनुक्रमे ते धनकुमारने तेना पिताए राज्यपर स्थापन कर्यो, एटले ते धनराजा नीतिथी राज्यनु पालन करतो श्रावकधर्मनु सेवन करवा लाग्यो एकदा वसुंधर नामना मुनि त्यां पधार्या तेमने धनराजा पोतानी धनवती प्रिया सहित वांदवा गयो विधिपूर्वक मुनिने वांदी तेमना मुखथी संसारसमुद्रने तरवामां नाव समान धर्मदेशना सांभळी ते राजा संसारथी विरक्त थयो एटले तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोतानी प्रिया सहित ते ज गुरुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे शास्त्रनो अभ्यास करी धनराजर्षि गीतार्थ थया. पछी आचार्यपद प्राप्त करी धर्मदेशनावडे भव्य प्राणीओनो उपकार करी छेवट अनशन ग्रहण करी ते धनराजर्षि धनवती साध्वी सहित काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया

आ ज भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणिने विषे सूरतेज नामनु नगर छे तेमां सूर नामे विद्याधर राजा हतो तेने विद्युन्मती नामनी प्रिया हती धननो जीव सौधर्ममांथी चवीने विद्युन्मतीनी कुक्षिमां अवतर्यो पछी समय पूर्ण थयो त्यारे ते राणीए शुभ लक्षणवाळो पुत्र प्रसव्यो राजाए महोत्सवपूर्वक तेनु चित्रगति नाम पाड्यु अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार गुरु पासेथी समग्र कळाओने ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो

हवे ते ज वैताढ्य पर्वत उपर दक्षिण श्रेणिमां शिवमंदिर नामनु नगर छे तेमां अनंगसिंह नामनो राजा हतो.

तेने चंद्रनी प्रभा जेवा उज्वळ गुणवाळी शशिप्रभा नामनी प्रिया हती. तेणीनी कुक्षिमां धनवतीनो जीव स्वर्गथी चवीने अवतर्यो. अनुक्रमे शशिप्रभाए उत्तम रूपवाळी पुत्रीने जन्म आप्यो. तेना पिताए तेनुं रत्नवती नाम पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळामां निपुण थइ युवावस्थाने पामी. एकदा राजाए कोइ ज्ञानी मुनिने पूछ्युं के—"आ मारी पुत्रीनो पति कोण थशे ?" मुनिए कह्युं के—"हे राजा ! जे तारा हाथमांथी दिव्य खड्गने हरण करी लेशे, तथा जेना उपर नित्यचैत्यने विषे पुष्पवृष्टि थशे, ते नररत्न तमारी कन्याने परणशे." ते सांभळी राजाए विचार्युं के—"जे मारा हाथमांथी खड्गने खुंचवी ले तेवो महा बळवान मारो जमाइ थशे." एम विचारीने ते पोताना मनमां घणो हर्ष पाम्यो.

आ ज भरतक्षेत्रने विषे चक्रपुर नामनुं नगर छे. तेमां सुग्रीव नामे राजा हतो. तेने यशस्विनी अने भद्रा नामनी बे राणीओ हती. तेमां पहेली राणीने सुमित्र नामे पुत्र थयो, ते जैनधर्ममां रक्त, गुणवान अने सज्जनोरूपी कमळोने हर्ष आपवामां सूर्यनी जेवो सज्ज-तैयार हतो. बीजी राणीने पद्म नामनो पुत्र थयो, ते कपटनुं घर अने गुण रहित हतो. एकदा भद्राए विचार्युं के—"ज्यां सुधी आ सुमित्र हयात छे, त्यां सुधी मारा पुत्रने स्वप्नमां पण राज्य मळवुं दुर्लभ छे." एम विचारी तेणीए गुप्त रीते सुमित्रने उग्र विष आप्युं. तेथी सुमित्र मूर्छा पाम्यो. ते जोइ राजा अत्यंत व्याकुळ थयो अने तत्काळ मंत्रादिकवडे तेना उपाय कराववा लाग्यो. परंतु कुमारने कोइपण रीते जरा पण चेतना आवी नहीं, त्यारे सर्व परिवार अने पुरना जनो सहित राजा पुत्रना गुणोने संभारी संभारीने शोक करवा लाग्यो. 'आ कुमारने भद्राए विष आप्युं छे' एम लोकोना जाणवामां आव्युं, तेथी लोको तेणीनी निंदा करवा लाग्या. ते जाणी भद्रा त्यांथी नाशी गइ. 'लसणनी

गधनी नम पापीनु पाप छानु रही शकतु नथी '

आ अवसर दैवयोग ने चित्रगति विद्याधर राजपुत्र आकाशमार्गे त्यांथी नीकळ्यो तेणे राजा अने लोकोने विलाप करता जोइ, विष्णु वृत्तान्त जाणी, तेमनी पासे आवी मंत्रित जळवडे ते सुमित्रकुमारने अभिषेक कर्यो, तेथी तत्काळ सुमित्र चेतना पाम्यो अने राजादिक सर्वने शोकातुर जोइ ' आ बधु शु छे ? ' एम तेणे पूछ्यु, त्यारे राजाए कह्यु के—"हे वत्स! तारी विमाताए तने विष आप्यु हतु, ते आ निष्कारण बंधुए शमन कर्यु छे " ते सांभळी सुमित्रे ते विद्याधरकुमारने हाथ जोडी कह्यु के—" हे भाइ ! तमारु नाम अने वंश कहीने अमारा कान पवित्र करो कारण के तमारी जेवा उपकारी नु नामादिक सांभळ्यु होय तो तेथी पण घणु पुण्य प्राप्त थाय छे " ते सांभळी चित्रगतिनी साथे न आवेला तेना मित्रे चित्रगतिनु नाम, कुळ विगेरे कह्यु, ते सांभळी सुमित्र हर्ष पामी बोल्यो के—" अहो ! विष अने विपना आपनारे मारा उपर घणो उपकार कर्यो, के नथी वादळा विनाना अमृतना वरसादनी जेम मने अकस्मात् तमारा दर्शन थयां. जीवितने आप नार तथा नाकमृत्युथी उत्पन्न थती दुर्गतिथी रक्षण करनार तमारो हु शी रीते प्रत्युपकार करी शकु ? जगतना लोको मे थनो शो प्रत्युपकार करी शके ? " आवां तना वचनो सांभळी चित्रगति तेना गुणोथी आनंद पाम्यो. पछी मित्रपणाने पामेला ते सुमित्र पासे विद्याधरकुमारे पोताना नगर तरफ जवानी रजा मागी त्यारे सुमित्रे तेने कह्यु के—" हे मित्र ! सुयशा नामना केवळी भगवान विहारना क्रमथी आज काले अहीं पधारवाना छे, तेमने वंदना करीने पछी तमे जाओ, एम हु इच्छु छु " आ प्रमाणे सुमित्रना कहेवाथी चित्रगति त्यां रोकायो

बीजे दिवसे सुमित्र अने चित्रगति उद्यानमां गया. त्यां देवोथी परिवरेला अने सुवर्णकमळपर बेठेला ते केवळीने जोया. तेमने हर्षथी वंदना करी ते बन्ने मित्रो तेमनी पासे बेठा. सुग्रीव राजा पण ते वृत्तांत सांभळी हर्षथी परिवार अने पुरजनो सहित मुनिनी पासे आव्यो अने विधिपूर्वक केवळीने वंदना करी योग्य स्थाने बेठो. ते वखते जगतने हितकारक एवा मुनीश्वरे तेमने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांभळी आनंद पामेला चित्रगतिए गुरुने कह्युं के—" हे भगवान ! आ मित्रना प्रसादथी आपनी धर्मदेशना सांभळी हुं प्रतिबोध पाम्यो छुं, तेथी हे प्रभु ! आपनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मने हुं ग्रहण करुं छुं." एम कही धर्ममां वीर्यना उल्लासवाळा अने पापकर्मथी विराम पामेला ते विद्याधरकुमारे देशविरति अंगीकार करी.

त्यारपछी सुग्रीव राजाए हाथ जोडी मुनीश्वरने पूछयुं के—" हे प्रभु ! मारा पुत्रने विष आपीने ते मारी राणी क्यां गइ ?" मुनि बोल्या के—" ते अहींथी नाशीने एक अरण्यमां गइ. त्यां चोरोए तेनां आभरणो उतारी लइ तेने पल्लीपतिने सोंपी. पल्लीपतिए धन लइ कोइ वेपारीने वेचाती आपी. कोइ वखत लाग मळवाथी वेपारी पासेथी नाशीने ते अरण्यमां गइ. त्यां दावानळ वडे बळीने पहेली नरके गइ. 'पापीनी सद्गति क्यांथी होय ?' पछी पहेली नरकमांथी नीकळीने ते कोइक चंडाळनी स्त्री थशे. त्यां सपत्नी साथे कजीओ थतां सपत्नीथी हणाइने त्रीजी नरकमां जशे. त्यांथी नीकळीने ते तिर्यंच गतिमां अनेक दुःखो पामशे." आ प्रमाणे सांभळी वैराग्य पामेला राजाए गुरुने कह्युं के—" जेने माटे तेणीए आवुं कृत्य कर्युं, ते तेणीनो पुत्र तो अहींज छे, परंतु ते पोते ज नरकमां गइ. तो आवा असार संसारने धिक्कार छे."

आ प्रमाणे कही ते राजाए सुमित्रने राज्य सोंपी तेज केवळीनी पासे दीक्षा ग्रहण करी पछी सुमित्र मित्रसहित पोताना नगरमां गयो, अने पोताना नाना भाइ पद्मने केटलाक गाम आप्या परतु ते निर्बुद्धि एकलो क्यांइ पण जतो रह्यो पछी एकदा चित्रगति विद्याधरकुमार सुमित्रराजानी रजा लइ पोताना नगरमा गयो परतु मित्रनी जेम धर्मकार्यने ते कदापि विसरतो नहोतो

एकदा सुमित्रनी बहेन के जे कलिंग देशना राजानी प्रिया हती, तेने अनगसिंहनो पुत्र अने रत्नवतीनो भाइ कमळ हरी गयो ते सांभळीने सुमित्र राजा व्याकुळ थयो ते वृत्तात विद्याधरना मुखथी चित्रगतिना जाणवामा आव्यो, त्यारे ते बोल्यो के—" मारा मित्रनी बहेनने हु शीघ्रपणे शाधीने लइ आवीश " पछी विद्याना प्रभावथी तेणीने कमळे हरण करी छे एम जाणी ते महा बळवान चित्रगति तत्काळ शिवमदिर पुरमां गयो त्यां तेणे कमळनी साथे विग्रह करी तेनो निग्रह कर्यो ते जाणी कमळनो पिता अनगसिंह क्रोध पामी सिंहनी जेम चित्रगति उपर धस्यो बन्नेनु परस्पर भयकर युद्ध थयु तेमां चित्रगतिने दुर्जय जाणी अनगसिंहे पोताना दिव्य खड्गनु स्मरण कर्युं, एटले तरत ज ज्वाळानी श्रेणिथी व्याप्त अने शत्रुना मदनो नाश करनार देवनु आपेलु खड्गरत्न तेना हाथमां प्राप्त थयु पछी अनगसिंहे चित्रगतिने कह्यु के—" हे मूर्ख ! शा माटे फोगट मरवा इच्छे छे ? अहींथी जतो रहे नहीं तो आ खड्गथी हमणां ज तु मरणने शरण थइश " ते सांभळी चित्रगति बोल्यो के—" आ लोढाना खड्गथी तु जे मद करे छे तेज प्रगटपणे तारु बळहीनपणु दर्शावे छे " ए प्रमाणे कही तेणे विद्याथी तत्काळ तमस्काय जेवु गाढ अधकार विकुर्व्यु, तेथी कोइपण मनुष्य पोताना हाथमां रहेली वस्तुने

पण जोइ शकतो नहोतो. आवा गाढ अंधकारमां ते चित्रगति तत्काळ अनंगसिंह पासे जइ तेना हाथमांथी ते खड्ग खुंचवी लइ तथा सुमित्रनी व्हेनने लइ जतो रह्यो. पछी एक क्षणवारमां अंधकारनो नाश थयो, ते वखते अनंगसिंहे पोताना हाथमां खड्गरत्न जोयुं नहीं, तेम ज पासे रहेला शत्रुने पण जोयो नहीं. तेथी ते क्षणवार खेद करवा लाग्यो, तेटलामां ज्ञानीनुं वचन याद आववाथी ते संतुष्ट थयो अने 'आनी वधारे खात्री शाश्वत चैत्यमां थशे' एम विचारी अनंगसिंह पोताने स्थाने गयो.

चित्रगतिए सुमित्रने अखंड शीळवाळी तेनी व्हेन सोंपी. ते ज वखते व्हेनना हरणना दुःखथी विरक्त थयेला सुमित्रे पोताना पुत्रने राज्य सोंपी सुयशा नामना मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी. चित्रगति पोताने स्थाने गयो.

हवे सुमित्रराजर्षि कांइक न्यून नव पूर्वनो अभ्यास करी गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता मगध देशमां गया. त्यां कोइ गामनी व्हार ते कायोत्सर्गे रह्या. तेवामां त्यां तेमनो सापत्न भाइ पद्म आव्यो. तेणे मुनिने ओळखी क्रोध पामी तरत ज तेना हृदयमां तीक्ष्ण बाण मार्युं. परंतु मुनिए तेनापर जरापण क्रोध नहीं करतां विचार्युं के-" मारो ज आ दोष छे के जेथी ते वखते आ मारा भाइने में राज्य आप्युं नहीं, तेथी हमणां हुं आने तथा बीजा सर्व प्राणीओने खमावुं छुं." आ प्रमाणे विचारी अनशन ग्रहण करी ते सुमित्रराजर्षि शुभ ध्यानथी मरण पामी ब्रह्मलोक नामना पांचमा देवलोकमां इंद्रनो सामानिक देव थयो, अने पद्म ते ज रात्रे सर्पडंशथी मरण पामी तमस्तमा नामनी सातमी नरके गयो. चित्रगति सुमित्रना मरणथी अत्यंत शोकातुर थयो.

एकदा चित्रगति यात्रामहोत्सव करवा सिद्धायतनमां गयो त्यां बीजा पण घणा विद्याधरो एकठा थया हता ते वखते अनगसिंह पण पोतानी कन्या रत्नवती सहित आव्यो त्यां चित्रगति भक्तिथी जिनप्रतिमानी पूजा करी स्तुति करवा लाग्यो. ते वखते सुमित्र देव पण मित्रने जोवा माटे त्यां आव्यो अने चित्रगतिना मस्तकपर तेणे विचित्र पुष्पोनी वृष्टि करी. ते जोइ अनगसिंहे तेने पोतानी पुत्रीनो थनार पति जाण्यो. ते वखते सुमित्र देवे पण प्रत्यक्ष थइ 'मने तु ओळखे छे ?' एम चित्रगतिने पूछ्यु. त्यारे 'तमे महर्द्धिक देव छो' एम चित्रगति बोल्यो, त्यारे तेनी ओळखाणने माटे देवे पोतानु पूर्व भवनु स्वरूप बताव्यु तरत ज आनदथी तेने आलिंगन करी चित्रगतिए कह्यु के—"हे महाभाग्यवान ! तमारा प्रसादथी मने आ धर्म प्राप्त थयो छे" देवे कह्यु—"ते वखते मारु विष उतारी मने जीवित आपवाथी आ देवनी लक्ष्मी पण तमे ज मने आपी छे, नहीं तो ते ज वखते मारु कुमरण थवाथी मारी आ गति क्याथी थात ?" आ प्रमाणे परस्परना उपकारोने कहेता ते बन्नेने जोइ सूरचक्री विगेरे सर्व विद्याधरो हर्ष पाम्या

ते वखते चित्रगति रत्नवतीना नेत्रमार्गे थइने तेणीना हृदयमा पेठो अने तेनी स्पर्धाथी ज कामदेवे पण त्यां ज पोतानु स्थान कर्यु कामग्रहथी व्याकुळ थयेली तेणीए तत्काळ लज्जारूपी वस्त्रनो त्याग करी विविध प्रकारनी चेष्टावडे पोतानो भाव प्रगट कर्यो तेणीने कामातुर जोइ अनगसिंहे विचार्यु के—"आ महा मनस्वीए मारा रत्ननी जेम आ मारी पुत्रीनु मन पण हरण कर्यु छे, तेथी आने अहीं ज हु मारी कन्या आपु फोगट काळक्षेप शा माटे करवो ? परतु आ धर्मने स्थाने आवु व्यावहारिक कार्य करवु योग्य नथी " ए प्रमाणे विचारी ते पोताने घेर गयो चित्रगति पण मित्रदेवने नि

दाय करी पिता सहित पोताने घेर गयो.

पछी अनंगसिंहे पोतानी पुत्री आपवा माटे पोताना मंत्रीने मोकल्यो. तेणे सूरचक्री पासे जइ प्रणाम पूर्वक कह्युं के— " हे स्वामी ! आ चित्रगति अने मारा स्वामीनी पुत्री रत्नवती ए बन्ने अधिक गुणवान छे, तेथी ते बन्नेना परस्पर संबंधथी ते आनंद पामो. " ते सांभळी सूरचक्रीए ते अंगीकार कर्युं. पछी मोटा उत्सवथी ते बन्नेना विवाह थया. चित्रगति तेणीनी साथे यथावसरे धर्म अने सांसारिक सुख भोगववा लाग्यो, एकदा सूरराजा चित्रगतिने राज्य सोंपी चारित्र ग्रहण करी अनुक्रमे मोक्षे गया.

त्यारपछी आश्चर्यकारक विद्या अने बळनी समृद्धिवाळा चित्रगति राजाए चिरकाळ सुधी विद्याधरचक्रीनुं पद अनुभव्युं. एकदा पोताना सामंत राजाना बे पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करीने मरण पाम्या, ते जोइ चित्रगतिने परम वैराग्य थयो. तेथी पोताना पुत्रने राज्य सोंपी ते चित्रगति राजाए प्रिया सहित दमचर नामना मुनि पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे चिरकाळ सुधी विहार करी छेवट अनशनवडे काळ करी रत्नवती सहित ते चोथा देवलोकमां देव थया.

पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां पद्म नामनी विजयमां सिंहपुर नामे पुर छे. तेमां हरिनंदी नामे राजा हतो. तेने यथार्थ नामवाळी प्रियदर्शना नामनी राणी हती. तेनी कुक्षिमां चित्रगतिनो जीव स्वर्गथी चवीने उतर्यो. राणनी पृथ्वी रत्नने प्रसवे तेम तेणीए समय पूर्ण थये पुत्र प्रसव्यो, तेनुं नाम राजाए अपराजित पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाने ग्रहण करी युवावस्था पाम्यो. तेने सचिवनो पुत्र विमलबोध नामनो मित्र हतो. एकदा ते बन्ने कुमारोनुं वक्रगति-

वाळा अश्वे हरण कर्युं, तेथी तेओ एक मोटा वनमां आवी पहोंच्या त्यां अपराजित कुमारे मंत्रीपुत्रने कह्यु के–" आपणे अश्वथी हरण करेला अहीं आव्या ते ठीक थयु, केमके आपणे पितानी आज्ञाने आधीन होवाथी तेमनी आज्ञा विना बहार जइने आपणे देशांतर जोइ शकत नहीं अने तेओ आपणी उपरना प्रेमथी आपणने आज्ञा आपत नहीं हवे तो आपणा मातपिता आपणा विरहने सहेजे सहन करशे ज, तेथी आपणे हवे घेर नहीं जतां पृथ्वीपर फरीने कौतुक जोशु " ते सांभळी मंत्रीपुत्रे तेना मतने संमति आपी तेटलामां ' रक्षण करो रक्षण करो " एवी वाणी बोलतो एक पुरुष त्यां आव्यो भयभीत थयेला तेने राजकुमारे ' तु कोइथी भय पामीश नहीं ' एम कह्यु, तेटलामां त्यां हाथमां खड्ग धारण करनार केटलाक योद्धाओ आव्या तेओ बोल्या के—" आ अमारा नगरनो चोर छे, तेने अमे हणशु, माटे हे पथिको ! तमे अहींथी चाल्या जाओ " ते सांभळी कुमारे कह्यु के—" मारा आश्रितने हणवा इंद्र पण शक्तिमान नथी, तो तीनानी शक्ति क्याथी होय ? " आवु कुमारनु वचन सांभळी ते सुभटो तेने ज मारवा दोड्या एटले कुमारे खड्ग खेंची ते सर्वेने नसाडी मूक्या तेओए जइ पोताना स्वामी कोशला नगरीना राजाने ते वृत्तांत कह्यो. त्यारे राजाए पोतानु समग्र सैन्य मोकल्यु तेनो पण कुमारे पराजय कर्यो त्यारपछी राजा चतुरंग सैन्य सहित आव्यो, त्यारे कुमारे मंत्री पुत्रने ते चोर सोंप्यो अने पोते युद्ध करवा तैयार थयो पछी एक हाथीना दांतपर पग दइ तेनापर चडी तेना मावतने हणी ते कुमार भयंकर युद्ध करवा लाग्यो ते वखते ते राजाना कोइ मंत्रीए ते कुमारने प्रथम जोयेलो होवाथी ओळखीने राजाने कह्यु, त्यारे राजाए सैन्यने युद्धथी निवारी कुमारने कह्यं के–" अहो वत्स ! शु तु मारा मित्र हरिनंदि

राजानो पुत्र छे ! हे वीर ! आवा पराक्रमथी तें तारा पिताने लजव्यो नथी. तुं आजे मारो अतिथि थयो ते सारुं थयुं अने तने आजे में जोयो ते पण घणुं सारुं थयुं." आ प्रमाणे कही पोताना हाथीपर कुमारने बेसाडी राजाए तेने आलिंगन कर्युं. पछी मंत्रीपुत्र सहित तेने पोताने घेर लइ जइ पोतानी कनकमाला नामनी पुत्रीने तेनी साथे परणावी. त्यां ते केटलाक दिवस सुखे रह्यो.

एकदा कुमार मित्रसहित प्रयाणमां विघ्नना भयथी राजानी रजा लीधा विना ज रात्रिने समये त्यांथी नीकळी गयो. जतां जतां एक मोटा अरण्यमां ते आव्यो. तेटलामां तेणे 'हा ! हा ! आ पृथ्वी वीरपुरुष रहित ज छे' एम करुणस्वरवाळुं रुदन सांभळ्युं. तेथी ते वीरकुमार शब्दने अनुसारे ते तरफ गयो. आगळ जतां तेणे एक जाज्वल्यमान अग्निना कुंडनी पासे रहेली कोइ स्त्रीने तथा तेनी पासे खड्ग खेंचीने उभेला एक पुरुषने जोयो. ते कुमारने जोइ ते स्त्री बोली के—"जो अहीं कोइपण वीरपुरुष होय तो ते आ अधम विद्याधरथी मारुं रक्षण करो." ते सांभळी कुमारे तेनी पासे जइ कह्युं के—"अरे दुष्ट गर्वशाळा ! युद्धने माटे तैयार था. अबळा उपर बळनो गर्व शुं करे छे ?" ते सांभळी ते विद्याधर बोल्यो के—"तुं पण परलोकमां आ स्त्रीनो सथवारो था." एम बोली उद्धत एवो ते युद्ध करवा तैयार थयो. प्रथम ते बन्ने वीरोए चिरकाळ सुधी खड्गवडे युद्ध कर्युं. पछी बाहुयुद्ध कर्युं. तेमां ते विद्याधरे ते कुमारने नागपाशवडे बांध्यो, तेने कुमारे जीर्ण रज्जुने हाथीनी जेम तत्काळ तोडी नांख्या. पछी विद्याधरे अपराजित उपर विद्यामंत्रित शस्त्रोवडे घणा प्रहारो कर्या. परंतु पुण्यशाळी ते कुमारने ते प्रहारो कांइपण करी शक्या नहीं. छेवट सूर्योदय वखते कुमारे विद्याधरना मस्तकपर

खड्गनो प्रहार कर्यो, जेथी तत्काळ ते मूर्छित थइ पृथ्वीपर पड्यो कुमारे तेने स्वस्थ करी फरी युद्ध करवा कह्यु, ते वखते ते खेचर बोल्यो के—" हे महाभुज ! तें मने जीवी लीधो ते ठीक कर्यु छे हे मित्र ! मारा वस्त्रनी गांठे मणि अने मूळिका बांधेली छे तेनो मणिना जळवडे मूळिकाने घसीने मारा प्रहारपर लगाड." ते सांभळी कुमारे ते प्रमाणे कर्यु, एटले ते खेचर सारो थयो पछी अपराजितना पूछवाथी ते विद्याधरे पोतानु वृत्तांत आ प्रमाणे कह्यु —

आ कन्या अमृतसेन नामना विद्याधरराजानी पुत्री छे, तेनु नाम रत्नमाळा छे, तेने कोइ ज्ञानीए कह्यु हतु के—"तारो भर्ता अपराजित थशे ' त्यारपछी एकदा में तेना विवाह माटे प्रार्थना करी, त्यारे तेणीए मने कह्यु के—" मारा भर्तार अपराजित थशे अथवा मारा देहने अग्नि बाळशे." ते सांभळी मने तेनापर क्रोध चड्यो हु श्रीषेण नामना विद्याधर राजानो सूरकांत नामनो पुत्र छु पछी में आने माटे थइने घणी दु साध्य विद्याओ साधी, अने थानी घणे प्रकारे याचना करी, परतु तेणीए मारु मान्य राख्यु नहीं त्यारे ' आनी अग्निदाहनी प्रतिज्ञा पूर्ण थाओ ' एम धारीने क्रोधथी आने अहीं लावी अग्निमा नांखवा तैयार थयो, तेवामा आना अने मारा पुण्यनी प्रेरणाथी तमे अहीं आवी पहोंच्या अने माराथी आनु रक्षण कर्यु, तेम ज स्त्रीहत्याने लीधे थती दुर्गतिथी मारु पण रक्षण कर्यु परतु हे परोपकारी ! तमे कोण छो ? ते कहो " आ प्रमाणे तेना पूछवाथी मत्रीपुत्रे राजकुमारनु नाम विगेरे कह्यु ते सांभळी रत्नमाळा चित्तमा अत्यत आनद पामी अने कामदेवना बाणना विषयने पामी, अर्थात् कामातुर थइ तेवामा रत्नमाळाना मातपिता पण तेणीने शोधता शोधता

त्यां आव्या, अने तेमना पूछवाथी मंत्रीपुत्रे तेमने सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी अमृतसेन राजा अने तेनी राणी हर्ष पाम्या अने तरत ज तेमणे पोतानी पुत्री राजकुमारने परणावी. पछी कुमारना कहेवाथी राजाए सूरकांतने अभयदान आप्युं. सूरकांते पण ते मणि अने मूलिका तथा वेष बदलवानी गुटिकाओ आग्रहथी राजकुमारने आपवा मांडी, परंतु ते निःस्पृह कुमारे कांइ पण लीधुं नहीं, त्यारे तेणे ते सर्व वस्तु मंत्रीपुत्रने आपी. पछी कुमारे अमृतसेनने कह्युं के—" हुं मारा नगरमां जाउं त्यारे आ तमारी पुत्रीने लावजो." एम कही कुमार त्यांथी आगळ चाल्यो, अने कुमारनुं स्मरण करता ते खेचरो पोतपोताने स्थाने गया.

आगळ चालतां अपराजितकुमार एक मोटा अरण्यमां गया. त्यां तृषातुर थवाथी तेने आम्रवृक्षनी नीचे बेसाडी मंत्रीपुत्र जळ लेवा गयो. थोडीवारे मंत्रीपुत्र जळ लइने पाछो आव्यो, त्यारे ते स्थाने ते कुमारने जोयो नहीं, तेथी अत्यंत शोकातुर थइ तेने चोतरफ शोधवा लाग्यो, परतु तेनो पत्तो नहीं लागवाथी ते मंत्रीपुत्र शोकथी मूर्छा पाम्यो. थोडीवारे सावधान थइ अत्यंत विलाप करी कांइक धैर्यने पकडी ते मंत्रीपुत्र फरीथी कुमारने शोधवा लाग्यो. अनुक्रमे फरतो फरतो ते नंदिपुरना उद्यानमां आवी उत्कंठापूर्वक बेठो. तेटलामां त्यां बे विद्याधरोए आवी तेने कह्युं के—" हे भद्र ! अहीं भुवनभानु नामे प्रसिद्ध विद्याधरराजा छे. तेने कमलिनी अने कुमुदिनी नामनी बे पुत्रीओ छे. ते बन्नेनो पति तमारो मित्र अपराजित थशे एम ज्ञानीए कह्युं हतुं, तेथी तेने लाववा माटे अमने अमारा स्वामीए आज्ञा आपी. एटले अमे ते अरण्यमां तमने बन्नेने जोया, तेटलामां तमे जळ लेवा दूर गया, अने अमे तमारा मित्रने हरीने अमारा स्वामी

पासे गया. त्यां भुवनभानुए तेने आसनपर बेसाडी पोतानी पुत्रीओ परणवानी प्रार्थना करी, परतु तमारा वियोगना शोकथी कुमार काइपण बोल्या नहीं ते जाणी तमने लाववा माटे अमारा स्वामीए अमने आज्ञा करी, तेथी अमे तमने अहीं रहेला जोया ते बहु सारु थयु माटे हे भाग्यवान ! क्रीडावडे वनमां महेल करीने रहेला अमारा स्वामी पासे तमे चालो "ते सांभळी मत्रीपुत्र हर्षथी तेमनी साथे त्यां गयो पछी कुमार ते बन्ने कन्याओने हर्षथी परण्यो, अने केटलोक काळ त्यां रह्यो

पछी प्रथमनी जेम भुवनभानुनी रजा लइ ते बन्ने मित्रो त्यांथी नीकळी श्रीमदिर नामना नगरमां गया त्यां एकांत विद्याधरे आपेला मणिना प्रभावथी पूर्ण मनोरथवाळा ते बन्ने सुखेथी रह्या एकदा ते नगरमा लोकोनो कोलाहल सांभळी कुमारे 'आ शेनो कोळाहळ छे ?' एम मित्रने पूछ्यु, त्यारे तेणे तपास करी कुमारने कह्यु के—"आ नगरमां सुप्रभ नाम राजा छे तेने कोइए छळ कपटथी शस्त्रवडे प्रहार कर्यो छे ते राजाने राज्य भोगवे तेवो एक पण पुत्र नथी तेथी नगरना लोको शोकथी आ कोलाहळ करे छे." ते सांभळी कुमार बोल्यो के—"कोइ शत्रुए घा कर्यो हशे " एम कही कुमार दु खी थयो होय तेम खेद करवा लाग्यो

हवे ते सुप्रभ राजाने अनेक उपायो कर्या छतां शांति थइ नहीं त्यारे कामलता नामनी गणिकाए एकांतमां सचिवोने कह्यु के—"आ आपणा नगरमां कोइ परदेशी पुरुष तेना मित्र सहित रहेलो छे ते काइपण उद्यम करतो नथी, तोपण तेना सर्व मनोरथो सिद्ध थाय छे तेनी पासे कांइपण चमत्कारी औषध होवु जोइए " ते सांभळी मत्रीओ आदरपूर्वक ते कुमारने राजा पासे लइ गया त्यां जइ दयाळु कुमारे मित्र पासेथी मणि अने मूलिका लइ मणिना जळमां मूलिकाने घसी तेना

प्रहार उपर ते लगाडी. तरत ज राजानु शरीर सज्ज थयुं, एटले राजाए कुमारने पूछयुं के—" हे भाग्यवान ! कारण विना बंधुरूप तुं क्यांथी आवे छे ?" ते सांभळी तेना मित्रे कुमारनो वृत्तांत कह्यो, त्यारे राजाए फरीथी कह्युं के—" अहो ! तुं तो मारा मित्रनो पुत्र छे. घणुं ज ठीक थयुं के पोताने ज घेर तुं आव्यो छे." एम कही राजाए पोतानी रंभा नामनी पुत्री तेने परणावी. पछी त्यां घणा काळ सुधी रहीने प्रथमनी जेम कुमार मित्र सहित त्यांथी नीकळी गयो.

अनुक्रमे चालतां ते अपराजित कुमार मित्र सहित कुंडपुर नगरना उद्यानमां आव्यो. त्यां सुवर्णकमळपर बेठेला केवळीने जोइ तेमने भक्तिथी वंदना करी योग्य स्थाने बेसी देशना सांभळी. पछी कुमारे हाथ जोडी केवळीने पूछयुं के—" हे भगवान् ! हुं भव्य छुं ? के अभव्य छुं ? " मुनीश्वरे कह्युं—" तुं भव्य छे, अने आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे आ भवथी पांचमे भवे तुं बावीशमो तीर्थंकर थइश. तथा आ तारो मित्र ते वखते तारो गणधर थशे. " आ प्रमाणे सांभळी ते बन्ने मित्रोए आनंद पामी चिरकाळ सुधी ते केवळीनी भक्ति करी. पछी मुनिए त्यांथी विहार कर्यो त्यारे ते मित्रो ग्रामादिकमां जइ चैत्योने नमवा लाग्या.

आ अवसरे जनोने आनंद करनारा श्री जनानंद नामना नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामनी राणी हती. तेणीनी कुक्षिमां रत्नवतीनो जीव स्वर्गथी चवीने अवतर्यो. समय पूर्ण थये राणीए पुत्रीने जन्म आप्यो. तेनुं प्रीतिमती नाम पाडयुं. अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळाने ग्रहण करी यौवनवयने पामी. तेणीनी पासे विद्वान पण मूर्ख जेवो लागतो हतो, तेथी ते कोइपण पुरुषनी उपर जरापण रंजित थती नहोती. एकदा राजाए तेणीने पूछयुं

के—" तने कयो पति इष्ट छे ? " त्यारे ते बोली के—" मने वादमां जे जीते, ते मारो पति थाओ " आवी तेनी इच्छाने अंगीकार करी राजाए स्वयंवर मंडप कराव्यो, अने सर्व राजाओने दूतद्वारा बोलाव्या, तेमां पुत्रना वियोगथी दु खी थता एक हरिनंदी राजा विना बीजा सर्व राजाओ पोतपोताना कुमारो सहित आव्या ते सर्वे मंडपमां आवी मांचाओ उपर अनुक्रमे बेठा ते वखते दैवयोगे भ्रमण करतो अपराजित कुमार पण मित्र सहित त्यां आव्यो, अने ' आपणने कोइ ओळखशो नहीं ' एम धारी गुटिकाना प्रयोगथी सामान्य रूप धारण करी ते मंडपमां गयो पछी मनोहर वस्त्रादिक धारण करी सखीओ अने दासीओथी परिवरेली प्रीतिमती कन्या जाणे के बीजी लक्ष्मी होय तेम ते मंडपमां आवी मालती नामनी तेनी सखी आगळीथी राजाओ अने राजकुमारोने देखाडती बोली के—" हे सखी ! आ सर्वे खेचरो तथा भूचरो तने वरवा माटे अहीं आव्या छे तेमाथी जे तने इष्ट होय तेने तु वर " ते सांभळी प्रीतिमती जे जे राजा के राजकुमार उपर पोतानी दृष्टि नाखती, तेना तेना उपर कामदेव पण पोताना बाणो नाखतो हतो पछी ते कन्याए मधुर स्वरे पूर्वपक्ष कर्या, ते सांभळीने ' शु आ साक्षात् सरस्वती देवी ज छे ? ' एम मनमां तर्क कर्यो तेणीना प्रश्ननो जवाब आपवा कोइपण राजकुमार समर्थ थयो नहीं, तेथी सर्वे खिलवा थइने पृथ्वी सामु—नीचु ज जोवा लाग्या, अने परस्पर कहेवा लाग्या के—" आ कन्याए रूपे करीने ज अमारु मन हरी लीधु छे, तेथी मन विना अमे शी रीते उत्तर आपी शकीए ? " त्यारपछी जितशत्रु राजाए विचार कर्यो के—" आ सर्वे राजाओमां मारी पुत्रीने लायक वर नथी, तो हवे शु थशे ? " आ प्रमाणे विचार करता राजाने कोइ एक बुद्धिमान मंत्रीए कह्यु के—" हे स्वामी ! खेद न करो पृथ्वीपर घणां रत्नो होय

छे. माटे राजा, राजपुत्र के बीजो कोइपण आ कन्याने वादमां जीतशे ते तेनो पति थशे एम अहीं सर्वत्र आघोषणा करावो." ते सांभळी राजाए ते प्रमाणे कर्युं, त्यारे अपराजित कुमार प्रीतिमती पासे आव्यो. तेने कुत्सित वेषवाळो जोया छतां पण पूर्वना प्रेमने लीधे प्रीतिमती हर्ष पामी पूर्वपक्ष बोली, एटले तरत ज अपराजिते तेनो उत्तर आप्यो. ते सांभळी तत्काळ तेना कंठमां कन्याए वरमाळा आरोपण करी. ते जोइ सर्व राजाओ क्रोध पामी सुभटोने युद्ध करवा माटे तैयार करवा लाग्या, अने बोल्या के—" अमे राजाओ छतां आ वाणीथी ज शूरो सामान्य मनुष्य आ कन्याने शी रीते परणी जाय ? " एम बोली तेओए युद्ध आरंभ्युं. ते वखते कुमार कोइ मावतने मारी तेना हाथीपर चडी जइ युद्ध करवा लाग्यो. वळी कोइ रथीने मारी तेना रथमां बेसी युद्ध करवा लाग्यो. ए ज प्रमाणे ते कुमारे क्षणवार अश्वार थइ, पत्ति थइ, रथी थइ अने निषादी थइ युद्ध करी सर्वनो पराजय कर्यो. पछी " शास्त्रवडे स्त्रीथी जीताया अने शस्त्रवडे आनाथी जीताया " एम विचारी लज्जा पामेला ते सर्व राजाओ फरीथी एकत्र थइ युद्ध करवा आव्या. ते वखते कुमार सोमप्रभ राजाना हाथी-पर चडी गयो. तेने ते राजाए तेना तिलकादिक चिन्होथी ओळखी हर्ष पामी कह्युं के—" हे महापराक्रमी भाणेज ! बहु सारुं थयुं के मे तने ओळख्यो. " एम कही ते राजाए तेने आलिंगन कर्युं. पछी सोमप्रभ राजाए ते कुमारनो वृत्तांत सर्वने कह्यो, ते सांभळी सर्व राजाओ युद्धथी निवृत्त थया, अने कुमारे पण पोतानुं मूळ स्वरूप प्रगट कर्युं. पछी जितशत्रु

१ हाथी स्वार

राजाए महोत्सवपूर्वक तेने प्रीतिमती साथे परणाव्यो, अने सर्व राजाओने सत्कारपूर्वक विदाय कर्या पछी अपराजित कुमार प्रीतिथी प्रीतिमती साथे क्रीडा करतो सुखेथी त्यां ज रह्यो

एकदा हरिनंदी राजानो दूत त्यां आव्यो आलिंगन करी कुमारे मातापितानी कुशळता पूछी. त्यारे दूत बोल्यो के- "हे कुमार ! मात्र देहने धारण करवाथी तेओ कुशळ छे; परंतु तमे प्रवास कर्यो त्यारथी तेमनां नेत्रोमां पाणी सुकातुं नथी तमारा आ वृत्तांत सांभळीने मातापिताए तमने बोलाववा माटे मने मोकल्यो छे. तो हवे तेमने तमारुं दर्शन आपी आनंद पमाडो" ते सांभळी मातापिताने मळवा उत्सुक थयेलो कुमार तरत ज ससरानी रजा लई प्रीतिमतीने साथे राखी मित्र सहित चाल्यो ते कुमार प्रथम जे जे राजानी कन्याओ परण्यो हतो, ते ते राजाओ पोतपोतानी पुत्रीओने लईने हर्षथी तेनी पासे आव्या एटले ते सहित भूचर अने खेचर राजाओ अने पोतानी प्रियाओथी शोभतो ते कुमार अनुक्रमे सिंहपुर पहोंच्यो ते वखते हरिनंदी राजा हर्षथी तेनी सन्मुख आव्यो कुमारे तेने विनयथी नमस्कार कर्यो अने राजाए तेने प्रीतिथी आलिंगन कर्युं. माताए पण ते नमता एवा कुमारने पोताना हाथवडे स्पर्श कर्या पछी सर्व स्त्रीओ पण सासु ससराने पगे लागी त्यारपछी विमलबोध मित्रे राजा तथा राणी पासे कुमारनो सर्व वृत्तांत कह्यो, ते सांभळीने ते बन्ने अति हर्ष पाम्या पछी शहेरमां प्रवेश करी कुमारे सर्व खेचर अने भूचर राजाओने सत्कार पूर्वक विदाय कर्या एकदा हरिनंदी राजा अपराजित कुमारने राज्य सोंपी प्रव्रज्या ग्रहण करी तेनुं आराधन करीने मोक्षे गया पछी अपराजित राजाए जिनेश्वरोनां चैत्यो वडे पृथ्वीने शणगारी चिरकाळ सुधी राज्यनुं पालन कर्युं

एकदा अपराजित राजा उद्यानमां क्रीडा करवा गयो. त्यां तेणे मित्रो अने स्त्रीओथी परिवरेला कोइ महेभ्यने जोयो, तेनी पासे मनोहर संगीत थतुं हतुं, तथा ते अर्थीओने इच्छित दान आपतो हतो. तेने जोइ राजाए " आ कोण छे ? " एम पोताना सेवकोने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के—" हे स्वामी ! आ समुद्रपाळ नामना सार्थवाहनो अनंगदेव नामनो पुत्र छे. " ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के—" अहो ! मारा राज्यमां वणिको पण आवा उदार अने समृद्धिवाळा छे, तेथी मने पण धन्य छे." एम विचारी राजा पोताने घेर गयो. पछी बीजे ज दिवसे राजाना प्रासाद पासे थइने घणा मनुष्योथी वहन करातुं एक शब नीकळ्युं. ते जोइ राजाए ' आ कोण मरी गयुं ? ' एम पोताना सेवकोने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के—" हे स्वामी ! काले ज आपे जे अनंगदेवने उद्यानमां क्रीडा करतो जोयो हतो तेज विशूचिकाना व्याधिथी अकस्मात् मरण पाम्यो छे. " ते सांभळी—" अहो ! संध्याकाळना रंगनी जेम आ विश्वमां सर्व पदार्थ अनित्य छे. " एम विचारी राजा अत्यंत वैराग्य पाम्यो. तेवामां प्रथम कुंडपुर नगरमां ते राजाए जे केवळीने जोया हता, ते केवळी ज्ञानथी तेने दीक्षा योग्य जाणी त्यां पधार्या. तेमनी पासे जइ धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामी अपराजित राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी प्रीतिमती अने विमळबोध सहित दीक्षा ग्रहण करी. अने चिरकाळ सुधी तीव्र तप करी ते त्रणे काळधर्म पामीने अग्यारमा देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया.

आ ज भरतक्षेत्रमां श्रीहस्तिनापुर नामना नगरमां श्रीषेण नामे राजा हतो. तेने श्रीमती नामनी राणी हती. तेमनी कुक्षिमां अपराजितनो जीव अवतर्यो. ते वखते राणीए स्वप्नमां शंख जेवो उज्वळ पूर्ण चंद्र जोयो. समय पूर्ण थये

राणीए पुत्रन ज म आप्या, तेनु नाम शग्व राखवामां आव्यु पाच धात्रीओवडे पालन करातो ते कुमार वृद्धि पामी अनु क्रमे सर्व कलाओमां निपुण थयो

ए न रीते विमलबोधनो जीव पण स्वर्गथी चवी श्रीपेण राजाना मत्री गुणनिधिनो पुत्र मतिप्रभ नामे थयो ते शंखकुमारनो मित्र थयो ते बन्ने मित्रो अनुक्रमे मनोहर युवावस्थाने पाम्या

एकदा श्रीपेण राजा पासे प्रजाजनोए आवी कह्यु के—" हे देव ! तमारा देशना सीमाडामां एक महा दुर्गम दुर्ग छे तेमां समरकेतु नामनो पल्लीपति रहे छे, ते निरतर अमने लुटे छे अने हेरान करे छे तेथी तमे अमारु रक्षण करो " ते सांभळी राजा तत्काळ त्यां जवा उत्सुक थया ते वखते शंखकुमारे नम्रताथी विज्ञप्ति करी के—" हे पिता ! सर्पना पचा उपर गरुडना उद्यमनी जेम ते पल्लीपति उपर तमारो आ उद्यम योग्य नथी तेथी तेनो जय करवा माटे मने आज्ञा आपो " ते सांभळी राजाए तेने आज्ञा आपी, एटले शंखकुमार सैन्य सहित पल्ली तरफ चाल्यो तेने आवतो जाणी पल्ली पति दुर्गनो त्याग करी कोइ गाढ वनमां पेठो ते जाणी बुद्धिमान कुमारे पण एक सामतने ते दुर्गमां प्रवेश कराव्यो, अने पोते दुर्गनी बहार सैन्य सहित कोइ गुप्त स्थाने छुपाइने रह्यो ते वात नहीं जाणता पल्लीपतिए तत्काळ आवी ते दुर्गने रुधी लीधो, तेटलामां कुमारे पण प्रगट थइ पोताना सैन्यथी तेने घेरी लीधो पछी दुर्गमां पेठेला सामतना सैन्ये अदरथी अने कुमारना सैन्ये बहारथी एम बन्ने बाजुथी मध्यमां रहेला पल्लीपतिनी उपर प्रहारो कर्या एटले कइ दिशामां नासी जवु ए नहीं समजवाथी व्याकुळ थयेलो पल्लीपति पोताना कठपर कुठार राखी कुमारने शरणे जइ हाथ जोडीने बोल्यो के—

" हे बुद्धिमान् ! मारी मायाना जाळने तोडनार तमे एक ज छो. माटे हुं तमारो दास छुं. मारुं सर्वस्व ग्रहण करी मारापर प्रसन्न थाओ. " पछी तेणे जेटलुं धन लोकोनुं लुंटयुं हतुं तेटलुं लइ तेना स्वामीओने आपी कुमार पल्लीपतिने साथे लइ पोताना नगर तरफ चाल्यो. मार्गमां रात्रि समये कोइ ठेकाणे सैन्यनो पडाव नांखी कुमार रह्यो हतो, तेवामां कोइनुं रुदन सांभळी कुमार हाथमां खड्ग लइ ते शब्दने अनुसारे ते तरफ चाल्यो. केटलेक दूर गयो, तेटलामां एक वृद्ध स्त्रीने रुदन करती जोइ कुमारे तेने रोवानुं कारण पूछयुं, त्यारे ते बोली के—" अंगदेशमां चंपा नामनी नगरी छे. तेमां जितारि नामे राजा छे. तेने कीर्त्तिमती नामनी प्रियाने विषे उत्पन्न थयेली यशोमती नामनी पुत्री छे. ते समग्र कळामां कुशळ अने युवावस्थाने पामेली छे. ते पोताने योग्य वर नहीं जोवाथी कोइ पण ठेकाणे रागवाळी थती नथी. एकदा श्रीषेण राजाना पुत्र शंखकुमारना गुणो सांभळी ' मारा पति शंख ज हो ' एम तेणीए प्रतिज्ञा करी. आवी तेनी प्रतिज्ञा जाणी जितारि राजा " आ पुत्री योग्य वरने विषे रागवाळी थइ छे. " एम विचारी अत्यंत हर्ष पाम्या. पछी एकदा मणिशेखर नामना खेचरे ते कन्यानी याचना करी त्यारे जितारि राजाए तेने उत्तर आप्यो के—" आ मारी कन्या शंखकुमार सिवाय बीजा पतिने वरवा इच्छती नथी. तेथी तेवी इच्छावाळी ते कन्या बीजे केम आपी शकाय ? " ते सांभळी ए खेचर क्रोध पाम्यो, एटले एकदा तेणे ते कन्यानुं हरण कर्युं. ते वखते हुं तेणीनी पासे हती तेथी तेणीनी साथे मारुं पण हरण कर्युं. हुं ते कन्यानी धात्री छुं. मार्गमां मने अहीं तजी दइने ते खेचर ते कन्याने लइने क्यांइक जतो रह्यो छे, तेथी हे वीर ! हुं रुदन करुं छुं, के ते कन्यानुं हवे शुं थशे ? "

आ प्रमाणे सांभळी शंखकुमारे ते वृद्धाने कह्यु के—" हे माता ! तमे धीरज राखो हमणा ज हु ते खेचरने जीती कन्याने लइ आवु छु " एम कही वनमां भमतो भमतो कुमार प्रातःकाळ थता एक पर्वतपर गयो त्यां " हे मूढ ! मने शरण ज परणशे, तु फोगट क्लेश शा माटे करे छे ? " एम विद्याधरने कहेती ते कन्याने तेणे जोइ ते बन्नेए शंखकुमारने जोयो एटले हसीने खेचर बोल्यो के—" हे जड ! तु जेने मरवाने इच्छे छे, ते पोते ज मरवानी इच्छाथी अहीं आव्यो छे, जो, आने तारी आशा सहित हणीने हमणां ज हु यमराजने घेर मोकलु छु अने तने हर्षथी बलात्कारे मारे घेर लइ जाउ छु " आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी शंखकुमारे तेने कह्यु के—"रे दुष्ट ! उठ, तैयार था, तारा मस्तकनी साथे तारी आ दुष्ट इच्छानु हु हरण करु छु " ते सांभळी खेचर तेनी साथे खड्गवडे युद्ध करवा लाग्यो तेमा कुमारने दुर्जय जाणी विद्याधिष्ठित शस्त्रोनो प्रहार करवा लाग्यो परतु ते शस्त्रो पुण्यशाळी कुमार उपर प्रहार करवाने समर्थ थया नहीं ए रीते युद्ध करीने थाकी गयेला विद्याधर पासेथी तेनु ज धनुष खुचवी लइने कुमारे तेनावडे तेने बाण मार्यु, तेथी ते मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्यो ते जोइ कुमारे तेने उपचार करी सज्ज कर्यो अने फरीथी युद्ध करवानो तेने उत्साह आप्यो त्यारे ते प्रसन्न थइने कुमार प्रत्ये बोल्यो के—" हे वीर ! अत्यार सुधी मने कोइए जीत्यो नथी, आजे तें मने जीत्यो छे, ते घणु सारु थयु छे, हु तारु पराक्रम जोइ तारो दास थयो छु. माटे मारो आ अपराध तु क्षमा कर "

ते सांभळी कुमारे तेने कह्यु के—" हे खेचर ! तारी भक्तिथी हु प्रसन्न थयो छु, तेथी तारी जे इच्छा होय ते कहे " त्यारे ते बोल्यो के—" हे पुण्यवान कुमार ! शाश्वत चैत्योने वांदवा तथा मारापर अनुग्रह करवा तु मारी साथे वैताढ्य

पर्वतपर चाल. " ते सांभळी कुमारे तेनुं वचन अंगीकार कर्यु. ते वखते शंखकुमारने सर्व गुणोवडे उत्कृष्ट जोइ ' हुं श्रेष्ठ वरने वरी छुं ' एम विचारी यशोमती कन्या अत्यंत हर्ष पामी. तेटलामां त्यां ते मणिशेखरना विद्याधर सेवको आव्या. तेमांथी बे विद्याधरोने मोकली कुमारे पोताना सैन्यने पोताना नगर तरफ जवा कहेवराव्युं, अने बीजा विद्याधरने मोकली पेली वृद्ध धात्रीने बोलावी ते धात्री, कन्या अने खेचर सहित शंखकुमार वैताढ्य पर्वतपर गयो. त्यां तेमणे शाश्वत चैत्योमां रहेला जिनेश्वरोनी प्रणामपूर्वक पूजा करी. पछी मणिशेखरे कुमारने पोताना नगरमां लइ जइ तेनी घणी भक्ति करी. बीजा पण खेचरोए कुमारना पराक्रमथी खुशी थइ तेने पोतपोतानी कन्याओ आपी. त्यारे कुमारे तेमने कह्युं के—" आ यशोमतीने प्रथम परण्या पछी हुं तमारी कन्याओने परणीश. " त्यारपछी मणिशेखर विगेरे विद्याधरो पोतपोतानी कन्याओ सहित यशोमतीने अने कुमारने लइ चंपानगरीए आव्या. ते सर्वने आवता जाणी जितारि राजा तेमनी सन्मुख आवी महोत्सवपूर्वक तेमने पोताने घेर लइ गयो. पछी त्यां शंखकुमार यशोमतीने तथा बीजी विद्याधर-कन्याओने हर्षथी विधिपूर्वक परण्यो अने भक्तिथी श्रीवासुपूज्यस्वामीना चैत्यनी यात्रा करी. पछी सर्व विद्याधरोने विदाय करी शंखकुमार केटलाक दिवस चंपानगरीमां रही सर्व प्रियाओ सहित हस्तिनापुरमां आव्यो.

एकदा श्रीषेण राजाए शंखने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी. शंखराजा पण इंद्रनी जेम मोटा राज्यनुं पालन करवा लाग्यो. केटलेक काळे श्रीषेण राजर्षिने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. एकदा विहारना क्रमथी ते केवळी हस्तिना-पुरमां पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळी शंखराजा परिवार सहित मुनीश्वरने वांदवा आव्या. केवळीना मुखथी धर्मदेशना

सांभळी शंख राजा वैराग्य पाम्या एटले पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी ते केवळी पासे दीक्षा ग्रहण करी तेनी साथे मतिप्रभ मंत्रीए तथा यशोमती राणीए पण दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे शंख राजर्षि श्रुतना पारगामी थया, अने दुस्तप तपवडे अर्हत् भक्ति विगेरे स्थानकोनु सेवन करी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्यु छेवट यशोमती साध्वी अने मंत्रीमुनि सहित शंखराजर्षि अनशन करी अपराजित विमानमां देवपणे उत्पन्न थया

आ ज भरतक्षेत्रने विषे शौर्यपुर नामना नगरमां दशार्हना मोटा भाइ समुद्रविजय नामे राजा हता तेने सर्व प्राणीओनु कल्याण करनारी शिवा नामनी राणी हती देवायु पूर्ण थतां योग्य समये अपराजित नामना स्वर्गथी चवीने शंख राजानो जीव शिवादेवीना गर्भमां अवतर्यो. ते वखते सुखे सुतेली देवीए चौद महास्वप्नो तथा रिष्टरत्नमय नेमि-चक्र जोइ जागृत थइ राजाने ते वृत्तांत कह्यो एटले राजाए प्रातःकाळे स्वप्नपाठकोने बोलावी ते स्वप्नोनु फळ पूछयु, त्यारे तेओए कयु के—" तमारे चक्री के धर्मचक्री पुत्र थशे " पछी समय पूर्ण थये राणीए उत्तम पुत्रने जन्म आप्यो ते वखते दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्यु, इंद्रोए आवी मेरुपर्वतपर तेनो स्नात्रमहोत्सव कर्यो पछी राजाए पण हर्षथी पोताना नगरमां जन्मनो महोत्सव कर्यो भगवान गर्भमां आव्या त्यारे माताए स्वप्नमां रिष्टनेमि जोयो हतो, तेथी राजाए तेनु अरिष्टनेमि नाम पाडयु इंद्रे आदेश करेली धात्रीओथी लालन पालन कराता भगवान जगतना हर्षनी साथे वृद्धि पामी आठ वर्षना थया आ अवसरे यशोमतीनो जीव स्वर्गमांथी चवीने उग्रसेन राजानी धारिणी नामनी राणीनी कुक्षिथी पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेनु राजीमती नाम पाडयु ते पण

अनुक्रमे वृद्धि पामी कळाना समूहने ग्रहण करी पवित्र युवावस्थाने पामी.

अहीं मथुरापुरीमां वसुदेवना पुत्र कृष्णे जरासंध नामना राजाना जमाइ कंसने हण्यो, त्यारे सर्वे यादवो क्रोध पामेला जरासंधना भयथी निमित्तियाना वचनवडे पश्चिम समुद्रने कांठे जइने रह्या. त्यां कृष्ण वासुदेवे कुबेरनी आराधना करी, तेथी ते देवे समुद्र मध्ये नव योजन पहोळी अने बार योजन लांबी द्वारकापुरी बनावी आपी. लंकानगरीनी शंका करावती ते सुवर्णमय नगरीने विषे बळराम, श्री कृष्ण, दशार्ह अने बीजा सर्व यादवो सुखेथी रह्या. अनुक्रमे प्रतिवासुदेव जरासंधने हणी तथा भरतार्धने साधी राम अने कृष्ण बळदेव अने वासुदेव थइ उत्तम राज्य भोगववा लाग्या. त्यां भगवान नेमिनाथ पण इच्छा प्रमाणे क्रीडा करता पवित्र युवावस्थाने पाम्या. पण तेओ भोगने विषे पराङ्मुख ज हता.

हवे सूत्रकार महाराजा भगवानना रूपादिकनुं वर्णन करे छे.—

सो रिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसंजुओ। अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोअमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥

अर्थ—(सो) ते (रिट्ठनेमिनामो उ) अरिष्टनेमि नामना भगवान (लक्खणस्सरसंजुओ) माधुर्य, लावण्य विगेरे स्वरना लक्षणो सहित हता, तथा (अट्ठसहस्सलक्खणधरो) हस्त पाद विगेरे स्थाने शंख, चक्र, गदा स्वस्तिक विगेरे एक हजार ने आठ लक्षणोने धारण करनारा हता तथा (गोअमो) गौतम गोत्री हता, तथा (कालगच्छवी) श्याम कांतिवाळा हता. ५.

वैज्जरिसहसघयणो, सैमचउरसो झैसोदरो । तैस्स रॉइमइ कैन्न, भैज्ज जोएइ केसैवो ॥ ६ ॥

अर्थ— तथा (वज्जरिसहसघयणो) वज्रर्षभनाराच सघयणवाळा हता, तथा (समचउरसो) समचतुरस्र सस्थानवाळा हता, (झसोदरो) मत्स्यना जेवा उदरवाळा हता (तस्स) ते नेमिनाथनी (भज्ज) भार्या करवा माटे (केसवो) वासुदेवे (राइमइ) राजीमती नामनी (कन्न) कन्यानी तेना पिता पासे (जाएइ) याचना करी ६

ते राजीमती कन्या केवी हती ते कहे छे —

अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहिणी । सव्वलक्खणसपन्ना, विज्जुसोआमणिप्पहा ॥ ७ ॥

अर्थ—(अह) हवे (सा) ते (रायवरकन्ना) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या (सुसीला) सारा शीलवाळी हती, तथा (चारुपेहिणी) मनोहर जोनारी–दृष्टिवाळी हती, तथा (सव्वलक्खणसपन्ना) सर्व शुभ लक्षणोए करीने युक्त हती, तथा (विज्जुसोआमणिप्पहा) विद्युत् एटले विशेष कांतिवाळी सौदामिनी एटले वीजळीनी जेवी प्रभावाळी–कांतिवाळी हती ७,

राजीमतीनी याचना करवानो जे प्रसग प्राप्त थयो तेनी हकीकत आ प्रमाणे छे —

एकदा श्रीनेमिनाथ प्रभु क्रीडा करतां वासुदेवनी आयुधशाळामां गया, त्यां वासुदेवनु शार्ङ्ग नामनु धनुष लेवा लाग्या ते वखते तेना आरक्षकोए कह्यु के—" हे कुमार ! आ धनुषने चडाववा विष्णु विना बीजा कोइ समर्थ नथी.

तेथी आने ग्रहण करवानो आग्रह मूकी द्यो." ते सांभळी प्रभुए कांइक हसी ते धनुष पोताना हाथमां लीधुं, अने तरत नेतरनी सोटीनी जेम अनायासे ज वाळीने तेनापर प्रत्यंचा चडावी. पछी इंद्रधनुष जेवा ते धनुषवडे शोभता मेघ जेवा ते नेमिनाथे तेनो टंकार करी तेनी गर्जनावडे समग्र विश्व पूरी दीधुं. पछी धनुषने मूकी कांतिवडे देदीप्यमान चक्रने हाथमां लइ कुंभारना चक्रनी जेम तेने आंगळीना अग्रभागवडे भमाडयुं. पछी चक्रनो त्याग करी जेने ग्रहण करतां वासुदेवने पण घणो प्रयास थतो हतो एवी गदाने प्रभुए लाकडीनी जेम ग्रहण करीने फेरवी. पछी तेने पण तजी प्रभुए पांचजन्य नामनो शंख लइ पोताना मुख पासे राख्यो, ते वखते ते शंख विकस्वर काळा कमळनी पासे रहेला राजहंसनी जेम शोभवा लाग्यो. पछी स्वामीए ते शंख वगाडयो, तेना शब्दथी समग्र विश्व बधिर थइ गयुं, सर्व पर्वतो कंपवा लाग्या, पृथ्वी पण चळाचळ थइ, समुद्रो क्षोभ पाम्या अने वीरो मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पडया. घणुं कहेवाथी शुं? ते शब्दथी देवो पण त्रास पाम्या. सिंहना नादथी हाथीनी जेम ते शंखनादथी वासुदेव पण क्षोभ पामी विचार कर्यो के—"कया बळवाने आ शंख वगाडयो? हुं ज्यारे शंख वगाडुं छुं त्यारे सामान्य मनुष्यो ज क्षोभ पामे छे, परंतु आ नादवडे तो मने पण अत्यंत क्षोभ थयो छे. तो शुं इंद्र, चक्रवर्ती के बीजो कोइ वासुदेव आव्यो छे? जो एम ज होय तो हुं आ राज्यनुं रक्षण शी रीते करी शकीश?" आ प्रमाणे सभामां बेठेला वासुदेव विचार करता हता, तेटलामां आयुधशाळाना रक्षकोए आवी सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी शंकाथी आकुळ व्याकुळ थयेला विष्णुए बळरामने कह्युं के—"जेनी क्रीडाथी पण आ प्रमाणे आखा विश्वने क्षोभ थयो, ते अरिष्टनेमि आपणुं राज्य ग्रहण करे, तो तेने कोण निषेध करी शके?" ते सांभळी बळदेव बोल्या

के—" हे भाइ! तमे खोटी शका न करो पूर्वना तीर्थंकरोए आ आपणा भाइनो वृत्तात एवो कह्यो छे के—यादववशरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चद्र समान बावीशमा तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि राज्यलक्ष्मीने भोगव्या विना ज दीक्षा ग्रहण करशे वळी अत्यारे पण समुद्रविजय विगेरे सर्व तेने घणी प्रार्थना करे छे, तोपण ते बुद्धिमान एक कन्याने पण परणता नथी, तो ते श्रीनेमि शु आ राज्यने ग्रहण करे?" आ प्रमाणे बळरामे कह्या छतां हरिना हृदयमाथी शका गइ नहीं

एकदा श्रीनेमिकुमार उद्यानमां क्रीडा करवा गया हता कृष्ण साथे हता त्यां कृष्ण वासुदेवे तेने कह्यु के—" हे भाइ! आपणे आपणा बळनी परीक्षा करवा माटे द्वद्वयुद्ध करीए " नेमिकुमारे कह्यु के—" सामान्य माणसने उचित एवु द्वद्वयुद्ध आपणे करवु योग्य नथी परतु बळनी परीक्षा तो मात्र बाहु वाळवाथी पण थइ शके छे." आवु तेनु वचन अगीकार करी हरिए पोतानो बाहु लांबो कर्यो तेने प्रभुए कमळना नाळनी जेम तत्काळ नमावी दीधो अने पोतानो वज्र जेवो बाहु लांबो कर्यो तने वाळवा माटे वासुदेवे पोतानु सर्व बळ वापर्यु, तोपण ते शाखापर लटकेला बाळकनी जेम ते हाथपर टींगाइ गया ते वखते हरिए विचार कर्यो के—" जेने राज्य लेवानी इच्छा होय, ते आटलु बधु बळ छतां आटलो विलब करे ज नहीं " एम विचारी राज्यना अपहारनी चिंता दूर करी वासुदेव पोताने घेर गया

एकदा समुद्रविजये श्रीकृष्णने कह्यु के—" सर्व कुमारो पोतपोतानी स्त्रीओ साथे क्रीडा करे छे, पण नेमिकुमार तो ते सर्वथी विलक्षण छे, तेथी अमने अत्यत खेद थाय छे तो हे वत्स! कोइपण उपायथी आ नेमिकुमार विवाह करे एवु कर." आवु समुद्रविजयनु वचन अगीकार करी श्रीकृष्णे कामदेवना दिव्य शस्त्ररूप सत्यभामा अने रुक्मिणी विगेरे

पोतानी प्रियाओने ते कार्य माटे आज्ञा करी. ते वखते विश्वना जनोने उत्सवना कारणरूप वसंतोत्सव पण प्रवर्तती हतो, तेथी सत्यभामा विगेरे स्त्रीओ उद्यानमां क्रीडा करवा गइ, तेमनी साथे विष्णुना आग्रहथी श्रीनेमिनाथ पण कामविकार रहित ज ते स्त्रीओनी साथे ऋतुने उचित एवी क्रीडावडे रमवा लाग्या. वसंतऋतु वीत्या पछी ग्रीष्मऋतु आव्यो त्यारे पण वासुदेवना आग्रहथी भगवान तेनी प्रियाओनी साथे क्रीडापर्वत उपर क्रीडा करवा लाग्या. त्यां विश्वना अलंकाररूप निर्विकार जगद्गुरु श्रीनेमिनाथ कृष्णना आग्रहथी जळक्रीडादिक क्रीडा करवा लाग्या. पछी एकदा वासुदेवनी प्रियाए अवसर जोइ प्रीति, नम्रता अने हास्य सहित नेमिकुमारने कह्युं के—" हे दियर ! तमारुं रूप इंद्रथी पण अधिक छे, तमारुं शरीर सदा आरोग्य अने सौभाग्यादिक गुणे करीने युक्त छे, अने आ तमारी युवावस्था इंद्राणीने पण कामातुर बनावे तेवी छे, तो योग्य कन्याने परणीने ते सर्व सफळ करो. आ तमारुं रूपादिक सर्व भोग विना अवकेशि वृक्षनी जेम निष्फळ छे. केमके स्त्री विना भोग शा कामना ? स्त्री ज भोगनुं स्थान छे, स्त्री विना स्नानादिक शरीरनी शुश्रूषा थती नथी, स्त्री रहित एवा पुरुषने निर्धननी जेम मनवांछित भोजन क्यांथी मळे ? जेम खाण विना रत्न न होय तेम स्त्री विना पुत्र पण होता नथी. भिक्षुकना धननी जेम स्त्री रहितना अन्नने अतिथि पण खातो नथी. युवति विना युवाननी रात्रि पण शी रीते जाय ? जुओ, चक्रवाकनी रात्रि चक्रवाकी विना वर्ष जेवडी थाय छे. योग्य स्त्रीना संयोग विना कोइपण पुरुष शोभतो नथी. जुओ, रात्रि विनाना चंद्रने कांति क्यांथी होय ? तेथी हे गुणसागर ! कोइपण कन्यानुं पाणिग्रहण करी दशार्हादिक सर्व यादवोनुं मनवांछित पूर्ण करो. जन्मथी ज आरंभीने स्वच्छंदपणे फरनारा सांढ जेम गाडीनी धुंसरी वहन न करी

शके तेम ज मथी आरभीने स्वेच्छाए फरनारा तमे पण वधूनो निर्वाह करी शको तेम नहीं होय, तेथी ज विवाहने अगीकार करता नथी एम हु धारु छु. जो ए ज कारण होय तो ते पण अयुक्त छे केमके तमारा भाइ वासुदेव जेम अमारो (१६ हजारनो) निर्वाह करे छे, तेम तेनो पण निर्वाह करशे समस्त पृथ्वीनो भार धारण करनार शेषनागने काइ लतानो भार वधी जतो नथी वळी निर्वाणनी प्राप्ति नहीं थवाना भयथी जो भोगनो त्याग करता हो, तो ते पण खोटु छे. केमके ऋषभादिक जिनेश्वरो भोग भोगवीने पण सिद्ध थया छे धृष्टपणाथी मुगा थयेला तमे जवाब आपो के न आपो, परतु विवाह अगीकार कर्या विना अमाराथी तमे छुटी शकशो नहीं ”

आ प्रमाणे ते कृष्णनी प्रियाओ प्रार्थना करती हती, ते वखते बळराम अने कृष्ण विगेरेए आवीने ते ज प्रमाणे प्रार्थना करी. बधुओए मनोहर वचनो वडे अत्यत आग्रह कर्यो, त्यारे भाविभावने विचारता स्वामीए विवाहनी समति आपी तथी हर्ष पामता वासुदेवे समुद्रविजय पासे जइ ते वृत्तांत कह्यो, एटले ते पण अत्यत हर्षित थया, अने तेणे कृष्णने कह्यु के—“ हे महा बुद्धिमान ! तु ज नेमिकुमार माटे योग्य कन्यानी शोध कर ” त्यारे वासुदेव पोते योग्य कन्यानी शोध करवा लाग्या, तटलामां सत्यभामाए तेने कह्यु के—“ हे प्रिय ! कमळना सरखा नेत्रवाळी मारी बेन राजीमती ज नेमिकुमारने योग्य छे ’ ते सांभळी श्रीकृष्ण हर्ष पामी पोते ज उग्रसेन राजाने घेर गया वासुदेवने पोताने घेर आवेला जोइ उग्रसेन हर्ष पामी, उभा थइ, आसन आपी हाथ जोडीने बोल्या के—“ आजे स्वामीए नाते अहीं आववानो प्रयास शा माटे कर्यो ’ पोताना सेवकने मोकली मने ज केम न बोलाव्यो ? आ मारु घर, धन, शरीर अने पुत्री विगेरे सर्व आपनु ज

छे एम आप जाणजो. हे स्वामी ! आपनी जे इच्छा होय ते कहो. " कृष्णे कह्युं के—" हे राजा ! मारा भाइ नेमीकुमारने आ तमारी राजीमती पुत्री आपो." आ प्रमाणे हरिए राजीमतीनी याचना करी ते जाणी पोताने धन्य मानता उग्रसेन राजाए जे कह्युं, ते सुत्रकार ज कहे छे —

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढिअं । इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं दलामहं ॥ ८ ॥

अर्थ—(अह) याचना कर्या पछी (तीसे) ते राजीमतीना (जणओ) पिताए (महिड्ढिअं) मोटी ऋद्धिवाळा (वासुदेवं) वासुदेवने (आह) कह्युं के-(कुमारो) नेमिकुमार (इह आगच्छउ) अहीं आवे, (जा) जेथी (से) तेने (अहं) हुं (कन्नं) मारी कन्या (दलामि) आपुं. ८.

आ प्रमाणे उग्रसेन राजाए कह्युं, एटले बन्ने कुळमां वधांपन थयां, अने जोशीए बतावेलुं विवाहनुं लग्न नजीक आव्युं, ते वखते जे थयुं, ते कहे छे.—

सव्वोसहिहिं ण्हविओ, कयकोउअमंगलो । दिव्वजुअलपरिहिओ, भूसणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥

अर्थ—(सव्वोसहिहिं) सर्व औषधिओए करीने (ण्हविओ) नेमिकुमारने स्नान कराव्युं–अभिषेक कर्यो तथा (कयकोउअमंगलो) कौतुक अने मंगळ करवामां आव्युं तथा (दिव्वजुअलपरिहिओ) मनोहर बे देवदूष्य वस्त्र धारण कराव्या, तथा (भूसणेहिं) आभूषणो वडे (विभूसिओ) विभूषित कर्यो. ९. पछी.

मत्तं च गंधहत्थिं, वासुदेवस्स जिट्ठगं । आरूढो सोहई अहिअं, सिरे चूडामणी जहा ॥ १० ॥

अर्थ—(वासुदेवस्स) वासुदेवना (जिट्ठग) अत्यंत प्रशस्त (मत्त च) अने मदोन्मत्त एवा (गंधहत्थिं) गंधहस्ती उपर (आरूढो) आरूढ थयेला ते नेमिकुमार (सिरे) मस्तकपर (चूडामणी) चूडामणि–मुकुट(जहा) जेम शोभे तेम (अहिअं) अधिक (सोहई) शोभवा लाग्या १०

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि अ सोहिओ । दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (ऊसिएण) माथे धारण करेला (छत्तेण) छत्रवडे (चामराहि अ) तथा वींझाता एवा चामरो वडे (सोहिओ) शोभता (य) तथा (दसारचक्केण) समुद्रविजयादिक दश दशार्होना समूहोवडे (सो) ते नेमिकुमार (सव्वओ) चोतरफथी (परिवारिओ) परिवरेला ११

चउरंगिणीए सेणाए, रइआए जहक्कमं । तुडिआण संनिनाएण, दिव्वेण गयणंफुसे ॥ १२ ॥

अर्थ—(जहक्कमं) अनुक्रमे (रइआए) गोठवेली (चउरंगिणीए) चतुरंगी (सेणाए) सेनावडे, तथा (दिव्वेण) दिव्य अने (गयणंफुसे) आकाशने स्पर्श करता एवा (तुडिआण) वाजिंत्रोना (संनिनाएण) गाढ शब्दवडे जवाता–

एआरिसीए इड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाए अ । निअगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥

अर्थ—तथा (एआरिसीए) आवा प्रकारनी उपर कही तेवी (इड्ढीए) समृद्धिए करीने (अ) तथा (उत्तमाए) उत्तम एवी

(जुत्तीए) दीप्तिवडे करीने शोभता एवा (वण्हिपुंगवो) यादवोने विषे श्रेष्ठ एवा नेमिकुमार (निअगाओ) पोताना (भवणाओ) घरथकी (निज्ञाओ) नीकल्या अने मंडपना समीप देशमां आव्या. १३.

ते वखते पोताना घरनी बारीमां बेठेली राजीमती कन्या नेमिकुमारने आवता जोइ वचनथी न कही शकाय तेवा आनंदने पामी आ प्रमाणे विचारवा लागी के—" शुं आ ते अश्विनीकुमार छे ? के सूर्य छे ? के कामदेव छे ? के इंद्र छे ? के मनुष्यना देहनो आश्रय करीने आवेलो मारा ज पुण्यनो समूह छे ? जे बुद्धिमान विधाताए आ मारा पतिने बनाव्या छे, ते महात्मानो हुं शो प्रत्युपकार करी शकीश ?" आ रीते विचारतां तेणीने श्रीनेमिना दर्शनथी उत्पन्न थयेला हर्षवडे " हुं कोण छुं ? आ शुं थाय छे ? आ कयो समय छे ? अने हुं कयां रहेली छुं ? " इत्यादिक कांइपण खबर रही नहीं. तेटलामां राजीमतीनुं जमणुं नेत्र फरक्युं, तेथी मनमां उद्वेग पामी तेणीए तरत ज ते वात पोतानी सखीओने कही. त्यारे सखीओ बोली के—" हे मोटा आशयवाळी ! तारुं पाप हणाइ जाओ. आटली पृथ्वी सुधी आवेला आ नेमिकुमार हवे पाछा नहीं वळे. " राजीमती अधीरी थइने बोली के—" हुं मारा भाग्यपरथी जाणुं छुं के—आ मारा नाथ अहीं सुधी आव्या छे, तोपण ते पाछा ज जशे अने मारुं पाणिग्रहण करशे नहीं. "

आ अवसरे जे थयुं ते सूत्रकार ज बतावे छे.—

अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयहुए । वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥

अर्थ—(अह) हवे (सो) ते अरिष्टनेमि (तत्थ) त्यां एटले मंडपनी समीपे (निज्जंतो) गया सता (वाडेहिं)

वाडाओवडे (पजरेहिं च) अने पांजराओवडे एटले वाडाओमां अने पांजराओमां (सन्निरुद्धे) रुंधेला एटले पूरेला, एज कारणथी (सुदुक्खिए) अत्यंत दुःखी थतां अने (भयदुए) भयथी त्रास पामेला एवा (पाणे) प्राणीओने (दिस्स) जोइने १४

जीविअंत तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खिअव्वए । पासित्ता से महापण्णे, सारहिं पडिपुच्छइ ॥ १५ ॥

अर्थ—(जीविअंत तु) जीवितना अंतने एटले मरण अवस्थाने (संपत्ते) पामेला, तथा (मंसट्ठा) मांसने माटे एटले प्राणीओने खावाथी खानारना शरीरमां मांसनी पुष्टी थाय छे एटला माटे (भक्खिअव्वए) अविवेकी जनोए भक्षण करवा लायक एवा ते प्राणीओने (पासित्ता) जोइने एटले हृदयमां धारण करीने (महापण्णे से) महा बुद्धिमान एटले अवधिज्ञानवाळा ते भगवान (सारहिं) सारथिने एटले महावतने (पडिपुच्छइ) पूछता हवा १५

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धे अ अच्छहिं ॥ १६ ॥

अर्थ—(कस्स अट्ठा) शाने अर्थे एटले शा कारणथी (एए सव्वे) आ सर्वे (सुहेसिणो) सुखना अभिलाषी- सुखने इच्छनारा (इमे पाणा) आ प्राणीओ (वाडेहिं) वाडाओवडे (पजरेहिं च) अने पांजराओवडे (सन्निरुद्धे अ) रुंध्या सता (अच्छहिं) रहेला छे ? १६.

आ प्रमाणे भगवाने पूछयु त्यारे—

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो । तुब्भं विवाहकज्जम्मि, भुंजावेउं बहुं जणं ॥१७॥

अर्थ—(अह) हवे (तओ) त्यारपछी (सारही) सारथिए (भणइ) कह्युं के (एए) आ (भद्दा उ) उत्तम जातिना ज (पाणिणो) प्राणीओने (तुब्भं) तमारा (विवाहकज्जम्मि) विवाहना कार्यमां (बहुं जणं) घणा जनोने एटले यादवोने (भुंजावेउं) खवराववा माटे रुंध्या छे. १७.

आ प्रमाणे सारथिए कह्युं, त्यारे प्रभुए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणविणासणं । चिंतेइ से महापण्णे, साणुक्कोसे जिएहि उ ॥ १८॥

अर्थ—(बहुपाणविणासणं) घणा प्राणीओने विनाश करनारुं (तस्स) ते सारथिनुं (वयणं) वचन (सोऊण) सांभळीने (महापण्णे) महा बुद्धिमान अने (जिएहि उ) जीवोने विषे (साणुक्कोसे) करुणावाळा (से) ते भगवान (चिंतेइ) विचार करवा लाग्या. अथवा (जिए हिओ) एवो पाठ राखी जीवने विषे हितकारक एवा प्रभु विचारवा लाग्या एम अर्थ करवो. १८.

जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिआ । न मे एअं तु निस्सेसं, परलोए भविस्सइ ॥१९॥

अर्थ—(जइ) जो (मज्झ) मारा (कारणा) कारणथी (एए) आ (सुबहू) घणा (जिआ) जीवो (हम्मंति) हणाशे, तो (एअं तु) आ जीवहिंसा (मे) मने (परलोए) परलोकमां (निस्सेसं) कल्याणकारक (न भविस्सइ) नहीं थाय.

पूर्वभवोमां परलोक भीरुपणानो घणो अभ्यास होवाथी अहीं आ प्रमाणे—' मने परलोकमां कल्याणकारक नहीं थाय ' एम कह्यु छे अन्यथा भगवान चरम देहधारी अने अतिशय ज्ञानवाळा होवाथी आवो विचार थाय ज नहीं १९.

त्यारपछी जिनेश्वरनो अभिप्राय जाणीने सारथिए ते सर्वे जीवोने पांजरामांथी अने वाडाओमांथी छोडाव्या, ते वखते प्रभुए हर्ष पामीने ज कर्युं ते कहे छे —

सो कुडलाण जुअॅल, सुत्तंग च महायसो । आहरणाणि अ सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥

अर्थ—(महायसो) मोटा यशवाळा (सो) ते प्रभुए (कुडलाण) कुडळनु (जुअल) युगल—बे कुडळो (सुत्तग च) तथा कटिसूत्र—कदोरो (अ) तथा (सव्वाणि) सर्वे बीजा अगोपांगनां (आहरणाणि) आभूषणो (सारहिस्स) सारथिने (पणामए) आप्यां—प्रीतिदान कर्यां २०

त्यारपछी करुणारसना समुद्ररूप अने समग्र जीवोना हितकारक प्रभु वक्र ग्रहनी जेम तत्काळ त्यांथी पाछा वळ्या ते वखते शिवाराणी अने समुद्रविजय राजा प्रभुनी पासे आवी मेघनी जेम नेत्रमांथी अश्रुनी धाराने मूकता सता बोल्या के —" हे वत्स ! अगीकार करेला विवाहनो त्याग करवाथी अमारा हर्षरूपी वृक्षने तु केम मूळथी उखेडी नाखे छे ? अने आ कृष्णादिक यादवोने केम खेद पमाडे छे ? आ कृष्णे तारे माटे उग्रसेन राजा पासे जाते जइने तेनी पुत्री मागी लीधी छे, ते हवे शी रीते तेने पोतानु मुख देखाडी शकशे ? जीवतां मरेला जेवी राजीमती कन्यानु पण हवे शु थशे ? चद्र विना

२१

रात्रिनी जेम पति विना स्त्री शोभती नथी. तेथी तुं विवाह करीने अमने वहुनुं मुख देखाड, अने अमारी आ प्रथम प्रार्थना सफळ कर. " ते सांभळी भगवान् बोल्या के—" हे पूज्यो ! आवो आग्रह तमे मुकी द्यो. प्रियजनने हितकार्यमां ज प्रेरणा करवी योग्य छे. जे स्त्रीनुं पाणिपीडन ज प्राणीपीडनरूप छे, अने जेनामां आसक्त थयेला प्राणी तत्काळ दुर्गतिने पामे छे, तेवी स्त्रीओनो संग मारी जेवा मुमुक्षुने योग्य नथी. कारण के पंडित पुरुषो परलोकना हितने माटे ज यत्न करे छे, परंतु मात्र प्रारंभमां ज सुंदर अने परिणामे दारुण एवा कार्यने माटे यत्न करता नथी. " आ प्रमाणे भगवान् कहेता हता, ते ज वखते आसन कंपवाथी योग्य अवसर जाणीने लोकांतिक देवोए त्यां आवी भगवानने 'तीर्थ प्रवर्तावो' एम कह्युं. तथा ते देवोए समुद्रविजय विगेरे सर्वेने कह्युं के—" तमे सर्वे पुण्यवंतो आवा हर्षने स्थाने खेद केम करो छो ? आ भगवान् दीक्षा ग्रहण करी केवळज्ञान पामी चिरकाळ सुधी तीर्थने प्रवर्तावी त्रण जगतने आनंद आपवाना छे." आ प्रमाणे देवोनुं वचन सांभळी सर्व खुशी थया. पछी घेर जइ भगवान सांवत्सरिक दान देवा लाग्या.

अहीं श्रीनेमिकुमारने पाछा वळेला जोइ राजीमती अत्यंत शोकातुर थइ मूर्च्छा पामीने पृथ्वीपर पडी गइ. तेने तेनी सखीओए शीतळ उपचार करी चेतना पमाडी, त्यारे ते जाणे दुःखना उद्‌गार काढती होय तेम विलाप करवा लागी के—" हे नाथ ! कांइपण दोष विना अकस्मात् आपने विषे रक्त एवी जे हुं तेनो त्याग करी तमे क्यां गया ? तमारी जेवाने भक्तजननी उपेक्षा करवी योग्य नथी. महापुरुषो पोतानो आश्रित जन सदोष होय तोपण तेने तजता नथी. चंद्र कदापि कलंकने तजतो नथी, अने समुद्र वडवानळने तजतो नथी. एम छतां पण हे प्रभु ' जो तमारे मने तजवी हती,

तो विवाहनो स्वीकार करी मारी विडम्बना शामाटे करी ? अथवा तो मारो ज दोष छे के जेथी दुर्लभ एवा पण तमारे विषे में राग कर्यो कागडी हसने विषे जे राग करे तेमां कागडीनो ज दोष छे हे नाथ ! तमे मारो स्वीकार करीने मने मूकी दीधी, तेथी मारु रूप, कळाकुशळता, लावण्य, यौवन अने कुळ विगेरे सर्व निष्फळ थयु हे कांत ! तमारा वियोगनी व्यथाथी जाणे मारा प्राण नीकळी जता होय, जाणे मारु हृदय फाटी जतु होय अने जाणे मारु शरीर बळी जतु होय एवी हु थइ छु हे स्वामी ! तम जे प्रकारे पशुओने विषे दयाळु थया, ते ज रीते मारापर दयाळु थाओ तमारी जेवा महात्माने पक्तिभेद करवो योग्य नथी हे प्रभु ! तमारे विषे रागी थयेली मने एक ज वार दृष्टिवडे अने वाणीवडे प्रसन्न करो स्वाद कर्या विना मीठा के कडवा फळने कोण जाणी शके ? अथवा तो सिद्धिरूपी वहुने वरवा उत्सुक थयेला तमारा मनने इन्द्राणी पण हरण करी शकती नथी, तो हु मनुष्यरूपी कीटिका तो कइ गणतरीमां होउ ? "

आ प्रमाणे विलाप करती राजीमतीने सखीओए कह्यु के—" हे सखी ! रोहश नही ते नीरस अने महा कठोर छे, तेने जवा दे बीजा घणा यदुकुमारो मनोहर रूपवाळा छे, तेमांथी कोइ योग्यने वरजे. " ते सांभळी पोताना कान बे हाथ वडे ढांकी दइने राजीमती बोली के—" हे सखीओ ! तमे सामान्य जनने उचित एवु पण उत्तमने अनुचित एवु वचन केम बोलो छो ? जो कदाच रात्रिए सूर्यनो उदय थाय, के अग्नि शीतळ थाय, तोपण श्रीनेमिने मूकीने बीजा वरने हु नहीं वरु जो विवाहने विषे मारा हाथपर नेमिनो हाथ नथी थयो तो दीक्षा ग्रहण करती वखते मारा मस्तकपर तेनो हाथ थशे " ते सांभळी सखीओ बोली के—" हे शुभ आशयवाळी ! तारो आ विचार अति उत्तम छे " पछी ते सती

बोली के--" हे सखीओ ! आजे मने स्वप्न आव्युं हतुं. तेमां कोइ पुरुष ऐरावण हाथीपर चडीने मारे घेर आव्यो, अने तत्काळ पाछो फरी मेरुपर्वतपर चडी गयो. त्यां रहीने ते लोकोने चार अमृतफळ देवा लाग्यो. तेनी पासे में पण फळनी याचना करी त्यारे मने पण ते फळ आप्यां." ते सांभळी सखीओए कह्युं.--" हे सखी ! तुं खेद न कर. हे पाप रहित ! तारा विघ्नो नाश पाम्या. आ स्वप्न जो के प्रारंभमां कडुक लागे छे, परंतु तेनुं परिणाम अति शुभ छे." त्यारपछी राजीमती एक नेमिनाथनुं ज ध्यान करती घरमां रही. प्रभु पण व्रत लेवा तैयार थया.

पछी जे प्रकारे प्रभुए दीक्षा ग्रहण करी, ते सूत्रकार ज कहे छे.--

मणपरिणामो अ कओ. देवा य जहोइअं समोइण्णा। सव्विड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ।२१।

अर्थ--(मणपरिणामो अ) श्री अरिष्टनेमिए व्रत लेवा माटे मननो परिणाम (कओ) कर्यो. एटले (देवा य) चार निकायना देवो (जहोइअं) उचितता प्रमाणे (सव्विड्ढीए) सर्व ऋद्धि सहित तथा (सपरिसा) पोतपोताना परिवार सहित (तस्स) ते नेमिनाथनो (निक्खमणं) दीक्षानो उत्सव (काउं जे) करवा माटे (समोइण्णा) स्वर्गथी उतर्या. २१.

देवमणुस्सपरिवुडो, सीआरयणं तओ समारूढो। निक्खमिअ वारयाओ, रेवययम्मि ठिओ भयवं॥

अर्थ--(तओ) त्यारपछी (देवमणुस्सपरिवुडो) देवो अने मनुष्योथी परिवरेला अने (सीआरयण) शिबिका

रत्नपर (समारूढो) आरूढ थयेला (भयव) भगवान (बारयाओ) द्वारका नगरीथी (निक्खमिअ) नीकळीने (रेवयम्मि) रैवतकपर्वतपर (ठिओ) रह्या-गया २२

उज्जाण सपत्तो, ओइण्णो उत्तिमाओ सीआओ। साहस्सीइ परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥

अर्थ—त्यां (उज्जाण) सहस्राम्रवन नामना उद्यानमां (सपत्तो) प्रभु प्राप्त थया त्यां (उत्तिमाओ) उत्तम (सीआओ) शिबिकाथकी (ओइण्णो) नीचे उतर्या (अह) पछी (साहस्सीइ) हजार प्रधान पुरुषोथी (परिवुडो) परिवर्या सता (चित्ताहि) चित्रा नक्षत्रमां प्रभु (निक्खमई उ) दीक्षा ग्रहण करता हवा-पंच महाव्रत उचरता हवा आ प्रभुना पांचे कल्याणको चित्रा नक्षत्रमां ज थया छे २३

अह सो सुगधगधिए, तुरिअ मउअकुचिए। सयमेव लुचई केसे, पचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (समाहिओ) सर्व सावद्य योगनो त्याग करवाथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने विषे समाधिवाळा (सो) ते प्रभुए (सुगधगधिए) स्वभावथी ज सुरभि गंधवाळा तथा (मउअकुचिए) कोमळ अने कुटिल एवा (केसे) केशोनो (पचमुट्ठीहिं) पांच मुठीवडे (सयमेव) पोते ज (तुरि अ) शीघ्र (लुचई) लोच कर्यो २४

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेस जिइदिअ। इच्छिअमणोरह तुरिअ, पावेसू त दमीसरा ॥ २५ ॥

अर्थ—(वासुदेवो) वासुदेव (य) तथा बळभद्र अने समुद्रविजय विगेरे यादवो (लुत्तकेस) जेणे केशनो लोच

कर्यो छे एवा तथा (जिइंदिअं) जेणे इंद्रियोने जीती छे एवा (णं) ते नेमिनाथने (भणइ) कहेता हवा के-(दमीसरा) हे मुनीश्वर ! (तं) तमे (इच्छिअमणोरहं) वांछित मनोरथने (तुरिअं) शीघ्रपणे (पावेसू) पामो. २५.

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तवेण य । खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि अ ॥ २६ ॥

एवं ते रामकेसवा, दसारा य बहुजणा । अरिट्ठनेमिं वंदित्ता, अइगया बारगाउरिं ॥ २७ ॥

अर्थ—वळी हे स्वामी ! (नाणेणं) ज्ञानवडे, (दंसणेणं च) दर्शनवडे, (चरित्तेण) चारित्रवडे, (तवेण य) तपवडे, (खंतीए) क्षमावडे, तथा (मुत्तीए) मुक्तिवडे एटले निर्लोभतावडे (वड्ढमाणो) वृद्धि पामनारा (भवाहि अ) तमे थाओ. २६. (एवं) ए प्रकारे कही (ते) ते (रामकेसवा) बळराम, वासुदेव, (दसारा य) दशार्हो तथा (बहुजणा) बीजा घणा जनो (अरिट्ठनेमिं) श्रीअरिष्टनेमिने (वंदित्ता) वांदीने (बारगाउरिं) द्वारका नगरीमां (अइगया) पेठा-आव्या. २७.

ते वखते प्रभुना संगमनी आशा नष्ट थवाथी राजीमती केवी थइ ? ते कहे छे.—

सोऊण रायवरकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छया ॥२८॥

अर्थ—(रायवरकन्ना) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या (सा) ते राजीमती (जिणस्स उ) जिनेश्वरनी (पव्वज्जं)

दीक्षा (मोउण) सांभळीने (नीहासा य) हास्य रहित तथा (निराणदा) आनद रहित थई सती (सोगेण उ) शोके करीने (समुच्छया) व्याप्त थई. २८

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीविअं । जा हं तेण परिच्चत्ता, सेअं पव्वइउं मम ॥ २९ ॥

अर्थ—त्यारपछी (राईमई) राजीमती (विचिंतेइ) चिंतववा लागी, के—(मम) मारा (जीविअं) जीवितने (धिरत्थु) धिक्कार हो, के (जा) जे (हं) हुं (तेण) ते नेमिनाथवडे (परिच्चत्ता) त्याग कराइ छु तेथी हवे (मम) मारे (पव्वइउ) प्रव्रज्या लेवी ते ज (सेअ) कल्याणकारक छे के जेथी अन्य जन्ममां पण आवु दुःख प्राप्त न थाय तेम ज ' सतीओ पतिने अनुसरे छे ' ए वचन पण सत्य थाय २९.

अहीं श्री अरिष्टनेमिनो भाइ रथनेमि राजीमतीने विषे आसक्त थवाथी हमेशां तेणीने फळ, पुष्प अने अलंकार विगेरे मोकलतो हतो परंतु राजीमती तो पोताना मनमां एम समजती के—" आ रथनेमि पोताना भाइना स्नेहथी आ सर्व मने मोकलाव छे " एम धारी ते सर्व अगीकार करती हती रथनेमि तो ते वस्तु ग्रहण करवाथी राजीमतीने पोतानी उपर रागवाळी ज मानतो हतो. " कामी जनोने कमळानी व्याधिवाळानी जेम सर्व विपरीत ज भासे छे " एकदा रथनेमिए राजीमतीने कह्यु के—" हे सुदर नेत्रवाळी ! तु खेद पामीश नहीं. जो कदाच राग रहित नेमीए तारो त्याग कर्यो, तेथी शु थयुं ? परंतु हवे तु मने पतिरूपे अगीकार कर, अने तारु यौवन कृतार्थ कर मालतीने भमरनी जेम हु तारी अत्यंत इच्छा करुं छु " ते सांभळी राजीमती बोली—" जो के नेमिनाथे मारो त्याग कर्यो छे. तोपण हु तेनी शिष्या

थवानी छुं, तेथी आ तमारी प्रार्थना नकामी छे." आ प्रमाणे तेणीए निषेध कर्या छतां रथनेमिए तेणीने विषे स्पृहानो त्याग कर्यो नहीं. तेथी फरीथी एकदा एकांतमां तेणे सती राजीमतीने कह्युं के—" हे मृगाक्षी ! शुष्क काष्ठमां भमरीनी जेम तुं राग रहित नेमिने विषे आसक्त थइने शामाटे फोगट तारा आत्माने संताप पमाडे छे ? जो तुं मारो स्वीकार करे तो हुं जन्म पर्यंत तारो दास थइने रहुं. माटे तुं मारी साथे भोग भोगव. भोग विना मनुष्यनो जन्म निष्फळ छे एम पंडितो कहे छे." आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी तेने बोध करवा राजीमतीए प्रथम दूधनुं पान करी पछी मदनफळ (मींढोळ) सुंघीने एक थाळमां तेनुं वमन करी तेने कह्युं के—" आ दूध तमे पीओ." रथनेमिए कह्युं—" शुं हुं श्वान छुं ? के जेथी वमननुं पान करुं ?" त्यारे हसीने राजीमतीए कह्युं—" शुं तमे एटलुं समजो छो ?" ते बोल्यो—एक बाळक पण आ वात समजी शके छे, तो हुं केम न समजुं ?" ते सांभळी राजीमती बोली के—" तो नेमिनाथे वमेली मने तमे भोगववा इच्छो छो, तेथी तमे श्वान तुल्य ज छो." आ प्रमाणे तेणीनुं वचन सांभळी रथनेमि तेणीनी इच्छानो त्याग करी पोताने घेर गया, अने ते सती पण उग्र तप करवा लागी.

आ तरफ श्रीनेमिनाथ छद्मस्थ अवस्थाए चोपन दिवस सुधी अन्य अन्य ग्रामादिकमां विचरी फरीथी रैवताचळ पर्वत पर आव्या. त्यां प्रभु अट्ठम तप करी ध्यानमां मग्न थया. ते वखते तेमने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तरत ज आसन कंपवाथी सर्व इंद्रो देवो सहित उत्सव करवा त्यां आव्या. देवोए मनोहर समवसरण रच्युं. तेने विषे चार मूर्तिवाळा[1] प्रभुए बेसी

१ एक बाजु पोते ने त्रण बाजु त्रण प्रतिबिंब देवकृत होय छे.

धर्मदेशना प्रारंभी न उतने उद्यानपालकना मुखथी प्रभुने ज्ञान उत्पन्न थयु जाणी बळभद्र, श्रीकृष्ण, राजीमती, दशार्ह विगेरे यादवो अने बीजा सर्व मनुष्यो रैवतक पर्वत पर जइ प्रभुने वांदी यथायोग्य स्थाने बेसी धर्मदेशना सांभळवा लाग्या धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामेला घणा राजाओए, अन्य जनोए अने स्त्रीओए प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने केटलाक श्रावकना व्रतो अंगीकार कर्या दीक्षा लीधेला मुनिओमांथी वरदत्त विगेरे अढार गणधरो थया तेमणे स्वामी पासेथी त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी त्यारपछी रथनेमिए पण वैराग्य पामी स्वामी पासे प्रव्रज्या लीधी, तथा राजीमतीए पण घणी कन्याओ सहित दीक्षा लीधी

ते ज वात सूत्रकार पण कहे छे —

अह सा भमरसंनिभे, कुच्चफणगपसाहिए । सयमेव लुचई केसे, धिइमंता ववस्सिआ ॥ ३० ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (धिइमंता) धैर्यवाळी अने (ववस्सिआ) चारित्रधर्म प्रत्ये उद्यमवाळी (सा) ते राजीमतीए (भमरसंनिभे) भ्रमर जेवा श्याम अने (कुच्चफणगपसाहिए) कूर्च एटले कांचकी अने फणक एटले दांतीयावडे संस्कार करेला (केसे) केशोनो (सयमेव) पोते ज (लुचई) लोच कर्यो ३०

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदिअं । संसारसायरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥ ३१ ॥

अर्थ—(वासुदेवो) वासुदेव (य) तथा बळभद्र विगेरे सर्वेए (लुत्तकेसं) जेणे केशनो लोच कर्यो छे, अने

(जिइंदियं) जेणे इंद्रियो जीती छे एवी (णं) ते राजीमतीने (भणइ) कहुं के-(कण्णे) हे कन्या ! (घोर) भयंकर एवा आ (संसारसायरं) संसारसागरने तुं (लहुं लहुं) शीघ्र शीघ्र (तर) तरी जा. ३१.

सा पव्वइआ संती, पव्वावेसी तहिं बहुं । सयणं परिअणं चेव, सीलवंता बहुस्सुआ ॥ ३२ ॥

अर्थ—(सीलवंता) शीळवती अने (बहुस्सुआ) घणा श्रुतज्ञानवाळी (सा) ते राजीमतीए (पव्वइआ संती) दीक्षा ग्रहण करी संती एटले दीक्षा लीधा पछी (तहिं) ते द्वारका नगरीमां (बहुं) घणी (सयणं) स्वजननी स्त्रीओने (परिअणं चेव) तथा परिजननी स्त्रीओने (पव्वावेसी) दीक्षा अपावी. ३२.

गिरिं च रेवयं जंती, वासेणोल्ला उ अंतरा । वासंते अंधयारम्मि, अंतो लयणस्स सा ठिआ ॥३३॥

अर्थ—एकदा प्रभुने वांदवा माटे (रेवयं) रैवतक नामना (गिरिं च) गिरि तरफ (जंती) जती (अंतरा) मार्गमां (वासंते) वरसाद वरसते सते अने (अंधयारम्मि) चोतरफ अंधकार थये सते (वासेण उल्ला) वरसादवडे आर्द्र थयेली एटले भींजायेला सर्व वस्त्रवाळी (सा) ते राजीमती (लयणस्स अंतो) एक गुफा मध्ये (ठिआ) रही. अथवा अंधकारवाळी गुफामां जइने रही. ३३.

चीवराइं विसारंती, जहाजाय त्ति पासिआ । रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो अ तीइ वि ॥३४॥

अर्थ—ते गुफामां (चीवराइं) वस्त्रोने (विसारंती) सुकववा माटे प्रसारती एवी राजीमती ते वखते (जहाजाय)

जेवी रीते जन्म पामी हती तेवी एटले वस्त्र रहित थइ (त्ति) एवा स्वरूपवाळी तेणीने (पासिआ) जोइने प्रथमथी त्यां रहेलो (रहनेमी) रथनेमि (भग्गचित्तो) भग्नचित्तवाळो एटले चारित्रथी भ्रष्ट परिणामवाळो थयो (अ) अने (पच्छा) त्यारपछी (तीइ वि) ते राजीमतीए पण (दिट्ठो) तेने जोयो प्रवेश करती वखते अंधारी जग्यामां काइ पण देखी शकातु नथी, तथी तेणीए प्रथमथी त्यां रहेला रथनेमिने जोयो नहोतो जो कदाच प्रथम प्रवेश करती वेळाए ज जोयो होत तो ज्यारे बीजी साध्वीओ जूदा जूदा स्थानमां गइ तेम ते पण बीजे जात, एकली अहीं प्रवेश करत नहीं ३४

भीआ य सा तहिं दट्ठु, एगंते संजयं तयं । बाहाहिं काउ संगोफं, वेवमाणी निसीअइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(य) तथा (सा) त राजीमती (तहिं) त्यां (एगंते) एकांतमां रहेला (तयं) ते (संजयं) रथनेमि साधुने (दट्ठु) जोइने (भीआ) भय पामी 'कदाच आ मारा शीलनो भंग करशे' एम धारी भयथी (वेवमाणी) कंपती सती (बाहाहिं) पोताना बे बाहुवडे (संगोफं) परस्पर गुंथवु–गोपववु (काउ) करीने एटले पोताना स्तनपर बे बाहु वडे परस्पर मर्कटबंध करीने (निसीअइ) तेने बळात्कारे पण आलिंगन नहीं करवा देवा माट नीचे बेसी गइ ३५

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ । भीअं पवेइअं दट्ठु, इमं वक्कमुदाहरे ॥ ३६ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (सो वि) ते पण (रायपुत्तो) राजपुत्र (समुद्दविजयंगओ) समुद्रविजयनो अंगज रथनेमि (भीअं) भय पामेली अने (पवेइअं) कंपती एवी तेणीने (दट्ठु) जोइ (इमं) आ प्रमाणे (वक्कं) वचनने

(उदाहरे) बोल्यो. ३६.

रहनेमी अहं भद्दे, सुरूवे चारुभासिणि । ममं भयाहि सुतणू, न ते पीला भविस्सइ ॥ ३७ ॥

अर्थ—(भद्दे) हे भद्रे! (सुरूवे) हे सारा रूपवाळी! (चारुभासिणि) हे मनोहर वचनवाळी! (अहं) हुं (रहनेमी) रथनेमि छुं. (सुतणू) हे सुंदर शरीरवाळी! (ममं) मने (भयाहि) भज-पतिपणे अंगीकार कर. तेम करवाथी (ते) तने (पीला) पीडा (न भविस्सइ) थशे नहीं. तुं पीडानी शंकाथी कंपे छे, पण विषयसेवा कांइ पीडाने माटे थती नथी, परंतु सुखने माटे थाय छे. ३७.

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं । भुत्तभोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

अर्थ—हे राजीमती! (एहि) आव. (ता) प्रथम आपणे (भोए) भोगोने (भुंजिमो) भोगवीए. (खु) खरेखर (माणुस्सं) मनुष्यपणुं (सुदुल्लहं) अति दुर्लभ छे. (तओ) ते कारण माटे (भुत्तभोगी) भोग भोगवीने (पच्छा) पछीथी आपणे (जिणमग्गं) जिनेश्वरना मार्गने -चारित्रने (चरिस्सिमो) आचरशुं. प्रथम भोगसुख भोगवीए अने पछी दीक्षा लइए, तो पछी भोगसुखनी इच्छा रहेती नथी. माटे हमणां प्रथम भोगसुख भोगववुं सारुं छे. ३८.

ते सांभळी राजीमतीए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोअपराइअं । राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(भग्गुज्जोअपराइय) सयमने विषे जेनो उद्यम भग्न थयो छे एवा तथा स्त्रीपरीषहथी पराजय पामेला एवा (त) ते (रहनेमि) रथनेमिने (दट्ठूण) जोइने (असभंता) " आ मारापर बळात्कार करी शकशे नहीं " एम धारी भय रहित थयेली (राईमई) राजीमती (तहिं) ते गुफामां ज (अप्पाणं) पोताना शरीरने (सवरे) ढांकती हवी एटले लुगडां पहेरी लेती हवी ३९

अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिआ निअमव्वए । जाइं कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए ॥ ४० ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (निअमव्वए) शौच, संतोष, स्वाध्याय अने तपरूपी नियमने विषे तथा पंच महाव्रतने विषे (सुट्ठिआ) स्थिर रहेली (सा) ते (रायवरकन्ना) राजानी श्रेष्ठ कन्या–राजीमती (जाइं) जाति एटले माताना वंशने, (कुलं च) कुळ एटले पिताना वंशने (सीलं च) तथा शीळने (रक्खमाणी) रक्षण करती सती (तयं) ते वखते (वए) आ प्रमाणे बोली ४०

जइसि रूवेण वेसमणो, ललिएण नलकूबरो । तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (जइ) जो तुं (रूवेण) रूपे करीने (वेसमणो) वैश्रमण–कुबेर जेवो (सि) होय, अथवा जो तुं (ललिएण) विलासवाळी चेष्टाए करीने (नलकूबरो) नळकूबर देव जेवो होय, अथवा (जइ) जो तुं (सक्खं) साक्षात् (पुरंदरो) इंद्र जेवो (सि) होय, (तहा वि) तो पण हुं (ते) तने (न इच्छामि) इच्छती नथी. ४१

पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं। नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ४२ ॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (अगंधणे) अगंधन नामना (कुले) कुळमां (जाया) उत्पन्न थयेला सर्पो (जलिअं) जाज्वल्यमान अने (दुरासयं) दुःसह एवी (धूमकेउं) अग्निनी (जोइं) ज्वाळाने विषे (पक्खदे) प्रवेश करे छे, परंतु (वंतयं) वमेलुं विष (भोत्तुं) खावाने–पाछुं चूसी लेवाने (न इच्छंति) इच्छता नथी. ४२.

धीरत्थु तेजसो कामी, जो तं जीविअकारणा । वंतं इच्छसि आवेउं, सेअं ते मरणं भवे ॥४३॥

अर्थ—(कामी) हे कामांध ! (ते जसो) तारा यशने (धीरत्थु) धिकार हो. अथवा (अजसोकामी) हे अपयशनी इच्छावाळा ! (ते) तने धिकार छे, के (जो) जे (तं) तुं (जीविअकारणा) असंयमरूप जीवितने कारणे (वंतं) वमेलाने (आवेउं) फरीथी पीवाने (इच्छसि) इच्छे छे. जे भोगने तजी दीक्षा ग्रहण करी, ते ज भोगने फरी भोगववा इच्छे छे. तेथी करीने (ते) तारुं (मरणं) पंडित मरण (सेअं) श्रेयस्कर (भवे) छे. अर्थात् असंयम जीविते जीववा करतां पंडितमरणे मरवुं सारुं छे, परंतु वमेला भोगोने फरीथी भोगववानी इच्छा करवी सारी नथी. निंद्य वस्तुने जाणी तेनो त्याग कर्यो होय, तो तेने पंडितो फरीथी ग्रहण करता नथी. ४५.

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो । मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४५॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (अहं च) हुं (भोगरायस्स) भोगराजनी एटले उग्रसेन राजानी पुत्री छुं, (तं च) अने तुं

(अधगवणिहयो) अघकवृष्णिना कुळमां (सि) उत्पन्न थयेलो छे, तेथी आपणा (कुले) कुळमां आपणे (गधणा) गधन जातिना सर्पतुल्य (मा होमो) न थइए गधन जातिना सर्पो वमेला विषने मनथी आकर्षण कराय त्यारे अग्निपातना भयथी पाछु चूसी ले छे, परतु अगधन जातिना सर्प तो अग्निमां प्रवेश करे छे पण वमेलु विष पाछु चूसी लेता नथी तेथी करीने (निहुओ) व्रतमां स्थिर थइने तु (सजम) सयमनु (चर) आचरण कर—सेवन कर ४४

जंइ त कांहिसि भांव, जा जा दिच्छसि नारीओ । वांयाविद्धु व्वं हडो, अंट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४५॥

अर्थ—हे साधु ! (जा जा) जे जे (नारीओ) स्त्रीओने (दिच्छसि) तु जोइश अने जोइने तेने विषे (जइ) जो (त) तु (भाव) अभिलाषाने (काहिसि) करीश, तो (वायाविद्धो) वायुथी प्रेरायेली (हडो) हड नामनी वनस्पति एटले शेवाळनी (व्व) जेम तु (अट्ठिअप्पा) अस्थिर चित्तवाळो (भविस्ससि) थइ जइश ४५

गोवालो भडंवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो । एवं अणिस्सरो त पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४६॥

अर्थ—(जहा) जेम (गोवालो) गोवाळ-पारकी गायोने पगार लइने चारनार (वा) अथवा (भडवालो) पगार लइने कोइना करीयाणानु रक्षण करनार (तद्दव्वणिस्सरो) ते द्रव्य एटले गाय अथवा करीयाणानो अनीश्वर छे-स्वामी नथी (एव) ए ज प्रमाणे (त पि) तु पण (सामण्णस्स) चारित्रनो (अणिस्सरो) अनीश्वर (भविस्ससि) थइश गोवाळ के भांडपालक जेम गायनो के भांडनो स्वामी नहीं होवाथी तेना फळने भोगवनार थतो नथी, तेम तु पण चारि

अने वेषमात्र धारण करवाथी-द्रव्यधर्मनो ज पाळक होवाथी मात्र उदरपूर्तिना फळने ज भोगवनार थइश, परंतु भावधर्मनुं फळ जे मोक्ष तेनो भोक्ता थइश नहीं. ४६.

आ प्रमाणे राजीमतीए कह्युं, त्यारे रथनेमिए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासिअं । अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (अंकुसेण) अंकुशवडे (नागो) हाथी मार्गमां आवे छे, तेम (तीसे) ते (संजयाइ) राजीमती साध्वीनुं (सुभासिअं) सुभाषित (वयणं) वचन (सोच्चा) सांभळीने (सो) ते रथनेमि (धम्मे) धर्ममार्गमां (संपडिवाइओ) स्थिर थयो. ४७.

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ । सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ॥ ४८ ॥

अर्थ—(मणगुत्तो) मनवडे गुप्त एटले मनगुप्तिवाळो, (वयगुत्तो) वचनवडे गुप्त एटले वचनगुप्तिवाळो, (कायगुत्तो) कायावडे गुप्त एटले कायगुप्तिवाळो तथा (जिइंदिओ) जितेंद्रिय अने (दढव्वओ) व्रतने विषे दृढ थइने (जावज्जीवं) जीवित पर्यंत (निच्चलं) निश्चळ एवा (सामण्णं) चारित्रने (फासे) पाळवा लाग्यो. ४८.

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली । सव्वं कम्मं खवित्ता णं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४९॥

अर्थ—(उग्गं) उग्र (तवं) तप (चरित्ताणं) करीने (दुण्णि वि) राजीमती अने रथनेमि ए बन्ने (केवली) केवळज्ञानी (जाया) थया अने अनुक्रमे (सव्वं) सर्व (कम्मं) कर्मने (खवित्ता णं) खपावीने (अणुत्तरं) सर्वो-

त्तम एवा (सिद्धि) सिद्धिस्थानने (पत्ता) पाम्या ४९

एवं करिंति संबुद्धा, पंडिआ पविअक्खणा। विणिअट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमु त्ति बेमि ॥५०॥

अर्थ—(संबुद्धा) सम्यक् प्रकारे बोधवाळा, (पंडिया) तत्त्वबुद्धिवाळा अने (पविअक्खणा) विवेकी एवा पुरुषो (एव) आ प्रमाणे (करिंति) करे छे, तथा (से) ते (पुरिसुत्तमो) पुरुषोमां उत्तम एवा रथनेमिनी (जहा) जेम (भोगेसु) भोग थकी (विणिअट्टंति) पाछा फरे छे (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हु कहु छु, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्यु ५०

अहीं भगवान नेमिनाथ पण पृथ्वीतळपर विहार करता सता जेम कमळोने सूर्य विकस्वर करे तेम भव्य प्राणीओने प्रतिबोध करता हता ते दश धनुष उंचा हता, तेने शंखनु चिन्ह (लंछन) हतु, मेघ जेवा श्याम हता, दश प्रकारना धर्मनो उपदेश आपी दश दिशाओने पवित्र करता हता तेना परिवारमां अढार हजार साधु, चाळीश हजार साध्वीओ, एक लाख ने ओगणोतेर हजार श्रावको तथा त्रण लाख छत्रीश हजार श्राविकाओ हती. ते प्रभु केवळज्ञान थया पछी चोपन दिवस ओछा एवा सातसो वर्ष सुधी पृथ्वीपर विचर्या छेवट उज्जयंत गिरि उपर पांचसो छत्रीश साधुओ सहित अनशन ग्रहण कर्युं. कुल एक हजार वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी ते साधुओ सहित एक मासे अरिष्टनेमि प्रभु निर्वाणपदने पाम्या. ते वखते समग्र परिवार सहित देवेंद्रोए आवी तेमनो निर्वाण उत्सव कर्यो इति श्रीअरिष्टनेमिजिन चरितम्

॥ इति द्वाविंशमध्ययनम् ॥ २२

अथ केशिगौतमीय नामनुं त्रेवीशमुं अध्ययन. २३

कोइक प्रकारे चारित्रनी शिथिळता थाय तो रथनेमिनी जेम धर्ममां ज धृति करवी, एम बावीशमा अध्ययनमां कह्युं. हवे बीजाना मननी शंका पण केशी अने गौतमनी जेम दूर करवी एम आ अध्ययनमां कहेवाशे. ते विषेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

जिणे पासि त्ति नामेणं, अरहा लोगपूइए । संबुद्धप्पा य सव्वण्णू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥

अर्थ—(जिणे) रागद्वेषने जीतनार (पासि त्ति) पार्श्व एवा (नामेणं) नामना (अरहा) पूजाने लायक तीर्थंकर, ए ज कारण माटे (लोगपूइए) लोकोए पूजेला तथा (संबुद्धप्पा य) तत्त्वना ज्ञानवाळा, तथा (सव्वण्णू) सर्वज्ञ, तथा (धम्मतित्थयरे) धर्मतीर्थने करनारा तथा (जिणे) सर्व कर्मने जीतनारा हता. १.

अहीं प्रसंगे प्राप्त थयेलुं श्रीपार्श्वनाथनुं संक्षिप्त चरित्र कहे छे.

आ ज भरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामनुं नगर छे. तेमां अरविंद नामे राजा हतो. तेने सकल शास्त्रनो पारगामी अने जिनधर्ममां तत्पर विश्वभूति नामे पुरोहित हतो, तेने अनुद्धरा नामनी भार्या हती. ते पुरोहितने कमठ अने मरुभूति नामना बे पुत्रो हता. ते बन्नेने अनुक्रमे वरुणा अने वसुंधरा नामनी भार्याओ हती. एकदा विश्वभूति पुरोहित बन्ने पुत्रो उपर घरनो भार स्थापन करी अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गयो. तेनी भार्या अनुद्धरा पण पतिना वियोगथी शोक अने तपवडे शरीरनुं शोषण करी मृत्यु पामी. बन्ने भाइओए मातापितानी उत्तरक्रिया करी. पछी राजाए मोटा पुत्र कमठने पुरोहित

पदे स्थापन कर्यो मरुभूति व्रत लेवानी इच्छाथी विषयोथी विमुख थइ अत्यंत धर्मकर्ममां तत्पर थयो

एकदा नवा यौवनवाळी अने मनोहर आकृतिवाळी नानाभाइनी प्रिया वसुधराने जोइ कमठ तेणीनापर आसक्त थयो तेथी स्वभावथी ज परस्त्रीमां लपट एवो ते कमठ कामदेवरूपी वृक्षना दोहद समान मधुर वचनोवडे तेणीनी साथे वातो करवा लाग्यो एकदा तेणे तेणीने कह्यु के—" हे मुग्धा ! भोग विना फोगट आ युवावस्थाने केम गुमावे छे ? जो मारो नानो भाइ सत्त्व रहित होवाथी तने सेवतो नथी, तो हे मनोहर ! मारी साथे क्रीडा कर " एम कही पोताना उत्संगमां तेणीने आदरपूर्वक बेसाडी, एटले प्रथमथी ज भोगने इच्छती वसुधराए तेनु वचन अंगीकार कर्युं पछी ते बन्ने विवेक, मर्यादा अने लज्जानो त्याग करी एकांतमा पशुक्रिया सेववा लाग्या केटलेक काळे कमठनी स्त्री वरुणाए तेमनो आ अनाचार जाणी इर्ष्याने लीधे ते सर्व वृत्तांत मरुभूतिने कह्यो. ते सांभळी " असंभवित वातने प्रत्यक्ष जोया विना सत्य केम मानवी ? " एम मनमा विचार करतो मरुभूति कमठ पासे जइ बोल्यो के—" हे भाइ ! हु कांइ कार्यने माटे परगाम जाउ छु " एम कही गाम बहार जइ भिक्षुकनो वेष लइ रात्रिए घेर आवी स्वर फेरवीने कमठने कह्यु के—" हु दूर देशथी आवु छु, मने रात्रिवासो रहेवा माटे कांइक स्थान आपो " ते सांभळी परमार्थने नहीं जाणता कमठे तने पोताना घरनी पासेना एक ओरडामां रहेवानु कह्यु, एटले ते बन्ने कामांधनी दुष्ट चेष्टा जोवानी इच्छाथी ते तेमां खोटी निद्राए सुतो पछी " मरुभूति बहारगाम गयो छे " एम धारी वसुधरा अने कमठ निःशंकपणे क्रीडा करवा लाग्या ते मरुभूतिए साक्षात् जोयु आवो तेमनो दुराचार जोवाने असमर्थ छता लोकापवादथी भय पामतो मरुभूति तेनो प्रतिकार

कर्या विना शीघ्रपणे त्यांथी नीकळी गयो. पछी कांइक विचार करी मरुभूतिए ते सर्व वृत्तांत अरविंद राजा पासे जइने कह्यो. राजाए पण क्रोध पामी कमठने नगर बहार काढी मूकवा माटे आरक्षकोने हुकम कर्यो एटले आरक्षकोए तेने गधेडापर बेसाडी चोतरफ फेरवी विडंबनापूर्वक नगरमांथी काढी मूक्यो. तेवी विडंबनाथी वैराग्य पामी वनमां जइ ते कमठ तापसव्रत ग्रहण करी उग्र बाळतप करवा लाग्यो. आ वृत्तांत जाणी पश्चात्ताप पामेला मरुभूतिए विचार कर्यो के—" मने धिक्कार छे के में राजानी पासे घरनुं छिद्र उघाडुं करी मोटाभाइने विडंबना पमाडी. ' घरनुं दुश्चरित्र प्रगट करवुं नहीं. ' ए नीतिनुं वचन पण क्रोधथी अंध थयेला मने स्मरणमां रह्युं नहीं, तो हजु पण मोटाभाइ पासे जइ आ मारा अपराधने हुं खमावुं. " एम विचारी वनमां जइ ते मोटाभाइना पगमां पड्यो. ते वखते ते दुष्ट बुद्धिवाळा अने दुष्कर्ममां ज तत्पर एवा कमठे विचार्युं के—" आणे जे मारी विडंबना करी छे ते मने मृत्यु करतां पण अधिक दुःखकारक छे. " एम विचारी महाक्रोधथी एक मोटी शिला उपाडी नानाभाइना मस्तकपर मारी, तेथी तत्काळ ते मरुभूति मरण पामी आर्तध्यानने लीधे विंध्याचळनी अटवीमां यूथनो स्वामी हाथी थयो.

एकदा अरविंद राजा पोतानी प्रियाओ साथे शरदऋतुमां अगाशीने विषे क्रीडा करतो हतो. ते वखते आकाशमां वादळां चडी आव्यां. ते साथे इंद्रधनुष, गर्जना अने वीजळीना चमकारा पण थवा लाग्या. ते सर्व जोइ " अहो ! आ अतीव रमणीय छे. " एम राजाए तेनी प्रशंसा करी. थोडीवारमां ते वादळां सर्व आकाशमां व्यापी गयां अने पाछां तरत ज वायुना झपाटाथी वीखराइ गयां. ते जोइ राजाए विचार्युं के—" जेम आ वादळां क्षणवारमां देखाइने वीखराइ

गयां-नाश पाम्यां, ते ज रीतें आ जगतना सर्व पदार्थो विनश्वर छे, तेमां प्रीति करवी फोगट छे." आ प्रमाणे विचारतां ज राजाने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं तरत ज तेणे पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी सद्गुरुनी पासे चारित्र अंगीकार कर्युं अनुक्रमे ते राजर्षि श्रुतना पारगामी थइ विहार करता एकदा सागरदत्त नामना सार्थवाहनी साथे अष्टापद पर्वत तरफ चाल्या तेमने नमस्कार करी सार्थवाहे पूछ्युं के—"हे प्रभु! आपने क्यां जवुं छे?" राजर्षि बोल्या के—"अमारे तीर्थयात्रा करवा जवुं छे" फरीथी सार्थवाहे पूछ्युं के—"आपनो कयो धर्म छे?" त्यारे मुनिए तेने विस्तार सहित जैनधर्म कह्यो. ते सांमळी सार्थवाहे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो अनुक्रमे चालतो ते सार्थ ज्यां मरुभूति हाथी रहेतो हतो ते अटवीमां पहोंच्यो अने त्यां भोजननो अवसर थवाथी एक सरोवरने कांठे पडाव नांख्यो तेवामां ते मरुभूति हाथी पोतानी घणी हाथणीओ सहित ते तळावमां पाणी पीवा आव्यो त्यां पाणी पी हाथणीओ साथे क्रीडा करी तळावनी पाळपर चढ्यो त्यांथी चारे दिशा तरफ दृष्टि नांखता तेणे ते सार्थ जोयो. तरत ज क्रोधथी यमराजनी जेम ते हाथी सार्थने हणवा तेनी तरफ दोड्यो, तेने आवतो जोइ भय पामेलो सार्थ तत्काळ नाठो ते वखते राजर्षिए अवधिज्ञानथी तेने बोध करवा लायक जाणी तेना आववाना मार्गमां ज पर्वतनी जेम स्थिर उभा रही कायोत्सर्ग कर्या ते हाथी पण दोडतो तेमनी पासे आव्यो, पण मुनिने जोइ शांत थइ गयो अने तेमनी पासे उभो रह्यो ते वखते राजर्षिए कायोत्सर्ग पारी तेनो उपकार करवा माटे कह्युं के—"हे हाथी! तारा मरुभूतिना भवने केम संभारतो नथी? हे बुद्धिमान्! मने-अरविंद राजाने शुं तुं ओळखतो नथी? अने पूर्वे भवमां अंगीकार करेला श्रावकधर्मने शुं तुं भूली गयो?" आ

प्रमाणे मुनिनुं वचन सांभळी ते हाथीने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, तेथी तेणे पोतानी सुंढ उंची करी मस्तक पृथ्वीपर नमावी मुनिने नमस्कार कर्या. पछी मुनिए कहेला श्रावकधर्मने अंगीकार करी शांत थयेलो हाथी पोताने स्थाने गयो. आ अति अद्भुत देखाव जोइ प्रथम नासी गयेला सार्थजनो पाछा आवी, मुनिने नमी श्रावकधर्म पाम्या अने सार्थपति पण जिनधर्ममां अतिदृढ थयो. पछी अष्टापद तीर्थे जइ देवोने वांदी राजर्षिए अन्यत्र विहार कर्यो. ते हाथी पण मुनिनी जेम इर्यासमितिपूर्वक चालतो, षष्ठादिक तप करतो, सुकां पांदडां विगेरेथी पारणुं करतो, सूर्यना किरणोथी तपेलुं सरोवरनुं पाणी पीतो अने हाथणीओ साथे क्रीडानो त्याग करी शुभ भावना भावतो रहेवा लाग्यो.

अहीं कमठ तापस पोताना भाइने हणीने शांत थयो नहीं. तेथी आर्तध्यानथी मरण पामी विंध्याचळनी अटवीमां ज कुक्कुट जातिनो उत्कट सर्प थयो. एकदा वनमां भमतां तेणे मरुभूति हाथीने सूर्यना तापथी तपेलुं जळ पीवा माटे सरोवरमां प्रवेश करतो जोयो. ते वखते ते हाथी दैवयोगे तेना पंकमां खुंची गयो, तेथी ते जरा पण आगळ पाछळ चाली शक्यो नहीं. ते जोइ ते सर्पे उडी तेना कुंभस्थळ उपर डंश कर्यो, तेना विषनो आवेश थवाथी पोतानो अंतसमय जाणी ते हाथीए तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं अने ते वेदनाने सहन करतो तथा पंचनमस्कारनुं ध्यान करतो मरण पामी सत्तर सागरोपमना जघन्य आयुष्यवाळो सहस्रार नामना आठमा देवलोकमां देव थयो. अनुक्रमे कुक्कुट नाग पण मरीने पांचमी नरकमां सतर सागरोपमना उत्कृष्ट आयुष्यवाळो नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपमां पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामना विजयमां वैताढय पर्वत उपर तिलका नामनी नगरी छे. तेमां

विद्युद्गति नामनो विद्याधर राजा हतो तेने कनकनी जेवी कांतिवाळी कनकतिलका नामनी राणी हती एकदा ते मरुभूति हाथीनो जीव आठमा स्वर्गमांथी चवी तेमनो पुत्र थयो तेनु नाम किरणवेग पाड्यु अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाओमां निपुण थइ यौवनवयने पाम्यो एकदा तेना पिताए तेने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी, एटले ते किरणवेग राजा न्यायथी राज्यनु प्रतिपालन करवा लाग्यो एकदा सुरगुरु नामना गुरुना मुखथी धर्मदेशना सांभळी किरणवेग राजाए प्रव्रज्या ग्रहण करी अनुक्रमे गीतार्थ थइ एकाकी विहारनो अभिग्रह धारण करी ते मुनि आकाश मार्गे पुष्करार्ध द्वीपमा गया त्यां कनकगिरि नामना पर्वतनी पासे कायोत्सर्गे रह्या

अहीं कुक्कुट सर्पनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज कनकगिरि पर्वतना वनमां अतिविषवाळो सर्प थयो तेणे पर्वतनी पासे भमतां ध्यानमां रहेला ते मुनिने जोया तेथी पूर्वभवना वेरथी क्रोध पामी ते मुनिना सर्व अंगोपर डंश मार्या, ते वखते ते किरणवेग मुनिए अनशन ग्रहण करी विचार्यु के—" आ सर्प मारा असातावेदनी कर्मनो क्षय करावनार होवाथी मारो मित्ररूप छे ' इत्यादि शुभ भावना भावी काळधर्म पामी बारमा अच्युत देवलोकना जम्बूद्रुमावर्त नामना विमानमां बावीश सागरोपमना आयुष्यवाळा श्रेष्ठ देव थया पेलो सर्प पण ते पर्वत पासे भमतो हतो, तेवामां दावानळ लागवाथी तेमां बळी जइ मरण पामी फरीथी पांचमी नरकमां उत्कृष्ट स्थितिवाळो नारकी थयो

आ ज जम्बूद्वीपना पश्चिम महाविदेहक्षेत्रने विषे सुगंधि नामनी विजयमा शुभंकरा नामनी नगरी छे तेमां महापराक्रमी वज्रवीर्य नामे राजा हतो, तेने जाणे बीजी लक्ष्मी ज होय तेवी लक्ष्मीवती नामनी प्रिया हती एकदा किरणवेग मुनिनो

जीव स्वर्गथी चवी वज्रनाभ नामे तेमनो पुत्र थयो. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार सर्व कळाओने ग्रहण करी पवित्र यौवनवयने पाम्यो. त्यारे तेने राज्य सोंपी वज्रवीर्ये दीक्षा ग्रहण करी. पछी वज्रनाभ राजाए चिरकाळ सुधी राज्यनुं पालन कर्युं. एकदा वैराग्य पामी चक्रायुध नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वज्रनाभे क्षेमंकर नामना तीर्थंकर पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे तीव्र तपस्या करता अने परीषहोने सहन करता ते मुनि आकाशगमनादिक अनेक लब्धिओ पाम्या. गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता ते मुनि एकदा आकाशमार्गे सुकच्छ नामना विजयमां गया. त्यां विहारना क्रमथी एकदा भयंकर अरण्यमां रहेला ज्वलनाद्रि नामना पर्वतपर गया. तेटलामां सूर्य अस्त पाम्यो. तेथी ते पर्वतनी कोइ गुफामां ते मुनि कायोत्सर्गे रह्या. प्रातःकाळे सूर्योदय थयो त्यारे इर्यासमिति पूर्वक विहार करवा लाग्या. आवा अवसरे ते सर्पनो जीव नरकमांथी उधरी भवमां अटन करी ते ज गिरिनी पासे कुरंगक नामे भिल्ल थयो. ते एकदा मृगयाने माटे नीकळ्यो, तेवामां ते ज मुनिने तेणे प्रथम जोया. तेथी 'आ अपशुकन थया' एम धारी पूर्वभवना वेरने लीधे तेणे ते मुनिने तीक्ष्ण बाण मार्युं. तरत ज ते महामुनि 'नमोऽर्हद्भ्यः' एम बोलता बाणना प्रहारथी पीडा पामी पृथ्वीपर बेसी गया अने तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं. पछी सर्व जीवोने खमावी शुभध्यानथी काळधर्म पामी ते मुनि मध्यम ग्रैवेयकमां ललितांग नामे देव थया. अहीं एक ज प्रहारथी मरण पामेला मुनिने जोइ कुरंगक भिल्ल पोताने महाबळवान मानी आनंद पाम्यो. अन्यदा ते भिल्ल पण मरण पामी सातमी नरकमां रौरव नामना नरकावासमां नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहने विषे पुराणपुर नामनुं नगर छे. तेमां कुलिशबाहु नामे राजा हतो. तेने

सुदर्शना नामनी प्रिया हती एकदा वज्रनाभनो जीव ग्रैवेयकथी चवी चौद महा स्वप्नोथी सूचित तेमनो पुत्र थयो तेनु नाम सुवर्णबाहु पाड्यु ते अनुक्रमे वृद्धि पामी पूर्वभवना अभ्यासथी सघळी कळाओ ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो त्यारे राजाए तेने राज्यपर स्थापन करी पोते दीक्षा ग्रहण करी पछी सुवर्णबाहु राजा दया सहित पृथ्वीनु रक्षण करवा लाग्यो एकदा राजा अश्वक्रीडा करवा नगर बहार गयो त्यां विपरीत शिक्षावाळो अश्व तेने हरण करी दूर वनमां लइ गयो त्यां एक सरोवर जोइ तृषातुर थयेलो अश्व पोतानी मेळे ज उभो रह्यो एटले राजाए अश्वपरथी उतरी ते अश्वने नवरावी पाणी पाइ पोते पण स्नान करी जळपान कर्युं पछी ते सरोवरने कांठे घणीवार विश्राम लइ आगळ चालता राजाए एक तपोवन जोयु तेमां प्रवेश करतां राजानु जमणु नेत्र फरक्यु, त्यारे तेणे विचार्यु के—" अहीं मने कांइक लाभ थवो जोइए " एम विचारी आगळ चालता राजाए त्यां वृक्षोने पाणी पाती एक मनोहर मुनिकन्याने तेनी सखी साथे जोइ. तेथी वृक्षने आंतरे उभो रही तेणीने एकदृष्टिए जोतो राजा विचार करवा लाग्यो के—" आ कन्याने विधाताए पोताना सर्व प्रयत्नथी रची जणाय छे आ कन्या विकारोनो तो उपाध्याय छे, अप्सराओमां पण आवु रूप नथी, परंतु आवु आ रूप क्यां ? अने आवु नीच जातिने उचित कर्म क्यां ? " ए प्रमाणे राजा विचार करतो हतो, तेवामां तेणीना श्वासना सुगंधमां मोह पामेलो कोइ भ्रमर तेणीनी पास फरवा लाग्यो ते वखते तेणीए भय पामी सखीने कह्यु के—" हे सखी ! आ भ्रमरथी मारु रक्षण कर, रक्षण कर " ते सांभळी सखीए हास्यथी कह्यु के—" सुवर्णबाहु विना कोण तारु रक्षण करवा समर्थ छे ? " ते सांभळी अवसर जोइ " सुवर्णबाहु पृथ्वीनु रक्षण करते सते तमने कोण

उपद्रव करे छे ? " एम बोलतो राजा तत्काळ प्रगट थयो. तेने अकस्मात् आवेलो जोइ ते बन्ने स्त्रीओ क्षणवार तो क्षोभ पामी. पछी धीरजने धारण करी सखी बोली के—" सुवर्णबाहु रक्षण करते सते तापसोने उपद्रव करवा कोइ पण समर्थ नथी. परंतु आ मारी मुग्धा सखी पोतानी पासे आवता भ्रमरने जोइ भय पामीने ' मारुं रक्षण कर, रक्षण कर, ' एम बोली छे. हे महापुरुष ! कामदेवना जेवा रूपवाळा तमे कोण छो ? ते कहो. " ते सांभळी राजाए पोते ज पोतानी ओळखाण आपवी अयोग्य धारी कह्युं के—" हुं सुवर्णबाहुनो वशवर्ती सेवक छुं, अने राजानी आज्ञाथी आश्रमनो उपद्रव दूर करवा आव्यो छुं. परंतु हे भद्रे ! आ कमळना सरखा नेत्रवाळी कन्या अनुचित काम करवावडे क्लेश केम पामे छे ? " त्यारे सखीए कह्युं के—" आ रत्नपुरना राजा विद्याधरेंद्रनी प्रिया रत्नावळीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली पद्मा नामनी कन्या छे. आ कन्यानो जन्म थयो, ते ज वखते तेना पिता मरण पाम्या. त्यारे तेना पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करवा लाग्या. ते वखते रत्नावळी राणी आ बाळाने लइ अहीं पोताना भाइ गालव नामना कुळपतिनी पासे आवीने रही छे. तेथी तापसोए लालन पालन करातो आ कन्या अहीं ज वृद्धि पामीने अनुक्रमे युवावस्थाने पामी छे. अहीं मुनि-कन्याओना सहवासथी ते आवुं ज कर्म करतां शीखेली छे. एकदा कोइ ज्ञानी साधु महाराज अहीं आव्या हता. तेने कुळपतिए ' आ कन्यानो वर कोण थशे ? ' एम पूछ्युं त्यारे साधुए कह्युं के—" सुवर्णबाहु नामना चक्रवर्ती अश्वथी हरण कराइने जाते ज अहीं आवी आ कन्याने परणशे. "

आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी सुवर्णबाहु राजाए हर्ष पामी विचार्युं के—" आ अश्वे मारा उपर उपकार कर्यो, के

जेथी अहीं लावी आनो मने सगम कराव्यो " पछी राजाए तेणीने पूछ्यु के—" हे भद्रे ! कुळपति क्यां छे ? तेमने जोवा माटे हु अत्यत उत्सुक छु " सखीए कहु के—" अहीं आवेला साधुए आने अहींथी विहार कर्यो छे, तेमनी साथे गया छे. थोडेक दूर सुधी जइ तेने वांदी हमणां पाछा आवशे " आम वात चाले छे एटलामां अश्वना पगलांने अनुसरी राजानु सैन्य आश्रम पासे आवी पहोंच्यु ते जोइ ते बन्ने कन्याओए ' आ सुवर्णबाहु राजा पोते ज छ ' एम जाणी लीधु पछी ' कुळपतिना आवतां सुधी आ पद्मानी शी अवस्था थशे ? ' एम शका करती सखी तेणीने महाकष्टथी आश्रममां लइ गइ पछी ते नदा नामनी तेनी सखीए आश्रममां आवेला गालवमुनिने तथा रत्नावळीने आनदथी सुवर्णबाहु राजानी सर्व वात कही बतावी ते सांभळी हर्ष पामेला गालवमुनि रत्नावळी, पद्मा अने नदा सहित राजानी पासे आव्या राजाए पण मुनिनु बहुमान कर्युं पछी मुनिए राजाने कहु के—" हे राजा ! ज्ञानीए आ पद्माना पति तमने कह्या छे, तेथी आ मारी भाणेजने तमे परणो " ते सांभळी अत्यत हर्ष पामेला राजाए गांधर्वविधिथी तेणीनु पाणिग्रहण कर्यु

ते वखते त्यां विमानोवडे आकाशने आच्छादन करतो पद्मोत्तर नामनो विद्याधर राजा के जे पद्मानो सापत्न भाइ थतो हतो, ते आव्यो रत्नावळीना कहेवाथी तेणे सुवर्णबाहु राजाने नमस्कार करी कहु के—" हे देव ! तमारा वृत्तांत सांभळीने हु तमारी सेवा करवा आव्यो छु हे स्वामी ! तमे जाते पधारीने वैताढ्य पर्वतपर रहेला मारा रत्नपुर नगरने पवित्र करो " आवु तेनु वचन अगीकार करी रत्नावळी अने कुळपतिनी रजा लइ राजा परिवार सहित तेना

विमानमां बेठो. ते वखते पद्मा पण मामानी तथा मातानी रजा लइ पतिनी पाछळ चाली. पछी पद्मोत्तर पद्मा सहित ते राजाने तत्काळ वैताढय पर्वतपर पोताना नगरमां लइ गयो. त्यां दिव्य रत्नना प्रासादमां ते सुवर्णबाहु राजाने उतारो आपीने सेवकनी जेम स्नान भोजनादिकवडे तेनो योग्य सत्कार कर्यो. पछी सुवर्णबाहुए त्यां रही पोताना पुण्यप्रभावथी नन्ने श्रेणिनुं साम्राज्य प्राप्त कर्युं अने घणी विद्याधर कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं. पछी पद्मा विगेरे प्रियाओ सहित ते राजा पोताना नगरमां आव्यो. त्यां अनुक्रमे चक्रादिक रत्नो उत्पन्न थयां, तेनाथी छ खंड साधी सुवर्णबाहु राजा चक्रवर्ती थया अने छ खंडनुं चिरकाळ राज्य कर्युं.

एकदा सुवर्णबाहु राजा पोतानी प्रियाओ सहित प्रासादनी उपर क्रीडा करता हता, ते वखते आकाशमां देवोने जता आवता जोइ राजा विस्मय पाम्या. माणसोने पूछवाथी जगन्नाथ तीर्थंकरनुं आगमन सांभळी चक्रीए त्यां जइ जिनेश्वरने वांदी तेमना मुखथी मोहनो नाश करनारी देशना सांभळी. पछी चक्रवर्ती पोताने स्थाने आव्या अने धर्मचक्री पण भव्य प्राणीओने प्रबोध करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या एकदा जिनेश्वरनी पासे आवेला देवोने संभारता चक्रवर्तीने विचार थयो के—" आवा देवो में पूर्वे क्यांइ पण जोया छे. " आ प्रमाणे ऊहापोह करतां तेमने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं अने तेणे पोताना पूर्वभवो जोया. तेथी मोक्षरूपी वृक्षना बीज समान वैराग्य तेमने प्राप्त थयो. एटले दीक्षा लेवानी इच्छाथी तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो, तेवामां ते ज जगन्नाथ तीर्थंकर विहार करता करता त्यां ज पधार्या. तेमनी पासे सुवर्णबाहु चक्रीए दीक्षा ग्रहण करी. ते अनुक्रमे गीतार्थ थइ दुस्तप तप करवा लाग्या. तेमां जिनसेवा आदिक

स्थानकोना सेवनवडे तेमणे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं एकदा विहारना क्रमे क्षीरवन नामनी अटवीमा क्षीरमहा गिरि नामना पर्वतपर चडी सूर्यनी सन्मुख दृष्टि राखी तेओ कायोत्सर्गे रह्या ते अवसरे कुरगकनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज वनमां सिंह थयो हतो, ते दैवयोगे भमतो भमतो त्यां आवी चड्यो अने ते मुनींद्रने जोइ पूर्वना वैरने लीधे तेनापर अत्यत क्रोध पामी ते राक्षसनी जेम तेमना तरफ दोडयो ते सिंहने आवतो जोइ मुनीश्वरे तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं तेटलामां ते सिंह मोटी फाळ मारी मुनिना शरीरपर पडयो, एटले ते मुनि काळधर्म पामी दशमा देवलोकमा महाप्रभ नामना विमानने विषे वीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देव थया

ते सिंह पण मरीने चोथी नरकमा नारकीपणे उत्पन्न थयो त्या दश सागरोपम सुधी विविध प्रकारनी वेदनाओने अनुभवी त्यांथी नीकळी चिरकाळ सुधी तिर्यंचनी योनिमा भ्रमण करी ते सिंहनो जीव कोइक गाममा ब्राह्मणनो पुत्र थयो तेनो जन्म थया पछी तरत ज तेना मातापिता विगेरे सर्व मरण पाम्या तेने कठ नामे बोलावी लोकोए दयाथी तेने उछेरी मोटो कर्यो ते अत्यत दरिद्री युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे माणसोनी निंदाने सांभळतो ते महा कष्टथी भोजन पण पामवा लाग्यो एकदा दानभोगादिक करता धनिकोने जोइ तेने विचार थयो के–" आ लोकोए पूर्वजन्ममां दुष्कर तप कर्यो हशे, कारण के बीज विना अन्नप्राप्ति न थाय तेम तप विना लक्ष्मी प्राप्त थाय नहीं तेथी हु पण तप करु " एम विचारी वैराग्य पामेला कठे तापसनी दीक्षा ग्रहण करी अने कदादिकनु भोजन करी ते पचाग्नि आदिक अज्ञानकष्ट करवा लाग्यो.

आ ज भरतक्षेत्रमा वाराणसी नामनी नगरी छे ते नित्यसखीनी जेम पासे रहेली गगानदीवडे सेवाय छे अलका

नगरीनी जेवी ते नगरीनी चोतरफ जाणे चैत्ररथ नामनुं वन आवीने रह्युं होय तेम मनोहर उद्यान रहेलुं छे. ते नगरीना किल्लाने विशाळ अने मोटा माणिक्यरत्नना कांगराओ छे, ते जाणे दिशारूपी लक्ष्मीना प्रयास विनाना नित्यना आदर्श होय तेवा शोभे छे. ते नगरीमां रहेला चैत्योना शिखरो उपर रहेला सुवर्णना कळशोने अतिथिनी जेम आवेला जाणी सूर्य पोताना किरणोवडे पूजे छे. ते नगरीमां धनिकना मनोहर महेलो जाणे पुण्यना उदयथी पामना लायक देवोना विमानो होय तेवा शोभे छे. देवताओ भोजनने माटे ज्यारे मागे छे त्यारे ज सुधा (अमृत) ने पामे छे, परंतु आ नगरीना सर्व गृहो तो प्राये करीने सुधा (चूना) थी लींपायेला ज छे ए आश्चर्य छे. ते नगरीमां दुकानोनी श्रेणि अगणित करीयाणाना समूहवडे सांकडी छतां पण कुत्रिकापणनी श्रेणिनी जेम विशाळ होय तेम शोभे छे. विश्वने उल्लंघन करे तेवी ते नगरीनी लक्ष्मी जोइने पंडितो मानता हता के–" रोहणाचळ पर्वत उपर हवे मात्र पथ्थर ज रह्या हशे अने समुद्रमां केवळ जळ ज रह्युं हशे. "

ते नगरीमां कार्तिकस्वामीनी जेवा पराक्रमवाळा अश्वसेन नामे राजा हता, ते जाणे के इंद्रे आवीने पृथ्वीपर वास कर्यो होय तेम शोभता हता. ते राजाने वामा नामनी राणी हती. ते गुणना समूहवडे सुंदर, शीलादिक गुणवडे शोभती अने अश्वसेन राजाने तेना प्राण करतां पण अधिक प्रिय हती. एकदा सुवर्णबाहुनो जीव त्रण ज्ञान सहित प्राणत नामना दशमा देवलोकथी चवी वामादेवीनी कुक्षीमां अवतर्यो. ते वखते सुखे सुतेली ते मनोहर मुखवाळीए हस्ती विगेरे चौद महा स्वप्नोने पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया. पछी तत्काळ जागेली तेणीने अनुक्रमे इंद्रे, राजाए अने पछी ज्योतिषीओए

ते स्वप्ननु फळ कह्यु के—" हे देवी ! आ महा स्वप्नोथी तमारो पुत्र जगत्पति थशे " ते सांभळी हर्ष पामेली वामादेवीए सुखेथी गर्भ धारण कर्यो, अने काळ संपूर्ण थये श्याम कांतिवाळा तथा सर्पना चिन्हवाळा मनोहर पुत्रने जन्म आप्यो ते वखते आसनकंपथी प्रभुनो जन्म जाणीने छप्पन दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्युं, अने शक्र इद्र विगेरे सर्व इद्रोए अवधिज्ञानथी प्रभुनो जन्म जाणी मेरुपर्वतपर लइ जइ प्रभुनो जन्मोत्सव कर्यो पछी जाणे अमृतनु पान कर्युं होय तेम आनद पामेला अश्वसेन राजाए कारागृहमाथी केदीने मुक्त करी पुत्रजन्मनो महोत्सव कर्यो. प्रभु गर्भमा हता त्यारे तेनी माताए अधारी रात्रिमा पण पोतानी पासे थइने जता सर्पने जोइ तत्काळ ते वात पतिने कही हती, तेनु स्मरण करी अश्वसेन राजाए ते पुत्रनु पार्श्व नाम पाडयु इद्रे आदेश करेली पांच धात्रीओथी पालन कराता प्रभु बाळकनु रूप धारण करीने आवेला देवोनी साथे क्रीडा करवा लाग्या इद्रे अगुठामां मूकेला अमृतनु पान करता प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामी यौवनवयने पाम्या ते वखते प्रभुनु शरीर नव हाथनु थयु.

अकदा अश्वसेन राजा सभामां बेठा हता, ते वखते द्वारपाळनी रजाथी कोइ पुरुषे सभामां आवी राजाने कह्यु के—" हे स्वामी ! आ भरतक्षेत्रमां कुशस्थळ नामनु नगर छे तेमां प्रसेनजित् नामे राजा छे तेने प्रभावती नामनी युवावस्थाने पामेली मनोहर पुत्री छे खरेखर विधाताए आखा जगतनो सार लइने ज तेने बनावी लागे छे कारण के चद्र तेना मुखना दासपणाने पामे छे, मृग तेणीना नेत्रोनो दास छे, मयूर तेना केशपाशनो दास छे, अने अमृतरस तेना वाक्यरसनो दास छे, अरिसो तेना कपोळनी शोभाने पामतो नथी, सुवर्णकद तेना अधरनी उपमा पामता नथी, तेना

कंठनी सुंदरता मेळववामां पांचजन्य शंख पण योग्य नथी, तेना स्तननी लक्ष्मी ग्रहण करवामां सुवर्णनो कळश पण चतुर नथी, तेनी भुजलतानी लक्ष्मी मेळववा कमळनुं नाळ पण समर्थ नथी, तेना हस्तनी कांतिना लेशने पण पल्लवो पामी शकता नथी, तेनी कटिनी शोभा ग्रहण करवामां वज्र पण मूर्ख छे, तेनी नाभिनु सदृशपणुं शीखवामां आवर्त पण समर्थ नथी, तेना जघननी तुलना करवामां रेतीवाळो नदीनो कांठो पण शक्तिमान नथी, तेना साथळनी सुंदरता मेळववामां रंभा पण अटकी जाय छे, मृगलीनी जंघा पण तेनी जंघानी शोभा ग्रहण करवामां सफळ उद्यमवाळी नथी, तेना चरणकमळनी लक्ष्मीने अरविंद पण पामी शके तेम नथी, सुवर्ण पण तेना शरीरनी कांतिना कोइपण अंशने पामतुं नथी अने तेना लावण्य गुणने जोइ अप्सराओ पण रसवाळी थती नथी. आवी मनोहर ते कन्याने जोइ योग्य वरनी प्राप्ति माटे तेना पिताए घणा कुमारो शोध्या, परंतु कोइ पण तेने योग्य मळ्यो नथी. एकदा ते प्रभावती सखीओ साथे उद्यानमां गइ हती. त्यां किन्नरीओथी गवातुं आ गीत तेणीना सांभळवामां आव्युं के—“ रूप, लावण्य अने तेजवडे देवोनो पण तिरस्कार करनार अश्वसेन राजाना पुत्र श्रीपार्श्वकुमार चिरकाळ सुधी जय पामो. ” आवा अर्थवाळुं गीत सांभळी ते प्रभावती श्रीपार्श्वकुमारपर प्रीतिवाळी थइ. तेथी ते लज्जा अने क्रीडानो त्याग करी मात्र ते गीतने ज वारंवार सांभळवा लागी. ते जोइ तेनी सखीओए तेने श्रीपार्श्वने विषे रागवाळी जाणी. केमके पाणीमां रहेला तेलनी जेम रागीमां रहेलो राग छानो रही शकतो नथी. पछी ते किन्नरीओ गइ त्यारे ते प्रभावती तेमनी सन्मुख आकाशमां जोइ ज रही. ते वखते सखीओ तेने महा महेनते घेर लइ गइ. परंतु तेने कोइपण ठेकाणे सुख प्राप्त थयुं नहीं. कामदेवरूपी अपस्मारना व्याधिथी

परयश थयली ते रा,पण जाणती नहोती, मात्र जम योगिनी परब्रह्मनु ध्यान करे तेम एक श्रीपार्श्वनु ज मनमां ध्यान करवा लागी सखीओना मुखथी तेने श्रीपार्श्वने विषे प्रीतिवाळी जाणी तेना मातापिता हर्ष पाम्या अने " पुत्रीनो राग योग्य स्थान छ" एम कहेवा लाग्या पछी तेना मातापिता बोल्या के—" आ पुत्रीने श्रीपार्श्व पासे स्वयंवरा तरीके मोकलीने आपणे तेने आनंद पमाडवु ' आ वृत्तांत अनेक देशोना अधिपति यवन नामना महा बळवान राजाए पोतानी सभामां पोताना चरपुरुषोना मुखथी सांभळ्यो ते वखते ते बोल्यो के—" ते प्रसेनजित् राजा मने मूकीने पार्श्वकुमारने पोतानी पुत्री केम आपशे ? जो ते राते न मने नहीं आपे तो हु बळात्कारे तेने ग्रहण करीश " आ प्रमाणे कहीने तत्काळ यवननी सेना वेगवाळा ते यवनराजाए सैन्य सहित आवी कुशस्थळने चोतरफथी रुध्यु छे तेथी रात्रिना प्रारंभमां बीडाइ गयेला कमळमां भ्रमरनी जेम कोइपण मनुष्यनो नगरमां प्रवेश के निर्गम थइ शकतो नथी आ वृत्तांत आपने जणाववा माटे पुरुषोत्तम नामना मने मतीपुत्रने प्रसेनजित् राजाए मोकल्यो छे, ते हु रात्रिने समये गुप्त रीते नगर बहार नीकळी अहीं आव्यो छु तो हवे जे करवा लायक होय ते आप करो प्रसेनजित् राजा आपने शरणे छे "

आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी अश्वसेन राजाना नेत्रो क्रोधथी रक्त थयां अने ते दुष्ट यवन राजाने शिक्षा करवा माटे तेणे तत्काळ प्रयाणनी भेरी वगडावी ते भेरीनो शब्द सांभळी ' आ अकस्मात् शु छे ? ' एम विचार करता श्रीपार्श्वकुमारे पिता पासे आवी कह्यु के—" हे पिता ! देवो के असुरो मध्ये कया बळवाने आपनो अपराध कर्यो छे के जेथी आप पोताने आ प्रयास करवो पडे छे ? " ते सांभळी अश्वसेन राजाए ते आवेला पुरुषने आगळीवडे देखाडी कह्यु के—

“ कुशस्थळना राजानुं रक्षण करवा अने यवनराजाने जीतवा जवुं छे. ” ते सांभळी पार्श्वकुमारे कह्यु के—“ घासने विषे परशुनी जेम ते मनुष्यरूपी कीटने विषे सुरासुरने जीतनारा आपे आ उद्यम करवो योग्य नथी, तेथी आप मने ज आज्ञा आपो अने आप आ महेलने ज शोभावो. हुं पण तेना गर्वनो नाश करी शकीश. ” ते सांभळी पुत्रनुं बळ त्रण जगत करतां पण अधिक छे एम जाणता राजाए तेनुं वचन अंगीकार कर्युं अने सैन्य सहित तेने जवानी रजा आपी.

श्रीपार्श्वकुमार सैन्य सहित चाल्या, त्यारे पहेला प्रयाणमां ज इंद्रना सारथि मातलिए आवी रथमांथी उतरी प्रभुने नमस्कार करी विनंति करी के—“ हे प्रभु ! क्रीडावडे पण संग्राममां उद्यमवंत थयेला आपने जाणीने शक्रइंद्रे भक्तिथी आ रथ आपने माटे मोकल्यो छे, तेनो स्वीकार करो. ” ते सांभळी विविध प्रकारनां शस्त्रोथी भरेला अने पृथ्वीने नहीं स्पर्श करता ते रथ उपर आरूढ थइ सूर्यनी जेम प्रभु आकाशमार्गे चाल्या. पाछळ पृथ्वीपर चाली आवती सेनापरनी कृपाने लीधे नाना प्रयाणोवडे चालता प्रभु अनुक्रमे केटलेक दिवसे कुशस्थळ नगर पासे आवी पहोंच्या. त्यां एक उद्यानमां देवोए करेला प्रासादमां प्रभु सुखेथी रह्या. पछी प्रभुए एक दूत यवनराजा पासे मोकल्यो. तेणे जइ यवनराजाने कह्यु के—“ हे राजा ! श्रीपार्श्वनाथ तमने आज्ञा करे छे के—आ प्रसेनजित् राजा अमारा पिताने शरणे रह्या छे, तेथी तेना नगरनो रोध मूकी द्यो. कारण के पिता पोते ज अहीं आवता हता, तेमने आ कारणथी ज निषेध करीने हुं अहीं आव्यो छुं, तेथी जो तमने सुखनी इच्छा होय तो तमे तमारे स्थाने जता रहो. ” आवुं दूतनुं वचन सांभळी क्रोध पामेलो यवन बोल्यो के—“ रे दूत ! तुं आ शुं बोले छे ? मारी पासे अश्वसेन के पार्श्व कइ गणतरीमां छे ? तो ते पार्श्व ज पोताने स्थाने जाय अने

पोताना शरीरनु रक्षण करे तु दूत छे तेथी तने जीवतो मूकु छु अरे ! तु पण जलदी अहींथी जतो रहे " ते सांभळी दूते फरीथी कह्यु के–' हे राजा ! अमारा स्वामी दयाळु छे, तेथी कुशास्थळना राजानी जेम तारु पण रक्षण इच्छे छे, अने तेथी करीने ज मने तारी पासे बोध करवा मोकल्यो छे, तो हे जड ! बोध पाम, अने अमारा स्वामीने इद्रो पण जीती शके तेम नथी, एम तु नक्की जाण जेम सिंहनी साथे हरण, सूर्यनी साथे अधकार, अग्निनी साथे पतगीयु, समुद्रनी साथे कीडी, गरुडनी साथे सर्प, वज्रनी साथे पर्वत अने हाथीनी साथे घेटो युद्ध करवा शक्तिमान नथी, तेम तु पण श्रीपार्श्वनी साथे युद्ध करवा शक्तिमान नथी तेथी हे यवन ! तु तेमनी आज्ञा अगीकार कर " आ प्रमाणे दूत बोल्यो त्यारे यवनना सैनिको तेनी साथे विपरीतपणे बोलवा लाग्या अने तेने मारवा तैयार थया तेवामां सेना मत्रीए कह्यु के–" अरे मूढ सैनिको ! तमे श्रीपार्श्वप्रभुना दूतने मारवा इच्छो छो ते तो पोताना ज स्वामीने गळे पकडी अनर्थरूपी कुवामां नांखवा जेवु करो छो इद्रो पण जेनी आज्ञाने मस्तकपर मुगटनी जेम चडावे छे, तेना दूतने मारवो ते तो दूर रहो; परन्तु तेनी हीलना पण दु ख आपनारी छे " आ प्रमाणे कही ते सुभटोने निवारी पछी मत्रीए सामवचनथी ते दूतने कह्यु के–" हे भद्र ! आमनो आ एक अपराध तमे माफ करजो अने प्रभुने आ वात कहेशो नहीं श्रीपार्श्वप्रभुना चरणकमळने वांदवा माटे अमे हमणां ज आवीए छीए " आ प्रमाणे समजावी ते दूतने मत्रीए विदाय कर्यो पछी पोताना स्वामीना हितने इच्छता मत्रीए राजाने कह्यु के–" हे देव ! भविष्यनो विचार कर्या विना सिंहनी केशवाळीने खेंचवा जेवु आवु विपरीत परिणामवाळु कार्य केम करो छो ? इद्रो पण जे पार्श्वप्रभुना पत्तिओ छे तेनी साथे तमारु युद्ध शी रीते होइ शके ? तेथी हजु पण कठपर कुठार धारण करीने तमे

पार्श्वनाथनो आश्रय करो, तेमनी पासे तमारा अपराधनी क्षमा मागो अने तेमनी आज्ञा अंगीकार करो. जो आलोक अने परलोक संबंधी सुखनी इच्छा होय तो तमारे आ कार्य करवुं उचित छे." आवुं मंत्रीनुं वचन सांभळी यवनराजा बोल्यो के–" हे मंत्री ! तमे मने ठीक बोध कर्यो." एम कही पोताना कंठपर परशु राखी परिवार सहित ते यवनराजा श्रीपार्श्वप्रभु पासे गयो. त्यां प्रतिहार द्वारा रजा लइ सभामां जइ प्रभुने नमस्कार कर्या. प्रभुए तेना कंठपरथी कुठार मूकावी दीधो, त्यारे फरीथी नमस्कार करी यवन राजा बोल्यो के–" हे नाथ ! तमे सर्वने सहन करनार छो, तेथी मारो आ अपराध क्षमा करो, मने भय पामेलाने अभयदान आपो अने मारापर प्रसन्न थइ मारी लक्ष्मीने ग्रहण करो." श्रीपार्श्वनाथे कह्युं के–" हे कुशळ राजा ! तमारुं कल्याण थाओ, तमारुं राज्य तमे भोगवो, भय पामशो नहीं अने फरीथी आवुं कार्य करशो नहीं." आ प्रमाणे भगवानना वचननो तेणे अंगीकार कर्यो, एटले जिनेश्वरे तेनुं बहुमान कर्युं. ते वखते तरत ज कुशस्थळ पुरनो रोध दूर थयो. पछी प्रभुनी आज्ञाथी ते पुरुषोत्तमे पुरमां जइ प्रसेनजित् राजाने ते वार्ता कही प्रसन्न कर्यो.

त्यारपछी भेटनी जेम प्रभावती कन्याने साथे लइ प्रसेनजित् राजा प्रभु पासे आव्या. अने तेमने विज्ञप्ति करी के— " हे जगत्पति ! जेम तमे अहीं आवीने मारापर अनुग्रह कर्यो तेम आ मारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण करी मारापर अनुग्रह करो. आ मारी पुत्री तमारापर चिरकाळथी रागवाळी छे. ते बीजा वरने इच्छती नथी, वळी स्वभावथी ज तमे कृपाळु छो माटे आनापर विशेष कृपावान थाओ." ते सांभळी स्वामी बोल्या के—" हे राजा ! हुं मारा पितानी आज्ञाथी तमारुं रक्षण करवा आव्यो छुं, पण तमारी पुत्रीने परणवा आव्यो नथी, तेथी आ वार्ता फरी करशो नहीं." ते सांभळी प्रसेनजिते

विचार्यु के—" आ पार्श्वनाथ मारा वचनथी मानशे नहीं तेथी अश्वसेन राजा पासे ज आग्रह करी हु आ वात तेने मनावीश." पछी स्वामीए प्रसेनजित् साथे यवन राजानी मिनाइ करावी ते यवन राजाने रजा आपी. पछी प्रभुए प्रसेनजितने रजा आपी त्यारे तेणे कह्यु के—" हे स्वामी! मारे अश्वसेन राजाने नमवा माटे आपनी साथे आववुं छे "प्रभुए 'बहु सारु' कह्यु एटले प्रसेनजित् राजा प्रभावतीने साथे लइ प्रभुनी साथे ज चाल्यो अनुक्रमे वाराणसी नगरीए जइ पिताने प्रणाम करी श्रीपार्श्वनाथ पोताना महेलमां गया, त्यारे प्रभावती सहित प्रसेनजित् राजाए अश्वसेन राजा पासे जइ तेमने प्रणाम कर्यां, तरत ज अश्वसेने उभा थइ तेने गाढ आलिंगन करी पूछ्यु के—" तमे कुशळ छो? अहीं सुधी आपनु केम आववु थयु? प्रसेनजिते कह्यु—" तमे जेनु रक्षण करनार हो, तेने अकुशळ क्यांथी होय? हे महाराजा! हु आजे अहीं आव्यो छु, ते तमारी पासे काइक याचना करवा आव्यो छु ते ए के—हे देव! आ मारी प्रभावती नामनी पुत्रीने श्री पार्श्वनाथने माटे अंगीकार करो हे स्वामी! आ मारी याचना तमारी पासे निष्फळ न थाओ.' अश्वसेने कह्यु के—" आ कुमार सदा भववासथी विरक्त छे, तोपण तमारी प्रसन्नता माटे बळात्कारे पण तेने परणावीश " एम कही अश्वसेन राजा तेने साथे लइ श्रीपार्श्वकुमार पासे गया, अने कह्यु के—" हे वत्स! आ राजानी आ पुत्रीने तु परण हे दाक्षिण्यना समुद्र! जो के तु बाल्यावस्थाथी ज संसारने विषे विरक्त छे, तोपण आ मारु वचन तारे मानवु पडशे " आ प्रमाणे पिताना अति आग्रहथी पार्श्वनाथे भोगफळ कर्मने भोगववा माटे प्रभावतीनु पाणिग्रहण कर्यु पछी क्रीडापर्वत, नदी, वाव अने उद्यानादिकमां प्रभावतीनी साथे क्रीडा करता प्रभुए केटलाक दिवसो निर्गमन कर्या

एकदा पार्श्वनाथ पोताना महेलना गवाक्षमां बेठा बेठा नगरीने जोता हता. ते वखते घणा लोकोने पुष्पादिक पूजासामग्रीने लइ नगर बहार जता जोया. तेथी कुमारे सेवकोने पूछ्युं के—"आजे कयो उत्सव छे के जेथी आ लोको शीघ्रताथी नगर बहार जाय छे ?" त्यारे कोइ सेवक बोल्यो के—"हे स्वामी ! आजे उत्सव कांइपण नथी, परंतु आजे नगर बहार उद्यानमां कठ नामनो एक महातपस्वी तापस आवेलो छे, तेनी पूजा करवा माटे आ लोको जाय छे." ते सांभळी स्वामी पण ते कौतुक जोवा माटे परिवार सहित उद्यानमां गया. त्यां ते कठ तापस पंचाग्नि तप करतो हतो. ते वखते अवधिज्ञानवडे प्रभुए अग्निना कुंडमां नांखेला एक लाकडानी पोलमां एक सर्पने बळतो जोइ दयालु होवाथी कह्युं के—"अहो ! आ तापस तप करे छे, तोपण अज्ञानता होवाथी दयागुण तो छे ज नहीं. नेत्र विना मुखनी जेम दया विना धर्म शा कामनो ? दया रहित पुरुषोनो कायक्लेश पण पशुनी जेम वृथा छे." ते सांभळी कठ बोल्यो के—"हे राजपुत्र ! तमारी जेवा क्षत्रियो तो हाथीने शिक्षा आपवी ए विगेरे कार्यमां ज पंडित होय छे, धर्ममां तो अमे मुनिओ ज पंडित छीए." ते सांभळी प्रभुए पोताना सेवको पासे ते कुंडमांथी सळगतुं लाकडुं बहार कढावी यतनापूर्वक तेने चीराव्युं, एटले तेमांथी एक मोटो सर्प नीकळ्यो. ते सर्प अग्निनी ज्वाळाथी व्याकुळ थयेलो हतो, तोपण प्रभुनुं दर्शन थतां ते अंतःकरणमां अत्यंत प्रसन्न थयो. तेने प्रभुए पोताना सेवको पासे परलोकना भातारूप प्रत्याख्यान अपाव्युं अने पंचनमस्कार संभळाव्या. प्रभु पोते तेनी सन्मुख कृपादृष्टिथी जोइ रह्या, तेथी ते सर्पे पण सावधानपणे ते सर्व अंतःकरणथी अंगीकार कर्युं. आ रीते धर्मना प्रभावथी ते सर्प मरीने धरणेंद्र थयो. आवुं आश्चर्य जोइ लोको प्रभुनी स्तुति करवा लाग्या के—"अहो ! आ

स्वामीनु ज्ञान तो अद्भुत जणाय छे " पछी लोको सहित प्रभु पोताने स्थान गया आ सर्व जोइ शठ मनवाळो कठ अत्यत लज्जा पाम्यो, अने वधारे अज्ञान तप करवा लाग्यो "तेवाओने सन्मार्गेनी प्रीति क्याथी होय ?" अनुक्रमे ते कठ तापस मरण पामी अज्ञानतपना प्रभावथी मेघकुमार (स्तनितकुमार) ने विषे मेघमाळी नामनो भवनपति देव थयो

एकदा श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वसत ऋतुमा क्रीडा करवा माटे उद्यानमा गया त्या एक प्रासादनी भींत उपर श्रीनेमिनाथना चरित्रनु चित्र चितरेलु जोइ विचार्यु के—" अहो ! श्रीनेमिनाथने धन्य छे के जेणे कुमार अवस्थामा ज अत्यत रागवाळी राजीमती कन्यानो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करी हती तो हु पण हवे सर्व सगनो त्याग करु " आ प्रमाणे प्रभुए विचार कर्यो के तरत ज लोकातिक देवोए आवी "हे स्वामी ! तीर्थ प्रवर्तावो " एम विज्ञप्ति करी पछी कुबेरे पूरेला धनवडे वार्षिक दान आपी प्रभुए दीक्षा माटे मातापितानी आज्ञा लीधी पछी अश्वसेन विगेरे राजाओए अने शक्र विगेरे इद्रोए एकठा थइ श्रीपार्श्वप्रभुने दीक्षाभिषेक कर्यो पछी देवोए वहन करेली शिबिकामा आरूढ थइ प्रभुए देवदुदुभिना नाद सहित आश्रमपद नामना वनमा जइ, शिबिकामाथी नीचे उतरी, वस्त्र अने आभूषणोनो त्याग करी मस्तकपर पचमुष्टि लोच कर्यो अने पछी इद्रे आपेलु देवदूष्य डावा स्कधपर धारण करी त्रीश वर्षनी वयवाळा स्वामीए त्रणसो पुरुषो सहित अष्टम तप करी सर्वविरति अगीकार करी ते वखते स्वामीने चोथु मन पर्यव ज्ञान प्राप्त थयु पछी स्वामी भारड पक्षीनी जेम प्रमाद रहित थइ पृथ्वीपर विचरवा लाग्या सर्व इद्रो स्वामीनो दीक्षामहोत्सव पूर्ण करी नदीश्वर द्वीपे जइ त्या अष्टान्हिका उत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया

एकदा श्री पार्श्वनाथ स्वामी विहारना क्रमथी नगरनी नजीक रहेला एक तापसना आश्रममां आव्या. ते वखते सूर्य अस्त पाम्यो. तेथी त्यां एक कुवाने कांठे रहेला वटवृक्षनी नीचे प्रभु नासिका उपर दृष्टि राखी प्रतिमाए उभा रह्या. एवा अवसरे ते मेघमाळी नामनो असुर अवधिज्ञानवडे पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत जाणी तथा ते वेरनुं कारण संभारी क्रोधथी धमधमतो प्रभुने उपसर्ग करवा ते स्थाने आव्यो. तेणे अंकुशनी जेवा तीक्ष्ण नखवाळा, भयंकर रूपवाळा अने पुंछडाना पछाडथी पर्वतो पण कंपे एवा घणा सिंहो विकुर्व्या. तेनाथी भगवान कांइ पण भय पाम्या नहीं. त्यारे तेणे अत्यंत भयंकर पर्वत जेवडा हाथीओ विकुर्व्या. तेनाथी पण प्रभु चलायमान थया नहीं. त्यारे तेणे मोटा फुंफाडा मारता अने यमराजना हस्तदंड जेवा प्रचंड दृष्टिविष सर्पो विकुर्व्या. तेमज उंचा आंकडावडे स्वस्थतानो नाश करनारा अनेक वींछीओ, आपत्तिने करनारा भल्लूक अने शूकर विगेरे श्वापदो तथा ज्वाळानी जेवा भयंकर मुखवाळा अने मुंडनी माळाने धारण करनार प्रेतोने विकुर्व्या. ते सर्व पण प्रभुने ध्यानथी चलायमान करवा समर्थ थया नहीं. "तीक्ष्ण मुखवाळी कीडीओ अने माकड विगेरे पण शुं वज्रने भेदी शके?" त्यारपछी अत्यंत क्रोध पामेला ते मेघमाळीए गर्जारव अने वीजळीवडे दिशाओमां व्यापी गयेला मेघोनी श्रेणि आकाशमां विकुर्वी. "आ मारा पूर्वभवना शत्रुने आ भवना जळथी डुबावीने मारी नाखुं." एम विचारी ते वृष्टि वरसाववा लाग्यो. प्रथम मुष्टि जेवी पछी मुशळ जेवी अने पछी स्तंभ जेवी धारा वरसावी वरसादनीने तेणे आखी पृथ्वी एक समुद्रमय करी दीधी, ते वखते अनुक्रमे प्रभुना कंठ सुधी ते जळ पहोंच्युं. एटले प्रभु कंठ सुधी पाणीमां डूबी गया. तेथी तेमनुं मुख पद्मद्रहमां रहेला कमळनी जेम शोभवा लाग्युं. पछी जेटलामां ते जळ

प्रभुनी नासिका सुधी पहोंच्यु, तेटलामा नागराज धरणेंद्रनु आसन कम्प्यु तरत ज अवधिज्ञानथी प्रभुनो वृत्तांत जाणी ते पोतानी प्रियाओ सहित त्यां आवी प्रभुने भक्तिथी नम्यो पछी प्रभुना चरणनी नीचे मोटा नाळवालु कमळ मूकी ते धरणेंद्रे पोताना शरीरवडे प्रभुनी पीठ अने बन्ने पडखा ढांकी तेमना मस्तकपर पोताना सात फणानु छत्र कर्यु तेथी त्यां रहेला प्रभु सुखे करीने ध्यानमा मग्न थया ते वखते ते धरणेंद्रनी इंद्राणीओ प्रभु पासे नृत्य करवा लागी, तथा वेणु, वीणा अने मृदग विगेरना शब्दथी सर्व दिशाओने व्याप्त करी आ वखते भक्ति करनारा धरणेंद्र उपर तथा द्वेष करनारा ते असुर उपर समताना निधानरूप स्वामी तो समान दृष्टिवाळा ज हता परन्तु द्वेषथी अधिकाधिक वृष्टि करता ते कठ नामना असुरने जोइ नागेंद्रने तेनापर क्रोध थयो, अने तेथी तेणे तिरस्कार सहित ते असुरने कह्यु के—" रे दुष्ट ! पोताना ज उपद्रवन माटे तें आ शु आरंभ्यु छे ? हु दयाळु प्रभुनो सेवक छु, छतां हवे तारा अपराधने हु सहन करीश नहीं आ स्वामीए ते वखते तने पापमांथी मुक्त करवा माटे बळतो सर्प काढीने बचाव्यो, तेमां तेमणे तारु शु अप्रिय कर्यु ? हे पापी ! कारण विनाना जगतना मित्ररूप आ भगवाननी उपर तु विना कारणे द्वेष करे छे, तेथी हवे तु नथी एम समज " आवु धरणेंद्रनु वचन सांभळी मेघमाळीए नीचे दृष्टि करी अने ते प्रकारे धरणेंद्रथी सेवाता प्रभुने जोया तरत ज ते भय पामी विचारवा लाग्यो के—" मारी जेटली शक्ति हती तेटली वधी पर्वतने विषे ससलानी जेम आ प्रभुने विषे निष्फळ थइ वळी आ भगवान एक ज मुष्टिथी वज्रने पण चूर्ण करी शके तेवा बळवान छे, छतां क्षमा गुणे करीने सर्व सहन करे छे, परन्तु आ नागेंद्रथी तो मारे भय राखवानो ज छे हु त्रिभुवना नाथनो वैरी थयो, तेथी मारे बीजु कोइ पण शरण छे नहीं.

तेथी आ करुणाना सागरनुं ज शरण करुं." ए प्रमाणे विचारी मेघने संहरी लइ प्रभुनी पासे आवी " मारो अपराध क्षमा करो " एम नमस्कार पूर्वक कही ते असुर पोताने स्थाने गयो. नागेंद्र पण प्रभुने उपसर्ग रहित थयेला जाणी तेमने प्रणाम करी पोताने स्थाने गयो अने प्रभुए पण प्रातःकाळ थये त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो.

प्रभु छद्मस्थ अवस्थाए चोराशी दिवस विहार करी फरीथी तेज आश्रमना उद्यानमां आव्या. त्यां ध्यानमां रहेला प्रभुने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. ते वखते इंद्रादिक देवोए आवी समवसरण रच्युं. त्यां पूर्व दिशा तरफना सिंहासनपर प्रभु पूर्वाभिमुखे बेठा अने बीजी त्रण दिशाओमां व्यंतरदेवोए प्रभुना त्रण प्रतिबिंब रच्यां. पछी सर्व सुर, असुर अने मनुष्यो आवीने योग्य स्थाने बेठा. एक एक योजन सुधीना विस्तारवाळी वाणीवडे स्वामीए देशनानो आरंभ कर्यो. श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना केवळज्ञाननो वृत्तांत उद्यानपालकना मुखथी जाणीने श्री अश्वसेन राजा अत्यंत हर्ष पामी प्रभुना दर्शन माटे अत्यंत उत्सुक थइ वामादेवी सहित त्यां आव्या अने प्रभुनी स्तुति तथा नमस्कार करी शुद्ध बुद्धिथी धर्मदेशना सांभळवा बेठा. जगदीश्वरनी ते देशना सांभळी घणा पुरुषो तथा स्त्रीओए प्रतिबोध पामी दीक्षा ग्रहण करी अने केटलाके श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. तेमांथी आर्यदत्त विगेरे दश गणधरो थया. तेओए स्वामी पासेथी त्रिपदी ग्रहण करी तत्काळ द्वादशांगी रची. ते वखते अश्वसेन राजाए हस्तीसेन नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वामादेवी अने प्रभावती सहित प्रभुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. पद्मावती, पार्श्व यक्ष, वैरोट्या अने धरणेंद्रे सर्वदा जेमनुं सांनिध्य कर्युं छे एवा श्रीपार्श्वनाथ प्रभु पृथ्वीपर विचरवा लाग्या. ते प्रभुना तीर्थमां समग्र गुणोथी शोभता सोळ हजार साधुओ, आडत्रीश हजार साध्वीओ, एक

लाख ने चोसठ हजार श्रावको अने त्रण लाख ने सतावीश हजार श्राविकाओनो परिवार थयो चोराशी दिवसे न्यून एवा सीत्तेर वर्ष सुधी केवळी पर्याये विचरता एवा प्रभुनो ए प्रमाणे चतुर्विध संघ थयो छेवट प्रभु तेत्रीश मुनिओ सहित समेताद्रि पर्वतपर जइ अनशन ग्रहण करी कायोत्सर्गे रह्या एक मासनु अनशन पूर्ण करी कुल सो वर्षनु आयुष्य भोगवी ते तेत्रीश साधुओ सहित भगवान भवोपग्राही चार अघाती कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या ते वृत्तांत अवधिज्ञानथी जाणी सर्व इन्द्रोए आवी भगवानना निर्वाणनो महोत्सव कर्यो

इति श्रीपार्श्वनाथनु संक्षिप्त चरित्र

आ प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथनु चरित्र कही हवे प्रस्तुत कहे छे—

तस्स लोगप्पईवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥

अर्थ—(लोगप्पईवस्स) लोकने विषे प्रदीप समान (तस्स) ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने (महायसे) मोटा यशवाळा अने (कुमारसमणे) कुमार अवस्थामां ज साधु थयेला एवा (केसी) केशी नामना (सीसे) शिष्य (आसि) हता, ते (विज्जाचरणपारगे) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता अहीं आ केशीकुमारने श्रीपार्श्वनाथना शिष्य कह्या, ते तेमना संतानमां थयेला जाणवा, परतु तेमना साक्षात् शिष्य नहीं केमके ते प्रभुना जो हस्तदीक्षित शिष्य होय तो श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थनी प्रवृत्ति थइ त्यां सुधी ते होइ शके नहीं २

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयंते, सावत्थिं नगरिमागए ॥ ३ ॥

अर्थ—(ओहिनाणसुए) अवधिज्ञान अने श्रुतज्ञानवडे (बुद्धे) तत्त्वना जाण अर्थात् मति, श्रुत अने अवधिज्ञानवाळा तथा (सीससंघसमाउले) शिष्यना समूहवडे परिवरेला एवा ते केशीकुमार (गामाणुगामं) एक गामथी बीजे गाम (रीयंते) विहार करता अनुक्रमे (सावत्थिं) श्रावस्ति नामनी (नगरिं) नगरीने विषे (आगए) आव्या. ३.

तिंदुअं नाम उज्जाणं, तम्मी नयरमंडले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥

अर्थ—(तम्मी) ते श्रावस्ति नगरीना (नयरमंडले) नगर बहारना प्रदेशमां (तिंदुअं नाम) तिंदुक नामनुं (उज्जाणं) उद्यान हतुं, (तत्थ) ते उद्यानमां (फासुए) प्रासुक एटले स्वाभाविक अने आगंतुक जीवोथी रहित एवा (सिज्जसंथारे) शय्यासंस्तारकने विषे (वासं उवागए) वासने पामता हवा-निवासस्थानने करता हवा. शय्या एटले वसति-उपाश्रय, तेने विषे जे शिला फलकादिक संस्तारक, तेने विषे निवास कर्यो.

आ अवसरे जे थयुं ते कहे छे.—

अह तेणेव कालेणं, धम्मतित्थयरे जिणे । भयवं वद्धमाणु त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तेणेव) ते ज (कालेणं) काळे (धम्मतित्थयरे) धर्मरूपी तीर्थने करनारा (जिणे) रागद्वेषने जीतनारा (भयवं) भगवान (वद्धमाणु त्ति) वर्धमान एवा नामे (सव्वलोगम्मि) सर्व लोकने विषे (विस्सुए)

विश्रुत एटले प्रसिद्ध हता ५

तस्स लोगप्पईवस्स, आसि सीसे महायसे । भयवं गोअमे नाम, विज्जाचरणपारगे ॥ ६ ॥

अर्थ—(लोगप्पईवस्स) लोकने विषे प्रदीप समान एवा (तस्स) ते वर्धमान स्वामीने (महायसे) मोटा यशवाळा (भयव) भगवान (गोअमे नाम) गौतम नामना (सीसे) शिष्य (आसि) हता, ते (विज्जाचरणपारगे) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता ६.

बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगाम रीअंते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

अर्थ—(बारसंगविऊ) द्वादशांगीने जाणनारा, (बुद्धे) तत्त्वने जाणनारा, (सीससंघसमाउले) शिष्यना समूहवडे सहित तथा (गामाणुगाम) एक गामथी बीजे गाम (रीअंते) विहार करता एवा (से वि) ते गौतमस्वामी पण (सावत्थिं) श्रावस्ति नगरी प्रत्ये (आगए) आव्या ७

कोट्ठगं नामं उज्जाणं, तम्मी नयरमंडले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥

अर्थ—(तम्मी) ते श्रावस्ति नगरीना (नयरमंडले) नगरना बहारना प्रदेशमां (कोट्ठगं नाम) कोष्टक नामनुं (उज्जाण) उद्यान हतुं, (तत्थ) ते उद्यानमां (फासुए) प्रासुक एवा (सिज्जसंथारे) शय्यासंस्तारकने विषे (वास उवागए) वासने पामता हवा—रहेता हवा ८

त्यारपछी शुं थयुं ? ते कहे छे.—

केसी कुमारसमणे, गोअमे अ महायसे । उभओ तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिआ ॥ ९ ॥

अर्थ—(केसी) केशी नामना (कुमारसमणे) कुमार साधु (गोअमे अ) तथा गौतमस्वामी (उभओ) ए बन्ने (महायसे) मोटा यशवाळा तथा (अल्लीणा) मन, वचन अने कायगुप्तिमां लीन थयेला तथा (सुसमाहिआ) सारी समाधिवाळा सता (तत्थ) ते पोतपोताना उद्यानमां (विहरिंसु) विचरता हता. ९.

उभओ सिस्ससंघाणं, संजयाण तवस्सिणं । तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं ॥ १० ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां श्रावस्ति नगरीना उद्यानमां (उभओ) केशीकुमार अने गौतमस्वामी ए बन्नेना (सिस्ससंघाणं) शिष्यनो समूह के जेओ (संजयाण) संयमने धारण करनारा, (तवस्सिणं) तपस्वी, (गुणवंताण) गुणवान अने (ताइणं) छ जीव निकायना रक्षण करनार हता. तेमांथी केशीकुमारना मुनिओने (चिंता) विचार (समुप्पन्ना) उत्पन्न थयो. एक बीजाने परस्पर जोवाथी हवे कहे छे तेवो विचार उत्पन्न थयो. १०.

शो विचार थयो ? ते कहे छे.—

केरिसो वा इमो धम्मो ?, इमो धम्मो व केरिसो ? । आयारधम्मप्पणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥ ११ ॥

अर्थ—(इमो) आ अमारो (धम्मो) महाव्रतरूप धर्म (केरिसो वा) केवो छे ? अने (इमो) आ प्रत्यक्ष देखाता

गणधरना शिष्योनो (धम्मो व) धर्म (केरिसो) केवा पकारनो छे ? तथा (इमा ना) आ अमारा सबधी (आयारध म्मप्पणिही) आचार एटले वेष धारण करवारूप बाह्य क्रियानो समूह, ते रूप धर्मनी व्यवस्था केवी छे ? (सा व) अने आ गणधरना शिष्योना बाह्य आचाररूप धर्मनी व्यवस्था (केरिसी) केवी छे ? अर्थात् अमारो अने तेमनो धर्म श्रीसर्वज्ञे ज कहेलो छे, छता ते धर्ममां अने तेना साधनोमां घणो तफावत देखाय छे, तेनु कारण शु हशे ? ते अमे जाणवा इच्छीए छीए ११

त ज विचारने प्रगट करता सता कहे छे —

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पचसिक्खओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥

अर्थ—(जो) जे आ अमारो (चाउज्जामो अ) चार महाव्रतवाळो (धम्मो) धर्म (महामुणी) महामुनि (पासेण य) पार्श्वनाथस्वामीए (देसिओ) कहेलो छे, अने (जो) जे (इमो) आ गौतम गणधरना शिष्योनो (पचसिक्खिओ) पांच शिक्षाओ एटले पचमहाव्रतवाळो धर्म महामुनि (वद्धमाणेण) वर्धमानस्वामीए कहेलो छे आ बने प्रकारनो जुदो जुदा धर्म कहेवानु शु कारण हशे ? (आ ठेकाणे धर्मना विषयवाळो सशय प्रगट कर्यो छे.) १२

हवे आचारना विषयवाळो सशय प्रगट करे छे —

अचेलगो अ जो धम्मो, जो इमो सतरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाण, विसेसे किं नु कारण ? ॥ १३ ॥

अर्थ—(अ) तथा (जो) जे (अचेलगो) अचेलक एटले वस्त्र रहित अर्थात् प्रमाणोपेत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळुं वस्त्र धारण करवुं एवो (धम्मो) धर्म श्रीवर्धमानस्वामीए कह्यो छे, अने (जो इमो) जे आ अमारो (संतरुत्तरो) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना शिष्यनी अपेक्षाए अंतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळो तथा उत्तर एटले मोटा मूल्यवडे प्रधान–श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कह्यो छे. तो (एगकज्जपवन्नाणं) मोक्षरूप एक ज कार्यने माटे प्रवर्तेला ते बन्ने तीर्थंकरोने (विसेसे) आवो विशेष–फेरफार करवामां (किं नु कारणं) शुं कारण हशे ? १३.

आ प्रमाणे गौतमस्वामीना साधुओने पण संशय थयो. एटले बन्नेना साधुओने संशय उत्पन्न थवाथी केशी अने गौतमस्वामीए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पविअक्किअं । समागमे कयमई, उभओ केसिगोअमा ॥ १४ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (तत्थ) त्यां श्रावस्तिनगरीमां (सीसाणं) साधुओना आवा प्रकारना (पविअक्किअं) वितर्कने (विन्नाय) जाणीने (ते) ते (केसिगोअमा) केशी अने गौतम (उभओ) बन्ने जणा (समागमे) परस्पर समागम करवामां (कयमई) करी छे मति जेमणे एवा थया–परस्पर मळवानी इच्छावाळा थया. १४.

गोअमो पडिरूवण्णू, सीससंघसमाउले । जिट्ठं कुलमविक्खंतो, तिंदुअं वणमागओ ॥ १५ ॥

अर्थ—त्यारपछी (पडिरूवण्णू) यथायोग्य विनयने जाणनार (गोअमो) गौतमस्वामी (जिट्ठ कुल) पार्श्वनाथना मतानने प्रथम थयेल होवाथी आ मोटुं कुळ छे एम (अविस्सतो) अपेक्षा करता-जाणता सता (सीससंघसमाउलो) शिष्योना समूह सहित (तिंदुअ) तिंदुक नामना (वण) उद्यानमां (आगओ) आव्या १५

केसी कुमारसमणे, गोअम दिस्समागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥ १६ ॥

अर्थ—(केसी) केशी नामना (कुमारसमणे) कुमार साधु (गोअम) गौतमने (आगय) आवेला (दिस्स) जोईने (सम्म) सम्यक् प्रकारे (पडिरूवं) अतिथिने योग्य एवी (पडिवत्तिं) सेवाने (संपडिवज्जइ) सारी रीते करता हवा १६

ते सेवाने ज बतावे छे —

पलालं फासुअं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि अ । गोअमस्स णिसिज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां तिंदुक वनमां (फासुअ) प्रासुक—अचित्त (पलाल) पराळ (अ) तथा (पंचम) पांचमा (कुसतणाणि) कुश जातिना तृण (गोअमस्स) गौतमने (णिसिज्जाए) बेसवा माटे (खिप्पं) शीघ्रपणे (संपणामए) केशीकुमारे आप्यां अहीं पराळना चार भेदनी अपेक्षाए तृणने पांचमुं गणाव्युं छे तेथी ' पंचम ' शब्द लख्यो छे ते लिपे कहुं छे के—

" तणपंचगं पुण भणिअं, जिणेहिं कम्मट्ठगंठिमहणेहिं । साली १ वीही २ कोद्दव ३, रालय ४ रणे तणाइं ५ च ॥"

अर्थ—" आठ कर्मनी ग्रंथिने मथन करनारा जिनेश्वरोए पांच प्रकारना तृण कह्या छे,—शाळी १. व्रीहि २, कोदरां ३, रालक ४ अने अरण्यना तृण ५. "

आमां प्रथमना चार भेद पराळनी जातिना छे अने पांचमो भेद तृणनो छे तेथी पंचम शब्द कह्यो छे. १७.

ते बन्ने साथे बेठा ते वखते केवा शोभता हता ? ते कहे छे.—

केसी कुमारसमणे, गोअमे अ महायसे । उभओ निसन्ना सोहंति, चंदसूरसमप्पहा ॥ १८ ॥

अर्थ—(महायसे) महा यशवाळा (केसी कुमारसमणे) केशीकुमार साधु (अ) तथा (गोअमे) गौतम (उभओ) ए बन्ने (निसन्ना) बेठा सता (चंदसूरसमप्पहा) चंद्र अने सूर्य जेवी कांतिवाळा (सोहंति) शोभता हता. १८.

तेमना समागम वखते जे थयुं ते कहे छे.—

समागया बहू तत्थ, पासंडा कोउगा मिआ । गिहत्थाणमणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां तिंदुक उद्यानमां (कोउगा) कौतुकथी (मिआ) मृगनी जेवा मृग एटले अज्ञानी एवा (बहू)

घणा (पासडा) पाखडीओ एटले अन्यदर्शनी साधुओ (समागया) आव्या तथा (अणेगाओ) अनेक (साहस्सीओ) हजारो (गिहत्थाण) गृहस्थीओ (समागया) आव्या १९

देवदानवगधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । अदिस्साण य भूआण, आसि तत्थ समागमो ॥२०॥

अर्थ—तथा (देवदानवगधव्वा) देव, दानव अने गधर्वो, तथा (जक्खरक्खसकिन्नरा) यक्ष, राक्षस अने किन्नरो पण आव्या (य) तथा (अदिस्साण) अदृश्य एवा (भूआण) भूतोनो-व्यतरोनो पण (तत्थ) त्यां (समागमो) समागम (आसि) थयो २०

हवे ते बन्ने मुनिओनी वातचीत केवी रीते थइ ? ते कहे छे —

पुच्छामि ते महाभाग !, केसी गोअममब्बवी । तओ केसी बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥२१॥

अर्थ—(केसी) केशीकुमारे (गोअम) गौतम गणधरने (अब्बवी) कह्यु के—(महाभाग) हे महा भाग्यवान ! (ते) तमने (पुच्छामि) हु पूछु छु (तओ) त्यारपछी (बुवत) आ प्रमाणे बोलता एवा (केसी) केशीकुमारने (तु) पुन (गोअमो) गौतमस्वामी (इण) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा २१

पुच्छ भते ! जहिच्छ ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसी अणुन्नाए, गोअम इणमब्बवी ॥२२॥

अर्थ—(भते) हे पूज्य ! (जहिच्छ) जेम तमारी इच्छा होय तेम (ते) तमे (पुच्छ) पूछो ए प्रमाणे (केसी)

केशीकुमारने (गोअमं) गौतमस्वामी (अब्बवी) कहेता हवा. (तओ) त्यारे (केसी) केशीकुमार (अणुण्णाए) गौतमस्वामीनी आज्ञाए करीने (गोअमं) गौतमस्वामी प्रत्ये (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा. २२.

केशीकुमारे गौतमस्वामीने जे पूछयुं ते कहे छे.—

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ। देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महामुणी ॥२३॥

अर्थ—(जो) जे आ अमारो (चाउज्जामो अ) अहिंसा, अनृत, अस्तेय अने अपरिग्रह ए चार महाव्रतवाळो (धम्मो) धर्म (महामुणी) महामुनि (पासेण य) श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए (देसिओ) कह्यो छे, तथा (जो इमो) जे आ तमारो (पंचसिक्खिओ) उपरना चार तथा ब्रह्मचर्य ए पांच शिक्षावाळो एटले पांच महाव्रतरूप धर्म (वद्धमाणेणं) श्री वर्धमानस्वामीए कह्यो छे. २३.

एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ?। धम्मे दुविहे मेहावी !, कहं विपच्चओ न ते ? ॥२४॥

अर्थ—तो (एगकज्जपवन्नाणं) मोक्षरूपी एक ज कार्यने माटे प्रवर्तेला ते बन्ने जिनेश्वरोने (विसेसे) आवो विशेष—भेद करवामां (किं नु) शुं (कारणं) कारण हशे ? (मेहावी) हे बुद्धिमान ! (दुविहे) आ रीते बे प्रकारे (धम्मे) धर्म कहे सते (ते) तमने (विपच्चओ) अविश्वास (कहं) केम (न) थतो नथी ? बन्नेनुं सर्वज्ञपणुं तुल्य छे, छतां आवो मतभेद केम थाय ? २४.

तओ केसिं बुवंत तु, गोअमो ईणमब्बवी । पण्णा समिक्खए धम्म-तत्त तत्तविणिच्छय ॥ २५ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (बुवंत तु) आ प्रमाणे बोलता एवा (केसिं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतम गणधर (इग) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हता, के (पण्णा) बुद्धि (तत्तविणिच्छय) जीवादिक तत्त्वोनो निश्चय करनार (धम्मतत्त) धर्मना तत्त्वने (समिक्खए) जुए छे अर्थात् मात्र वाक्यनु श्रवण कराथी ज अर्थनो निर्णय थइ शकतो नथी परंतु बुद्धिथी ज निर्णय थाय छे २५

तेथी करीने—

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपण्णा उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥

अर्थ—(उ) जे कारण माटे (पुरिमा) पहेला तीर्थंकरना मुनिओ (उज्जुजडा) सरळपणाए करीने ऋजु अने बोध पमाडवाने दुष्कर होवाथी जड हता, (य) तथा (पच्छिमा) छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ (वंकजडा) विपरीत प्रकृति होवाथी वक्र अने पोताना कुविकल्पवडे सत्य अर्थ जाणवामां असमर्थ होवाथी जड छे, (उ) तथा (मज्झिमा) मध्यमना बावीश तीर्थंकरोना साधुओ (उज्जुपण्णा) ऋजु एटले सरळ प्रकृतिवाळा अने प्राज्ञ एटले बुद्धिमान हता, (तेण) ते कारण माटे एक कार्यमां न प्रवर्त्या छतां (धम्मे) धर्म (दुहा) बे प्रकारे (कए) कर्यो छे—कह्यो छे. २६

अहीं केशीकुमार शंका करे के—" जो के प्रथमादिक प्रभुना मुनिओ एवा प्रकारना हता, तोपण आ रीते बे प्रकारनो

धर्म करवानुं शुं कारण ?" ते उपर कहे छे.—

पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ॥२७॥

अर्थ—(पुरिमाणं) पहेला तीर्थंकरना साधुओने (कप्पो) आ साधुधर्मनो कल्प एटले आचार (दुव्विसोज्झो उ) दुर्विशोध्य एटले दुःखे करीने निर्मळ करी शकाय तेवो अर्थात् जाणी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ ऋजुजड होवाथी गुरुए कह्या छतां तेनो अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणी शके नहीं. परंतु जो जाणे तो पछी पाळी शके खरा. तथा (चरिमाणं) छेल्ला तीर्थंकरना साधुओने ते कल्प (दुरणुपालओ) दुःखे करीने पाळी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ कोइपण रीते जाणी शके छे, परंतु वक्रजड होवाथी बराबर पाळी शकता नथी. (तु) तथा (मज्झिमगाणं) मध्यना बावीश तीर्थंकरोना साधुओने ते कल्प (सुविसोज्झो) सारी रीते शोधी शकाय—जाणी शकाय तेवो अने (सुपालओ) सारी रीते पाळी शकाय तेवो छे. कारण के तेओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी सुखे करीने यथार्थपणे जाणी शके छे अने ते ज प्रमाणे पाळी पण शके छे. तेथी तेओ चार महाव्रतवाळो धर्म कह्या छतां पण पांचमा व्रतने जाणवामां अने पाळवामां समर्थ छे. कह्युं छे के—" स्त्रीनो परिग्रह कर्या विना तेनो भोग थइ शकतो नथी, तेथी परिग्रहनी विरतिमां मैथुननी पण विरति आवी जाय ज छे." ए प्रमाणेनी बुद्धिथी बावीश तीर्थंकरोना साधुओ जाणीने ते प्रमाणे पाळे छे. आवी अपेक्षाथी श्रीपार्श्वनाथस्वामीए चार महाव्रतो कह्या अने पहेला छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ तेवा ऋजुप्राज्ञ नहीं होवाथी श्रीऋषभदेवे अने श्रीमहावीरस्वामीए पांच महाव्रतो कह्यां छे. विचित्र बुद्धिवाळा

शिष्योना उपर अनुग्रह करवानी बुद्धिथी ज बे प्रकारनो धर्म कह्यो छे, पण तत्त्वथी विचार करीए तो ए बे प्रकारनो धर्म छे ज नहीं—एक ज प्रकारनो छे अहीं प्रसगने लीधे ज पहेला तीर्थंकर सबधी वात कही छे २७

ते सांभळी केशीकुमारे कह्यु —

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झ, तं मे कहसु गोअमा ! ॥२८॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) घणी सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) सशय तो (छिण्णो) तमे छेद्यो छे वळी (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झ) मने (संसओ) सशय छे (तं) तेने-तेना समाधानने पण (गोअमा) हे गौतम ! तमे (मे) मने (कहसु) कहो

आ सर्व केशीकुमारनु कहेवु शिष्यनी अपेक्षाथी छे अर्थात् शिष्यवर्गने समजाववा माटे छे. कारण के पोते तो त्रण ज्ञान सहित छे तेथी तेने तो आवो सशय होय ज नहीं २८.

अचेलगो अ जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो । देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महायसा ॥२९॥

अर्थ—(अ) तथा (जो) जे आ (अचेलगो) अचेलक एटले वस्त्र रहित अर्थात् प्रमाणोपेत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळु वस्त्र धारण करवु एवो (धम्मो) साधुनो धर्म (महायसा) मोटा यशवाळा (वद्धमाणेण) श्री वर्धमानस्वामीए (देसिओ) कह्यो छे, तथा (जो इमो) जे आ अमारो (संतरुत्तरो) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना

शिष्यनी अपेक्षाए अंतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळा—गमे तेवा प्रमाणवाळा अने जूदा जूदा रंगवाळा अने उत्तर एटले घणा मूल्यवडे श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म (पासेण य) श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कहेलो छे. २९.

एगकज्जप्पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? । लिंगे दुविहे मेहावी !, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥

अर्थ—(एगकज्जप्पवन्नाणं) मोक्षरूपी एक ज कार्य साधवामां प्रवर्तेला ते बन्ने तीर्थंकरोने (विसेसे) आवो विशेष—भेद करवामां (किं नु कारणं) शुं कारण हशे ? (मेहावी) हे बुद्धिमान ! (दुविहे) अचेलक अने सचेलक एवा बे प्रकारना (लिंगे) लिंग—वेषने विषे (ते) तमने (विप्पच्चओ) अविश्वास (कहं) केम (न) नथी थतो ? शंका केम नथी थती ? ३०.

केसिमेवं बुवंतं तु, गोअमं इणमब्बवी । विण्णाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छिअं ॥ ३१ ॥

अर्थ—(एवं) ए प्रमाणे (बुवंतं तु) कहेता—पूछता एवा (केसिं) केशीकुमारने (गोअमं) गौतम गणधर (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा—उत्तर देता हवा, के—(विण्णाणेण) केवळज्ञानवडे (समागम्म) जे जेने उचित होय ते तेज प्रमाणे जाणीने ते बन्ने तीर्थंकरोए (धम्मसाहणं) धर्मनुं साधन एटले धर्मना उपकरणने (इच्छिअं) इच्छया छे—कह्या छे. पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुने जो पंचवर्णना वस्त्रादिकनी अनुज्ञा आपी होत तो तेओ ऋजुजड अने वक्रजड होवाथी वस्त्रने रंगवा विगेरे कार्यमां प्रवृत्ति करत. तेथी तेमने तेवी अनुज्ञा आपी नहीं. अने श्रीपार्श्वनाथस्वामीना शिष्यो तो ऋजुप्राज्ञ होवाथी तेओने रंगेलां वस्त्रोनी पण अनुज्ञा आपी छे. ३१.

तेम ज वळी —

पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पण । जत्तत्थं गहणत्थं च, लोए लिंगप्पओअण ॥ ३२ ॥

अर्थ—(च) तथा वळी (लोगस्स) लोकना (पच्चयत्थ) विश्वासने माटे (नाणाविहविगप्पण) नाना प्रकारना उपकरणनी कल्पना करेली छे एटले के रजोहरणादिक विविध प्रकारनां उपकरण नियमे करीने यतिओने विषे ज संभवे छे, तेथी लोकोने ते उपकरण जोइ 'आ साधु छे' एम विश्वास आवे छे जो ए रीते नियमित उपकरण न होय तो बीजा पण कोइ इच्छा प्रमाणे वेष धारण करीने 'अमे साधु छीए' एम पूजावा मनावा माटे लोको पासे पोतानी प्रसिद्धि करे, अने तेम करवाथी सत्य मुनिओने विषे पण लोकनी प्रतीतिमां भंग पडे माटे नियमित उपकरणमां फेरफार कहेल नथी ते तो बन्नेने एक सरखा ज राखवा योग्य छे तथा (जत्तत्थ) यात्रा एटले संयमना निर्वाहने माटे (गहणत्थ च) तथा पोताना ज्ञानने माटे पण (लोए) लोकमां (लिंगप्पओअण) वेषनु प्रयोजन छे एटले ते प्रमाणे वर्षाकल्पादिक राखवामां न आवे तो वर्षाकाळमां संयमनी बाधा थाय, तेथी वेषनी जरुर छे, तेमज कदाचित् मनना परिणाम चारित्रपरथी पडी जाय तोपण 'हु मुनि छु' एम पोताने मुनिपणाना ज्ञानने माटे पण वेषनी जरुर छे ३२

अह भवे पइण्णा उ, मोक्खसब्भूअसाहणो । नाणं च दसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥

अर्थ—(अह) हवे (निच्छए) निश्चय नयना मते तो (नाण च) ज्ञान, (दसण चेव) दर्शन अने (चरित्त

वेष) चारित्र ज (मोक्खसब्भूअसाहणो) मोक्षनां सत्य साधनो छे, ए प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथस्वामी अने वर्धमानस्वामीनी (पइण्णा) एक सरखी प्रतिज्ञा–अंगीकार (भवे उ) होय ज–छे ज. भरतचक्री विगेरेने वेष विना पण केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं एम संभळाय छे, तेथी मोक्षनुं कारण तत्त्वथी तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे, पण वेष नथी. तेथी वेषनी भिन्नता जोवाथी विज्ञानीओने तेमां कांइ अविश्वास थतो नथी. वेष तो मात्र व्यवहार नयनी अपेक्षाए ज छे. ३३.

साहु गोअम! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ॥३४॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) बहु सारी छे. तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) संशय पण (छिण्णो) तमे छेद्यो छे. हजु (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे, (तं) ते (मे) मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो. ते बीजा पण मारा संशयने तमे छेदो. आ प्रमाणे महाव्रत संबंधी तथा वेष संबंधी शिष्योना संशयने दूर करी हवे ते शिष्योने ज जणाववा माटे केशीकुमार पोते जाणता हता तोपण नीचेनो बीजो प्रश्न करे छे. ३४.

अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोअमा!। ते अ ते अभिगच्छंति, कहं ते निज्जिआ तुमे? ॥३५॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम ! (अणेगाण) अनेक (सहस्साणं) हजारो शत्रुओनी (मज्झे) मध्ये (चिट्ठसि) तमे रहो छो. (ते अ) अने वळी ते शत्रुओ (ते) तमारी तरफ (अभिगच्छंति) तमने जीतवा माटे दोडे छे, छतां (ते)

ते शत्रुओने (तुमे) तमे (कह) शी रीते (निज्जिआ) जीत्या ? जीती लीधा ? ते कहो. ३५

हवे गौतमस्वामी उत्तर आपे छे —

एगे जिए जिआ पंच, पंच जिए जिआ दस । दसहा उ जिणित्ता णं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥

अर्थ—(एगे) एक शत्रु (जिए) जीताये सते (पंच) पांचे शत्रु (जिआ) जीताया एम जाणवु, तथा (पंच) पांच शत्रु (जिए) जीताये सते (दस) दशे शत्रु (जिआ) जीताया जाणवा तथा (दसहा उ) दश प्रकारना शत्रुने (जिणित्ता ण) जीतीने (सव्वसत्तू) सर्व शत्रुओने (अहं) हु (जिणामि) जीतु छु ३६.

ते सांभळीने पछी—

सत्तू अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥

अर्थ—तमे १-५-१० विगेरे (सत्तू अ) शत्रुओ (के) कया (वुत्ते) कह्या छे ?-कोने कहो छो ? (इइ) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअम) गौतमस्वामीने (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा (तओ) त्यारपछी (बुवंत तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतमस्वामी (इण) आ प्रमाणे (अब्बवी) बोलता हवा—कहेता हवा ३७

एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदिआणि अ । ते जिणित्तु जहाणायं, विहरामि अहं मुणी ! ॥३८॥

अर्थ—(एगप्पा) एक आत्मा एटले जीव के मन (अजिए) नहीं जीतायो सतो (सत्तू) शत्रुरूप छे, तथा (कसाया) चारे कषायो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे, आ रीते मन अने कषायो मळीने पांच शत्रु छे. (अ) तथा (इंदिआणि) पांच इंद्रियो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे. आ सर्व मळीने दश शत्रु थया. (ते) ते सर्व शत्रुओने (जहाणायं) शास्त्रमां कहेली नीतिवडे (जिणीत्तु) जीतीने (मुणी) हे केशीकुमार मुनि ! (अहं) हुं (विहरामि) विचरुं छुं, एटले ते शत्रुओनी मध्ये रह्या छतां पण अप्रतिबद्ध विहारे करीने हुं विचरुं छुं. ३८.

आ प्रमाणे गौतमस्वामीए कह्युं त्यारे केशीकुमार फरीथी बोल्या के—

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥ ३९ ॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते पण्णा) तमारी बुद्धि (साहु) बहु सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे संसओ) मारो संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. (अन्नो वि) हजु बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे, (तं मे) ते मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो-छेदो. ३९.

दीसंति बहवो लोए, पासबद्धा सरीरिणो । मुक्कपासो लहूभूओ, कहं तं विहरसी मुणी ? ॥४०॥

अर्थ—(लोए) लोकने विषे (पासबद्धा) पाशथी एटले रागद्वेषरूपी पाशथी बंधायेला (सरीरिणो) प्राणीओ

(बहवो) घणा (दीसति) देखाय छे, तो (मुणी) हे गौतम मुनि ! (त) तमे (मुक्कपासो) ते पाशथी मुक्त अने (लहूभूओ) लघु एटले वायु, तेनी जेवा थया सता (कह) केवी रीते (विहरसी) सर्वत्र अप्रतिबद्धपणे विचरो छो ? ४०

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या के —

ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ । मुक्कपासो लहूभूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥ ४१ ॥

अर्थ—(ते) ते (सव्वसो) सर्व (पासे) पाशोने (छित्ता) छेदीने तथा (उवायओ) सत्य भावनाना अभ्यासरूप उपायथी (निहंतूण) हणीने एटले फरीथी तेनो बंध न थाय एवी रीते तेमनो विनाश करीने (अहं) हुं (मुणी) हे केशीकुमार मुनि ! (मुक्कपासो) पाशथी मुक्त अने (लहूभूओ) वायुनी जेवो लघु थयो सतो (विहरामि) विचरुं छुं ४१.

पासा य इति के वुत्ता ?, केसी गोयममब्बवी । तओ केसीं बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥

अर्थ—(पासा य) पाशो (के वुत्ता) तमे कया कह्या ? एटले तमे कोने पाशला कथा ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार मुनि (गोयम) गौतम गणधरने (अब्बवी) कहेता हवा (तओ) त्यारपछी (बुवंत तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमारने (गोयमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. ४२.

रागदोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा । ते छिंदित्तु जहाणायं, विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥

अर्थ—(रागदोसादओ) राग अने द्वेष विगेरे (तिव्वा) तीव्र अने (भयंकरा) भयंकर एवा (नेहपासा) स्नेहपाशो कहेला छे, (ते) ते पाशोने (जहाणायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (छिंदित्तु) छेदीने (जहक्कमं) यथाक्रम एटले साधुना आचारमां कहेला क्रम प्रमाणे (विहरामि) हुं विचरुं छुं. ४३.

ते सांभळी केशीकुमार बोल्या.—

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा !॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते पण्णा) तमारी बुद्धि (साहु) घणी सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. वळी (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे, (तं मे) ते मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो–छेदो. ४४.

अंतोहिअयसंभूआ, लया चिट्ठइ गोअमा ! । फलेइ विसभक्खीणं, सा उ उद्धरिआ कहं ? ॥ ४५ ॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम गणधर ! (अंतोहिअयसंभूआ) हृदयनी अंदर उत्पन्न थयेली (लया) जे लता (चिट्ठइ) रहेली छे, तथा जे लता (विसभक्खीणं) विषनी जेवा भक्षण करवा लायक एटले परिणामे दारुण एवा विष फळोने (फलेइ) फळे छे–उत्पन्न करे छे, (सा उ) ते लता तमे (कहं) केवी रीते (उद्धरिआ) उखेडी नांखी ? ४५.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या —

तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्तु समूलिअं । विहरामि जहानायं, मुक्कोमि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥

अर्थ—(तं) ते (लयं) लताने (सव्वसो) सर्वथा (छित्ता) छेदीने तथा (समूलिअं) मूळ सहित (उद्धरित्तु) उखेडी नाखीने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (विहरामि) हुं विचरुं छुं अने (विसभक्खणं) क्लिष्ट कर्मरूपी विषफळना भक्षणथी (मुक्कोमि) हुं मुक्त थयो छुं ४६.

लया य इति का वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥४७॥

अर्थ—(लया य) वळी लता ते (का वुत्ता) कई कही छे ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कहेता हवा-पूछता हवा (एवं) ए प्रमाणे (बुवंतं तु) कहेता एवा (केसीं) केशीकुमारने (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा ४७

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया । तमुद्धित्तु जहानायं, विहरामि महामुणी ! ॥ ४८ ॥

अर्थ—(भवतण्हा) संसारने विषे जे तृष्णा-लोभ ते ज (भीमा) भयंकर अने (भीमफलोदया) भयंकर फळना उदयवाळी (लया) लता (वुत्ता) कहेली छे (तं) ते लताने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (उद्धित्तु) उखेडी नाखीने (महामुणी) हे केशी महामुनि ! (विहरामि) हुं विचरुं छुं ४८

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥४९॥

अर्थ—प्रथमनी जेम जाणवो. ४९.

संपज्जलिआ घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोअमा !। जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविआ तुमे ? ॥५०॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम गणधर ! (संपज्जलिआ) अत्यंत जाज्वल्यमान अने ए ज कारणथी (घोरा) घोर-भयंकर एवा (अग्गी) अग्निओ (चिट्ठइ) रहेला छे, के (जे) जे अग्निओ (सरीरत्था) शरीरमां रह्या थका (डहंति) बाळे छे-परिताप उपजावे छे. तेमने (तुमे) तमे (कहं) केवी रीते (विज्झाविआ) बुझव्या-शांत कर्या ? ५०.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.—

महामेहप्पसूआओ, गिज्झ वारि जलोत्तमं। सिंचामि सययं ते उ, सित्ता नो अ दहंति मे ॥५१॥

अर्थ—(महामेहप्पसूआओ) महामेघथकी उत्पन्न थयेला प्रवाहथी (जलोत्तमं) सर्व जळमां प्रधान एवुं (वारि) जळ (गिज्झ) ग्रहण करीने (ते उ) ते अग्निओने (सययं) निरंतर (सिंचामि) हुं छांटुं छुं-शांत करुं छुं. (सित्ता) अने ते जळवडे सींच्या एवा ते अग्निओ (मे) मने (नो अ दहंति) नथी ज बाळता. ५१.

अग्गी अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥

अर्थ—(अग्गी अ) वळी अग्नि ते (के वुत्ते) कया कह्या छे ? (इइ) ए प्रमाणे (केसी गोअममब्बवी) केशीकुमार

गौतमस्वामीने कहेता-पूछता हवा (तत्रा) त्यारे (बुवत तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमारने (गोअमो इण अब्बवी) गौतमस्वामी आ प्रमाणे कहेता हवा. अहीं अग्निना सवधर्मा प्रश्न कर्यो, तेना उपलक्षणथी तेने बुझावनार महामेघादिक सवधी पण प्रश्न कर्या एम समजवु ५२

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुअसीलतओ जल। सुअधाराभिहया सता, भिन्ना हु न डहति मे ॥५३॥

अर्थ—(कसाया) कषायो परिताप उपजावनार होवाथी तथा शोषण करनार होवाथी (अग्गिणो) अग्निओ (वुत्ता) कह्या छे, तथा (सुअसीलतओ) श्रुत एटले कषायने शमाववाना कारणभूत श्रुतने विषे रहेला उपदेशो, शील एटले पाच महाव्रतो अने बार प्रकारनो तप, ते (जल) जळ कहेलु छे उपलक्षणथी जगतने आनददायक एवा तीर्थंकरने महामेघरूप कह्या छे, अने तेमनाथी उत्पन्न थयेला आगमने जळना प्रवाहरूप कहेलो छे तेथी करीने (सुअधाराभिहया) श्रुतनी तथा उपलक्षणथी शीळ अने तपनी धारावडे हणायेला अने (भिन्ना हु) भेदाया (सता) सता ते अग्निओ (मे) मने (न डहति) बाळता नथी ५३

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा ! ॥५४॥

अर्थ—पूर्वनी पेठ जाणवो ५४

अय साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ । जसि गोअम ! आरूढो, कह तेण न हीरसि ? ॥५५॥

अर्थ—(अयं) आ प्रत्यक्ष देखातो, (साहसिओ) साहसिक एटले विचार कर्या विना ज प्रवर्ततो, (भीमो) भयंकर अने (दुट्ठस्सो) दुष्ट एवो अश्व (परिधावइ) दोडे छे, के (जंसि) जेना उपर (मारूढो) आरुढ थयेला एवा तमे (गोअम) हे गौतम गणधर ! (तेण) ते अश्वथी (कहं) केम (न हीरसि) हरण कराता नथी-ते अश्व तमने केम उन्मार्गे लइ जतो नथी ?. ५५.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.—

पहावंतं निगिण्हामि, सुअरस्सीसमाहितं । न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जइ ॥ ५६ ॥

अर्थ—(सुअरस्सीसमाहितं) श्रुतरूपी रश्मि एटले दोरडावडे बांधेला ते दुष्ट अश्वने हुं (पहावंतं) उन्मार्गे दोडता एवाने (निगिण्हामि) पकडी राखुं छुं, तेथी (मे) मारो ते अश्व (उम्मग्गं) उन्मार्गे (न गच्छइ) जतो नथी, (मग्गं च) अने मार्गने एटले सन्मार्गने (पडिवज्जइ) अंगीकार करे छे-सन्मार्गे चाले छे. ५६.

आसे अ इति के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥

अर्थ—(आसे अ) वळी अश्व ते (के वुत्ते) कयो कह्यो छे ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतम गणधर प्रत्ये (अब्बवी) कहेता हवा-पूछता हवा (एवं बुवंतं तु) ए प्रमाणे कहेता एवा (केसीं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं अब्बवी) आ प्रमाणे उत्तर कहेता हवा. ५७.

मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ । तं सम्मं निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥५८॥

अर्थ—हे केशी मुनि ! (मणो) मनरूपी (साहसिओ) साहसिक अने (भीमो) भयकर एवो (दुट्ठस्सो) दुष्ट अश्व (परिधावइ) आम तेम दोडे छे (तं) तेने (धम्मसिक्खाइ) धर्मरूप शिखावडे (कंथगं) जातिवंत अश्वनी जेम (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (निगिण्हामि) हु निग्रह करु छु—नियममां राखु छु ५८

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥५९॥

अर्थ—पूर्वनी जेम जाणवो ५९

कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासंति जंतुणो । अद्धाणे कह वट्टंतो, तं न नस्ससि गोअमा ! ॥६०॥

अर्थ—(लोए) लोकने विषे (कुप्पहा) कुमार्गो (बहवो) घणा छे, के (जेहिं) जे कुमार्गोए करीने (जंतुणो) प्राणीओ (नासंति) नाश पामे छे एटले सन्मार्गथी भ्रष्ट थाय छे, तो (गोअमा) हे गौतम मुनीश्वर ! (अद्धाणे) सन्मार्गमां (वट्टंतो) वर्तता एवा (तं) तमे (कह) केम (न नस्ससि) नाश पामता नथी ? भ्रष्ट थता नथी ? ६०

जे अ मग्गेण गच्छंति, जे अ उम्मग्गपट्ठिआ । ते सव्वे विइआ मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥

अर्थ—(मुणी) हे केशी मुनि ! (जे अ) जेओ (मग्गेण) सन्मार्गे (गच्छंति) जाय छे, (जे अ) तथा जेओ (उम्मग्गपट्ठिआ) उन्मार्गे चालनारा छे, (ते सव्वे) ते सर्व प्राणीओ (मज्झं) मारा (विइआ) जाणेला छे एटले ते

सर्वेने हुं जाणुं छु अर्थात् मार्ग अने उन्मार्गना स्वरूपने हुं जाणुं छुं. (तो) तेथी (अहं) हुं (न नस्सामि) नाश पामतो नथी–सन्मार्गथी भ्रष्ट थतो नथी. ६१.

मग्गे अ इति के वुत्ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६२॥

अर्थ—(मग्गे) मार्ग (अ) अने उन्मार्ग कोने कहो छो ? बाकीनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो. ६२.

कुप्पावयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिआ । सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हिं उत्तमे ॥६३॥

अर्थ—(कुप्पावयणपासंडी) कुप्रवचनना पाखंडीओ एटले एकांतवादी कपिलादिकना दर्शनवाळा (सव्वे) सर्वे (उम्मग्गपट्ठिआ) उन्मार्गे चालनारा छे, (तु) पुनः (जिणक्खायं) जिनेश्वरे कहेलो जे मार्ग ते ज (सम्मग्गं) सन्मार्ग छे, माटे (एस) आ (मग्गे हि) मार्ग ज (उत्तमे) उत्तम छे. ६३.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. ६४.

महाउदगवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं । सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसी मुणी ! ॥६५॥

अर्थ—(मुणी) हे गौतम मुनि ! (महाउदगवेगेणं) मोटा जळना प्रवाहवडे (वुज्झमाणाण) तणाता एवा (पाणिणं) प्राणीओने (सरणं) शरणरूप, (गई) गति एटले आधार भूमिरूप, (पइट्ठा य) अने प्रतिष्ठा एटले स्थिर रहेवाना

हेतुरूप (दीव) द्वीप (क) कोने (मनमी) तमे मानो छो ? ६५

गौतमस्वामी जवाब आपे छे —

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ । महाउदगवेगस्स, गति तत्थ न विज्जई ॥६६॥

अर्थ—(वारिमज्झे) जळनी मध्ये (महालओ) मोटो (एगो) एक (महादीवो) महाद्वीप (अत्थि) छे (तत्थ) तेमां (महाउदगवेगस्स) महाजळना वेगनी–प्रवाहनी (गति) गति (न विज्जई) प्रवर्तती नथी ६६.

दीवे अ इइ के वुत्ते, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६७॥

अर्थ—(दीवे) द्वीप कोने कहाए ? बाकीनो अर्थ पूर्ववत् द्वीपना उपलक्षणथी ते जळमां रहेलो होवाथी जळना प्रवाहनो प्रश्न पण ज णी लेवो. ६७

जरामरणवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिण । धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥ ६८ ॥

अर्थ—(जरामरणवेगेण) जरा अने मरणरूपी जळना वेगवडे (वुज्झमाणाण) वहन कराता–तणाता (पाणिण) प्राणीओने (धम्मो) धर्म ज (पइट्ठा य) स्थिर रहेवाना हेतुरूप, (गई)गति–आधाररूप अने (उत्तम) उत्तम (सरण) शरणरूप (दीवो) द्वीप छे कारण के ते धर्म ज संसाररूपी समुद्रमां द्वीपरूपे रहेलो छे. ते मुक्तिनु कारण होवाथी जरा अने मरणरूप जळनो वेग तेने पहोंची शकतो नथी. ६८

साहु गोअम! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ॥६९॥

अर्थ—पूर्ववत्. ६९.

अण्णवंसि महोहंसि, नावा विप्परिधावइ। जंसि गोअम! मारूढो, कहं पारं गमिस्ससि? ॥ ७० ॥

अर्थ—(महोहंसि) मोटा प्रवाहवाळा (अण्णवंसि) समुद्रने विषे (नावा) वहाण (विप्परिधावइ) विशेषे करीने आमतेम दोडे छे, बराबर सीधा चाली शकता नथी तो (जंसि) जे वहाणपर एटले ते वहाणपर (मारूढो) आरूढ थयेला तमे (गोअम) हे गौतम मुनि ! (पारं) ते समुद्रना पारने (कहं) केवी रीते (गमिस्ससि) पामशो ? ७०.

गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥

अर्थ—(जा उ) जे (नावा) नौका (अस्साविणी) आश्रववाळी-अंदर जळ आवी शके तेवी होय छे-जेमां पाणी भरातुं होय छे, (सा) ते (पारस्स) समुद्रना पारने (गामिणी) पामनारी (न) थती नथी, पण (जा) जे (नावा) नावा (निरस्साविणी) आश्रव रहित-अंदर जळ न आवी शके तेवी होय छे (सा उ) ते नावा (पारस्स) समुद्रना पारने (गामिणी) पामनारी थाय छे. तेथी हुं आश्रव रहित नावापर आरूढ थइ समुद्रना पारने पामीश. ७१.

नावा अ इति का वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेव बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥७२॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. अहीं केवी नावा ? एवो प्रश्न कर्यो छे तेथी ते साथे तरनारनो अने तरवा लायक समुद्रनो पण प्रश्न कर्यो ज छे एम जाणवु ७२

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ । ससारो अण्णवो वुत्तो, ज तरंति महेसिणो ॥ ७३ ॥

अर्थ—(सरीर) शरीर रूप (नाव त्ति) नावा छे एम (आहु) कह्यु छे, कारण के आश्रवद्वारनो रोध करी ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप त्रण रत्ननी आराधना करवाथी ते शरीर ज ससारसागरने तारे छे तथा (जीवो) जीव (नाविओ) नाविक-तरनार (वुच्चइ) कहेवाय छे केमके ते जीव ज भवसागरने तरनार छे तथा (ससारो) आ चार गतिरूप ससार (अण्णवो) समुद्र (वुत्तो) कह्यो छे केमके तत्त्वथी ते ससार ज समुद्रनी जेम तरवा लायक छे (ज) के जे ससारसागरने (महेसिणो) महर्षिओ ज (तरंति) तरे छे-तरी शके छे ७३

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा ! ॥७४॥

अर्थ—पूर्ववत् ७४.

अधयारे तमे घोरे, चिट्ठति पाणिणो बहू । को करिस्सति उज्जोअ, सव्वलोअम्मि पाणिण ? ॥७५॥

अर्थ—(अधयारे) प्राणीने अध करनार अने (घोरे) घोर एवा (तमे) अधारामा (बहू) घणा (पाणिणो)

प्राणीओ (चिट्ठंति) रहेला छे. तो (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकने विषे (पाणिणं) प्राणीओने (को) कोण-कयो पदार्थ (उज्जोअं) उद्योतने-प्रकाशने (करिस्सति) करशे ? ७५.

श्री गोतमस्वामी जवाब आपे छे.—

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोअप्पहंकरो । सो करिस्सति उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ॥७६॥

अर्थ—(सव्वलोअप्पहंकरो) सर्व लोकमां प्रकाश करनार (विमलो) निर्मळ (भाणू) सूर्य (उग्गओ) उदय पाम्यो छे, (सो) ते सूर्य (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकमां (पाणिणं) प्राणीओने (उज्जोअं) उद्योत-प्रकाश (करिस्सति) करशे. ७६.

भाणू अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥

अर्थ—अहीं सूर्य कोने कहो छो ? एम प्रश्न कर्यो छे. बाकी पूर्ववत्. ७७.

उग्गओ खीणसंसारो, सव्वण्णू जिणभक्खरो । सो करिस्सइ उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ॥ ७८ ॥

अर्थ—(खीणसंसारो) क्षीण थयो छे संसार जेनो तथा (सव्वण्णू) सर्व पदार्थने जाणनार एवो (जिणभक्खरो) जिनेश्वररूपी भास्कर-सूर्य (उग्गओ) उदय पाम्यो छे, (सो) ते सूर्य (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकने विषे (पाणिणं) प्राणीओने (उज्जोअं) उद्योत-मोहरूपी अंधकारनो नाश करी सर्व वस्तुनो प्रकाश (करिस्सइ) करशे. ७८.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झ, तं मे कहसु गोअमा ! ॥७९॥

अर्थ—पूर्ववत् ७९

सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं। खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं किं मन्नसी मुणी ! ॥ ८० ॥

अर्थ—(मुणी) हे गौतम मुनीश्वर ! (सारीरमाणसे) शरीर संबधी अने मनसंबंधी (दुक्खे) दुःखोवडे (बज्झमाणाण) बाधा-पीडा पामता एवा (पाणिण) प्राणीओने (खेम) क्षेम-आधि व्याधि रहित, (सिव) शिव-जरा अने उपद्रव रहित तथा (अणाबाह) अनाबाध-शत्रु नहीं होवाथी स्वभावे करीने ज पीडा रहित एवु (ठाण) स्थान (किं) कयु (मन्नसी) तमे मानो छो ? ते कहो ८०

गौतमस्वामी जवाब आपे छे —

अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं। जत्थ नत्थि जरामच्चू, वाहिणो वेअणा तहा ॥ ८१ ॥

अर्थ—(लोगग्गम्मि) लोकना अग्रभागने विषे (दुरारुह) दु खे करीने चडी शकाय एवु (एग) एक ज (धुव) ध्रुव-निश्चळ (ठाण) स्थान (अत्थि) छे, के (जत्थ) ज्यां (जरामच्चू) जरा, मृत्यु, (वाहिणो) व्याधिओ (तहा) तथा (वेयणा) वेदना एटले शरीर अने मन संबधी दु खोनो अनुभव (नत्थि) नथी। जरा अने मृत्यु नहीं होवाथी ते स्थान शिवरूप छे, व्याधि नहीं होवाथी क्षेमरूप छे अने वेदना नहीं होवाथी अनाबाध छे ८१

ठाणे अ इइ के वुत्ते? केसी गोअममब्ववी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्ववी ॥ ८२ ॥

अर्थ—आमां ते स्थान कयुं ? एम प्रश्न कर्यो छे. बाकी पूर्ववत्. ८२.

निव्वाणं ति अबाहं ति, सिद्धि लोगग्गमेव य । खेमं सिवमणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ॥ ८३ ॥

अर्थ—(निव्वाणं ति) संतापना अभावथी प्राणीओ शीतळ थाय जेने विषे ते निर्वाण ए प्रमाणे कहेवाय छे, (अबाहं ति) बाधा नथी जेने विषे ते अबाध एवे नामे कहेवाय छे, (सिद्धि) श्रमण कर्या विना सर्व कार्यो जेने विषे सिद्ध थाय ते सिद्धि एवे नामे कहेवाय छे, (लोगग्गमेव य) लोकना अग्रभागने विषे रहेल होवाथी लोकाग्र एम कहेवाय छे, (खेमं) शाश्वत सुख करनार होवाथी क्षेम एम कहेवाय छे, (सिवं) उपद्रव नहीं होवाथी शिव एवे नामे कहेवाय छे, तथा (अणाबाहं) बाधा पीडा रहित होवाथी जे स्थान अनाबाध एवुं कहेवाय छे, तथा (जं) जे स्थानने विषे (महेसिणो) महर्षिओ (चरंति) जाय छे. अहीं ज्यां न होय त्यां 'इति' शब्दनो अध्याहार राखी अर्थ करवो. ८३.

तं ठाणं सासयंवासं, लोअग्गम्मि दुरारुहं । जं संपत्ता न सोअंति, भवोहंतकरा मुणी ॥ ८४ ॥

अर्थ—(तं ठाणं) ते स्थान (सासयंवासं) शाश्वत निवासवाळु तथा (लोअग्गम्मि) लोकना अग्र भागने विषे (दुरारुहं) दुःखे करीने चडी शकाय तेवुं कह्युं छे. (भवोहंतकरा) भवना समूहनो अंत करनारा (मुणी) मुनिओ (जं संपत्ता) जे स्थानने पाम्या सता (न सोअंति) शोक करता नथी—कोइ जातनो शोक करवापणुं रहेतुं ज नथी. ८४.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो। नमो ते" संसयातीत! सव्वसुत्तमहोदधी! ॥८५॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) बहु सारी छे, (इमो) आ (मे संसओ) मारा संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे (संसयातीत) हे संशय रहित ! (सव्वसुत्तमहोदधी) हे सर्व श्रुतना मोटा समुद्र ! (ते नमो) तमने नमस्कार छे ८५.

पछी केशीकुमारे शुं कर्युं ? ते कहे छे —

एवं तु संसए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे । अभिवंदित्ता सिरसा, गोअमं तु महायसं ॥ ८६ ॥

अर्थ—(एवं तु) आ अनुक्रमे (संसए) संशय (छिन्ने) छेदाये सते एटले सर्व संशयो छेदाये सते (घोरपरक्कमे) घोर पराक्रमवाळा (केसी) केशीकुमारे (महायसं) महा यशवाळा (गोअमं तु) गौतम गणधरने (सिरसा) मस्तकवडे (अभिवंदित्ता) वंदना करीने ८६

पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ । पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥

अर्थ—(भावओ) भावथी (पुरिमस्स) प्रथम जिनेश्वरे मानेला-प्रथम जिनेश्वरे पण प्रवर्तावेला एवा (तत्थ सुहावहे) ते सुखकारक (पच्छिमम्मि मग्गे) छेल्ला तीर्थंकरना प्रवर्तावेला मार्गमां-तीर्थमां (पंचमहव्वयधम्मं) पांच महाव्रतरूप धर्मने (पडिवज्जइ) अंगीकार कर्यो ८७

हवे आ अध्ययनने समाप्त करता महापुरुषना संगतुं फळ कहे छे. —

केसिगोअमओ णिच्चं, तम्मि आसि समागमे । सुअसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

अर्थ—(तम्मि) ते नगरीमां (णिच्चं) हमेशां (केसिगोअमओ) केशीकुमार अने गौतमस्वामीनो (समागमे) समागम (आसि) थया कर्यो, तेथी (सुअसीलसमुक्करिसो) श्रुत अने शीळनो एटले ज्ञान अने चारित्रनो उत्कर्ष थयो, तथा (महत्थत्थविणिच्छओ) महार्थ एटले मुक्तिना साधनपणाए करीने महा प्रयोजनवाळा जे शिक्षा अने व्रत विगेरे अर्थो तेनो निश्चय पण थयो, अर्थात् शिक्षा, व्रत अने तत्त्वो विगेरे पदार्थोनो निश्चय थयो. अहीं केशीकुमार तथा गौतमस्वामीने तो अर्थनो निश्चय हतो ज. पण तेमना शिष्योने अर्थनिश्चय थयो एम जाणवानुं छे. ८८.

तोसिआ परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिआ । संथुआ ते पसीअंतु, भयवं केसीगोअम त्ति बेमि ॥८९॥

अर्थ—आ रीते (तोसिआ) प्रसन्न थयेली (सव्वा) सर्व (परिसा) पर्षदा (सम्मग्गं) सन्मार्गने एटले मुक्तिमार्गने आराधवा (समुवट्ठिआ) सावधान थइ. (ते) ते (भयवं) पूज्य अने ज्ञानवंत एवा (केसीगोअमा) केशीकुमार अने गौतमस्वामी (संथुआ) पर्षदाए स्तुति कराया सता (पसीअंतु) सत्पुरुषो उपर प्रसन्न थाओ. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबुस्वामीने कह्युं. ८९.

इति त्रयोविंशमध्ययनम्. २३.

अथ प्रवचनमातृ नामनुं चोवीशमु अध्ययन २४

त्रेवीशमा अध्ययनमां कह्यु के—बीजाओना मननी शकाने केशीकुमार अने गौतमस्वामीनी जेम दूर करवी ते शकानु निवारण तो भाषासमितिरूप वाग्योगे करीने थइ शके छे, अने भाषासमिति अष्टप्रवचन मातानी मध्ये आवे छे, तेथी अहीं अष्टप्रवचन मातानु स्वरूप कहे छे —

अट्ठपवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पचेव य समीईओ, तओ गुत्तिओ आहिआ ॥ १ ॥

अर्थ—(अट्ठप्पवयणमायाओ) प्रवचननी माताओ आठ छे (समिई) समिति (तहेव य) तथा (गुत्ती) गुप्ति तेमां (समीईओ) समितिओ (पचेव य) पांच ज छे अने (गुत्तिओ) गुप्तिओ (तओ) त्रण (आहिआ) कहेली छे १

ते आठेना नाम कहे छे —

ईरिआ भासेसणादाणे, उच्चारे समिई इअ । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ति अ अट्ठमा ॥ २ ॥

अर्थ—(ईरिआ) इर्या एटले गमन, (भासा) भाषा, (एसणा) एषणा एटले अन्नादिकनी गवेषणा, (आदाणे) आदान एटले पात्रादिकनु ग्रहण, तथा (उच्चारे) उच्चारादिकनु परिष्ठापन (इअ) ए पांच ज (समिई) समिति छे तथा (मणगुत्ती) मनगुप्ति एटले मननी शुभ कार्यमां प्रवृत्ति अने अशुभ कार्यथी निवृत्ति, (वयगुत्ती) ए ज रीते वचनगुप्ति (अ) तथा (अट्ठमा) आठमी (कायगुत्ति) कायगुप्ति छे २

ते आठेनुं निगमन करे छे.—समाप्ति करे छे.

एआओ अट्ठ समिईओ, समासेण विआहिआ। दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥

अर्थ—(एआओ) आ (अट्ठ) आठ (समिईओ) समितिओ (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिआ) कही छे, (जत्थ) जेने विषे (जिणक्खायं) जिनेश्वरे कहेलुं (दुवालसंगं) द्वादशांगरूप (पवयणं) प्रवचन (मायं उ) समायेलुंज छे. अहीं समिति शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे—सम्-सम्यक् एटले जिनेश्वरना वचनने अनुसारे इति एटले आत्मानी जे चेष्टा ते समिति. आवा शब्दार्थ प्रमाणे गुप्तिओ पण समिति ज कही शकाय छे, तेथी अहीं आठेने समिति कही छे, छतां पांच समिति अने त्रण गुप्ति एम भेदवडे जे कहेवामां आवे छे तेनुं कारण ए जे समितिओ प्रवृत्तिरूपे होय छे अने गुप्तिओ प्रवृत्ति अने निवृत्ति बन्नेरूपे होय छे एम जणाववा माटे कथंचित् बन्नेनो भेद कहेवामां आवे छे. आ आठ समितिओ चारित्ररूप ज छे. अने ज्ञान तथा दर्शन विना चारित्र होइ शकतुं नथी, अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए त्रण सिवाय बीजो कोइ पण विषय द्वादशांगीमां नथी, तेथी आ आठ समितिने विषे प्रवचन समायेलुं ज छे. एम कह्युं ते योग्य ज छे. ३.

हवे प्रथम ईर्यासमितिनुं स्वरूप कहे छे.—

आलंबणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ अ। चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरिअं रिए ॥ ४ ॥

अर्थ—(संजए) साधुए (आलंबणेण) आलंबन, (कालेण) काळ, (मग्गेण) मार्ग (अ) अने (जयणाइ)

यतना (चउकारणपरिसुद्ध) ए चार कारणे करीने शुद्ध एवी (इरियं) ईर्या एटले गति (रिए) करवी जोइए. ४

ते आलंबनादिकनु ज स्वरूप कहे छे —

तत्थ आलंबणं नाणं, दंसणं चरणं तहा । काले अ दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥

अर्थ—(तत्थ) तेमां एटले ते आलंबनादिकमां (नाणं) ज्ञान, (दंसणं) दर्शन (तहा) तथा (चरणं) चारित्र, ए त्रण (आलंबणं) आलंबन कहेवाय छे कारण के ए त्रणने आश्रीने ज जिनेश्वरे गमन करवानी आज्ञा आपेली छे तेमां ज्ञान एटले सूत्र, अर्थ अने सूत्रार्थ तदुभयरूप आगम, दर्शन एटले सम्यक्त्व अने चरण एटले चारित्र 'तहा'-तथा शब्द आप्यो छे ते बे संयोगीया अने त्रण आदि संयोगीया भांगाने सूचववा माटे छे एटले के ज्ञानादिक एक एकने अने बब्बे आदिने आश्रीने पण गमन करवानी अनुज्ञा आपेली छे (अ) तथा (दिवसे) दिवस ए (काले) काळ(वुत्ते) कह्यो छे एटले साधुने गमन करवानो काळ दिवस कह्यो छे, पण रात्रिए ईर्यानी शुद्धि थइ शके नहीं, तेथी रात्रिनो काळ कह्यो नथी तथा (मग्गे) मार्ग ते (उप्पहवज्जिए) उन्मार्गने वर्जीने कह्यो छे, उन्मार्गे जवाथी आत्मानी विराधना विगेरे दोषो लागे छे माटे सारा मार्गे-राजमार्गे चालवु ५.

हवे यतनारूप चोथो भेद ने तेना चार प्रकार कहे छे —

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥

अर्थ—(दव्वओ) द्रव्यथी (खेत्तओ चेव) क्षेत्रथी तथा (कालओ) काळथी (तहा) तथा (भावओ) भावथी एम (चउव्विहा) चार प्रकारे (जयणा) यतना (वुत्ता) कही छे, (तं) ते यतनाने (कित्तयओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) हे शिष्य ! तुं सांभळ. ६.

दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं तु खेत्तओ । कालओ जाव रीएज्जा, उवउत्ते अ भावओ ॥ ७ ॥

अर्थ—(चक्खुसा) चक्षुवडे (पेहे) जे जीवादिक पदार्थने जोवा-जोइने चालवुं ते (दव्वओ) द्रव्यथी यतना कहेवाय छे, (जुगमित्त तु) तथा युगप्रमाण एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्रने जोतां चालवुं ते (खेत्तओ) क्षेत्रथी यतना कहेवाय छे, तथा (जाव रीएज्जा) ज्यांसुधी चाले त्यांसुधीना प्रमाणवाळी एटले तेटला काळना प्रमाणवाळी जे यतना ते (कालओ) काळथी यतना कहेवाय छे, (उवउत्ते अ) तथा उपयुक्त एटले सावधान एवो सतो जे चाले ते (भावओ) भावथी यतना कहेवाय छे. ७.

हवे यतनाना चोथा भेद उपयोगने ज स्पष्ट रीते कहे छे.—

इंदिअत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, संजए इरिअं रिए ॥८॥

अर्थ—(इंदिअत्थे) इंद्रियोना शब्दादिक विषयोने (चेव) तथा (पंचहा) पांच प्रकारना (सज्झायं) स्वाध्यायने (विवज्जित्ता) वर्जीने कारण के स्वाध्याय पण गमन करती वखते उपयोगनो विनाश करे छे तेथी स्वाध्यायने पण वर्जीने

(तम्मुत्ती) ते ईर्याने विषे ज मूर्ति एटले व्यापार करतु छे शरीर जेनु एवो अने (तप्पुरक्कारे) ते ईर्याने ज आगळ करे एटले उपयोगमां मुख्यपणे अंगीकार करे एवो अर्थात् काया अने मननु तेमां ज एकाग्रपणु राखतो एवो (सजए) साधु (इरिअं) गतिने (रिए) करे ८

हवे बीजी भाषासमिति कहे छे —

कोहे माणे अ मायाए लोभे अ उवउत्तया । हासे भयमोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ९ ॥
एआइ अट्ठ ठाणाइ, परिवज्जित्तु संजए । असावज्ज मिअं काले, भास भासिज्ज पण्णव ॥ १० ॥

अर्थ—(कोहे) क्रोधने विषे, (माणे अ) मानने विषे, (मायाए) मायाने विषे, (लोभे अ) लोभने विषे, (हासे) हास्यने विषे, (भयमोहरिए) भयने विषे, मौखर्यने विषे, (तहेव य) तेम ज वळी (विकहासु) विकथाने विषे (उवउत्तया) उपयोग राखवो, (एआइ) ए (अट्ठ ठाणाइ) आठ स्थानकोने (परिवज्जित्तु) सर्वथा वर्जीने (पण्णव) बुद्धिमान (सजए) साधुए (काले) बोलवाने वखते (असावज्ज) पाप रहित-निर्दोष अने (मिअं) परिमित एटले कार्य जेटली ज (भास) भाषा (भासिज्ज) बोलवी जो क्रोधादिकमां उपयोग होय तो प्राये शुभ भाषा बोलाती नथी तेथी बोलवी वखते क्रोधादिकनो अवश्य त्याग करवो जोइए ९-१०

हवे त्रीजी एषणासमिति कहे छे —

गवेसणाए गहणे अ, परिभोगेसणा य जा । आहारोवहिसेज्जाए, एए तिण्णि वि सोहए ॥११॥

अर्थ—(गवेसणाए) गायनी जेवी एषणा एटले शुद्ध आहारनुं जोवुं ते गवेषणा कहेवाय छे, अहीं एषणा शब्द जोडवाथी गवेषणाने विषे जे एषणा ते गवेषणैषणा एटले गायनी जेम विशुद्ध आहार जोवामां एषणा–विचार करवो ते. (गहणे अ) तथा ग्रहण एटले विशुद्ध आहारनुं ग्रहण, अहीं पण एषणा शब्द जोडवाथी ग्रहणने विषे जे एषणा–विचार ते ग्रहणैषणा कहेवाय छे, (य) तथा (जा) जे (परिभोगेसणा) परिभोग एटले मंडळीने विषे भोजननो समय, तेने विषे जे एषणा–विचार ते परिभोगैषणा कहेवाय छे. (एए तिण्णि वि) आ त्रण प्रकारनी एषणा (आहारोवहिसेज्जाए) आहार, उपधि–वस्त्र पात्रादिक अने शय्या–उपाश्रय संस्तारकादिक ए त्रणेने विषे (सोहए) शोधवानी छे. अर्थात् एकला आहारने विषे ज शोधवानी छे एम नथी. ११.

ते एषणानी शुद्धि केवी रीते करवी ? ते कहे छे.—

उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहिज्ज एसणं ।
परिभोगम्मि चउक्कं, विसोहिज्जं जयं जई ॥ १२ ॥

अर्थ—(जयं) यतना करता (जई) साधुए (पढमे) पहेली गवेषणामां (उग्गमुप्पायणं) आधाकर्मादिक सोळ उद्गमना अने धात्री आदि सोळ उत्पादनाना दोषोने शोधवाना छे, तथा (बीए) बीजी ग्रहणैषणामां (एसणं) शंकि-

तादिक दश एपणाना दोपाने (सोहिज्ज) शोधवाना छे, तथा (परिभोगम्मि) परिभोगैपणाने विपे (चउक्क) संयोजना, प्रमाण, अगारधूम अने कारण ए चार बावत(विसोहिज्ज) शोधवानी छे अहीं अगार दोप अने धूम दोप बन्ने जूदा लइए तो परिभोगैपणाना पांच दोपो थवाथी कुल सुडतालीश दोपो थाय छे, परतु अहीं अगार अने धूम ए बन्ने दोपो मोहनीयकर्ममां अंतर्गत होवाथी बन्ने मळीने एक ज दोप कह्यो छे १२

हवे चोथी आदाननिक्षेप समिति कहे छे —

ओहोवहोवग्गहिअ, भंडग दुविह मुणी । गिण्हतो निक्खिवतो अ, पउंजिज्ज इमं विहिं ॥ १३ ॥

अर्थ—(ओहोवहोवग्गहिअ) अहीं अनुक्रमे ओघ, उपधि, औपग्रहिक एम त्रण शब्दो रहेला छे, तेमां मध्ये रहेलो उपधि शब्द डमरुकमणिना न्यायवडे बन्ने शब्द साथे जोडाय छे, तेथी रजोहरणादिक ओघोपधि अने दंडादिक औपग्रहिकोपधि एम (दुविह) बे प्रकारना (भंडग) भांडक एटले उपकरणने (गिण्हतो) ग्रहण करता (निक्खिवतो अ) अने मूकता एवा (मुणी) मुनिए (इमं) आ आगळ कहेवाशे ते (विहिं) विधि (पउंजिज्ज) प्रयुंजवानो छे-करवानो छे. १३

१ लक्ष्मीविजयनी टीकामां ४७ दोपोनी व्याख्या विस्तारथी आपी छे, तेमां परिभोगने विपे पांच दोप न करवाना कहेला छे एटले १६-१६-१०-५ मळी ४७ थाय छे

ते ज विधिने कहे छे.—

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जिज्ज जयं जई। आइए निक्खिविज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥१४॥

अर्थ—(समिए) समितिवाळा अने (जयं) यतनावाळा (जई) मुनिए (दुहओ वि) औधिक अने औपग्रहिक ए बन्ने प्रकारना उपधिने (सया) सदा (चक्खुसा) प्रथम चक्षुवडे (पडिलेहित्ता) पडिलेहण करीने एटले जोइने (पमज्जिज्ज) रजोहरणादिकवडे प्रमार्जन करवी अने पछी (आइए) ते उपधिने ग्रहण करवी (वा) अथवा (निक्खिविज्जा) मूकवी. १४.

हवे पांचमी परिष्ठापनासमितिने कहे छे.—

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लिअं। आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥ १५ ॥

अर्थ—(उच्चारं) उच्चार—पुरीष, (पासवणं) प्रश्रवण—मूत्र, (खेलं) मुखनो बळखो, (सिंघाण) नासिकानो श्लेष्म, (जल्लिअं) शरीरनो मळ, (आहारं) अन्नादिक आहार, (उवहिं) बन्ने प्रकारनी उपधि, (देहं) शरीर, (अन्नं वावि) अथवा बीजुं छाण विगेरे (तहाविहं) तेवा प्रकारनुं के जे परिष्ठापना एटले परठववाने लायक होय ते सर्व स्थंडिलमां वोसराववुं—तजवुं, ए प्रमाणे क्रियापदनो संबंध अढारमी गाथामां आवशे तेनी साथे करवो. १५.

अहीं जे स्थंडिलमां वोसराववानुं कह्युं ते स्थंडिलना दश विशेषणो छे. तेमां पहेला विशेषणमां अनापात अने

असलोक ए बे शब्दो छे, तेना भांगानी रचना प्रथम बतावे छे, पछी तेना उपलक्षणथी दशे विशेषणोना भांगा समजी लेवा.

अणावायमसलोए, अणावाए चेव होइ सलोए । आवायमसलोए, आवाए चेव सलोए ॥१६॥

अर्थ—(अणावाय असलोए) ज्यां स्वपक्ष एटले साधु के परपक्ष एटले गृहस्थीओनी जा—आव थती न होय ते अनापात स्थंडिल कहेवाय छे, तथा ज्यां स्वपक्ष के परपक्ष दूरथी पण जोइ न शके ते असलोक स्थंडिल कहेवाय छे ए पहेलो भांगो थयो १ (चेव) तथा (अणावाए) अनापात अने (सलोए) सलोक (होइ) होय छे एटले ज्यां जाव आव नथी पण सलोक छे ते अनापात सलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए बीजो भांगो थयो २ तथा (आवाय असलोए) आपात अने असलोक एटले ज्यां जाव आव होय पण सलोक न होय ते आपात असलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए त्रीजो भांगो ३ (चेव) तथा (आवाए) आपात अने (सलोए) सलोक एटले ज्यां जा—आव होय अने सलोक पण होय ते आपात सलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए चोथो भांगो थयो ४ १६

हवे ते दश विशेषण जणाववा माटे केवा स्थंडिलमां उच्चारादिक वोसराववुं ? ते कहे छे —

अणावायमसलोए १, परस्सऽणुवघाइए २। समे ३ अज्झुसिरे ४ आवि, अचिरकालकयम्मि अ ५॥१७॥

विच्छिण्णे ६ दूरमोगाढे ७, नासन्ने ८ विलवज्जिए ९। तसपाणबीअरहिए १०, उच्चाराईणि वोसिरे॥१८॥

अर्थ—(परस्स) बीजानो एटले स्वपक्ष के परपक्षनो (अणावाय असलोए) आपात—जा—आव न होय अने सलोक